محمد
الله
हमारे
ग़ौसे आज़म
क़ादरी दारुल इशाअ़त
मस्जिद वैलकम दिल्ली-53

ZEBNEWS.IN

PRESENTED BY

NAUSHAD AHMAD "ZEB" RAZVI

ALLAHABAD

फ़ेहरिस्त

पेश लफ़्ज़

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन अल्लाह तआ़ला के महबूब स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के सदक़े में सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और हमारे मशाइख़े किराम बिलख़ुसूस इमामुल उलमा मरजेउल .फुक़हा सरताजुल औलिया सरकारे आलाहज़रत अज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा और मेरे मुर्शिदे गिरामी शहज़ादए आलाहज़रत सरकारे मुफ़्तीए आज़म हिन्द रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के तुफ़ैल में यह किताब **'हमारे ग़ौसे आज़म'** के नाम से आज इस शान से मुकम्मल हुई कि मैं यह कह सकता हूँ कि हिन्दी ज़बान में सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की शान में अभी तक ऐसी किताब नहीं आई।

अब इस किताब के ज़रिए सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बारे में जानकारी देने में हम कहाँ तक कामयाब हुए हैं यह तो पढ़ने वाले ही सही फ़ैसला करेंगे। हमने कई किताबों की मदद से यह किताब मुरत्तब की है और हमने कोशिश करके किताब को आसान भी की है, इसके बावुजूद ऐसा लगता है कि अब भी किताब कहीं कहीं मुश्किल है। उसकी ख़ास वजह यह है कि जहाँ तसव्वुफ़ की ख़ास ख़ास बातें हैं या ऐसी बातें हैं जिनका हिन्दी तो हिन्दी उर्दू में समझाना भी कभी कभी दुश्वार होता है और उनको समझने के लिए इल्मे दीन की अच्छी मालूमात और किसी आलिमे दीन से समझने की सख़्त ज़रूरत है।

इसलिए आपको मेरा यह मशवरा है कि किसी अच्छे सुन्नी सहीहुल अक़ीदा आलिमे दीन से उन बातों की गहराईयों को समझ लें जो हम आपको न समझा पाए। ख़ास तौर पर ग़ौसे पाक की तालीमात और उनकी तक़रीरों को या तो आप बार बार पढ़ कर समझ पायेंगे या आपको किसी सुन्नी सहीहुल

अक़ीदा आलिम से पूछने की ज़रूरत होगी। आपकी और ज़्यादा आसानी के लिए हमने जगह जगह ब्रेकिट में मअना लिखे हैं और साथ ही मुश्किल अलफ़ाज़ के मअना और इस्तिलाह भी आख़िर में दिए हैं।

इस किताब को आप तक पहुँचाने में हज़रत मौलाना मौलवी मुहम्मद शरीफ़ नूरी साहब ने मेरे साथ बहुत मेहनत की और अगर वह मेरे साथ बराबर लगे न होते तो मैं इस अन्दाज़ से इस किताब को आप तक नहीं पहुँचा सकता था। मैं उनका तहे दिल से शुक्रगुज़ार हूँ और चाहता हूँ कि वह मेरा साथ इसी तरह देते रहें।

हमने अपनी जानिब से पूरी कोशिश की है कि किताब में कोई ग़लती न रहे उसके बावुजूद अगर आपको कोई ग़लती किताबत की या इल्मी नज़र आए तो हमें लिखें हम आपके शुक्रगुज़ार रहेंगे और इन्शाअल्लाह तआ़ला उसे अगले एडीशन में सही कर देंगे।

आख़िर में आप से वही पुरानी बात कहनी है कि हिन्दी की किताबों का इन्तिज़ार न करके उर्दू या फिर अरबी फ़ारसी भी सीखें और अपने इल्मे दीन को बढ़ायें। यूँ भी अपनी ज़रूरत का इल्मे दीन सीखना क़तअन फ़र्ज़ है। आपसे गुज़ारिश है कि मेरे हक़ में दुआ करते रहें कि मैं इसी तरह से आने वाली नस्ल के लिए आसान किताबें आसान ज़बान में उनकी ज़रूरत के लिए लिखता रहूँ।

शुक्रिया

मुहम्मद अहमद
13, मुहर्रम 1424 हिजरी
मुताबिक़ 17, मार्च 2003

वाह क्या मरतब ऐ ग़ौस है बाला तेरा

वाह क्या मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊँचे ऊँचों के सरों से क़दम आला तेरा
सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आंखें वह है तलवा तेरा
क्या दबे जिस पे हिमायत का हो पंजा तेरा
शेर को ख़तरे में लाता नहीं कुत्ता तेरा
तू हुसैनी हसनी क्यूँ न मुहियुद्दीं हो
ऐ ख़िज़्र मजमए बहरैन है चश्मा तेरा
क़समें दे दे के खिलाता है पिलाता है तुझे
प्यारा अल्लाह तेरा चाहने वाला तेरा
मुस्तफ़ा के तने बे साया का साया देखा
जिसने देख मेरी जाँ जलवए ज़ेबा तेरा
इब्ने ज़हरा को मुबारक हो उरूसे कुदरत
क़ादिरी पाये तसद्दुक़ मेरे दूल्हा तेरा
क्यूँ न क़ासिम हो कि तू इब्ने अबिल क़ासिम है
क्यूँ न क़ादिर हो कि मुख़्तार है बाबा तेरा
नबवी मेंह अलवी फ़स्ल बतूली गुलशन
हसनी फूल हुसैनी है महकना तेरा
नबवी ज़िल्ल अलवी बुर्ज बतूली मंज़िल
हसनी चाँद हुसैनी है उजाला तेरा
नबवी ख़ुर अलवी कोह बतूली मादन
हसनी लाल हुसैनी है तजल्ला तेरा
बहरो बर शहरो क़ुरा सहलो हज़न दश्तो चमन
कौन से चक पे पहुँचता नहीं दावा तेरा
हुस्ने नियत हो ख़ता फ़िर कभी करता ही नहीं
आज़माया है यगाना है दोगाना तेरा

अर्ज़े अहवाल की प्यासों में कहाँ ताब मगर
आँखें ऐ अब्रे करम तकती हैं रस्ता तेरा
मौत नज़दीक, गुनाहों की तहें, मैल के ख़ोल
आ बरस जा कि नहा धो ले ये प्यासा तेरा
आब आमद वह कहे और मैं तयम्मुम बरख़ास्त
मुश्ते ख़ाक अपनी हो और नूर का अहला तेरा
जान तो जाते ही जाएगी क़ियामत ये है
कि यहाँ मरने पे ठहरा है नज़ारा तेरा
तुझसे दर, दर से सग और सग से है मुझको निसबत
मेरी गर्दन में भी है दूर का डोरा तेरा
इस निशानी के जो सग हैं नहीं मारे जाते
हश्र तक मेरे गले में रहे पट्टा तेरा
मेरी क़िस्मत की क़सम खायें सगाने बग़दाद
हिन्द में भी हूँ तो देता रहूँ पहरा तेरा
तेरी इज़्ज़त के निसार ऐ मेरे ग़ैरत वाले
आह सद आह कि यूँ ख़्वार हो बर्दा तेरा
बद सही चोर सही मुजरिमो नाकारा सही
ऐ वह कैसा ही सही है तो करीमा तेरा
मुझको रुसवा भी अगर कोई कहेगा तो यूंही
कि वही ना वह "रज़ा" बन्दए रुसवा तेरा
हीं "रज़ा" यूँ न बिलक तू नहीं जय्यिद तो न हो
सय्यिदे जय्यिदे हर दहर है मौला तेरा
फ़ख़्रे आक़ा में "रज़ा" और भी एक नज़्मे रफ़ीअ
चल लिखा लायें सनाख़्वानों में चेहरा तेरा

आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمدلله المحی ا لقادرالکبیر المتعال. الذی سقی سیدنا کائنات الوصال. وتوج ملکنابتیجان الکمال. والصلوت والسلام علی نبیناالمصطفی عبدالقادرالعظیم النوال. الغوث الغیب الواھب الامال. والہ وصحبہ خیرصحب وال. وابنہ الجلیل الجمال الجمیل الجلال الذی جعل قدمہ بالا مرالقدیم علی اعناق الرجال. واشھدان لاالہ الااللہ شھادۃ تحصل الامال وتصلح المال. وان محمداعبدہ ورسولہ سیدالسادات ومولی الموال. صلی اللہ تعالی علیہ وسلم علیھم بتواتروتوال الی ابدالابادمن ازل الازال وعلینا معھم یامعدن النوال.

तम्हीद

औलियाए किराम तो दुनिया में बहुत हुए और क़ियामत तक होते ही रहेंगे लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि करामातो कमालात और तसर्रुफ़ात व इख़्तेयारात की बाज़ ख़ुसूसियात के एतबार से हुज़ूर पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को औलियाए किराम की जमाअत में एक ख़ुसूसी इम्तियाज़ हासिल है। यही वजह है कि सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से पहले के औलियाए किराम में से बहुत से बाकमाल और बड़े बड़े कश्फ़ो हाल वाले बुज़ुर्गों ने सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़ाहिर होने की बशारतें दी हैं और सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बाद आने वाले औलिया किराम में से हर एक वली सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की मुक़द्दस दावत का नक़ीब (ख़बर देने वाला) और आपकी तारीफ़ो तौसीफ़ का गुन गाता रहा और तमाम अगले पिछले औलियाए किराम ने

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बलन्द दरजात और करामात के बारे में इस क़द्र किताबें लिखीं हैं कि शायद ही किसी दूसरे वली के बारे में मुस्तनद तहरीरों का इतना बड़ा ज़ख़ीरा मौजूद हो। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बुज़ुर्गी और विलायत इस क़द्र मशहूर और तसलीम की हुई है कि आपके ग़ौसे आज़म होने पर तमाम उम्मत का इत्तेफ़ाक़ है। चुनांचे हज़रत अल्लामा इज़्ज़ुद्दीन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाया करते थे कि किसी वली की करामतें इस क़द्र तवातुर के साथ हम तक नहीं पहुँची हैं जिस क़द्र तवातुर के साथ सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की करामतें बड़े बड़े औलियाए किराम और उलमाए किराम से मन्क़ूल हैं। यही वजह है कि हर दौर के बड़े बड़े उल्माए किराम और औलिया इज़ाम ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इल्मी शान और विलायत के मरतबे की अज़मत का इक़रार किया और आपकी शान में ऐसे ऐसे बेहतरीन अलफ़ाज़ इरशाद फ़रमाए हैं जो सोने के पानी से लिखने के क़ाबिल हैं। नसबी शराफ़त और ख़ानदानी वजाहत के अलावा इल्मी शान इल्मी अज़मत विलायत का कमाल करामत की ज़ियादती सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की यह वह ख़ासुल ख़ास ख़ुसूसियात हैं जो बहुत कम औलियाए किराम को हासिल हुईं। यही वजह है कि बहुत से औलिया अल्लाह अपने अपने दौर में चाँद की तरह चमके और चन्द दिनों उनकी शुहरतो मक़बूलियत का डंका बजता रहा मगर रफ़ता रफ़ता चौद्यवीं के चाँद की तरह उन औलियए किराम के ज़िक्र और शुहरत की रोशनी घटती और कम होती चली गई यहाँ तक कि दुनिया उन औलियाए किराम के नामों को भी भूल गई मगर हज़रते महबूबे सुब्हानी ग़ौसे सम्दानी क़ुतुबे रब्बानी शहबाज़े लामकानी शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को बावुजूदे कि 828 बरस से ज़्यादा का एक लम्बा ज़माना गुज़र गया फिर भी सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की

शुहरत के आफ़ताब को कभी गहन नहीं लगा बल्कि हमेशा आपकी विलायतो करामत का डंका दुनिया जहान में बजता ही रहा और आज भी हुज़ूर ग़ौसे आज़म की अज़मतों और करामतों का आफताब अपनी पूरी आबो ताब के साथ चमक रहा है और इन्शा अल्लाह तआला क़ियामत तक चमकता ही रहेगा। क्या ख़ूब फ़रमाया है सरकारे आलाहज़रत अज़ीमुल बरकत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने

सूरज अगलों के चमकते थे चमक कर डूबे
उफ़ुक़े नूर पे है मेहर हमेशा तेरा

हुज़ूर ग़ौसे आज़म की तशरीफ़ आवरी से मुताल्लिक़ बशारतें

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बशारत

मेराज की रात जब नबीए करीम रऊफ़ व रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बुराक़ पर सवार होकर हज़रते जिब्रीले अमीन अलैहिस्सलाम के साथ रवाना हुए तो सिदरतुल मुन्तहा पर रुक गए और अर्ज़ की ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अब अगर मैं यहाँ से बाल बराबर भी आगे बढ़ू तो अल्लाह तआला की तजल्ली से मेरे पर जल जायेंगे। उसी मक़ाम पर बुराक़ भी रुक गया क्यूँकि सिदरतुल मुन्तहा आलमे मलाकूत और मलाइका की परवाज़ की इन्तिहा (अन्त) है। इस मक़ाम से आगे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमते मुबारका में रफ़रफ़ सवारी के लिए हाज़िर हुआ लेकिन रफ़रफ़ भी बहुत सारे हिजाबात तय कराने के बाद रुक गया क्यूँकि रफ़रफ़ की परवाज़ की यही इन्तिहा थी। अब लाहूत और लामकाँ के सिवा कुछ भी न था। हज़रते सुलतान बाहू रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी किताब नूरुल हुदा में और शैख़ अब्दुल क़ादिर इब्ने मुहीउद्दीन अरबली रहतुल्लाहि तआला अलैह ने अपनी

मशहूर किताब तफ़रीहुल ख़ातिर फ़ी मनाक़िबे शैख़ अब्दुल क़ादिर में लिखा है कि उस मक़ाम पर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु की मुबारक रूह को महबूबी सूरत में हुज़ूर नबीए करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर किया गया। नबीए करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के क़दमों के नीचे हुज़ूर ग़ौसे आज़म की महबूबी सूरत ने अपनी गर्दन पेश की और सवारी की हैसियत से सरकारे दो आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को मक़ामे ख़ास क़ाबा क़ौसैन औ अदना तक पहुँचा दिया। नबीए करीम सय्यिदुल मुरसलीन स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने उस मक़ामे नूर में अल्लाह तआ़ला से अर्ज़ की कि यह कौन है जिससे मेरी आंखें ठंडी हो रही हैं। अल्लाह तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया ऐ ह़बीब तुम्हें मुबारक हो कि यह मुहीउद्दीन शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी की रूह है जो तुम्हारी उम्मत के एक वलीए कामिल और तुम्हारी औलाद से होंगे। उस वक़्त नबीए अकरम नूरे मुजस्सम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इन्तिहाई शफ़क़त से फ़रमाया ऐ नूरे नज़र चश्मे बसर मुहीउद्दीन जैसा कि तूने अपनी गर्दन मेरे क़दमों के नीचे पेश की कल तू अल्लाह के हुक्म से कहेगा मेरा यह क़दम अल्लाह के हर वली की गर्दन पर है और मेरी उम्मत के तमाम औलिया अपनी गर्दनें तेरे क़दम के नीचें पेश करेंगे। तफ़रीहुल ख़ातिर में इतना और है कि जब हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु पैदा हुए तो आपकी मुबारक गर्दन पर हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के क़दम शरीफ़ का निशान मौजूद था। इस वाक़िया से मालूम हुआ कि हुज़ूर नबीए करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को जब जिस्मानी और रूहानी मेराज हासिल हुई तो आपके साथ में और आपके सदक़े में हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु को रूहानी मेराज हासिल हुई और हुज़ूर ग़ौसे आज़म क़ाबा क़ौसैन औ अदना के भेद से भी वाक़िफ़ हुए जैसा कि सुलतानुल हिन्द

हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ चिश्ती रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने हुज़ूर ग़ौसे पाक की शान में अपनी एक मनक़बत में इसी वाक़िया की तरफ़ इशारा करते हुए हुज़ूर ग़ौसे आज़म की बारगाह में अर्ज़ करते हैं :-

दर शरअ बग़ायत्त पुरकारी चालाक चू जाफ़र तय्यारी
बर अर्शे मुअल्ला सय्यारी ऐ वाक़िफ़े राज़े औ अदना

तर्जमा : (यानी ऐ ग़ौसे आज़म) आप शरीअत की कामिल इत्तिबा करने वाले और हज़रते जाफ़र तय्यार की तरह होशयार हैं। आप अर्श पर सैर फ़रमाने वाले और औ अदना के भेद से वाक़िफ़ हैं।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने इसी बात की तरफ़ निशानदेही फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया "मैं बलन्दियों में नूरे मुहम्मदी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ था और क़ाबा क़ौसैन में प्यारों का मिलाप था। सफ़ेद मोती यानी लौहे महफ़ूज़ के सामने हमारा इज्तिमा था और क़ाबा क़ौसैन में प्यारों का मिलाप था।"

हज़रते इमाम जाफ़र सादिक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु

हज़रते इमाम जाफ़र सादिक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु ने कश्फ़ुल ग़ुयूब किताब में तहरीर फ़रमाया है कि जुमा की रात ग्यारह रजब हिजरी 140 में क़ुर्आन शरीफ़ की तिलावत और दुरूद शरीफ़ में मैं मशग़ूल था। तक़रीबन आधी रात ख़त्म हो चुकी थी मुझ पर नींद का ग़लबा शुरू हुआ। मैंने बहुत कोशिश की कि मामूल के मुताबिक़ तिलावत कर ली जाए मगर ऐसा न हो सका। मजबूरन मेरी तवज्जोह कश्फ़े बातिन की तरफ़ हुई। उस वक़्त इलहाम हुआ कि इस वक़्त तिलावत छोड़ कर सो जाओ। चुनांचे मैं सो गया तो उसी हालत में आलमे मलाकूत (फ़िरिश्तों की दुनिया) ज़ाहिर हुआ और जल्द ही आलमे मलाकूत से आलमे जबारूत की तरफ़ मुन्तक़िल हो गया तो ख़्वाब में एक बाग़ मुझे नज़र आया जिसके हर दरख़्त पर मुझे तजल्लियाँ नज़र आ रही थीं। कुछ फ़िरिश्ते तस्बीह पढ़ रहे थे। बहुत से अम्बियाए किराम और औलियाए किराम की

मुक़द्दस रूहें मौजूद थीं। मैं उन्हीं हालात के देखने में लगा हुआ था कि हज़रते अनस इब्ने मालिक सहाबी रदियल्लाहु तआला अन्हु मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया कि सरकारे दो जहाँ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आपके इन्तेज़ार में हैं। मैं सरकार सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ। वहाँ एक बड़े मैदान में एक शानदार ख़ेमा मौजूद था और उस मैदान के बीच में एक तख़्त बिछा हुआ था जिस पर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जलवा फ़रमा थे। मुझे देख कर सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ मेरे नूरे नज़र बहुत जल्द तुम हमारे पास आने वाले हो जो वाक़िया तुम्हारे देखने में आ रहा है उसे दुनिया में लिख देना। यह इरशादे आली सुनकर मैं आदाब बजा लाया। फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुझे अपने क़रीब बैठने का हुक्म फ़रमाया तो मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के क़रीब बैठ गया। कुछ देर के बाद दो रूहें सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तख़्त के क़रीब आईं। एक रूह का रंग हीरे की तरह चमकदार था और दूसरी रूह का रंग जो पीछे थी याक़ूत की तरह था। पहली रूह को हुज़ूर ने अपने सीधे ज़ानू पर बैठा लिया और दूसरी रूह को अपने बायें ज़ानू पर बैठाया फिर हूज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने पहली रूह के मुताल्लिक़ इरशाद फ़रमाया इसका नाम दुनिया में अब्दुल क़ादिर मुहीउद्दीन होगा इसका मरतबा बहुत बलन्द है इसके असर से मज़हबे इसलाम मज़बूत होगा। फिर दूसरी रूह के मुताल्लिक़ इरशाद फ़रमाया इसका ज़ुहूर अब्दुल क़ादिर के बाद होगा और दुनिया में इसका नाम अली अहमद साबिर होगा। इसके अन्दर शाने जलाल ज़्यादा होगी और यह हक़ के दुश्मनों को बरबाद कर देगा। उसके बाद हज़रते इमाम जाफ़र सादिक़ नींद से बेदार हो गए।

हज़रते उवैस क़रनी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैह

तफ़रीहुल ख़ातिर फ़ी मनाक़िबे शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर किताब में इब्ने मुहीउद्दीन अरबली ने किताब मनाज़िलुल औलिया फ़ी फ़ज़ाएलिल अस्फ़िया के हवाले से लिखा है कि हुज़ूर सय्यिदे आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म और हज़रते अली हैदर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा को हज़रते उवैस क़रनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के पास जाने की वसीयत फ़रमाई और फ़रमाया कि तुम दोनों उवैस क़रनी को मेरा सलाम कहना और मेरा जुब्बा देकर कहना कि वह मेरी उम्मत की बख़्शिश के लिए दुआ करे। चुनांचे जब हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म और हज़रते अली हैदर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा हज़रते उवैस क़रनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के पास गए और हुज़ूर सय्यिदे आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का फ़रमान सुनाया तो हज़रते उवैस क़रनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने सिजदे में सर रख कर उम्मते मुहम्मदिया स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बख़्शिश के लिए दुआ मांगनी शुरू की। निदा आई कि अपना सर उठा ले क्यूँकि मैंने तेरी शफ़ाअत से अपने महबूब की आधी उम्मत को बख़्श दिया और आधी उम्मत को अपने महबूबे आज़म के लाडले फ़र्ज़न्द ग़ौसे आज़म अ़ब्दुल क़ादिर जो मेरा भी महबूब है उसकी शफ़ाअत से बख़्शूंगा जो तेरे बाद पैदा होगा। हज़रते उवैस क़रनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने अर्ज़ किया कि ऐ परवरदगार तेरा वह महबूब बन्दा कौन है और कहाँ है कि मैं उसकी ज़ियारत करूँ। निदा आई कि فِىْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ٥ (तर्जमा : सच की मजलिस में अज़ीम क़ुदरत वाले बादशाह के हुज़ूर ---- यानी अल्लाह तआ़ला की बारगाह में हाज़िर है) के मक़ाम पर है। वह मेरा महबूब है और मेरे महबूबे आज़म मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का भी महबूब है। वह क़ियामत तक के लिए ज़मीन वालों के लिए हुज्जत होगा (यानी जिसको देख

कर यह मालूम हो कि कायनात का कोई पैदा करने वाला है) और सहाबए किराम और अइम्मए इज़ाम के इलावा तमाम अगले और पिछले औलिया की गर्दनों पर उसका क़दम होगा और जो उसे क़बूल करेगा मैं उसको दोस्त रखूंगा। हज़रते उवैस क़रनी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैह ने यह सुनकर अपनी गर्दन झुका दी और अर्ज़ किया ऐ परवरदगार मैं भी उसे क़बूल करता हूँ।

हज़रते हसन बिसरी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैह

मुहम्मद इब्ने अहमद सईद इब्ने ज़रीउज़्ज़ुन्जानी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैह ने अपनी क़िताब रौज़तुन्नवाज़िर व नुज़हतुल ख़वातिर के छटे बाब में उन औलियए किराम का ज़िक्र फ़रमाया जिन्होंने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु की ग़ौसियत के मरतबा की शहादत दी है। मुहम्मद इब्ने अहमद सईद बयान करते हैं कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु से पहले औलिया अल्लाह में से कोई भी सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु का मुन्किर न था बल्कि उन औलिया किराम ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु की आमद आमद की ख़ुशख़बरी दीं उन्हीं में से हज़रते हसन बिसरी रहमतुल्लाहि तआला अ़लैह जिन्होंने अपने ज़माने से लेकर सरकारे ग़ौसे आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी बग़दादी रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु के ज़मानए मुबारक तक साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में बयान फ़रमा दिया है कि जितने भी औलिया अल्लाह गुज़रे हैं सभी ने सरकारे ग़ौसे आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी बग़दादी रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु की बशारत दी हैं। (तफ़रीहुल ख़ातिर)

हज़रते इमाम हसन असकरी रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु

शैख़ अबू मुहम्मद बताएही का बयान है कि हज़रते इमाम हसन असकरी रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने अपने विसाल के वक़्त अपना जुब्बा मुबारका हज़रते शैख़ मारूफ़ कर्ख़ी रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु के सिपुर्द करके वसीयत फ़रमाई कि

यह जुब्बा शरीफ़ महबूबे सुबहानी शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी तक पहुँचा देना जो मेरे बाद पांचवी सदी हिजरी के आख़िर में एक बहुत बड़े वली होंगे। हज़रते शैख़ मारूफ़ कर्ख़ी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने वह जुब्बा मुबारका हज़रते जुनैद बग़दादी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तक पहुँचाया और हज़रते जुनैद बग़दादी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने शैख़ दिनोरी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के सिपुर्द किया। इस तरह हज़रते इमाम हसन असकरी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का वह जुब्बा मुबारका अमानत के तौर पर एक बुज़ुर्ग से दूसरे बुज़ुर्ग तक पहुँचते हुए एक आरिफ़े बिल्लाह के ज़रिए शव्वालुल मुकर्रम हिजरी 497 में सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तक पहुँच गया यानी हक़ हक़दार को मिल गया।

(किताब मख़ज़नुल क़ादिरिया)

सय्यिदुत्ताइफ़ा हज़रते जुनैद बग़दादी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

शैख़ुल मशाइख़ हज़रते जुनैद बग़दादी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जो हुज़ूर ग़ौसे आज़म से दो सौ साल पहले गुज़रे हैं एक दिन मुरक़बा में थे कि अचानक उन्होंने सरे मुबारक उठाया और फ़रमाया कि मुझे आलमे ग़ैब से मालूम हुआ है कि पांचवी सदी हिजरी में सय्यिदुल मुरसलीन ख़ातमुन्नबीय्यीन अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीम की औलादे पाक में एक .कुतुबे आलम होगा जिनका लक़ब मुहीउद्दीन होगा और नामे मुबारक सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर होगा और वह ग़ौसे आज़म होगा और उनकी पैदाइश गीलान में होगी और उनको यह हुक्म होगा कि एलान कर दें तमाम अगले और पिछले औलिया अल्लाह की गर्दन पर मेरा क़दम है।

हज़रते अबूबक्र इब्ने हुवारा बताएही

क़लाएदुल जवाहिर किताब के मुसन्निफ़ हज़रत अल्लामा शैख़ मुहम्मद इब्ने यहया हम्बली का बयान है कि मशहूर बुज़ुर्ग हज़रते अबूबक्र इब्ने हुवारा बताएही रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जिनकी मशहूर करामत यह है कि हज़रते अमीरुल मोमिनीन

जानशीने रहमतुल्लिल आलमीन अबूबक्र सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इनको ख़्वाब में अपना ख़िर्क़ा शरीफ़ पहनाया और जब यह बुज़ुर्ग बेदार हुए तो ख़िर्क़ा मौजूद पाया और जिनका यह इरशादे गिरामी है कि जो शख़्स चालीस बुध को मुसलसल मेरी क़ब्र की ज़ियारत करेगा वह जहन्नम से आज़ाद होगा और जो मेरे रौज़े में दाख़िल हो गया उसको आग नहीं छुएगी। चुनांचे अब भी हज़रते अबूबक्र इब्ने हुवारा की यह करामत है कि आपकी क़ब्र के पास गोश्त और मछली न पक सकती है न भुन सकती है। इन्ही हज़रते अबूबक्र इब्ने हुवारा बताएही ने बरसों पहले यह ग़ैब की ख़बर दी थी कि इराक़ में आठ औलियाए विलायत के औताद के दर्जे पर फ़ाइज़ होंगे जिनके नाम यह हैं ----- मारूफ़ कर्ख़ी, अहमद इब्ने हम्बल, बिश्र हाफ़ी, मन्सूर इब्ने अम्मार, जुनैदे बग़दादी, सरी सक़ती, सुहैल इब्ने अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी और अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी। जब लोगों ने दरयाफ़्त किया कि हुज़ूर यह अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी कौन हैं तो हज़रते अबूबक्र इब्ने हुवारा ने फ़रमाया कि यह एक अजमी सय्यिद हैं यह गीलान में पैदा होंगे और बग़दाद इनका ठिकाना होगा और पांचवीं सदी हिजरी में इनका ज़ुहूर होगा और वह विलायत के मक़ामें फ़रदियत की ऐसी बलन्द मंज़िल पर फ़ाएज़ होंगे कि एक दिन वह मिम्बर पर अलल एलान फ़रमायेंगे कि मेरा यह क़दम तमाम औलियाए अल्लाह की गर्दन पर है तो तमाम गुज़रे हुए और मौजूदा औलिया किराम अदब से अपनी अपनी गर्दनें झुका कर अर्ज़ करेंगे कि ऐ ग़ौसे आज़म बल्कि आपका क़दमे मुबारक हमारे सर और हमारी आंखों पर है। इसी तरफ़ इशारा करते हुए हज़रते मौलाना जमीलुर्रहमान रज़वी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने फ़रमाया है :-

जो फ़रमाया कि दोशे औलिया पर है क़दम मेरा
लिया सर को झुका कर सबने तलवा ग़ौसे आज़म का

ग़ौसे वक़्त की पेशीनगोई

हज़रते इमाम अबू सईद अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबू असरून शाफ़ेई ने बयान फ़रमाया कि मैं बग़दाद में इल्म हासिल करने के लिए गया। इब्ने सक़ा मदरसा निज़ामिया में मेरे साथ पढ़ा करता था। हम लोग इबादत करते थे और बुज़ुर्गों की ज़ियारत करते थे। बग़दाद में एक साहब को ग़ौस कहा जाता था और उनकी यह करामत मशहूर थी कि जब चाहें ज़ाहिर हो जायें और जब चाहें छुप जायें। एक दिन मैं और इब्ने सक़ा और अपनी नौ उम्री की हालत में हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ज़ीलानी तीनों उन ग़ौसे वक़्त की ज़ियारत को गए। रास्ते में इब्ने सक़ा ने कहा आज उनसे ऐसा सवाल करूंगा जिसका जवाब उन्हें नहीं आएगा। हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने असरून कहते हैं कि मैंने भी कहा कि मैं भी एक मसअला पूछूंगा देखें कि क्या जवाब देते हैं। हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर .कुद्दिसा सिर्रहुल आ़ली ने फ़रमाया मआज़ अल्लाह (अल्लाह की पनाह) कि मैं उनके सामने उनसे कुछ पूछूँ मैं तो उनके दीदार की बरकतों का मुन्तज़िर रहूंगा। जब हम उस ग़ौसे वक़्त के यहाँ हाज़िर हुए तो उनको अपनी जगह न देखा। थोड़ी देर में देखा तशरीफ़ फ़रमा हैं। इब्ने सक़ा की तरफ़ ग़ुस्से से देखा और फ़रमाया तेरी ख़राबी ऐ इब्ने सक़ा तू मुझसे ऐसा सवाल करेगा जिसका मुझे जवाब न आए तेरा सवाल यह है और उसका जवाब यह है बेशक मैं कुफ़्र की आग तुझमें भड़कती देख रहा हूँ। फिर मेरी (यानी हज़रते अ़ब्दुल्लाह की) तरफ़ नज़र की और फ़रमाया कि तुम मुझसे मसअला पूछोगे कि देखो मैं क्या जवाब देता हूँ तुम्हारा मसअला यह है और उसका जवाब यह है ज़रूर तुम पर दुनिया इतना गोबर करेगी कि कान की लौ तक उसमें डूबोगे यह बदला है तुम्हारी बेअदबी का। फिर हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर की तरह नज़र की और हुज़ूर (ग़ौसे आज़म) को अपने नज़दीक किया और उनकी इज़्ज़त की और फ़रमाया ऐ अ़ब्दुल क़ादिर बेशक आपने अपने अच्छे अदब से अल्लाह

व रसूल को राज़ी किया। गोया मैं इस वक़्त देख रहा हूँ कि आप बग़दाद के मजमे में कुर्सी पर वाज़ फ़रमाने के लिए तशरीफ़ ले गए और फ़रमा रहे हैं कि मेरा यह पांव हर वलीयुल्लाह की गर्दन पर है और तमाम औलियाए वक़्त ने आपकी ताज़ीम के लिए गर्दनें झुकाई हैं। वह ग़ौस यह फ़रमा कर हमारी निगाहों से ग़ायब हो गए फिर हमने उन्हें न देखा। हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर तो विलायत और इज़्ज़त के निशान ज़ाहिर हुए कि वह अल्लाह तआ़ला की नज़दीकी में हैं ख़ासो आम उन पर जमा हुए और उन्होंने फ़रमाया मेरा यह पांव हर वलीयुल्लाह की गर्दन पर है और औलियाए वक़्त ने उनके लिए गर्दनें झुका दीं और उनके फ़रमान का इक़रार किया और इब्ने सक़ा एक नसरानी बादशाह की ख़ूबसूरत बेटी पर आशिक़ हुआ, उससे निकाह की दरख़्वास्त की बादशाह नसरानी होने की शर्त पर अपनी बेटी देने के लिए तैयार हो गया। चुनांचे इब्ने सक़ा ख़बीस नसरानी हो गया (मआज़ अल्लाह), रहा मैं (यानी हज़रते अ़ब्दुल्लाह) तो मेरा दमिश्क़ जाना हुआ और वहाँ सुलतान नूरुद्दीन ने महकमए वक़्फ़ का अफ़सर बना दिया और दुनिया बहुत ज़्यादा मेरी तरफ़ आई। उन ग़ौस का इरशाद हम सबके बारे में जो कुछ था सच हुआ।

हज़रते ताजुल आरिफ़ीन और हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा

शैख़ अबुल हसन और शैख़ माजिद कुर्दी का बयान है कि एक मरतबा ताजुल आरिफ़रीन हज़रते अबुल वफ़ा मुहम्मद काकेस रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बग़दाद शरीफ़ में मिम्बर पर बैठ कर लोगों को वाज़ो नसीहत फ़रमाया करते थे। सरकारे ग़ौसे आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी बग़दादी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के तालिबे इल्मी का ज़माना था। एक मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हज़रते ताजुल आरिफ़ीन के वाज़ की मजलिस में तशरीफ़ ले गए जैसे ही सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु वाज़ की मजलिस

में पहुँचे और हज़रते ताजुल आरफ़ीन की नज़र आप पर पड़ी तो फ़ौरन हज़रते ताजुल आरिफ़ीन ने लोगों को हुक्म दिया कि इस लड़के को मजलिस से बाहर कर दो। कुछ लोगों ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु को बाहर कर दिया मगर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु बिल्कुल रंजीदा नहीं हुए बल्कि वाज़ की मजलिस में फिर दोबारा हाज़िर हो गए। हज़रते ताजुल आरिफ़रीन ने फिर हुक्म दिया कि इस लड़के को मजलिस से बाहर कर दो। लोगों ने फिर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु को बाहर कर दिया और लोग सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु की तरफ़ हैरत से देखने लगे कि यह अजीब लड़का है कि बार बार मजलिस से निकाला जाता है मगर फिर आ जाता है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु अब भी रंजीदा ने हुए बल्कि फिर मजलिस में आ गए। अब हज़रते ताजुल आरिफ़रीन रह़मतुल्लाहि तआला अ़लैह ने लोगों से फ़रमाया ऐ लोगो इस मुबारक लड़के को मेरे पास लाओ। चुनांचे लोगों ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु को पकड़ कर मिम्बर के पास ले गए। उस वक़्त हज़रते ताजुल आरिफ़रीन रह़मतुल्लाहि तआला अ़लैह ने लोगों से मुख़ातब होकर फ़रमाया कि ऐ लोगो मैंने जो इस लड़के को अपनी मज़लिस से दो बार निकलवाया तो ज़लील करने की वजह से नहीं निकलवाया बल्कि इस लिए निकलवाया ताकि तुम ख़ूब जान लो और पहचान लो कि यह कौन हैं ऐ बग़दाद वालो अल्लाह के इस अज़ीमुश्शान वली के लिए अदब के साथ खड़े हो जाओ क्यूँकि यही वह हैं जिनको मेरे बाद .कुतबियत का दर्जा दिया जाएगा, मुझे रब तआला की इज़्ज़तो बुज़ुर्गी की क़सम है इनके सर पर ह़क़ की तजल्ली है जिसकी किरने पूरब और पश्चिम से भी आगे बढ़ गई हैं फिर हज़रते ताजुल आरिफ़ीन ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु को मुख़ातब करके फ़रमाया कि ऐ बेटा अ़ब्दुल क़ादिर अब वक़्त हमारे लिए है आइन्दा वक़्त तुम्हारे लिए हो

जाएगा और ऐ बेटा अ़ब्दुल क़ादिर मेरी आंखें देख रही हैं कि तुम बग़दाद शरीफ़ में वाज़ कह रहे हो और तुम अपने वाज़ के दरमियान यह ऐलान कर रहे हो कि मेरा यह क़दम तमाम औलिया अल्लाह की गर्दन पर है तो तुम्हारे इस ऐलान पर तमाम औलियाए किराम ने अदब के साथ अपनी अपनी गर्दनों को झुका दिया। बाज़ रिवायात में यह भी आया है कि हज़रते ताजुल आरिफ़रीन रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने फ़रमाया कि ऐ बेटा अ़ब्दुल क़ादिर हर मुर्ग़ बोलता है और चुप हो जाता है मगर तुम्हारा मुर्ग़ क़ियामत तक बोलता ही रहेगा यानी तुम्हारा सिलसिला क़ियामत तक चलता रहेगा। फिर हज़रते ताजुल आरिफ़रीन रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने अपना मुसल्ला, क़मीज़, तसबीह, प्याला और असा इनायत फ़रमाया। हज़रते ताजुल आरिफ़रीन रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह से अर्ज़ किया गया कि आप इन्हें बैअत कर लें तो हज़रते ताजुल आरिफ़रीन रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने फ़रमाया कि इनकी पेशानी पर हज़रते अबू सईद महज़मी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का हिस्सा लिख दिया गया है।

सिलसिलए नसब आबाए किराम

सय्यिदुना ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का सिलसिलए नसब वालिदे माजिद सय्यिद अबू सालेह मूसा जंगी दोस्त रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से सरकार इमाम हसन मुजतबा रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु तक ये है :-

सय्यिदुना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी ग़ौसे आज़म इब्ने सय्यिद अबू सालेह मूसा जंगी दोस्त इब्ने सय्यिद अबू अब्दुल्लाह इब्ने सय्यिद यहया ज़ाहिद इब्ने सय्यिद मुह़म्मद इब्ने सय्यिद वाह़िद इब्ने सय्यिद मूसा सानी इब्ने सय्यिद मूसा बिन अब्दुल्लाह सानी इब्ने सय्यिद अब्दुल्लाह महज़ इब्ने सय्यिद हसन मुसन्ना इब्ने सरकार इमामे हसन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु इब्ने अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना अ़ली मुरतज़ा करमल्लाहु वजहहुल करीम।

वालिदा की तरफ़ से आप हुसैनी थे। सिलसिला यूँ है आपकी वालिदा माजिदा हज़रत उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा बिन्ते सय्यिद अब्दुल्लाह सूमई इब्ने अबू जमाल उद्दीन इब्ने सय्यिद मुहम्मद इब्ने सय्यिद अबुल अताअ इब्ने सय्यिद कमाल उद्दीन ईसा इब्ने सय्यिद अलाउद्दीन अल जवाद इब्ने इमाम अली रज़ा इब्ने इमाम मूसा काज़िम इब्ने इमाम जाफ़र सादिक़ इब्ने इमाम मुहम्मद बाकिर इब्ने इमाम जैनुल आबेदीन इब्ने सय्यिदुश्शुहदा सरकार इमामे हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हुम इब्ने सय्यिदुना अली करमल्लाहु तआला वजहहुल करीम।

हालाते मुबारका हज़राते आबाए किराम

हज़रते सय्यिद अबू सालेह मूसा जंगी दोस्त रदियल्लाहु तआला अन्हु

आप सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु के वालिदे मुहतरम हैं। 'जंगी दोस्त' लक़ब होने की वजह "क़लाएदुल जवाहिर" में यह बताई गई है कि आप जंग को दोस्त रखते थे, "रियाज़ुल हयात" में इस लक़ब की तशरीह यह बताई गई है कि आप अपने नफ़्स से हमेशा जिहाद फ़रमाते थे और नफ़्सकुशी को नफ़्स को पाक करने का ज़रिया समझते थे। चुनांचे इस नफ़्स के मुजाहदे के लिए आपने एक साल तक के लिए खाना पीना तर्क फ़रमा दिया था। एक साल गुज़र जाने के बाद जब ज़रा ख़्वाहिश महसूस हुई तो एक शख़्स ने उम्दा ग़िज़ा और ठंडा पानी लाकर पेश किया। आपने इस हदिया को क़बूल फ़रमा लिया लेकिन फ़ौरन फ़क़ीरों को बुला कर उसे तक़सीम फ़रमा दिया और अपने को मुख़ातब करके फ़रमाया कि तेरे अन्दर अभी ग़िज़ा की ख़्वाहिश पाई जाती है, तेरे वास्ते तो नाने जौ और गर्म पानी भी बहुत है। इसी हालत में हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम तशरीफ़ फ़रमा हुए और फ़रमाया आप पर सलाम हो ख़ुदाए क़दीर ने आपके लक़ब को जंगी और आपको अपना दोस्त बना लिया है और मुझे यह हुक्म दिया है कि

मैं आपके साथ इफ़्तार करूँ। हज़रते ख़िज्र अलैहिस्सलाम के साथ जिस क़द्र खाना था उसी को दोनों हज़रात ने तनावुल फ़रमाया, तभी से आपका लक़ब 'जंगी दोस्त' हो गया। मूसा आपका इस्म शरीफ़ है, अबू सालेह कुन्नियत। आपका चेहरए मुबारक देखकर अल्लाह की याद आती थी।

जिस महफ़िल में आप रौनक़ अफ़रोज़ होते वह महफ़िल मुनव्वर हो जाती, ज़बान में बहुत ही फ़साहत और शीरीनी थी, जब तक आप वाज़ का सिलसिला जारी रखते लोग जुम्बिश न करते, अकसर आप फ़रमाया करते थे :-

"मैं ख़ुदा का बन्दा हूँ अल्लाह के बन्दों को महबूब रखता हूँ। रब तबारक व तआला से हमेशा डरते रहो, शरीअत के ख़िलाफ़ काम करने से हमेशा बचते रहो। जब किसी महफ़िल में हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नाम नामी इस्मे गिरामी आ जाए तो दुरूद शरीफ़ का नज़राना पेश करो। किसी वक़्त अल्लाह तआला को न भूलो हर हाल में परवरदगारे आलम को समीअ (सुनने वाला) और बसीर (देखने वाला) जानो"

आपके दौर में अलक़ादिर बिल्लाह अबुल अब्बास और अल क़ाइम बिअमरिल्लाह अबू जाफ़र अब्बासी ख़ुलफ़ा बग़दाद के तख़्त पर अमीरुल मुमिनीन की हैसियत से एक के बाद एक बैठे थे।

हज़रते सय्यिद अबू अब्दुल्लाह रदियल्लाहु तआला अन्हु

आप इन्तेहाई आबिद और ज़ाहिद बाअख़्लाक़ सख़ी और फ़ैज़ और करामत का सर चश्मा थे। अभी उम्र शरीफ़ को नौ ही साल हुए थे और तफ़सीरे क़ुरआन का दर्स ले रहे थे कि उसताद ने هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ की तफ़सीर बयान करना शुरू की तो आपने सवाल किया कि मुत्तक़ियों को ख़ुदाए बरतर की बारगाह से क्या-क्या इनामात दिए जायेंगे। उस्ताद ने जवाब दिया मुत्तक़ी हज़रात रज़ाए मौला की सनद लेकर जन्नत में दाख़िल होंगे और जन्नत की लज़्ज़तों से हमेशा जन्नत में राहत

पायेंगे। ख़ुदाए तआला की नज़दीकी के मर्तबे में डूबे रहेंगे। उस्तादे मुहतरम के इस जवाब से आप पर एक ख़ास कैफ़ियत तारी हो गई और फ़रमाया

"अफ़सोस है मख़लूक़ के हाल पर कि उन रहमतों का इल्म होने के बावुजूद परहेज़गारी का रास्ता नहीं इख़्तियार करते और अल्लाह के इताअत गुज़ार नहीं बन जाते"

आपकी महफ़िले वाज़ में हज़ारों आदमियों का मजमा हुआ करता था जिसमें हर दीन और मज़हब के लोग शरीक होते थे। सुलहा (नेक लोग), आरिफ़ बिल्लाह, और औलियाए किराम भी उन पाकीज़ा महफ़िलों में शरीक होते थे। आप हर वक़्त ज़िक्रे इलाही में मसरूफ़ रहते थे اَنْتَ الْهَادِیْ اَنْتَ الْحَقُّ لَیْسَ الْهَادِیْ اِلَّا هُوَ आपका ख़ास विर्द था। जिसका तर्जमा यह है कि तू हिदायत करने वाला है तू ही हक़ है। नहीं है कोई हिदायत करने वाला मगर वह।

एक रोज़ एक शिकस्ता हाल जुज़ामी (कोढ़ी) ने कुछ दूर से आपको आवाज़ दी अबू अब्दुल्लाह मिस्कीनों ग़रीबों मुहताजों की जानिब भी निगाहे लुत्फ़ो करम कीजिए। आप उसके क़रीब तशरीफ़ ले गए और ख़ुदाए क़ादिर व क़दीर की बारगाह में उसके लिए दुआए सेहत फ़रमाई। आपकी फ़ैज़बख़्श दुआ से वह जुज़ामी सेहतयाब हो गया।

माहे रबीउस्सानी शरीफ़ हिजरी 473 में आपका विसाल हुआ, आप हनफ़ी थे, आपने दो शादियाँ कीं एक बीबी फ़ातिमा बिन्ते सय्यिद अब्दुल्लाह इब्ने सय्यिद अली असग़र इब्ने जाफ़र सादिक़ सानी इब्ने इमाम अली नक़ी के साथ जिनके शिकम से हज़रते अबू सालेह मूसा जंगी दोस्त और उनके अलावा चार बेटे और पैदा हुए लेकिन हुज्जतुल बैज़ार की रिवायत से यह पता चलता है कि अबू सालेह और अब्दुल वह्हाब सिर्फ़ यही दो बेटे पैदा हुए। दूसरी शादी बीबी रहमत के साथ हुई जिनके शिकम से एक लड़का और एक लड़की जुड़वाँ पैदा हो कर पन्द्रहवें दिन फ़ौत हो गए।

हज़रते सय्यिद यहया ज़ाहिद रदियल्लाहु तआला अन्हु

अबू अली आपकी कुन्नियत है और लक़ब ज़ाहिद और नक़ी है। आप मादरज़ाद वली थे। बचपन ही में आप बुरी बातों से दूर रहते थें, छः साल की उम्र शरीफ़ में तालीम की ग़रज़ से आप उस्ताद के पास पहुँचे तो जिस क़द्र उस्ताद बताते जाते थे आप उससे आगे पढ़ते हुए गुज़रते जाते थे उस्ताद को बड़ी हैरत होती थे। आख़िर एक दिन उस्ताद ने अपनी इस हैरत का इज़हार कर ही दिया तो आपने जवाब दिया आप मुअल्लिम (पढ़ाने वाले) हैं और मैं मुताअल्लिम (पढ़ने वाला) हूँ। हज़रते इब्ने जरीह ने तो माँ के पेट ही में गुफ़्तगू की थी मेरी उम्र तो छः साल की है, ख़ुदाए क़दीर की देन और अता पर आपको हैरत क्यूँ है :-

ذَالِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاءُ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْم ط

तर्जमा : यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे चाहता है देता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

شب تاریک دوستان خدائے   می بتاید چوں روز رخشندہ

ایں سعادت بزور بازو نیست   تا نہ بخشد خدائے بخشندہ

तर्जमा : अंधेरी रात में अल्लाह तआला के दोस्त दिन के सूरज की तरह चमकते हैं। ये ख़ुशक़िस्मती बाज़ू की क़ुव्वत से नहीं है जब तक कि बख़्शने वाला ख़ुदा न बख़्शे।

उस्तादे गिरामी ने आपकी ज़बान से यह मारिफ़त से भरा कलाम सुनकर उसी दिन से आपको "आरिफ़े बिल्लाह" के ख़िताब से पुकारना शुरू कर दिया। जब आपकी उम्र शरीफ़ पन्द्रह साल की हुई तो नमाज़ को अदा इस पाबन्दी से फ़रमाया कि तमाम उम्र नमाज़े बाजमाअत तर्क न हुई। हर नमाज़ के लिए ताज़ा वुज़ू फ़रमाया करते थे, सुन्नत व नवाफ़िल घर में पढ़ते थे और फ़र्ज़ हमेशा मस्जिद में अदा किया करते थे। हुज्जतुल बैज़ा में बयान किया गया है कि दो साहबज़ादे हज़रते मूसा और सय्यिदुना मूसा अबू अब्दुल्लाह और एक साहबज़ादी का बचपन ही में इन्तेक़ाल हो गया था।

हज़रते सय्यिद मुहम्मद रदियल्लाहु तआला अन्हु

इस्म शरीफ़ मुहम्मद कुन्नियत अबुल क़ासिम शम्सुद्दीन और आबिद लक़ब है। विलादत मुबारक आपकी हिजरी 299 में हुई। आप बड़े मुत्तक़ी और मुतवाज़े (अपने को दूसरों से कम समझने वाला) आबिद, रातों को जागने वाले और ज़ाहिद और सजदा-गुज़ार थे, आपका हुस्ने अख़्लाक़ और हुस्ने गुफ़्तार (अच्छी बात करने वाला) एक था। आपके बेटे सय्यिद यहया फ़रमाते हैं कि इत्तेफ़ाक़ से किसी रात अगर तहज्जुद के वक़्त न बेदार होते तो मैं ग़ैब से एक आवाज़ सुनता

اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ يَا اَبَا الْقَاسِمِ شَمْسَ الدِّيْنِ

तर्जमा : नमाज़ नींद से बेहतर है और अबुल क़ासिम शम्सुद्दीन

और मुझे तलाश के बावजूद कोई आवाज़ देने वाला नज़र नहीं आता था।

आख़िर में वालिद साहब से दरयाफ़्त किया कि य आवाज़ देने वाला कौन है जो आपको बेदार करता है तो आपने फ़रमाया कि ख़ुदा वन्द .क़ुद्दूस ने एक जिन्न के सुपुर्द यह ख़िदमत कर दी है। जब आपका विसाल हुआ तो मैने इन्सानी रूप में उस जिन्न को आपके जनाज़े पर रोता हुआ देखा फिर वह कभी कभी मेरे पास आता रहा। एक दिन मैने उस जिन्न से पूछा कि जिस तरह तुम मेरे वालिदे मुहतरम की ख़िदमत किया करते थे मेरे साथ यही रवइया क्यूँ नहीं रखते। जिन्न ने मुझको हिदायत की कि अभी तुम उस मन्ज़िल पर पहुँचे नहीं हो, तुम अपने वालिद के मज़ारे पाक पर जाकर फ़ैज़ हासिल करो, औलादे रसूल हो क्या तअज्जुब है कि वही दरजात हासिल हो जायें। चुनांचे मैने उसी जुमे को मज़ारे मुबारक पर हाज़री दी और इनामाते ख़ुसूसी से मालामाल हुआ और لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ (तर्जमा : तेरे सिवा कोई पूजने के क़ाबिल नहीं पाकी है तुझे बेशक मैं ज़ालिमों से हूँ) वालिदे मुहतरम ने मुझको इक्कीस दिन तक पढ़ने को हिदायत फ़रमाई उसके बाद से वह जिन्न मेरी ख़िदमत में रहने लगा।

एक मरतबा यहूदियों की एक जमाअत आपकी महफ़िल में हाज़िर हुई और सय्यिदुना उज़ैर अलैहिस्सलाम के हालाते ज़िन्दगी पर तबसिरा फ़रमाते हुए यहूदियों के इस दावे को झूटा साबित किया कि सय्यिदुना उज़ैर अलैहिस्सलाम अल्लाह के बेटे हैं, आपकी असर-अन्दाज़ तक़रीर सुनकर यहूदियों की पूरी जमाअत ने इस्लाम क़बूल किया। साहिबे हुज्जतुल बैज़ा ने लिखा है कि आप के छः बेटे थे जिनके नाम ये थे ---- अब्दुल वह्हाब, अब्दुल रज़्ज़ाक़, याहया, अब्दुल क़ादिर, अहमद और तीन लड़कियाँ भी थीं आमिना, ज़ैनब, आइशा। हज़रते यहया के अलावा सारे बच्चे बचपन ही में इन्तेक़ाल फ़रमा गए थे।

हज़रते सय्यिद दाऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु

आपका इस्म शरीफ़ दाऊद है और कुन्नियत अबू मुहम्मद और अबूबक्र है और सिराज उद्दीन आपका लक़ब है। हिजरी 249 में आपकी विलादत हुई। आपका दिल महब्बते इलाही का ख़ज़ाना था, हर वक़्त अल्लाह पाक के ख़ौफ़ का ग़लबा रहता था अकसर रिक़्क़त तारी रहती थी। हमेशा यह आयते मुबारका ज़बान पर जारी रहती थी :-

يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ

तर्जमा : ऐ ईमान वालो बचाओ अपनी जानों को और अपने अहल को जहन्नम से और हाल यह है कि उसके ईंधन (यानी जहन्नम के) इन्सान और पत्थर हैं

और अपने अहलो इयाल को ख़ौफ़े इलाही और इबादत की तलक़ीन फ़रमाते रहते थे। जिस जगह आप तशरीफ़ रखते वहीं पर दूसरों को बिठाते थे जो कुछ भी आप खाते उसी में दूसरे लोगों को भी शमिल फ़रमा लेते थे जैसा लिबास आप पहनते ठीक वैसा ही दूसरों को भी पहनाते थे। साइलों को वापस नहीं करते थे। फ़क़ीरों और मिस्कीनों की इमदाद व मदद पर बराबर लोगों को तवज्जोह दिलाते रहते थे।

एक दिन जब आप मस्जिद में तशरीफ़ लाए तो लोग ताज़ीम के लिए खड़े हो गए। आपने तवाज़ो व इन्केसारी से फ़रमाया मुसलमानो ख़ुदाए तआला की बारगाह में फ़र्के मरातिब को दख़ल न देना चाहिए (यानी आपने इन्केसारी के तौर पर फ़रमाया कि मेरे लिए ख़ड़े न होकर आप लोग इबादते इलाही में मशग़ूल रहें), यहाँ सब बराबर हैं यहाँ किसी की ताज़ीम न करो। यह कह कर इस क़द्र रिक्क़त से रोए कि आपकी दाढ़ी मुबारक आंसूओं से भीग गई। हिजरी 321 में मक्का में आपका विसाल हुआ।

हुज्जतुल बैज़ा की रिवायत से पता चलता है कि आप के चार साहबज़ादे थे मुहम्मद, अब्दुल्लाह, मुहम्मद आबिद, शेहाबुद्दीन और तीन साहबज़ादियाँ थीं। नूरुल अबसार की रिवायत के मुताबिक़ आपकी दो शदियाँ हुईं।

हज़रते सय्यिद मूसा सानी रदियल्लाहु तआला अन्हु

सय्यिद मूसा इस्मे मुबारक और अबू उमर कुन्नियत है। आप सय्यिदुना इमाम जाफ़र सादिक़ रदियल्लाहु तआला अन्हु के नवासे हैं। आपकी वालिदा मुहतरमा का इस्मे मुबारक सय्यिदा हाला है। आप इन्तेहाई मुत्तक़ी सालेह करीम और फय्याज़ थे। मुतक़ेदीन व मुतवस्सेलीन से जो कुछ नज़्र मिलता उसे ख़र्च फ़रमाते रहते लेकिन अगर कुछ बच रहता तो उसे जमा करते रहते थे और जब नमाज़े जुमा के लिए निकलते तो सारा माल ख़ुद्दाम के साथ होता। रास्ते में फ़कीरों, यतीमों और मिस्कीनों की जमाअतें इन्तेज़ार में होतीं थीं। आप मस्जिद तक पहुँचते पहुँचते सारा माल तक़सीम फ़रमा देते थे और नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ होते। आपकी तक़रीरों से मुतअस्सिर होकर बेशुमार लोगों ने इस्लाम क़बूल किया और बहुत से फ़ासिक़ों व फ़ाजिरों ने तौबा की। आप की शादी सय्यिदा ज़ैनब बिन्ते सय्यिद इब्राहीम मुर्तज़ा इब्ने सय्यिदुना मूसा काज़िम के साथ हुई जिनके शिकम से हज़रत सय्यिद दाऊद के अलावा छः साहबज़ादे और तीन साहबज़ादियाँ पैदा हुईं।

दूसरी शादी बीबी मैमूना से हुई जिनके शिकम से तीन साहबज़ादे और दो साहबज़ादियाँ हुईं। हुज्जतुल बैज़ा के मुसन्निफ़ का ग़ालिब गुमान है कि सिलसिलए नसब सिर्फ़ हज़रते दाऊद से जारी रहा। कन्ज़ुल निसाब के मुसन्निफ़ भी यही फ़रमाते हैं और वह यह भी कहते हैं कि हज़रते मूसा सानी का अक़्द बीबी फ़ातिमा बिन्ते तय्यबा बिन्ते हज़रत मूसा काज़िम से हुआ था। 6 मुहर्रमुल हराम हिजरी 193 आपकी तारीख़े विलादत और हिजरी 288 सने वफ़ात है।

हज़रते सय्यिद मूसा जौन रदियल्लाहु तआला अन्हु

इस्मे मुबारक मूसा और लक़ब जौन है। कन्ज़ुल अन्साब की रिवायत के मुताबिक़ आपकी वालिदा माजिदा सय्यिदा रुक़ैया बिन्ते हज़रते इमाम ज़ैनुल आबेदीन रदियल्लाहु तआला अन्हुमा थीं। सय्यिद मुहम्मद और सय्यिद इब्राहीम आपके दो हक़ीक़ी भाई थे। आपकी शादी रुक़ैया सानिया बिन्ते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बाक़िर रदियल्लाहु तआला अन्हु से हुई। आप बेपनाह हसीन और बहुत बड़े आलिम व फ़ाज़िल थे और बहुत ही नेक और मुत्तक़ी थे, ज़्यादा इबादत करने की वजह से आप बहुत कमज़ोर हो गए थे। एक मरतबा ख़लीफ़ा हारून रशीद के दरबार में आप तशरीफ़ लाए, दरबार में एक जगह पैर फिसला और आप गिर पड़े लोग हंसने लगे और हारून भी हंस पड़ा। आपने फ़रमाया ऐ ख़लीफ़ा मेरा गिरना कमज़ोरी के सबब था अलहम्दुलिल्लाह मदहोशी व मस्ती के सबब नहीं था। हारून रशीद ने शर्म से नज़रें झुका लीं।

हज़रते सय्यिद अब्दुल्लाह सानी रदियल्लाहु तआला अन्हु

आप ज़ाहिद थे और रातों को भी इबादत करने वाले थे, तहज्जुद की दो रकत नफ़्ल में पूरा क़ुरआन ख़त्म फ़रमाया करते थे और दिन में भी ज़िक्रे इलाही में मशग़ूल रहते थे, दो शम्बा और जुमे को वाज़ फ़रमाया करते थे। आपके पाँच लड़के पैदा हुए, बताया जाता है कि सादाते बुख़ारा व तुर्कीस्तान इन्हीं साहबज़ादगान की औलाद से हैं। विलादत हिजरी 103 में और वफ़ात हिजरी 156 में पाई।

हज़रते सय्यिद अब्दुल्लाह महज़ रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

करबला के मुसाफ़िर सय्यिदुश्शुहदा सरकार इमाम हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की साहबज़ादी हज़रते फ़ातिमा के शिकमे मुबारक से हिजरी 70 में आप तवल्लुद हुए। आपकी वालिदा माजिदा सय्यिदुना सरकार इमाम हसन रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के क़ुर्रतुलऐन (आँख की ठंडक) हज़रते इमाम हसन मुसन्ना थे। नजीबुत्तरफ़ैन सय्यिद (जो माँ और बाप दोनों की तरफ़ से सय्यिद हो) होने के सबब सारी दुनिया आपका एहतिराम करती थी। अख़लाक़ी हैसियत से आप में कोई नुक़्स नहीं था, यही वजह है कि आपका लक़ब 'महज़' हुआ। नूरुल अबसार की रिवायत बताती है कि आप शक्ल और शबाहत में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से मुशाबहत रखते थे। सय्यिदुना ज़ैद इब्ने अली इब्ने हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुम के हमअसर थे यानी एक ही ज़माने के थे, आपका लक़ब महज़ होने की एक वजह यह भी बताई जाती है कि सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बाक़िर रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु की तरह आप भी अपने घराने में पहले बुज़ुर्ग थे जो हसनी व हुसैनी थे। सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बाक़िर रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु हुसैनी थे और आपकी वालिदा हसनी थीं।

एक मरतबा आपने फ़रमाया कि लोग इसकी ख़्वाहिश रखते हैं कि दुनिया में सबसे बरतर व अफ़ज़ल व आला समझे जायें और मैं अज़ख़ुद तमाम मख़लूक़ को बरतर व बाला समझता हूँ। आप बहादुर क़वीउन्नफ़्स (नफ़्स पर क़ाबू रखने वाला) और शाइर भी थे। आपके छः बेटे हुए मुहम्मद, इब्राहीम, मूसा, यहया, सुलैमान और इदरीस रह़महुमुल्लाहु तआ़ला अ़लैहिम अजमईन। 18 रमज़ानुल मुबारक हिजरी 145 में ख़लीफ़ा अबू जाफ़र अब्दुल्लाह अलमन्सूर अब्बासी के क़ैदख़ाने में आपका विसाल हुआ। इसी क़ैदख़ाने में हज़रते इमामे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने बहालते सजदा इस दुनिया-ए फ़ानी से सफ़रे आख़िरत फ़रमाया।

हज़रते सय्यिदना हसन मुसन्ना रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु

आप सय्यिदुना सरकार इमाम हसन मुजतबा रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के जिगर गोशा सय्यिदुना फ़ातिमतुज़्ज़हरा रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा के .कुर्रतुल ऐन (आँख की ठंडक) हैं। सीरत व शबाहत में अपने वालिदे मुहतरम के मुशाबिह थे। आपका हुस्नो जमाल देखकर सरकारे इमाम हसन मुजतबा रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का गुमान होता था, इसी सबब से आपको हसन मुसन्ना कहा जाता है। आपके पाँच बेटे थे सय्यिद अब्दुल्लाह महज़, सय्यिद इब्राहीम, सय्यिद हसन सालिस, सय्यिद दाऊद, सय्यिद जाफ़र। पहले के तीन बेटे सय्येदा फ़ातिमतुस्सुग़रा बिन्ते सरकारे इमाम हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा के शिकमे मुबारक से और आख़िर के दो बेटे बीबी हबीबा से तवल्लुद हुए। पांचों औलादों से सिलसिलए नसब जारी है।

हिजरी 97 में आपने विसाल फ़रमाया जैसा कि फ़तहुल बारी शरहे सही बुख़ारी में आपकी उम्र शरीफ़ हिजरी 40 में सय्यिदुना अली मुरतज़ा कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम की शहादत के वक़्त दस साल की थी। "सआदतुल कौनैन" किताब में आपका मारकए करबला में शरीक होना और ज़ख़्मों से चूर चूर होने का ज़िक्र है। अस्मा बिन्ते ख़ारिजा ख़ुज़ाई इससे पहले कि आप शहीद कर दिए जायें लश्करे इब्ने ज़्याद से बहुत दिक़्क़त के साथ आपको छुड़ा कर लाईं और कूफ़ा में इलाज कराया, यहाँ तक कि आप सेहतयाब होकर मदीनए मुनव्वरा पहुँच गए। मदीने के आमिल हज्जाज इब्ने यूसुफ़ ने आपके दस्ते मुबारक से तौलियते सदक़ात ले लेनी चाही लेकिन अब्दुल मलिक ने इस बात की इजाज़त नहीं दी।

वलीद इब्ने अब्दुल मलिक फ़रीज़ए हज की अदाएगी के बाद जब मदीनए मुनव्वरा हाज़िर हुआ और मस्जिदे नबवी में ख़ुतबा दे रहा था तो उसकी निगाह अचानक फ़ातिमतुज़्ज़हरा रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा के हुजरए मुबारका की जानिब उठ गई। उस वक़्त आप अपना चेहरए मुबारका आईने में मुलाहिज़ा

फ़रमा रहे थे। ख़ुतबा ख़त्म करते ही उसने आमिले मदीना को हुक्म दिया कि फ़ौरन साहबज़ादे को शहरबदर कर दिया जाए और हुजरे को मस्जिद में शामिल कर दिया जाए। चुनांचे हिजरी 87 में यह हुजरए आलिया आपसे जबरन ख़ाली करवा लिया गया और मस्जिदे नबवी में दाख़िल कर दिया गया। जज़्बुल कुलूब इला दियारिल महबूब (किताब का नाम) के अन्दर मुहक़्क़िक़े अलल इतलाक़ शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने इस वाक़िए को बहुत तफ़सील के साथ पेश किया है।

हज़रते सय्यिदुना सरकार इमाम हसन मुजतबा रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु

आपके फ़ज़ाइल और दर्जात सूरज व चाँद की तरह रौशन हैं। तारीख़ व सियर की किताबें आपकी तारीफ़ व तौसीफ़ से भरी पड़ी हैं। आपके फ़ज़्ल व कमाल को पेश करने के लिए दफ़तर नांकाफ़ी हैं। इस जगह ख़ैर व बरकत के लिए मुख़्तसर तौर पर ज़िक्र किया जाएगा, इसलिए कि जिगर गोशए रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का तज़किरा और आपके फ़ज़्ल व कमाल का ज़िक्रे जमील हमारे और तमाम मुसलमानों के लिए नजात का ज़रिया और रज़ाए इलाही का सबब है।

रमज़ान शरीफ़ के बाबरकत महीने में 15 तारीख़ हिजरी 2 में मदीनए मुनव्वरा की मुक़द्दस सरज़मीन पर ईमान बख़्श फ़ज़ा में आपकी विलादत मुबारका हुई। आप सय्येदा फ़ातिमा ख़ातूने जन्नत रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के सब से बड़े साहबज़ादे हैं। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने आपका नाम हसन रखा। इससे पहले दुनिया में किसी का नाम यह नहीं रखा गया था। आपके छोटे भाई सरकारे इमाम हुसैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुं के इस्मे मुबारक की भी यही ख़सियत है कि पहली बार दुनिया में यह नाम रखा गया।

सय्यिदुना इमाम हसन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हुस्नो जमाल में यकता थे। हज़रते अनस रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

का बयान है कि आप से ज़्यादा किसी का चेहरा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मुशाबा (मिलता जुलता) न था। आप से बहुत सी हदीसें मरवी हैं और कसीर तादाद में ह़दीसें हैं जिनमें आपके फ़ज़ाइल मरवी हैं। ताबेईन के अलावा उम्मुल मुमिनीन हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने भी आपसे रिवायते हदीस की है। सय्यिदुना अली मुरतज़ा करमल्लाहु वजहहुल करीम की शहादत के बाद आप तख़्ते ख़िलाफ़त पर जलवा अफ़रोज़ हुए और छः महीने के बाद हिजरी 41 में इन शराएत के साथ ख़िलाफ़त से सुबकदोश हो गए जो निम्नलिखित हैं।

1. हज़रते मुआविया रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बाद हक़्क़े ख़िलाफ़त हज़रते इमामे हसन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को हासिल होगा।

2. हिजाज़ व इराक़ के बाशिन्दों से कोई टैक्स नहीं लिया जाएगा।

3. हज़रते इमामे हसन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का तमाम क़र्ज़ा अदा किया जाएगा।

अमीरुल मुमिनीन हज़रते अमीर मुआविया रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बतौर नज़्र एक लाख दीनार सालाना मुक़र्रर किया। इत्तेफ़ाक़ से एक साल वज़ीफ़ा आने में कुछ देर हुई जिसके सबब आपको तकलीफ़ हुई। आपने क़लम दावात मंगा कर याद दिलाने के लिए रुक़्क़ा लिखने का इरादा फ़रमाया लेकिन न जाने क्या सोच कर हाथ रोक लिया। उसी रात हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ज़्यारत से मुशर्रफ़ हुए। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने पूछा बेटा क्या हाल है ? अर्ज़ किया नाना जान अच्छा हूँ लेकिन तंगदस्त हूँ। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया क्या तुम मख़लूक़ को मुतावज्जा करने के लिए रुक़्क़ा लिखना चाहते थे ? सय्यिदुना इमाम हसन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अदब व

ऐहतिराम के साथ अर्ज़ किया हुज़ूरे वाला ऐसा ही ख़तरा दिल में पैदा हो चला था। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया यह दुआ पढ़ लिया करो अल्लाह तआ़ला तुम्हारी तमाम हाजतों को पूरी फ़रमा देगा। दुआ यह है :-

اَللّٰهُمَّ اَقْذِفْ فِیْ قَلْبِیْ رَجَائَکَ وَاَقْطَعْ رَجَائِیْ عَمَّنْ سِوَاکَ حَتّٰی لَا اَرْجُوْا غَیْرَکَ اَللّٰهُمَّ

وَمَا ضَعُفَتْ عَنْهُ قُوَّتِیْ وَقَصُرَعَنْهُ عَمَلِیْ وَلَمْ تَنْتَهِ اِلَیْهِ رَغْبَتِیْ وَلَمْ تَبْلُغْهُ مَسْئَلَتِیْ وَلَمْ اَجْرِ

عَلٰی لِسَانِیْ مِمَّا اَعْطَیْتَ مِنَ الْاَوَّلِیْنَ وَالْاٰخِرِیْنَ مِنَ الْیَقِیْنِ فَخُصَّنِیْ بِهٖ یَا رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ ○

तर्जमा : या रब मेरे दिल में अपनी उम्मीद डाल और अपने मासिवा से मेरी उम्मीद काट दे यहाँ तक कि मैं तेरे सिवा किसी से उम्मीद न रखूँ। या रब जिससे मेरी .कुव्वत आजिज़ (मजबूर) और अमल क़ासिर (कोताह) हो और जहाँ तक मेरी रग़बत और मेरा सवाल न पहुँचे और मेरी ज़बान पर जारी न हो जो तूने अव्वलीन व आख़िरीन में से किसी को अता फ़रमाया हो यक़ीन से या रब्बुल आलमीन मुझको उसके साथ मख़सूस फ़रमा।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के हुक्म से हज़रते इमाम हसन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने यह दुआ पढ़नी शुरू कर दी। अभी पूरा एक हफ़्ता भी नहीं गुज़रा था कि हज़रते अमीर मुआविया रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने पाँच लाख दीनार हज़रते इमाम हसन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमते मुबारका में भेज दिए। आपने इन अल्फ़ाज़ में शुक्रे इलाही अदा किया :-

"शुक्र है उस ख़ुदाए क़दीर का जो अपने याद करने वालों को किसी वक़्त नहीं भूलता और अपने दर के सवालियों को कभी भी मायूस नहीं करता"

रात में फिर हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़्यारत हुई, सरकारे इमामे हसन से पूछा बेटा अब क्या हाल है। सरकारे इमामे हसन ने अर्ज़ किया कि हज़रते मुआविया ने पाँच लाख दीनार भेज दिए हैं। रसूले मुहतरम ने इरशाद फ़रमाया ख़ुदाए क़ादिर व क़दीर से इल्तिजा और मख़लूक़ से एहतिराज़ (बचना) का यही नतीजा है।

ख़िलाफ़त से दस्तबरदारी के बाद हज़रते इमाम हसन मुजतबा रद्दियल्लाहु तआला अन्हु मदीनए मुनव्वरा तशरीफ़ ले आए। दो मरतबा अपना सारा माल राहे ख़ुदा में तक़सीम फ़रमा दिया और तीन मरतबा अपने घर के पूरे सामान में से आधा अपने लिए रखा और आधा राहे ख़ुदा में तक़सीम फ़रमा दिया। आपकी दर्दनाक शहादत यज़ीद की शरारतों का नतीजा है। ज़ालिम यज़ीद ने अपनी मक्कारी के ज़रिए आपको ज़हर दिलवा दिया जिसके असरात से आप 5 रबीउल अव्वल हिजरी 49 में शहीद हो गए। (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना एलैहि राजिऊन)

अमीरुल मुमिनीन सय्यिदुना अली मुरतज़ा रद्दियल्लाहु तआला अन्हु

इस्मे गिरामी अली कुन्नियत अबुल हसन और लक़ब मुर्तज़ा व असदुल्लाह है, आपके वालिद अबू तालिब और दादा हज़रत अब्दुल मुत्तलिब हैं।

तबक़ात इब्ने सअद और असदुल ग़ाबा की रिवायत है कि सय्यिदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआला वजहहुल करीम मक्का मुअज़्ज़मा में पैदा हुए। आपसे पहले ख़ास बैतुल्लाह शरीफ़ की चाहरदीवारी में किसी की विलादत नहीं हुई। सय्यिदुना अली मुर्तज़ा जब माँ के पेट में थे तो आपकी वालिदा माजिदा अजीब व ग़रीब ख़्वाब देखती थीं कि नूरानी शक्ल के कुछ बुज़ुर्ग आए हैं और उनको ख़ुशख़बरी सुना रहे हैं वालिदा मुहतरमा जनाब फ़ातिमा का ख़ुद बयान है कि जब अली मेरे शिकम में थे तो मैं अजीब फ़रहत व मसर्रत महसूस करती थी और मैं जब कभी किसी बुत को सजदा करने का

इरादा करती थी तो मेरे शिकम में इस ज़ोर का दर्द शुरू हो जाता था कि मैं सख़्त तकलीफ़ महसूस करने लगती थी यहाँ तक कि मैं सजदा करने का इरादा ही तर्क कर देती थी। फिर जब अली ने दुनिया में तशरीफ़ लाकर तीन दिन तक दूध नहीं पिया जिसकी वजह से घर के अन्दर मायूसी छा गई तो इसकी इत्तेला हुज़ूर मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम तक पहुँची। आप तशरीफ़ लाए और अली को अपनी आग़ोशे रहमत में उठा कर प्यार किया और साथ ही अपनी ज़बान मुबारक अली के मुँह में डाली। अली ज़बान चूसने लगे और उसके बाद दूध भी पीने लगे। सय्यिदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम को सिर्फ पाँच साल अपने वालिदैन के साए में परवरिश पाने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपने सायए रहमत में जगह दी और अपने पास रखकर ख़ुद तरबियत फ़रमाने लगे यहाँ तक कि उनकी उम्र दस साल की हो गई इधर एलाने नुबुव्वत का वक़्त आ [illegible] हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम पर अल्लाह तआ़ला का हुक्म आना शुरू हुआ जिसको वही कहते हैं।

अ[illegible]कमुल हाकेमीन यानी सब हाकिमों का हाकिम अल्लाह तआ़ला ने हुक्म दिया कि सबसे पहले अपने ख़ानदान वालों पर इस्लाम की दावत दीजिए और उनके अफ़आल व अख़लाक़ की इस्लाह कीजिए। मशीयते रब्बानी यानी अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी के मुताबिक़ हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपनी मुक़द्दस बीवी उम्मुल मुमिनीन ख़दीजतुल कुबरा रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हा, अपने जाँनिसार साथी सय्यिदुना अबूबक्र सिद्दीक़ अकबर रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हु और अपने चचाज़ाद भाई सय्यिदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम के सामने इस्लाम पेश किया तो ये तीनों ख़ुशनसीब ईमान ले आए।

मोअर्रिख़ीन (इतिहासकार) व मुहद्देसीन (हदीस बयान करने वाले) का इस बात पर इत्तेफ़ाक़ है कि बड़ी उम्र वालों में

सय्यिदुना अबूबक्र सिद्दीक़ अकबर रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु, छोटी उम्र वालों में सय्यिदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम और औरतों में उम्मुल मुमिनीन ख़दीजतुल कुबरा रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा ने सबसे पहले इस्लाम क़बूल किया और क़बूले इस्लाम के साथ हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत व हिफ़ाज़त और फ़रमाबरदारी व जाँनिसारी का हक़ अदा किया और दीन की तबलीग़ व इशाअत में बड़ी फ़राख़दिली के साथ अपनी अपनी जानी व माली ख़िदमात पेश कीं। ख़ुदाए तआ़ला की रहमतें नाज़िल हों इन अव्वलीन व साबक़ीन की मुक़द्दस जमाअत पर।

सय्यिदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम की मुक़द्दस ज़िन्दगी ग़लतियों और गुनाहों से पाक थी। .कुदरत ने आपको अच्छे अख़लाक़ का अज़ीम इन्सान बनाया था। असदुल ग़ाबा की रिवायत है कि आपने एक इम्तियाज़ी हैसियत के मालिक होने के बावजूद कभी दूसरों से अपने को मुमताज़ तसव्वुर नहीं किया, हमेशा ख़न्दापेशानी और इन्केसारी की ज़िन्दगी बसर करते रहे। आम लोगों की तरह घर के काम भी कर लिया करते थे। अपने दस्ते मुबारक से फटे हुए कपड़ों में पैवन्द भी लगा लिया करते थे, जूतियों की मरम्मत भी कर लेते थे। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया तो सय्यिदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम ने एक मामूली मज़दूर की तरह काम किया। ग़ज़वए ख़न्दक़ (ख़न्दक़ वाली जंग) के मौक़े पर जिस वक़्त हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने ख़न्दक़ खोदने का हुक्म दिया तो सय्यिदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम ने सबसे पहले खोदना शुरू किया, ख़ुद खोदते थे और ख़ुद ही मिट्टी उठा कर फेंकते थे और अगर कोई बड़ा पत्थर सामने आ जाता था तो अपनी ख़ुदादाद ताक़त के ज़रिए उसको रेज़ा रेज़ा कर डालते थे।

खाने में इस क़द्र सादगी थी कि अकसर जौ की रोटी हुआ करती थीं वह भी कभी सालन से और कभी रूखी ही खा लिया करते थे। बिसतर भी आपका बहुत मामूली हुआ करता था यानी एक दोहरा कम्बल जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी। आप रास्तबाज़ी (सच्चाई), तक़्वा व परहेज़गारी रह़मदिली व इन्किसारी व तवक्कल (अल्लाह तआ़ला पर भरोसा) में ऊँचे दर्जे के इन्सान थे। आपकी ज़बान पर कभी कोई बुरी बात या कलिमा नहीं जारी होता था। आप निहायत सलीमुत्तबा (बहुत ज़हीन) और पाकीज़ा तीनत (पैदाइशी अच्छी आदत वाला) थे। तबीयत में किसी क़िस्म की बेहूदगी और लग़वियत नहीं थी। आप बड़े रह़ीम व करीम हलीम (बुर्दबार) थे। आप कभी किसी के ऊपर अपने लिए नाराज़ नहीं हुआ करते थे अगर किसी से क़ोई ग़लती भी हो जाती तो रह़म व करम से दरगुज़र फ़रमाते थे। ह़ज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि सय्यिदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम बड़े पुख़्ता इरादा, बलन्द हिम्मत और सदिक़ुल बयान (सच बोलने वाले) नर्म तबीयत और ख़ुशतबा (अच्छी तबीयत वाले) थे। ग़रीबों को नवाज़ने का जज़्बा आपके दिल में समन्दर की तरह लहरें लिया करता था। आप अपने घर से दूर दूर जाकर ग़रीबों, मिस्कीनों, मुहताजों, ज़ईफ़ों (बूढ़े लोग) और अपाहिजों की मदद व ख़िदमत फ़रमाया करते थे। मरीज़ों की मिजाज़पुर्सी भी मामूलाते ज़िन्दगी में शमिल थीं।

ह़ज़रते अब्बास रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम लोगों में सबसे ज़्यादा बहादुर थे, इसी वजह से लोग आपको अश्जउन्नास (सबसे ज़्यादा बहादुर) कहते थे। आपके हैरतअंगेज़ और बहादुरी के कामों को अगर जमा किया जाए तो एक ज़ख़ीम किताब हो जाए लिहाज़ा यहाँ कुछ ही वाक़ियात पेश किए जाते हैं :-

हज़रत अबू ज़र गिफ़ारी रदियल्लाहु तआला अन्हु ने रिवायत की है कि हिजरत से पहले .कुरैशे मक्का ने मआज़ अल्लाह जब हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को क़त्ल करने की स्कीम बनाई तो परवरदगारे आलम ने हुज़ूर अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हुक्म दिया कि आप हिजरत कर जायें। चुनांचे हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हिजरत का इरादा फ़रमा लिया और हुज़ूर ने हज़रते अली से इरशाद फ़रमाया कि आज की शब मैं मक्का से हिजरत करके मदीनए मुनव्वरा जाना चाहता हूँ, चूंकि अहले मक्का मेरी जान के दुश्मन हो गए हैं तो क्या ऐ अली तुम इसे क़बूल करोगे कि आज शब तुम मेरे बिस्तर पर सो रहो? सय्यिदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने अदब के साथ अर्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरी जान आप पर निसार मैं ख़ुशी से इस ख़िदमत के लिए तैयार हूँ अगर .कुरैश मुझे क़त्ल भी कर डालें तो भी मुझे इसकी परवाह नहीं है। इस जवाब से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बहुत ख़ुश हुए और मदीनए तय्यबा की तरफ़ रवाना हो गए और हज़रते अली मुरतज़ा इस ख़तरनाक माहौल में अपने आक़ा के बिस्तर पर सो रहे। इसी एक वाक़िये से सय्यिदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआला वजहहुल करीम की अज़ीम तरीन वफ़ादारी व जाँनिसारी का सुबूत मिलता है।

गज़वए बदर व उहुद में सय्यिदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने बेमिसाल सरफ़रोशी का मुज़ाहिरा किया है। हज़रते अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं ग़ज़वए बदर में लश्करे कुफ़्फ़ार में से सत्तर क़त्ल किए गए थे जिनमे से 21 को हज़रते अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआला वजहहुल करीम ने जहन्नम रसीदा किया था। उम्र शरीफ़ उस वक़्त हज़रते अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआला वजहहुल करीम की 27 साल की थी।

ग़ज़वए उहुद में जब मुसलमानों के क़दम उखड़ गए उस वक़्त भी हज़रते अली मुरतज़ा ने हिम्मत नहीं हारी और अज़्म (पक्का इरादा) व इस्तेक़लाल (सब्र) के साथ मुशरेकीन का मुक़ाबला करते रहे और बराबर तलवार चलाते रहे। हज़रते अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम ख़ुद बयान फ़रमाते हैं कि ग़ज़वए उहुद में मेरे जिस्म के ऊपर 16 ज़ख़्म आए थे लेकिन बफ़ज़्ले इलाही मेरे इरादे में कोई कमज़ोरी पैदा नहीं हुई।

ग़ज़वए ख़नदक़ में जब मारकए जंग का आग़ाज़ हुआ तो लश्करे कुफ़्फ़ार में से अब्दे वुद नामी एक बहादुर पहलवान ने चैलेंज किया कि है कोई मुसलमानों में जो मेरा मुक़ाबला कर ले। इस चैलेंज को सुनते ही हज़रते अली ने हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया सरकार मेरा दिल चाहता है कि इस बदतरीन दुश्मन का मैं मुक़ाबला करूँ। रह़मते आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने ख़ुश होकर अपना इमामा मुबारक उतार कर सय्यिदुना अली मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा के सर पर रख दिया और फ़रमाया जाओ ख़ुदाए क़दीर के भरोसे पर उस का मुक़ाबला करो। सय्यिदुना अली मुर्तज़ा चन्द लम्हों में उस पर ग़ालिब आ गए और उस दुश्मने दीन को क़त्ल करके जहन्न्म पहुँचा दिया।

एक दफ़ा क़बीलए बनू .क़ुरैज़ा कसीर तादाद में जमा होकर यकायक ग़ाफ़िल मुसलमानों पर हमलाआवर हो गए। मुसलमानों में भगदड़ मच गई लेकिन ख़ुदा के शेर अली मुर्तज़ा बिल्कुल मुत्मइन रहे और उसी आन तलवार निकाल कर मैदान में डट गए और सैकड़ों मुफ़सिदों (फ़सादियों) को क़त्ल कर दिया यहाँ तक कि मुफ़सिदीन असलहों को छोड़ कर भाग निकले। सय्यिदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआ़ला वजहुल करीम साहिबे ईसार (.क़ुर्बानी का जज़बा रखने वाला) और बड़े फ़य्याज़ (अल्लाह की राह में ख़र्च करने वाला) थे। अपनी इस्तिताअत के मुताबिक़ ग़रीबों और मिस्कीनों की मदद फ़रमाते

रहते थे अगर कोई ज़रूरतमन्द आ जाता और आपके पास कुछ न होता तो दूसरों से क़र्ज़ लेकर उसकी ज़रूरत पूरी कर दिया करते थे, अकसर आपके ज़िम्मे इसी तरह के क़र्ज़े हुआ करते थे वर्ना अपनी ज़रूरियात को क़र्ज़ा लेकर पूरी करने के आप आदी न थे। हज़रते इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान फ़रमाते हैं कि एक दिन हज़रते अली के पास चार दिरहम थे और चन्द अहम ज़रूरियात भी आपके सामने थीं अचानक एक यमनी ने आकर हज़रते अली के सामने अपनी एक ज़रूरत पेश कर दी। ख़ुदा के शेर ने बिना देर किए हुए वो चारों दिरहम उस .जरूरतमन्द को इनायत फ़रमा दिए और अपनी .जरूरत की कोई परवाह न की। मालिके बेनियाज़ यानी अल्लाह तआ़ला को उनकी यह अदा बहुत पसन्द आई और फ़ौरन उनकी तारीफ़ में .कुरआन पाक की यह आयत नाज़िल हुई :-

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ o

तर्जमा : वह जो अपने माल ख़ैरात करते हैं रात में और दिन में छुपे और ज़ाहिर उनके लिए उनका नैग (बदला) है उनके रब के पास उनको न कुछ अन्देशा हो न कुछ ग़म।

(पारा 3 रुकू 6)

सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने उमर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि हिजरत के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने जब अनसार व मुहाजिरीन के दरमियान भाईचारगी का रिशता क़ायम कराया और हर एक अनसारी को एक मुहाजिर का भाई बना दिया हत्ता कि तमाम अनसार व मुहाजिरीन के अदद मुकम्मल हो गए सिवाए हज़रते अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम के तकमीले मुआहदे के बाद हज़रते अली मुर्तज़ा ने अर्ज़ किया कि या

रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आपने तमाम मुहाजिरीन के भाई मुक़र्रर फ़रमा दिए लेकिन मुझे किसी का भाई नहीं बनाया और किसी को मेरा रफ़ीक़ नहीं बनाया। तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने बड़ी महब्बत से इरशाद फ़रमाया "ऐ अली तुम तो दुनिया व आख़िरत में मेरे भाई हो और अल्लाह का रसूल तुम्हारा रफ़ीक़ है।

सय्यिदुना सअद इब्ने वक़्क़ास रदियल्लाहु तआला अन्हु ने रिवायत की है कि एक दिन अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रते अली को मुख़ातब करके लुत्फ़ व करम और निहायत महब्बत के साथ इरशाद फ़रमाया अली तुम्हारा मरतबा मेरे नज़दीक ऐसा ही है जैसा कि हारून अलैहिस्सलाम का मरतबा हज़रते मूसा के नज़दीक था लेकिन याद रखो कि मेरे बाद अब कोई नबी नहीं होगा, मैं नबी आख़िरुज़्ज़मा और तुम मेरे हो मैं तुम्हारा हूँ।

सय्यिदुना अली मुर्तज़ा करमल्लाहु तआला वजहहुल करीम यूँ चौथे ख़लीफ़ा हैं लेकिन हक़ीक़त में आप से पहले तमाम ख़ुलफ़ा के ज़माने में आप असर और इक़्तेदार वाले थे। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पर्दा फ़रमाने के बाद जब हुज़ूर के रफ़ीक़े ख़ुसूसी हज़रते अबूबक्र सिद्दीक़े अकबर रदियल्लाहु तआला अन्हु ख़लीफ़ा चुने गए तो हज़रते अली आपको बराबर तक़वियत पहुँचाते रहे फिर उनके बाद हज़रते उमर फ़ारूक़े आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु मसनदे ख़िलाफ़त पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए तो आप उनके भी सबसे ज़्यादा मददगार रहे। हज़रते उसमान रदियल्लाहु तआला अन्हु जब मन्सबे ख़िलाफ़त पैर फ़ाएज़ हुए तो सय्यिदुना अली मुर्तज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु उनको भी नेक मशवरे देते रहे और इमदाद पहुँचाते रहे और बड़ा सांथ दिया।

हज़रते उसमान ग़नी ज़ुन्नूरैन रदियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद हज़रते अली मुत्तफ़िक़ तौर पर यानी सबकी

एक राय पर ख़लीफ़ा चुने गए। आप अपनी ज़िम्मेदारियों को बड़े ख़ुलूस व सच्चाई के साथ पूरी करते रहे। आपकी ख़िलाफ़त के ज़माने में बहुत सी बग़ावतें उठीं लेकिन आप अपने काम करते रहे। आपने उस वक़्त की मसलेहत को समझते हुए ईरान की सरहदी छावनी को कूफ़ा में तबदील करके उसको अपना मरकज़ बना लिया था लेकिन ख़ारजी बाग़ियों और फ़सादियों ने यहाँ रह कर भी चैन और सुकून से काम न करने दिया हत्ताकि आपकी उमर शरीफ़ 63 साल और ख़िलाफ़त की मुद्दत चार साल नौ महीने पूरे होने के बाद 21 रमज़ानुल मुबारक हिजरी 40 को इब्ने मुलजिम नामी एक ख़ारजी ख़बीस के हाथों शहादत पाई। (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न)

सय्यिदुना ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तशरीफ़ आवरी के मुबारक हालात

तारीख़ की मोअतबर (इतिहास की ऐतिबार के क़ाबिल) किताबों में बताया जाता है कि एक मरतबा एक अल्लाह वाले दरियाए दजला के किनारे किनारे चला जा रहा थे कि अचानक दरिया में बहता हुआ एक सेब नज़र आया। उस अल्लाह वाले ने सेब को दरिया से निकाल लिया क्यूँकि उन्हें भूक लगी हुई थी इसलिए बेसोचे समझे उस सेब को खा लिया और चल दिए मगर कुछ दूर ही गए थे कि दिल ने कहा कि यह सेब मालूम नहीं किसका है और तूने बग़ैर पूछे हुए खा लिया। अब अगर अल्लाह तआ़ला ने क़ियामत के दिन पूछा तो क्या जवाब दोगे? यह ख़्याल आते ही सेब के मालिक से माफ़ कराने या क़ीमत देने के लिए उस तरफ़ चल पड़ जिधर से सेब आया था। यहाँ तक कि चलते चलते एक बाग़ में पहुँचे जिसकी डालियाँ दरिया की तरफ़ झुकी हुईं थीं। उस अल्लाह वाले ने

ख़्याल किया कि जिस सेब को हमनें खाया है वह इसी बाग़ का होगा। तो उस अल्लाह वाले ने बाग़ वाले का पता मालूम किया तो मालूम हुआ कि यह बाग़ हज़रते अ़ब्दुल्लाह सूमई का है। चुनांचे वह अल्लाह वाला हज़रते शैख़ अ़ब्दुल्लाह सूमई की बारगाह में हाज़िर हुआ और सेब खाने का वाकि़या बता कर सेब की क़ीमत लेने या माफ़ करने के लिए अर्ज़ किया। हज़रते शैख़ अ़ब्दुल्लाह सूमई ने फ़रमाया कि बेटा सेब की क़ीमत बहुत ज़्यादा है तुम अदा नहीं कर सकते लेकिन अल्लाह वाले ने क़ीमत के अदा करने का जब ज़ोरदार तरीक़े से इक़रार किया तो हज़रते शैख़ अ़ब्दुल्लाह सूमई ने फ़रमाया कि उस सेब की क़ीमत यह है कि तुम मेरे बाग़ की एक साल रखवाली करो। चुनांचे उस अल्लाह वाले ने बाग़ की रखवाली शुरू कर दी और पूरे दो साल तक रखवाली करते रहे। एक दिन हज़रते शैख़ अ़ब्दुल्लाह सूमई ने फ़रमाया बेटा सेब माफ़ करवाने के लिए तुम्हें एक काम और करना होगा और वह यह कि तुम मेरी बेटी से शादी करो जो दोनों आंखों से अन्धी है, दोनों कानों से बहरी है, दोनों हाथों से लूली है, दोनों पैरों से लंगड़ी है और ज़बान से गूंगी भी है। उस अल्लाह वाले ने सेब माफ़ करवाने के लिए ऐसी लड़की से शादी करने के लिए भी इक़रार कर लिया। चुनांचे हज़रते शैख़ अ़ब्दुल्लाह सूमई ने अपनी बेटी की शादी उस अल्लाह वाले के साथ कर दी। लेकिन जब वह अल्लाह वाला अपनी बीवी के कमरे में गया तो बहुत हैरान हुआ क्यूँकि उस कमरे में बहुत ही हसीनो जमील और ख़ूबसूरत औरत मौजूद थी। वह अल्लाह वाला उल्टे क़दम कमरे से निकल आया और हज़रते शैख़ अ़ब्दुल्लाह सूमई के पास हाज़िर होकर कहा कि आपने जिस लड़की की शादी मुझसे की थी वह लड़की उस कमरे में नहीं है बल्कि दूसरी है। अब हज़रते शैख़ अ़ब्दुल्लाह सूमई ने फ़रमाया कि बेटा वही तुम्हारी बीवी है और मैंने जो कुछ तुमसे कहा था उसका मतलब यह है कि उस लड़की ने कभी भी अपनी

ज़बान से शरीअत के ख़िलाफ़ कोई बात नहीं की इसलिए वह गूंगी है, उसने अपने कानों से कोई बुरी बात न सुनी इसलिए वह बहरी है, उसने कभी अपनी आंखों से किसी ग़ैर महरम को नहीं देखा है इसलिए वह अन्धी है, उसने अपने हाथों से कभी कोई ग़लत काम न किया इसलिए वह लूली है और वह कभी अपने पैरों से किसी गुनाह की तरफ़ नहीं बढ़ी इसलिए वह लंगड़ी है।

उस मुक़द्दस ख़ातून का मुबारक नाम सय्यिदा फ़ातिमा है और कुन्नियत उम्मुल ख़ैर है और लक़ब शरीफ़ अमतुल जब्बार है और उस अल्लाह वाले का मुबारक नाम सय्यिद मूसा इब्ने अब्दुल्लाह है और कुन्नियत अबू सालेह है और लक़ब जंगी दोस्त है।

इन्हीं दोनों मुबारक और अल्लाह वालों के ज़रिए हक़ीक़तो मारिफ़त और शरीअतो तरीक़त का एक ऐसा महकता हुआ फूल खिला जिसने सारे आलम को अपनी ख़ुशबू से महका दिया जो ग़ौसियत और .कुतबियत का ताजवर बन कर विलायत के आसमान पर चाँद व सूरज की तरह जगमगाया और क़ियामत तक जगमगाता रहेगा जिसे दुनिया ने "ग़ौसे आज़म" के मुक़द्दस लक़ब से जाना और पहचाना। वल ह़म्दु लिल्लाहि रब्बिल आ़लमीन।

वालिदैन की पारसाई पर ख़ुसूसी तबसिरा

वालिदे बुज़ुर्गवार का लक़ब जंगी होने की यह बतलाई जाती है कि आप जिहाद फ़ीसबीलिल्लाह (यानी अल्लाह की राह में जिहाद) के बहुत शौक़ीन थे और राहे ख़ुदा में जंग और शहादत आपकी मुक़द्दस ज़िन्दगी की बड़ी महबूब तमन्ना थी। इन पाकीज़ा जज़बात ही से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि सरकारे ग़ौसे आज़म जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के वालिदे बुज़ुर्गवार कितने बड़े जलीलुल क़द्र रहनुमा और मुर्शिदे

कामिल थे। जान सभी को अज़ीज़ होती है लेकिन वक़्त का वह मर्दे हक़ परस्त जान जैसी अज़ीज़ चीज़ को भी हक़ की राह में .क़ुर्बान कर देने का पक्का इरादा कर चुका था और ख़ुदा व रसूल की दोस्ती और सच्ची महब्बत का इससे बढ़ कर और क्या सुबूत हो सकता है।

जहाँ एक तरफ़ सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु के वालिदे बुज़ुर्गवार ख़ासाने ख़ुदा में से थे वहीं आपकी वालिदा माजिदा वक़्त की इन्तेहाई पाक सीरत ख़ातून और तक़वा व तहारत की बेनज़ीर मुजस्समा थीं जिनका नाम फ़ातिमा और कुन्नियत उम्मुल ख़ैर थी और लक़ब अमतुल जब्बार (यानी ख़ुदा की बन्दी) था। यह नाम ही इस बात की शहादत दे रहा है कि आप तमामी बेहतरीन ख़ूबी की मुकम्मल तफ़सीर थीं और भला क्यूँ कर न होतीं जबकि उन्होंने अपने वालिदे गिरामी हज़रत अब्दुल्लाह सूमई जैसे ज़ाहिदे वक़्त से फ़ज़ाएल व महासिन और .फ़ुयूज़ व बरकात की बेशक़ीमत दौलत के हासिल करने में पूरे हौसले से काम लिया था जो एक तरफ़ तो जीलान के रईसों में शुमार किए जाते थे तो दूसरी तरफ़ उनके इल्म व फ़ज़्ल व ज़ुहद व तक़वा फ़ैज़े ज़ाहिरी व बातिनी की जीलान के हर नगर व शहर में धूम मची थी। ऐसे बाफ़ैज़ व बाकमाल बाप और ख़ुदा-रसीदा माँ से पैदा होकर और उनकी आग़ोशे करामत व रहमत में परवरिश पाने के बाद वह औलियाए किराम की जमाअत का कितना फ़ैज़ वाला और तरीक़त का कितना बड़ा ताजदार हुआ होगा जिसकी जुमला सआदतें कसबी (मेहनत से हासिल की हुई सआदतें) नहीं बल्कि वहबी (अल्लाह की जानिब से अता किया हुआ) थीं जिसकी पेशानी से उस वक़्त भी आसारे विलायत ज़ाहिर हो रहे थे जबकि वह गहवारे में झूल रहा था।

بالائے سرش ز ہوشمندی   می تافت ستارۂ بلندی

तर्जमा : उसकी पेशानी पर अक़्लमन्दी की वजह से बलन्दी का सितारा चमकता था।

हुलिया मुबारका

मुस्तफ़ा के तने बे साया का साया देखा
जिसने देखा मेरी जाँ जलवए ज़ेबा तेरा
नबवी मेंह अलवी फ़स्ल बतूली गुलशन
हसनी फूल हुसैनी है महकना तेरा
नबवी ज़िल अलवी बुर्ज बतूली मंज़िल
हसनी चाँद हुसैनी है उजाला तेरा
नबवी ख़ुर अलवी कूह बतूली मादिन
हसनी लाल हुसैनी है तजल्ला तेरा

अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को ज़हिरी शक्लो सूरत में भी बेपनाह हुस्नो जमाल से नवाज़ा था। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुताल्लिक़ रावी हज़रात इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि हज़रते सय्यिद शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी बहुत ख़ूबसूरत थे। रियाज़त और इबादत की वजह से आपका जिस्मे मुबारक कुछ कमज़ोर था।

हुज़ूर गौसे आज़म का क़द शरीफ़ दरमियानी था, सीना मुबारक चौड़ा था और रंग गेहुआँ था और आंखें सुरमगीं जो मारिफ़त के नूर से भरी थीं, भवें बारीक और मिली हुई थीं, सरे अक़दस बड़ा जो आपके आली दिमाग़ की अलामत थी, सरे अक़दस और दाढ़ी मुबारक के बाल बहुत मुलायम और चमकदार थे, दाढ़ी शरीफ़ बहुत घनी और ख़ूबसूरत थी, सरे अक़दस के बाल शरीफ़ आम तौर पर कान मुबारक की लौ तक रहते थे, दांत शरीफ़ हर क़िस्म की गन्दगियों से पाक और मोतियों की तरह चमकदार थे। रुख़सारे मुबारक मौज़ूँ यानी गाल मुबारक न बहुत उभरे हुए और न बहुत पिचके हुए बल्कि ख़ूबसूरत थे।

चेहरए अनवर रोबदार जिससे नूर बरसता था और नाक मुबारक ऊँची, होंट पतले और निहायत हसीन थे। जब बात

करते तो मालूम होता कि मुँह से फूल झड़ रहे हैं। आवाज़ मुबारक बलन्द थी। जब वाज़ फ़रमाते तो दूर और नज़दीक हर एक को बराबर पहुँती थी और हर एक को ऐसा मालूम होता था कि जैसे सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उनके क़रीब ही इरशाद फ़रमा रहे हैं। हथेलियाँ चौड़ी और नर्म थीं। हाथ मुबारक और पांव मुबारक की उंगलियाँ ख़ुश्नुमा थीं। आपको देख कर ही बिल्कुल यक़ीन हो जाता था कि आप आरिफ़े कामिल और अल्लाह तआ़ला की बारगाह के चुने हुए बन्दे हैं। जिस वक़्त आप गुफ़्तगू फ़रमाते थे तो मजलिस गूंज उठती थी आवाज़ मुबारक में .क़ुदरती तौर पर ऐसा रोब था कि जब भी आप गुफ़्तगू फ़रमाते थे तो सुनने वाले सब के सब ख़ामूशी के साथ मुतवज्जह हो जाते किसी को भी आपकी गुफ़्तगू से बेपरवाह होने की मजाल न थी। आप जो कुछ इरशाद फ़रमाते उसी वक़्त उसको पूरा किया जाता था।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म जिस शख़्स या जिस मजमे पर अपनी नज़रे मुबारक से तवज्जोह फ़रमाते वह कैसा ही संगदिल और सख़्त तबीयत क्यूँ न होता मगर आपका ग़ुलाम हो जाता। आपका पसीना शरीफ़ ख़ुशबूदार था।

आप बहुत सादा लिबास इस्तेमाल फ़रमाया करते थे मगर बाद में उलमाए किराम की तरह बेहतरीन लिबास इस्तेमाल फ़रमाने लगे थे।

आपकी ख़ुराक बहुत सादा और कम थी, अकसर फ़ाक़ा करते और हफ़्ते में सिर्फ़ दो दिन यानी पीर और जुमा को खाना तनावुल फ़रमाते थे, खाना अकसर बिला नमक होता था। यह हुज़ूर ग़ौसे आज़म की आम ख़ुराक थी वर्ना कभी कभार उम्दा से उम्दा खाना तनावुल फ़रमा लेते और पुरतकल्लुफ़ दावत भी क़बूल फ़रमा लेते।

हुज़ूर सरकारे दो आलम नूरे मुजस्सम सय्यिदे आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तरह आपको भी ख़ुशबू बहुत पसन्द थी। फ़ितरी तौर पर बदबू से सख़्त नफ़रत

थी। रोज़ाना ग़ुस्ल फ़रमाते और ख़ुशबू लगा कर इबादत में मशग़ूल हो जाते और आपके जिस्म पर भी कभी मक्खी नहीं बैठती थी जैसा कि महबूबे ख़ुदा सुल्तानुल अम्बिया स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के जिस्मे पाक पर मक्खी नहीं बैठती थी।

अल्लाह तआ़ला की इबादत से बहुत ज़्यादा लगाव था। हमेशा बावुज़ू रहते और जब वुज़ू टूट जाता तो फ़ौरन ताज़ा वुज़ू फ़रमाते और दो रकआत तहिय्यतुल वुज़ू पढ़ते। रात के वक़्त कभी अपने घर से बाहर तशरीफ़ न ले जाते मगर शरई ज़रूरत के वक़्त तशरीफ़ ले जाते। ह़क़ बात कहने में किसी की रिआयत नहीं फ़रमाते यहाँ तक कि ख़लीफ़ा को भी झंझोड़ दिया करते और किसी दुनियादार के लिए अदब की वजह से खड़े न होते। रोज़े बहुत रखते तिहाई रात तक नफ़्ल पढ़ते और फिर ज़िक्र करते। फिर अल्लाह तआ़ला के इन नामों का विर्द फ़रमाते :-

اَلْمُحِيْطُ اَلرَّبُّ اَلشَّهِيْدُ اَلْحَسِيْبُ اَلْفَعَّالُ اَلْخَالِقُ اَلْبَارِئُ اَلْمُصَوِّرُ.

सिजदे बहुत लम्बे करते। तहज्जुद अदा फ़रमाते और मुराक़बा और मुशाहदा में सुबहे सादिक़ तक बैठे रहते फिर इन्तिहाई तवाज़ो के साथ दुआ मांगते। उस वक़्त सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को ऐसा नूर ढांप लेता कि नज़रों से ग़ायब हो जाते।

सय्यिदुना ग़ौसे आज़म की पैदाइश

मोअतबर रिवायतों के ज़रिए पता यह चलता है कि हज़रत ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पहली रमज़ानुल मुबारक जुमा के दिन हिजरी 470 मुताबिक़ सन् 1075 में पैदा हुए।

इमाम हाफ़िज़ इब्ने कसीर दमिश्की (जिनकी वफ़ात हिजरी 774 में हुई) अपनी तसनीफ़ अलबिदाया वन्निहाया में हज़रते ग़ौसे आज़म का सने विलादत हिजरी 470 लिखते हैं और इमाम

याफ़िई (जिनकी वफ़ात हिजरी 768 में हुई) अपनी तसनीफ़ मिरआतुल ज़िनान व इबरतुल यक़ज़ान में लिखते हैं कि हज़रते ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से जब किसी ने आपकी पैदाइश के साल के मुताल्लिक़ सवाल किया तो आपने जवाब दिया मुझको सही तौर पर तो याद नहीं अलबत्ता इतना .जरूर जानता हूँ कि जिस साल मैं बग़दाद में आया था उसी साल शैख़ अबू मुहम्मद रिज़्क़ुल्लाह इब्ने अब्दुल वह्हाब तमीमी का विसाल हुआ और हिजरी 488 था और उस वक़्त मेरी उम्र अट्ठारह साल थी, इस हिसाब से आपका सने विलादत हिजरी 470 हुआ। इसके बाद इमाम याफ़ेई ने शैख़ अबुल फ़ज़ल अह़मद इब्ने सा़लेह ज़ैली का क़ौल नक़्ल किया है कि हज़रत की विलादत हिजरी 471 में हुई और आप हिजरी 488 में बग़दाद तशरीफ़ ले गए हैं जबकि आपकी उम्र शरीफ़ अट्ठारह साल थी। इमाम याफ़िई ने हज़रते ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इस क़ौल से कि उस वक़्त मेरी उम्र अट्ठारह साल थी यह समझा कि आप अट्ठारह साल पूरे फ़रमा चुके थे और शैख़ अबुल फ़ज़ल ने यह समझा है कि अभी आप अट्ठाहरवें साल ही में थे, 470 और 471 में इख़्तेलाफ़ की वजह यही है जो ऊपर बयान की गई और इसी इख़्तेलाफ़ की बिना पर बाद के मुअर्रिख़ीन (इतिहासकार) में से किसी ने इमाम याफ़ेई के क़ौल के मुताबिक़ और किसी ने शैख़ अबुल फ़ज़ल अह़मद के ख़्याल के मुताबिक़ सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की पैदाइश का साल मुतइयन की है। इसी तरह जिस किसी ने आपकी तारीख़े विलादत लफ़्ज़े इश्क़ से निकाली है वह भी दुरुस्त है और जिसने लफ़्ज़े आशिक़ से निकाली उसे भी नहीं झुटलाया जा सकता।

हज़रते अब्दुल रह़मान जामी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने नफ़हातुल इन्स (किताब का नाम) के अन्दर हज़रते ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुताल्लिक़ जो कुछ लिखा है इमाम याफ़िई की किताब से लिया है और बाद के सब

सवानेह लिखने वालों ने नफ़हातुल इन्स ही से लिए हैं। इसी वजह से आम लोगों की राय यही हो गई कि हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का सने विलादत हिजरी 470 है।

सरकारे ग़ौसे आज़म के पैदा होने की जगह

वतने मुबारक आपका गील है जिसे गीलान भी कहते हैं। अरब के लोग इसे जील और जीलान कहते हैं। यह तिबरिस्तान के पास एक इलाक़ा है जो मुल्के अजम (अरब के एलावा सब मुल्कों को अजम कहते हैं) में है। इसी इलाक़े में नीफ़ नाम की अबादी में आपकी पैदाइश हुई। बग़दादे मुक़द्दस और मदाइन के क़रीब भी जील या गील नाम के दो क़स्बे पाए जाते हैं लेकिन इन दोनों क़स्बों को हज़रते ग़ौसे आज़म की पैदाइश की जगह कहना दुरुस्त नहीं क्यूँकि यह मुल्के इराक़ से मुताल्लिक़ है और हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का अजमी होना मुतहक़्क़क़ है यानी इसकी तहक़ीक़ हो चुकी है कि आप अजमी थे। अजमी उसको कहते हैं जो अरब का न हो।

पैदाइश के वक़्त के वाक़ियात

हुज़ूर पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की विलादते बसआदत के वक़्त बहुत से हैरत अंगेज़ वाक़ियात ज़ाहिर हुए। सबसे बड़ी बात तो यह है कि जब आप पैदा हुए उस वक़्त आपकी वालिदा माजिदा हज़रते उम्मुल ख़ैर अमतुल जब्बार फ़ातिमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की उम्र शरीफ़ साठ साल की थी जिस उम्र में औरतों को औलाद से नाउम्मीदी हो जाती है मगर यह अल्लाह तआ़ला का ख़ास फ़ज़्लो करम था कि साठ साल की उम्र शरीफ़ में हज़रते उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा के मुक़द्दस पेट से विलायतो करामत का एक ऐसा सूरज तुलू़ हुआ जिसकी हिदायत की रौशनी ने सारे

आलम को रौशन और मुनव्वर कर दिया। मनाक़िबे ग़ौसिया में हज़रते शैख़ शिहाबुद्दीन सोहरवर्दी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मन्क़ूल है कि शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की विलादत के वक़्त पांच अज़ीमुश्शान करामतों का ज़ुहूर हुआ
1. हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के वालिदैन माजिदैन को अल्लाह तआ़ला ने आलमे ख़्वाब में बशारत दी कि जो लड़का तुम्हारे यहाँ पैदा होगा सुलतानुल औलिया होगा उसका मुख़ालिफ़ गुमराह और बद्दीन होगा।
2. हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के वालिदे माजिद हज़रते अबू सालेह मूसा जंगी दोस्त रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह को हुज़ूर सय्यिदे आलम नूरे मुजस्सम स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ज़ियारत नसीब हुई तो हुज़ूर सय्यिदे आलम ने फ़रमाया ऐ मेरे बेटे अबू स़ालेह तुझे अल्लाह तआ़ला ने वह फ़र्ज़न्द अर्जुमन्द दिया है जो मेरा बेटा और महबूब है और ख़ुदाए तआ़ला का भी महबूब है और उसका मरतबा औलिया में ऐसा होगा जैसा मेरा मरतबा अम्बिया में है।

मुह़म्मद का रसूलों में है जैसे मरतबा आला
है अफ़ज़ल औलिया में यूंही रुतबा ग़ौसे आज़म का

3. तमाम अम्बियाए किराम ने हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के वालिदे माजिद हज़रते अबू स़ालेह रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह को ख़्वाब में बशारत दी कि ऐ अबू स़ालेह तमाम सहाबए किराम और अइम्मए किराम के एलावा तमाम अगले और पिछले औलिया तुम्हारे नूरे नज़र शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर के फ़रमाबरदार होंगे और उसका क़दम अपनी गर्दनों पर रखेंगे और उसकी इताअ़त वलियों के मरतबों की बलन्दी का सबब होगा।
4. हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की पैदाइश के वक़्त जीलान में जितने बच्चे पैदा हुए सब के सब लड़के थे जिनकी तादाद ग्यारह सौ थी और वो सब लड़के औलियाए कामिलीन हुए।
5. हुज़ूर नबीए करीम रऊफ़ व रह़ीम ने मेराज की रात जो हुज़ूर ग़ौसे आज़म की गर्दन पर क़दमे मुबारक रखा था उसका

निशान हज़रते ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की पैदाइश के वक्त आपकी गर्दन मुबारक पर मौजूद था।

पैदाइश के वक्त हज़रते ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की शक्ले मुबारक इतनी रोबदार और नूरानी थी कि कोई शख़्स आपको ग़ौर से देख न सकाता था और आपको अल्लाह तआला ने सय्यिदे आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के जमाल का मज़हर बना कर दुनिया में भेजा।

पैदा होते ही अहकामे शरीअत का इहतिराम

हज़रते फ़ातिमा उम्मुल ख़ैर बयान फ़रमाती हैं कि विलादत के साथ अहकामे शरीअत का इस क़द्र इहतेराम था कि मेरा बेटा अब्दुल क़ादिर रमज़ान भर दिन में क़तई दूध नहीं पीता था। एक मरतबा अब्र की वजह से 29 शाबान को चाँद नहीं दिखाई पड़ा तो लोग शक में पड़ गए। कुछ लोग सरकारे ग़ौसे आज़म की वालिदा माजिदा हज़रते उम्मुल ख़ैर की बारगाह में हाज़िर हुए और दरयाफ़्त किया कि क्या आपके बेटे ने आज दूध पी लिया? तो हज़रते फ़ातिमा उम्मुल ख़ैर ने फ़रमाया कि आज मेरे बेटे अब्दुल क़ादिर ने सहरी के वक्त से दूध नहीं पिया है तो लोगों को यक़ीन हो गया कि चाँद निकल आया और आज रमज़ान शरीफ़ की पहली तारीख़ है। बाद में शरई शहादत से यह साबित भी हो गया कि चाँद निकल आया था। और ख़ुद हज़रते ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की वालिदा मुहतरमा का बयान है कि दूध पीने के ज़माने में मेरे बेटे अब्दुल क़ादिर की यह हालत थी कि मेरा बेटा साल के तमाम हिस्सों में दूध पीता लेकिन ज्यूँ ही रमज़ान शरीफ़ शुरू होता तो मेरा बेटा अब्दुल क़ादिर सहरी के वक्त से इफ़तारी के वक्त तक हरगिज़ कुछ खाता पीता नहीं था लेकिन ज्यूँ ही हम लोग इफ़तारी करते तो मेरा बेटा भी दूध पीता।

बचपन के कुछ वाक़ियात

हज़रात! बचपन में आम तौर पर बच्चे खेलकूद के शौक़ीन हुआ करते हैं मगर अल्लाह तआ़ला को यह मन्ज़ूर नहीं था कि आसमाने .कुतुबियत का यह रौशन सितारा खेलकूद में मारा मारा फिरे इसलिए हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु लड़कपन ही से खेलकूद से दूर ही रहे। हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने ख़ुद अपने बचपन की हालत बयान फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि जब कभी मैं बच्चों के साथ खेलने का इरादा करता तो मैं सुनता था कोई कहने वाला मुझसे कहता कि ऐ बरकत वाले मेरी तरफ़ आ जा। तो मैं डर कर भागता और अपनी मुक़द्दस माँ की गोद में छुप जाता और मैं अब भी तन्हाई में वह आवाज़ सुनता हूँ और हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने यह भी फ़रमाया कि मैं अपनी जवानी के दिनों में सफ़र में था यहाँ तक कि मैं सुनता था कि कोई मुझसे कहता था ऐ अ़ब्दुल क़ादिर तुमको मैंने अपने लिए पसन्द किया है। मैं आवाज़ सुना करता था और कहने वाले को नहीं देखता था। मुजाहदा के दिनों में मुझे ऊंघ आती तो सुना करता था कि कोई कहता है ऐ अ़ब्दुल क़ादिर तुमको मैंने सोने के लिए नहीं पैदा किया और बेशक हम तुम्हारे उस वक़्त भी दोस्त थे जबकि तुम कुछ न थे तो जब तुम कुछ हो गए तो हमसे ग़ाफ़िल न होना। क्या ख़ूब फ़रमाया हज़रते मौलाना जमील क़ादिरी बेरलवी अलैहिर्रह़मा ने :-

रहे पाबन्द अहकामे शरीअत इब्तिदा ही से
न छूटा शीरख़्वारी में भी रोज़ा ग़ौसे आज़म का
इलइया या मुबारक आती थी आवाज़ ख़लवत में
यहीं से जान ले मुन्किर तू रुतबा ग़ौसे आज़म का

ब्राद्राने मिल्लत! एक मरतबा लोगों ने हुज़ूर पुर नूर ग़ौसियत मआब रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से दरयाफ़्त किया कि

हुज़ूर आपको अपनी विलायत का इल्म कब हुआ? तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया कि दस बरस की उम्र में जब मैं मदरसे में पढ़ने के लिए जाता था तो ग़ैबी आवाज़ आती थी कि अल्लाह के वली को बैठने के लिए जगह दो ताकि वह आराम से बैठ जाए। क्या ख़ूब फ़रमाया हज़रते मौलाना जमील क़ादिरी बेरलवी अलैहिर्रहमा ने

फ़िरिश्ते मदरसे तक साथ पहुँचाने को जाते थे
यह दरबारे इलाही में है रुतबा ग़ौसे आज़म का

<u>बिस्मिल्लाह ख़्वानी</u> : मशहूर रिवायत है कि जब सय्यिदुना ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की उम्र शरीफ़ चार साल की हुई तो इस्लामी रस्मो रिवाज के मुताबिक़ वालिदे मुहतरम सय्यिदुना शैख़ अबू स़ालेह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु आपको रस्मे बिस्मिल्लाह ख़्वानी की अदाएगी और मकतब में दाख़िल करने की ग़र्ज़ से ले गए और उस्ताद के सामने आप दोज़ानू होकर बैठ गए। उस्ताद ने कहा पढ़ो बेटे बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम। आपने बिस्मिल्लाह शरीफ़ पढ़ने के साथ साथ अलिफ़ लाम मीम से लेकर मुकम्मल अट्ठारह पारे ज़बानी पढ़ डाले। उस्ताद ने हैरत के साथ दरयाफ़्त किया कि यह तुमने कब पढ़ा और कैसे याद किया? फ़रमाया वालिदा माजिदा अट्ठारह पारों की हाफ़िज़ा हैं जिनका वह अकसर विर्द किया करतीं थीं जब मैं माँ के पेट में था तो यह अट्ठारह सिपारे सुनते सुनते मुझे भी याद हो गए थे।

दीनी उलूम हासिल करने की ख़ातिर जीलान से कूच

हज़रात! अभी सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कमसिन ही थे कि वालिदे गिरामी हज़रते शैख़ अबू स़ालेह रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का इन्तेक़ाल हो गया फिर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु और आपके छोटे भाई अबू अह़मद अ़ब्दुल्लाह रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की परवरिश

और तालीम व तरबियत का सारा इन्तेज़ाम सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की वालिदा माजिदा ही ने फ़रमाया। हज़रते अबू अहमद अब्दुल्लाह तो नौजवानी ही में इन्तेक़ाल फ़रमा गए मगर सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु अपने वतन जीलान शरीफ़ में रह कर अट्ठारह बरस की उम्र शरीफ़ तक मुख़्तलिफ़ दर्सगाहों में हाज़िर होकर अपने उस्ताज़ों से इल्म हासिल फ़रमाते रहे, सात बरस की उम्र शरीफ़ में .कुर्आन मजीद हिफ़्ज़ कर लिया फिर उलूमे अरबिया के हासिल करने में मशग़ूल हो गए। और साथ ही साथ आप को अपनी ज़मीन और घर के दूसरे कामों को संभालना पड़ता था और इन कामों से फ़ारिग़ होकर जो वक़्त मिलता था उसे वालिदा मुहतरमा की ख़िदमत में सर्फ़ किया करते थे।

ज़िन्दगी की गाड़ी इसी तरह चल रही थी कि एक मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने ख़्याल फ़रमाया कि रोज़ी हासिल करने के लिए हमें कुछ करना चाहिए। चुनांचे एक दिन हल और बैल लेकर खेत की तरफ़ चले। तो रास्ते में बैल ने मुड़ कर अर्ज़ किया कि ऐ अब्दुल क़ादिर आप इस लिए नहीं पैदा किए गए और न आपको इसका हुक्म दिया गया है। तब हुज़ूर ग़ौसे आज़म डर कर अपने मकान पर लौट आए और मकान की छत पर चढ़ गए। तो उस वक़्त अल्लाह तआला ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म के सामने से तमाम पर्दों को हटा दिया। तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने देखा कि हाजी लोग अरफ़ात के मैदान में खड़े हैं। फिर हज़ूर ग़ौसे आज़म अपनी वालिदा माजिदा के पास हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हुज़ूर आप मुझको अल्लाह के लिए अपना हक़ बख़्श दीजिए और मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं बग़दाद जाकर वहाँ इल्म हासिल करूँ और बुज़ुर्गों की ज़ियारत करूँ। तो वालिदा माजिदा ने सबब पूछा तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने वह सब कुछ बता दिया जो नवीं ज़िलहिज्जा को उनके साथ गुज़रा। यह सुनकर वालिदा मुहतरमा रोने लगीं और अस्सी दीनार लाईं जो हुज़ूर ग़ौसे आज़म के

वालिदे माजिद रद़ियल्लाहु तआला अन्हु छोड़ कर फ़ौत हुए थे। वालिदा मुहतरमा ने चालीस दीनार तो छोटे भाई के लिए रख लिए और चालीस दीनार हुज़ूर ग़ौसे आज़म की सदरी में बग़ल के नीचे सी दिए और अहद लिया कि बेटा अब्दुल क़ादिर किसी हाल में भी झूट न बोलना बल्कि हमेशा सच ही बोलना फिर दरवाज़े तक रुख़सत करने के लिए तशरीफ़ लाईं और फ़रमाने लगीं कि ऐ बेटा अब्दुल क़दिर अब तुम जाओ और अल्लाह अज़्ज़ावजल्ल के लिए मैं तुमसे अलग होती हूँ, अब तुम्हारा यह चेहरा क़ियामत तक न देखूंगी। उसके बाद हुज़ूर ग़ौसे आज़म एक क़ाफ़िले के साथ बग़दाद को रवाना हो गए।

फ़ायदा : एक माँ के लिए ऐसे होनहार फ़रज़न्द को अपने से जुदाई की इजाज़त देना कोई आसान काम नहीं था मगर दीन की ख़ातिर उस मुक़द्दस ख़ातून ने नेक दुआओं के साथ बेटे को इल्मे दीन हासिल करने के लिए सफ़र की इजाज़त दे दी। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु की वालिदा माजिदा के इस नेक काम से मुसलमान औरतों को सबक़ हासिल करना चाहिए और अपनी औलाद को दीनी तालीम के लिए दिल की दुआओं के साथ मौक़ा देना चाहिए।

हुसूले इल्म और आपके उसताद हज़रात

बग़दादे मुक़द्दस पहुँच कर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु वहाँ के मशहूर मदरसा अरबिया जमिआ निज़ामिया में एक तालिबे इल्म की हैसियत से दाख़िल हुए और बड़े बड़े मशहूर उलमाए किराम की दर्सगाह में हाज़िर होकर इल्मे दीन को मुकम्मल फ़रमाया। हज़रत अल्लामा अबू ज़करिया यहया इब्ने अली से अरबी ज़बान हासिल की और हज़रत अल्लामा अली इब्ने अक़ील और मुहम्मद इब्ने क़ाज़ी अबू याला और क़ाज़ी अबू सईद महज़मी वग़ैरह उलमाए किराम से फ़िक़्ह और उसूले फ़िक़्ह की तालीम हासिल की

और हज़रत अल्लामा अबू ग़ालिब मुहम्मद इब्ने हसन बाक़िलानी वग़ैरह तक़रीबन सत्रह मुहद्दीसीने किराम की दर्सगाहों में हाज़िर होकर इल्मे हदीस पढ़ कर मुकम्मल महारत हासिल फ़रमाई और तमाम राइज उलूम में पूरी पूरी महारत हासिल कर ली और अपने दौर के आलिमे बेमिसाल बन गए और हर तरफ़ आपके इल्मी कमाल का सिक्का बैठ गया। चुनांचे ख़ुद हुज़ूर सरकारे ग़ौसे आज़म रदि्यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपने क़सीदए ग़ौसिया में इरशाद फ़रमाते हैं जिसका मतलब यह है कि "मैं इल्म पढ़ता रहा यहाँ तक कि .कुतुब हो गया और तमाम मौलाओं के मौला अल्लाह अज़्ज़ावजल्ल की तरफ़ से मुझे भलाई के ख़ज़ाने हासिल हो गए। सरकारे ग़ौसे आज़म रदि्यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इन उस्ताज़ों के अलावा दूसरे बा'ज़ चन्द मशहूर उस्ताज़े गिरामी के मुबारक नाम ये हैं :-

हज़रते शैख़ हम्माद, हज़रते अबुल ख़त्ताब, हज़रते महफ़ूज़ इब्ने अहमद अलकलूज़ानी, हज़रते अबू सअद मुहम्मद इब्ने अब्दुल करीम, हज़रते अबुल ग़नाएम इब्ने मैमून, हज़रते अबुल क़ासिम अल करख़ी, हज़रते अबू उस्मान अल इसफ़हानी, हज़रते अबुल बरकात हिबतुल्लाह, हज़रते अबुल इज़्ज़ुल हाशमी, हज़रते अबुल मन्सूर इब्ने अबी ग़ालिब, हज़रते अबुल बरकात अल आक़ूली, (रदि्वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अजमईन)

नोट : बाज़ रिवायात में अल महज़मी की जगह अल मख़ज़ूमी अबू सईद की जगह अबू सअद है।

उलूमे बातिनी

हुज़ूर पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म रदि्यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उलूमे ज़ाहिरी को हासिल करने के बाद उलूमे बातिनी की तरफ़ मुतवज्जह हुए। चुनांचे हुज़ूर पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म रदि्यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हज़रते शैख़ ह़म्माद इब्ने मुस्लिम दब्बास रदि्यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से उलूमे बातिनी का ज़्यादा हिस्सा हासिल किया। यह हज़रते शैख़ ह़म्माद इब्ने मुस्लिम

दब्बास बग़दाद शरीफ़ के मशहूर बुज़ुर्गों में से थे और बहुत बड़े अल्लाह के वली थे। उस दौर के बहुत से सूफ़ियाए किराम इल्मे तरीक़त में उनके शागिर्द थे। हज़रते शैख़ हम्माद लोगों में शैख़ दब्बास के लक़ब से मशहूर थे क्यूँकि दब्बास के मअना हैं अंगूर का शीरा बेचने वाला। हज़रते शैख़ ह़म्माद क्यूँकि अंगूर का शीरा बेचते थे इसलिए लोगों में शैख़ दब्बास से मशहूर हो गए। आपकी एक मशहूर करामत यह है कि आपके शीरा पर कभी किसी क़िस्म की मक्खी नहीं बैठती थी और आपका शीरा निहायत पाक व साफ़ होता था।

मुजाहदा व रियाज़ात

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने मुकम्मल तौर पर उलूम ज़ाहिरी हासिल करने के बाद उलूमे बातनी के हुसूल की इब्तिदा की और मुजाहदा व रियाज़ात की इन्तेहाई मुश्किल व पुरख़ार (कांटों से भरी हुई) राहों में क़दम रखा। चुनांचे आप शहर छोड़ कर इराक़ की वीरान वादियों में तन्हाई में ज़िन्दगी बसर करने लगे ताकि कामिल तन्हाई मिले। जैसे ही सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपनी मुजाहदाना ज़िन्दगी का आग़ाज़ किया तो अल्लाह तबारक व तआ़ला का फ़ज़्ल जो शुरू ही से आपके साथ था और ज़्यादा हो गया।

हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम भी आपके हमसफ़र हो गए मगर अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी से जब तक अल्लाह तआ़ला ने चाहा हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने हज़रते ख़िज़्र को नहीं पहचाना। बिलआख़िर सय्यिदुना ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने ख़ुद अपने आपको ज़ाहिर फ़रमा कर वादा लिया कि आप उनकी मुख़ालफ़त नहीं फ़रमायेंगे। वादे के साथ साथ हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इसी जगह आप रहिए जब तक कि मैं वापस न आ जाऊँ इसी मक़ाम पर रहिएगा। इतना फ़रमा कर हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम चल दिए और एक साल के बाद वापस

लौटे, दोबारा फिर यही ताकीद की ओर चले गए। इसी आलम में सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने तीन साल गुज़ारे। हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम हर साल आते और यही हिदायत फ़रमा कर लौट जाया करते थे। इस लम्बी मुद्दत में दुनिया की बेशुमार ख़्वाहिशात हसीन व दिलकश शक्लों में आपको अपनी जानिब मुतवज्जा करती रहीं मगर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दुनिया और दुनिया की हसीन व दिलकश चीज़ें आपको अपनी तरफ़ माएल न कर सकीं।

तीन साल की मुद्दत गुज़र जाने के बाद सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने नफ़्स को इन्तेहाई मशक़्क़त और जाँफ़ेशानी की भट्टी में डाल दिया और एक साल तक आपने क़तई पानी ही न पिया, सिर्फ़ जंगली साग व पात पर गुज़र फ़रमाते रहे फिर एक साल तक फ़क़त पानी पर गुज़ारा किया खाना क़तई तर्क फ़रमा दिया। तीसरे साल खाना पीना सोना हर शय से नफ़्स को महरूम कर दिया।

जिस ज़माने में ताजदारे जीलान इबादत व रियाज़त और मुजाहदए नफ़्स के दुश्वार मरहले तय फ़रमा रहे थे तो इबलीसे लईन की शैतानियत और ज़्यादा भड़क उठी। अब तक हर मोड़ पर शैतान आप से शिकस्त खा चुका था और अपने किसी फ़रेब में आपको न ला सका था हत्ताकि आप रूहानियत के बलन्द मरतबे हासिल करते जा रहे थे और यह शैतान से देखा न जा रहा था यहाँ तक कि एक दिन परागन्दा सूरत बनाए बदबूदार लिबास ओढ़े हुए आपकी ख़िदमत में आकर कहने लगा मैं इब्लीस हूँ मेरी जमाअत के तमाम अफ़राद को आपने आजिज़ व नाकाम कर दिया है अपने सारे हथकंडे इस्तेमाल कर चुका हूँ मगर आपकी साबित-क़दमी में ज़रा भी लग़ज़िश न आई। लिहाज़ा मैने हार मान ली और अब आपकी ख़िदमत में रहना चाहता हूँ। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया "लाहौला वला क़ुव्वता इल्ला बिल्लाहिल अलय्यिल अज़ीम" ज़ालिम मैं तो किसी तरह

तुझसे मुतमइन नहीं हो सकता तेरी ये बातें सरापा फ़ितना हैं जिसमें तू मुझे मुलव्विस करना चाहता है। अभी आपका जवाब ख़त्म भी न हुआ था कि पर्दए ग़ैब से एक हाथ नुमूदार हुआ और इस शिद्दत के साथ इब्लीस के सर पर पड़ा कि वह ज़मीन के अन्दर धंसता हुआ ग़ाइब हो गया।

दोबारा इब्लीस आग का शोला लेकर आपके क़रीब आया। आपने इस तैयारी के साथ हमलाआवर देखा तो तऊज़ किया यानी पढ़ा आऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैय ताँ निर्रजीम। वह चला गया और चन्द ही लम्हों के बाद फिर पलट कर आया और फ़िलफ़ौर आपके ऊपर हमलाआवर हो गया, फ़ौरन ही एक सवार नुमूदार हुआ और शैख़ जीलानी के हाथ में एक तलवार दे दी जिसे देखकर इब्लीस ग़ायब हो गया।

तीसरी बार इब्लीस मक्र व फ़रेब के नए जाल के साथ आया। आपने देखा कि आप से दूर परेशान हाल आफ़तज़दा ख़ाइब व ख़सिर की सी सूरत बनाए बैठा हुआ रो रहा है। आपकी नज़र पड़ी तो इबलीस कहने लगा कि अब आप मुझको क्या देख रहे हैं अब तो मैं क़तई आपसे नाउम्मीद हो गया हूँ। सरकारे जीलानी रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने फिर तऊज़ किया और फ़रमाया कि मैं तुझसे किसी हाल में मुतमइन नहीं हूँ। सरकारे जीलानी रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु की यह साबित क़दमी देख कर इब्लीस ने शिर्के ख़फ़ी के बेशुमार जाल आपके सामने बिछा दिए लेकिन क़ुदरत को सरकारे जीलानी रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु की हिफ़ाज़त मन्ज़ूर थी। सरकारे जीलानी रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने शैतान के बिछाए हुए तमाम जाल काट दिए। उसके बाद इब्लीस ने मख़लूक़ की महब्बत और दुनयावी रिश्तों के तअल्लुक़ाती जाल बिछाए मगर फ़ज़्ले रब्बानी से सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने क़तई तवज्जो न दी। आख़िर एक साल के बाद तमाम दुनयवी रिश्ते व महब्बतों के जाल भी तार तार हो गए और सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु इस कठिन मन्ज़िल से भी पार हो गए।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु आदतन वीरानों में मसरूफ़े इबादत रहा करते थे। कभी कभी हाल वारिद होता तो जिगरसोज़ नाले बलन्द करते थे। किताबों के अन्दर सरकारे जीलानी रद़ियल्लाहु तआला अन्हु को इब्लीस की जानिब से बहकाने का एक अजीब वाक़िया मिलता है।

एक मरतबा का ज़िक्र है कि सरकारे जीलानी रद़ियल्लाहु तआला अन्हु एक ऐसे जंगल में तशरीफ़ ले गए जहाँ खाने पीने की चीज़ों का दूर दूर तक निशान न मिलता था। मुसलसल कई दिनों तक मसरूफ़े इबादत रहने के बाद भूक व प्यास का ग़लबा हुआ। अचानक देखते ही देखते अब्र छा गया और बारिश हुई सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जी भर के पानी पिया। थोड़ी देर बाद बड़ी तेज़ रोशनी हुई और आसमान के किनारे किनारे फैल गई और उस रौशनी से आवाज़ आनी शुरू हुई "अब्दुल क़ादिर मैं तुम्हारा ख़ुदा हूँ आज से मैने तुम्हारे लिए हराम चीज़ें भी हलाल और नमाज़ माफ़ कर दी" आपने सुनते ही आऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैय तॉनिर्रजीम और लाहौला वला .कुव्वता इल्ला बिल्ला हिल अलिय्यिल अज़ीम पढ़ा फ़ौरन वह रोशनी ग़ायब हो गई और उसकी जगह फिर धुआँ फैल गया, फिर आवाज़ आई "अब्दुल क़ादिर तुमको तुम्हारे इल्म ने बचा लिया वर्ना यह वह जगह है कि इससे पहले सत्तर औलियाए तरीक़त को मैंने गुमराह करके उनकी विलायत को ग़ारतो बरबाद कर दिया है" सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने जवाब दिया कम्बख़्त शैतान मुझको मेरा इल्म भला क्या बचा सकता है जबकि तेरा इल्म तुझको नहीं बचा सका मैं अपने इल्म से नहीं बल्कि फ़ज़्ले इलाही की वजह से तेरे शर से महफ़ूज़ रहा। यह सुनकर शैतान ने ठंडी सांस ली और यह कहता हुआ चल दिया कि तुम फिर भी बच गए। इस ख़तरनाक मन्ज़िल से सलामती के साथ गुज़रने के बाद ख़ुदावन्द .कुद्दूस ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु पर आपका बातिन ज़ाहिर फ़रमाया।

सोचिए इतने सख़्त्तरीन मुजाहदात करने के बावजूद सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अब भी अपने बातिन को बहुत सी आलूदगियों से मुलव्विस पाया। यह सिर्फ़ इन्सानी इरादे व इख़्तियारात की आलूदगियाँ थीं। चुनांचे बहुत दिनों तक सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु इरादे व इख़्तेयारात के ख़िलाफ़ अल्लाह के काम में जमे रहे यहाँ तक कि मासिवा अल्लाह के ये तमाम ख़्वाहिशात भी ख़त्म हो गए और सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ज़ात में इरादे व इख़्तेयारात का तसव्वुर तक नापैद हो गया। इसके बाद ख़ुदाए क़दीर ने सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर नफ़्स की कैफ़ियत ज़ाहिर फ़रमाई तो आपने महसूस किया कि अभी भी नफ़्स के अन्दर हयात की झलक बाक़ी है, उसमें रूहानी बीमारियों का वुजूद है और उसकी ख़्वाहिश में ज़िन्दगी है। फिर आपने एक साल तक बामशक़्क़त रियाज़त फ़रमाई और एक साल तक नफ़्स से ज़बरदस्त जिहाद किया। रब तआ़ला ने इस पर भी आपको कामयाबी अ़ता फ़रमाई तो नफ़्स की सारी बीमारियाँ जाती रहीं, उसकी ख़्वाहिशात मिट गईं और अज़ीम कामयाबी हासिल हुई कि आपका शैतान भी मुसलमान हो गया। इस क़िस्म के मुजाहदात व रियाज़ात करने के बाद आपको एहसास हुआ कि अब नफ़्स के अन्दर हुक्मे रब्बी के इलावा किसी शय का वुजूद नहीं रहा। उस वक़्त आप अपनी हस्ती से अलाहिदा हो चुके थे और आपकी हस्ती आपसे अलाहिदा हो चुकी थी। अब आप बेमिसाल मर्दे हक़ बनकर आला मक़ाम पर पहुँच चुके थे। इन कमालात की मन्ज़िलों से गुज़रने के बाद आपने फ़क़्र की मन्ज़िल में क़दम रखा जिसे रब्बे करीम ने आपके लिए आसान फ़रमा दिया यहाँ तक कि दुनियाए फ़क़्र की आपको सलतनत अ़ता की गई। दरबारे इलाही से आपको रूहानियत के ख़ज़ानों की बेशुमार फ़ुतूहात हासिल हुईं। रूहानी उलूम और अबदियत के शरफ़ से आप नवाज़े गए।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु यह तमाम मन्ज़िलें तय फ़रमाने के बाद जब बग़दादे मुक़द्दस में वापस आए तो फ़ितना व फ़साद के माहौल को देख कर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तबीयत न लगी और बग़दाद शरीफ़ से चले जाने का इरादा फ़रमा लिया। चुनांचे एक दिन गले में .कुरआने करीम डाल कर महल्लए हलब के दरवाज़े से निकल पड़े तो फ़ौरन सदाए ग़ैबी जो हर आन आपकी रहनुमाई करती रही इस ख़्याल से बाज़ रखने के लिए हरकत में आई और सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपने मुबारक कानों से सुना वापस जाओ तुम्हारी ज़ात से मख़लूक़ को बग़दाद ही से फ़ायदा पहुँचेगा। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जवाब में कहा कि मख़लूक़ का मुझ पर क्या हक़ है कि मैं उसकी ख़ातिर इस फ़ितना व फ़साद के शहर में रहूँ, मैं तो यहाँ से इसलिए जाना चाहता हूँ ताकि अपने दीन व ईमान की हिफ़ाज़त कर सकूँ। फिर आवाज़ आई :-

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ

وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ط (پ ۴ ع ۳)

तर्जमा : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुईं भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।

मख़लूक़ का तुम्हारे ऊपर बहुत बड़ा हक़ है उसको हिदायत देना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है तुम इसी जगह पर रहो, अल्लाह तआ़ला तुम्हारे दीन व ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। सरकारे जीलानी ने इस मुक़द्दस फ़रमान की इताअत करते हुए मुस्तक़िल क़ियाम का पक्का इरादा फ़रमा लिया और इत्मिनाने क़ल्ब के साथ उस वक़्त का इन्तेज़ार करने लगे जिसमें सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ज़ात पाक से अल्लाह तआ़ला की मख़लूक़ को आम फ़ायदा पहुँचना था आख़िर वह मुबारक साअत आ ही गई।

चुनांचे सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपने जद्दे अकरम हुज़ूर सय्यिदे आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को देखा कि इरशाद फ़रमाते हैं कि ऐ मेरे प्यारे बेटे तू वाज़ क्यूँ नहीं फ़रमाता। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे प्यारे बाप मैं एक अजमी आदमी हूँ अरब के बेहतरीन गुफ़्तगू करने वालों के सामने क्यूँ कर बोल सकता हूँ। हुज़ूर सय्यिदे आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मुँह खोल। हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने अपना मुँह खोला। हुज़ूर पुर नूर सलल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने सात मरतबा अपना लुआब शरीफ़ हमारे आक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म के मुबारक मुँह में डाला और इरशाद फ़रमाया लोगों को अपने रब की तरफ़ बुला हिकमत और अच्छी नसीहत के साथ। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि उसके बाद मैं नमाज़े ज़ोहर पढ़ कर तक़रीर करने के लिए बैठा लोगों का बहुत बड़ा मजमा हो गया तो मैं तक़रीर न कर सका। फिर हज़रते मौलाए कायनात जनाबे हैदरे कर्रार अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम को देखा कि उसी मजलिस के आख़िर में तशरीफ़ फ़रमा हैं और फ़रमाते हैं ऐ मेरे प्यारे बेटे तू कलाम क्यूँ नहीं फ़रमाता। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने अर्ज़ की ऐ वालिदे गिरामी मेरी ज़बान बन्द हो गई तो हज़रते अली कर्रमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम ने फ़रमाया मुँह खोलो। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने मुँह खोला तो हज़रते अ़ली मुर्तज़ा ने छः बार अपना मुबारक थूक डाला। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने अर्ज़ किया कि आपने सातवीं बार क्यूँ नहीं डाला। हज़रते अ़ली ने इरशाद फ़रमाया हुज़ूर अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के साथ अदब की वजह से। उसके बाद इल्मों के समुन्द्र ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म के मुक़द्दस सीने से ज़बाने पाक पर मौजें मारीं और बिला तकल्लुफ़ मुकम्मल रवानी और बेबनावट के साथ इतनी बेहतरीन गुफ़्तगू और तक़रीर फ़रमाने लगे कि अरब के बड़े

बड़े बेहतरीन गुफ़्तगू और तक़रीर करने वालों ने हमारे आक़ा हुज़ूर पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म के सामने अपनी बड़ाई की टोपियाँ बिल्कुल उतार दीं। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है जिसे वह चाहता है देता है और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल वाला है।

इसके बाद थोड़े ही ज़माने में हुज़ूर पुर नूर के वाज़ में लोग ज़्यादती के साथ शामिल होने लगे। यहाँ तक कि जब बाबुल हलबा के मुसल्ला में गुंजाइश नहीं रही तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु का मिम्बर शरीफ़ शहर के बाहर इदगाह में बिछाया गया। वहाँ भी लोग वाज़ सुनने के शौक़ में घोड़ों ख़च्चरों गधों और ऊँटों पर सवार होकर आया करते थे और हाज़रीने मजलिस की तादाद सत्तर सत्तर हज़ार हो जाया करती थी। हुज़ूर पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु की हर मजलिसे मुबारक में कितने लोग अपने गुनाहों से तौबा करते, रहज़न अपनी रहज़नी से तौबा करते, गुमराह अपनी गुमराही से तौबा करते, बदमज़हब अपनी बदमज़हबी से तौबा करते यहाँ तक कि कभी कभी कुफ़्फ़ारो मुश्रिकीन अपने कुफ़्रो शिर्क से तौबा करके मुसलमान हो जाते। चुनांचे हुज़ूर पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु के शागिर्द हज़रते शैख़ अब्दुल्लाह जुबाई का बयान है कि हमारे शैख़ हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु की तक़रीर से मुतास्सिर होकर एक लाख से ज़्यादा फ़ासिक़ो फ़ाजिर और गुमराह लोगों ने आपके मुबारक हाथों पर तौबा की और हज़ारों यहूदी और ईसाई मज़हबे इसलाम में दाख़िल हुए। चुनांचे अख़बारुल अख़यार शरीफ़ में ख़ुद हज़ूर पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान मन्क़ूल है कि हुज़ूर फ़रमाते हैं कि मेरी ख़्वाहिश होती है कि हमेशा तन्हाई में रहूँ जंगल और बियाबान मेरा मकान हो न मख़लूक़ मुझे देखे न मैं मख़लूक़ को देखूँ लेकिन अल्लाह तआला को अपने बन्दों की भलाई मन्ज़ूर है। यही वजह है कि मेरे हाथ पर 5 हज़ार से ज़्यादा ईसाई और यहूदी मुसलमान

हो चुके हैं और एक लाख से ज़्यादा बदकार और गुनाहों में मुबतिला लोग तौबा कर चुके हैं और यह अल्लाह तआ़ला का ख़ास फ़ज़्लो इनाम है।

सरकारे जीलानी के वाज़ व तक़रीर में भला यह तासीर क्यूँकर न पैदा होती जबकि आपने दीनी उलूम में काफ़ी महारत हासिल कर ली थी। इबादत व रियाज़त के ज़रिए अपने नफ़्स को पाक कर लिया था। ज़ुहद व तक़्वा (तक़्वा व परहेज़गारी), रूहानी तक़द्दुस (रूह की सफ़ाई), बेरिया आमाले सालेहा (वो आमाल जिनमें दिखावा न हो) जैसी सिफ़ाते आलिया से मुज़य्यन हो चुके थे।

इसके अलावा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और हज़रते अली रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु की नज़रे शफ़क़त व रहमत और सरपरस्ती सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साथ शामिल थी। इन इल्मी व अमली और रूहानी फ़ैज़ान के साथ सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने वाज़ व नसीहत और हिदायते ख़ल्क़ का अज़ीमुश्शान तबलीग़ी काम शुरू किया था।

इस्लामी रहबर व रहनुमा बनने के लिए सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कुछ शराइत बयान फ़रमाये हैं और वो ये हैं ---- जिसे दीन के उलूम हासिल हों --- तसव्वुफ़ व मारिफ़त के भेदों से वाक़िफ़ हो बल्कि उनका मुशाहदा कर चुका हो और तजर्बेकार भी हो --- इन ख़ुसूसियात के साथ इस्लाम का मुकम्मल इल्म व अमल भी हो। उसी के लिए अल्लाह की मख़लूक़ को हिदायत का काम करना ठीक है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इन शराइत को बयान फ़रमाने के बाद मुक़्तदाए औलिया सय्यिदुत्ताइफ़ा हज़रते जुनैद बग़दादी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का यह मुबारक क़ौल भी नक़्ल फ़रमाया है कि हमारी ज़िन्दगी क़ुरआन व हदीस के दायरे में घिरी हुई है। जो शख़्स कलामे इलाही व अहादीसे नबवी का आलिम हो दीनी समझ व

फ़रासत रखता हो, ख़ुलूसे अमल का पैकर हो और तसव्वुफ़ व मारिफ़त के भेदों से बाख़बर हो और इन तमाम मन्ज़िलों से गुज़र चुका हो सिर्फ़ उसी शख़्स को दीनी रहबरी व पेशवाई की मसनद ज़ेब दे सकती है। इन औसाफ़ व कमालाते रूहानी .फ़ुयूज़ व बरकाते रब्बानी से सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मालामाल होकर मसनदे इरशाद व हिदायत पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए।

हिदायत : सरकारे ग़ौसे आज़म और हज़रते जुनैद बग़दादी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के इरशादात गिरामी उन हज़रात के लिए नसीहत व हिदायत का उमदा ज़रिया हैं जो न मौलवी हैं न आलिम और बिना इल्मे दीन हासिल किए वाज़ व तक़रीर करते हैं। ये लोग शरीअत से कोरे होकर हक़ीक़त व मारिफ़त की झूटी नुमाइश करके अवाम को शरीअत से दूर करते हैं हालांकि शरीअत ही अस्ल है।

सरकारे ग़ौसे आज़म की इबादतें

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की कसरते इबादत का अन्दाज़ा इन रिवायतों के ज़रिए आसानी के साथ किया जा सकता है कि चालीस साल तक पाबन्दी के साथ इशा के वुज़ू से आप फ़ज्र की नमाज़ अदा फ़रमाते रहे। पन्द्रह साल तक हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने इशा की नमाज़ के बाद से फ़ज्र तक पूरा .क़ुरआन अज़ीम ख़त्म फ़रमाया। पच्चीस साल तक हुज़ूर ग़ौसे आज़म जंगलों में ऐसी तन्हाई के साथ ज़िन्दगी गुज़ारते रहे कि किसी को न ख़ुद आप पहचानते थे और न कोई आपको पहचानता था, ज़ाहिर है कि जो मर्दे हक़ दुनिया वालों से इस क़द्र बेपरवाह हो गया हो और इस तरह ज़िन्दगी बसर की हो उसकी मशग़ूलियत अल्लाह की इबादत और रियाज़त के सिवा और क्या होगा।

जाँनशीनी का ख़िरक़ा

तालीम के दौरान आपको जिस क़द्र मशक़्क़तें उठानी पड़ीं हैं वह ऊपर गुज़र चुका है। ग़र्ज़ एक मुद्दत गुज़रने के बाद

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को ख़िरक़ए इरादत व ख़िलाफ़त हासिल हुई। यह ख़िरक़ा जिन बुज़ुर्ग से सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को मिला उनका नाम नामी हज़रत क़ाज़ी अबू सईद मुबारक महज़मी है जो मज़हबे हम्बली के मुमताज़ पेशवा माने गए हैं। बयान किया जाता है कि हज़रते ख़्वाजा क़ाज़ी अबू सईद मुबारक महज़मी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जब हुज़ूर ग़ौसे पाक रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को अपना मुरीद किया तो मुरीद करने के बाद हज़रते ख़्वाजा अबू सईद महज़मी ने अपने मुबारक हाथों से हुज़ूर ग़ौसे पाक को खाना खिलाते जाते और फ़रमाते ऐ अ़ब्दुल क़ादिर तुम नहीं खाते बल्कि मैं अल्लाह तआ़ला के हुक्म से तुम्हें खिला पिला रहा हूँ। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का इरशादे गिरामी है कि मेरे पीर व मुर्शिद शैख़े अजल हज़रते ख़्वाजा अबू सईद महज़मी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जो लुक़मा मेरे मुँह में डालते थे वह लुक़मा मेरे सीने को मारिफ़त के नूर से भर देता था फिर हज़रते शैख़ अबू सईद मुबारक महज़मी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हुज़ूर ग़ौसे पाक रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को जाँनशीनी का ख़िरक़ा पहनाया और इरशाद फ़रमाया ऐ अ़ब्दुल क़ादिर यह ख़िरक़ा मुबारका हुज़ूर सय्यिदे आलम नूरे मुजस्सम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज़रते मौलाए कायनात जनाबे अ़ली कर्रमल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम को अता फ़रमाया था जो औलियाए किराम के मुबारक हाथों से होता हुआ मुझ तक पहुँचा और मैंने ऐ बेटा अ़ब्दुल क़ादिर तुमको अता फ़रमा दिया। यह ख़िरक़ए मुबारका पहनने के बाद हुज़ूर पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर बहुत ज़्यादा अनवारे इलाही का नुज़ूल हुआ।

<u>शैख़ अबू सईद मुबारक महज़मी</u> : हज़रते अबू सईद मुबारक महज़मी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की पैदाइशे मुबारक बग़दाद शरीफ़ में हुई। आपका नामे नामी इस्मे गिरामी मुबारक इब्ने

अ़ली इब्ने हुसैन इब्ने बिनदार बग़दादी महज़मी है और कुन्नियत अबू सईद है। आपने अपने वक़्त के बेहतरीन उलमाए किराम और सूफ़ियाए किराम से उलूमे दीनिया हासिल किया यहाँ तक कि फ़िक्ह व हदीस और माक़ूलात व मन्क़ूलात में मुकम्मल महारत हासिल फ़रमाई और हदीस शरीफ़ की रिवायत क़ाज़ी अबू याला और अइम्मए किराम की एक जमाअ़त से हासिल की और फ़िक्ह शैख़ अबू जाफ़र इब्ने अबू मूसा से पढ़ी। फिर आप हज़रते ख़्वाजा शैख़ इब्राहीम अबुल हसन अली हंकारी के मुरीद और ख़लीफ़ा हुए। सुलतानुल औलिया हज़रते ख़्वाजा अबू सईद सिलसिलए आलिया क़ादिरिया के सोलहवीं शैख़े तरीक़त हैं। आप कुछ वक़्त तक क़ाज़ी के उहदे पर भी रहे फिर उस उहदे को तर्क कर दिया। आप हमेशा यादे इलाही और इबादतो रियाज़त में मशग़ूल रहते थे। आपकी तवज्जोह और मुआनक़ा में इतनी तासीर थी कि जिस पर तवज्जोह फ़रमा देते या जिससे अपना सीना मुबारक मिला देते तो वह दुनिया और माफ़िया से बेख़बर हो जाता था। शैख़ अबू सईद मुबारक महज़मी रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपने वक़्त के बेमिसाल फ़क़ीह और बहुत बड़े इमाम थे और ज़ाहिरी बातिनी उलूम के समुन्द्र थे। आपको इल्मे मुनाज़रा में मुकम्मल महारत हासिल थी। मज़हब में आप हम्बली थे। बाबुल अज़ज बग़दाद शरीफ़ का तारीख़ी मदरसा आप ही ने क़ायम फ़रमाया और अपनी हयाते मुबारका ही में उस मदरसा को सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को सौंप दिया। आप फ़रमाते हैं कि शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ने मुझसे एक ख़िरक़ा पहना और मैंने उनसे एक ख़िरक़ा पहना ताकि हम एक दूसरे से बरकत हासिल करें। हज़रते ख़्वाजा अबू सईद हज़रते ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम के साथ रहने वालों में भी थे। सब्र व रज़ा और तसलीम व तवक्कुल और तफ़वीज़ में बहुत ठोस थे और तजरीद व तफ़रीद में बेमिसाल थे और विलायत में बलन्द मरतबा रखते थे। शैख़ अबू सईद मुबारक महज़मी रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

का विसाले मुबारक 27 शाबानुल मुअज़्ज़म दोशम्बा के दिन 513 हिजरी में बग़दाद शरीफ़ में हुआ और बाज़ लोगों ने 4 शाबान 10 मुहर्रमुल ह़राम और 7 शाबानुल मुअज़्ज़म 508 हिजरी भी लिखा है। शैख़ अबू 'सईद मुबारक महज़मी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का मज़ारे मुबारक बग़दाद शरीफ़ में आपके क़ायमकर्दा मदरसा बाबुल अज़ज में है जहाँ पर बहुत से लोग फ़ैज़ हासिल क़रने के लिए हाज़िर होते हैं।

तरीक़त के सिलसिले का शजरा मुबारका रूहानियत के सरचश्मा जनाबे मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम तक ये है :-

शैख़ हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने ख़िलाफ़त का ख़िरक़ा अपने पीर व मुर्शिद आरिफ़े बिल्लाह शैख़ अबू सईद मुबारक महज़मी से हासिल किया और शैख़ अबू सईद मुबारक महज़मी ने अपने शैख़ अबुल ह़सन अली इब्ने यूसुफ़ अलक़र्शी अलहंकारी से और शैख़ अबुल हसन अली हंकारी ने अपने शैख़ आरिफ़े बिल्लाह शैख़ अबुल फ़रह तरतूसी से हासिल किया और हज़रते अबुल फ़रह तरतूसी ने शैख़ अबू बक्र शिबली से हासिल किया और हजरते शैख़ शिबली ने शैख़ अबुल क़ासिम जुनैदे बग़दादी से और शैख़ अबूल क़ासिम जुनैदे बग़दादी ने शैख़ सरी सक़ती से और हज़रते शैख़ सरी सख़्ती ने आरिफ़े ह़क़ शैख़ मारूफ़ करख़ी से हासिल किया और हज़रते शैख़ मारूफ़ कर्ख़ी ने दाऊद ताई से और उन्होने शैख़ हबीब अजमी से और उन्होंने सय्यिदुना शैख़ हज़रते हसन बसरी से और उनको अमीरुल मोमिनीन सय्यिदुना अली मुरतज़ा कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम ने पहनाया था और अली मुरतज़ा को सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने यह ख़िरक़ए मुबारका अता फ़रमाया था। इसी तरह बारह वास्तों से शैख़ जीलानी महबूबे सुब्ह़ानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को वह ख़िरक़ए इरादत हासिल हुआ जो एक मुर्शिदे कामिल अपने चुने हुए मुरीदे ख़ास को सिर्फ़ इसलिए अता करता है कि उसके बाद मुर्शिद के वाज़

व इरशादात की तमाम ज़िम्मेदारियाँ अब उस मुरीदे ख़ास के सिपुर्द हैं और वही उसका रूहानी जाँनशीन है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु जिस तरह मानवी व रूहानी तौर पर बारह वास्तों से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दामने करम व फ़ैज़े अतम से वाबस्ता हैं इसी तरह नसबी तौर पर भी हज़रते शैख़ जीलानी बारह ही वास्तों से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बेटे होने के रिश्ते में जुड़ जाते हैं।

मदरसा का मालिक होना और पढ़ाना

हज़रते क़ाज़ी अबू सईद मुबारक महज़मी का बग़दादे मुक़द्दसे में एक बहुत बड़ा मदरसा भी था जिसमें वह वाज़ व इरशाद के इलावा इल्मे दीन के प्यासों की प्यास भी बुझाया करते थे। क़ाज़ी साहब को जब आपके रूहानी फ़ज़्ल व कमाल व इल्मी क़ाबलियत व सलाहियत का अन्दाज़ा हो गया तो हिजरी 521 में अपना मदरसा आप ही के हवाले कर दिया।

थोड़े ही वक़्त में आपके फ़ज़्ल व कमाल और इल्म की शोहरत दूर दूर तक फैल गई और चारों तरफ़ से इल्म के प्यासे अपनी प्यास बुझाने आने लगे हत्ताकि मदरसा अपनी तमाम वुसअतों के बावजूद तंग हो गया। हालात के पेशेनज़र हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने आस पास के मकानात ख़रीद कर मदरसे में शामिल कर लिए और नए सिरे से मदरसे की तामीर कराई और अब यह मदरसा आपके नाम की निसबत से जामिआ क़ादिरिया के नाम से मशहूर हो गया जो आज भी इसी नाम से मौजूद है। हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने हिजरी 528 में मदरसे की तामीरे जदीद से फ़राग़त पाई और दूर दूर से लोग आप से इल्म हासिल करने आने लगे और यहाँ से फ़ारिग़ होकर सनद लेने के बाद मुख़्तलिफ़ मुल्कों में जाते और ख़ल्क़े ख़ुदा की इस्लाह करते और दीने इस्लाम की तबलीग़ फ़रमाते। इस तरह थोड़ी सी मुद्दत में सरकारे ग़ौसे

आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु के इल्मी फ़ुयूज़ो बरकात से उलमाए किराम और बुज़ुर्गाने दीन की एक बहुत बड़ी जमाअत तैयार हो गई जो दूर दूर के शहरों और मुल्कों में जाकर अच्छी बातों का हुक्म देने और बुरी बातों से रोकने का फ़र्ज़ अदा करने लगे जिससे ख़ुदाए तआ़ला के लाखों बन्दों को दीने इस्लाम की हिदायत नसीब हुई। इल्मे दीन पढ़ाने के साथ साथ सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अवाम के लिए वाज़ की मजलिस भी क़ाइम फ़रमा दी थी ताकि अवाम भी हुज़ूर पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के फ़ैज़े आम से महरूम न रहें और तबलीग़े इस्लाम का सिलसिला ख़ूब फैल जाए।

<u>नसारा का इसलाम क़बूल करना</u> : एक मरतबा एक ईसाई राहिब हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमते मुबारक में हाज़िर हुआ। उसका नाम सनान था और वह पुरानी किताबों का बहुत बड़ा आलिम था। उस राहिब ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुबारक हाथों पर इसलाम क़बूल किया और फिर आम मजमे में खड़े होकर बयान किया कि मैं यमन का रहने वाला हूँ मेरे दिल में यह बात पैदा हुई कि मैं इसलाम को क़बूल कर लूँ और इस बात पर मेरा बिल्कुल पुख़्ता इरादा हो गया कि मैं यमन में सबसे आला और अफ़ज़ल शख़्स के हाथ पर इसलाम क़बूल करूँगा। इसी सोच विचार में था कि मुझे नींद आ गई और मैंने हज़रते सय्यिदुना ईसा अ़ला नबीय्यिना व अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम को मैंने ख़्वाब में देखा हज़रते ईसा मुझे हुक्म फ़रमाते हैं ऐ सनान बग़दाद शरीफ़ जाओ और शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी के मुबारक हाथों पर इसलाम क़बूल करो क्यूँकि वह इस वक़्त रू-ए ज़मीन के तमाम लोगों से अफ़ज़ल और आला हैं।

<u>तेरह नसारा का इसलाम क़बूल करना</u> : शैख़ उमर कीमानी बयान फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमते अक़दस में तेरह लोग इसलाम क़बूल

करने के लिए हाज़िर हुए। मुसलमान होने के बाद उन लोगों ने बयान किया कि हम लोग अरब के ईसाई हैं हमने इसलाम क़बूल करने का इरादा किया था और यह सोच रहे थे कि किसी मर्दे कामिल के मुबारक हाथ पर इसलाम क़बूल करें। इसी दरमियान एक ग़ैबी आवाज़ हम लोगों ने सुनी कि तुम लोग बग़दाद शरीफ़ जाओ और शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के मुबारक हाथों पर इसलाम क़बूल करो क्यूँकि जिस क़द्र ईमान शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी की बरकत से तुम्हारे दिलों में घर करेगा उस क़द्र ईमान इस ज़माने में किसी दूसरी जगह से नामुमकिन है। चुनांचे हम लोग उसी ग़ैबी इशारे के हुक्म पर बग़दाद आए और अलहम्दुलिल्लाह कि हमारे सीने नूरे हिदायत से रौशन हो गए।

हज़रते ग़ौसे आज़म की इल्मी शान

हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु की इल्मी शान बहुत ऊँची है। अल्लाह तआला ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु को ज़ाहिरी और बातिनी इल्म में कामिल महारत अता फ़रमाई। क़ुर्आन शरीफ़ और हदीसे पाक पर हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु पूरी तरह महारत रखते थे। आपका हाफ़िज़ा बहुत तेज़ था जिस चीज़ पर ज़रा सा ग़ौर फ़रमाते वह चीज़ फ़ौरन याद हो जाती। ज़ाहिरी उलूम के इलावा जब सरकारे ग़ौसे आज़म ने बेपनाह रियाज़त और मुजाहदा किया तो उस वक़्त मुशहदा के ज़रिए बेपनाह उलूम आप पर ज़ाहिर हुए। अल्लाह तआला ने आपको इतने ज़्यादा भेदों का इल्म दिया कि जब कोई इल्मी बात करता तो आप फ़ौरन उसके राज़ बयान फ़रमा देते। बयान किया जाता है कि जब हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने पढ़ाना शुरू किया तो दुनिया आपके इल्म पर हैरान हो गई। आप ऐसे ऐसे नुक़ते बयान फ़रमाते जो बड़े बड़े उलमा के इल्म में न होते इस लिए थोड़े ही ज़माने में हज़रते ग़ौसे आज़म

रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इल्म की शुहरत दूर व नज़दीक बहुत जल्द फैल गई। हज़रते ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की दर्सगाह शरीफ़ से ब़ड़े बड़े उलमाए किराम सैराब हुए। ग़र्ज़ यह कि हज़रते ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु दीनी उ़लूम का एक अथाह समुद्र थे और इल्मे दीन के प्यासे उस अथाह समुद्र से अपनी प्यास बुझाते।

<u>हज़रते ग़ौसे आज़म का इल्मे लदुन्नी</u> : हज़रते ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को अल्लाह तआ़ला ने कितना इल्म अता फ़रमाया इसको हम बयान नहीं कर सकते मगर एक वाक़िया हम नक़ल करते हैं। शैख़ अबुल हसन उमर कीमानी और शैख़ अबुल हसन उमर बज़्ज़ाज़ का बयान है कि हम लोग हज़रते ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुबारक मकान पर पहुँचे जो आपके मदरसा बाबुल अज़ज में है। उस वक़्त हुज़ूर ग़ौसे पाक दूध नौश फ़रमा रहे थे। आपने दूध पीना छोड़ दिया और कुछ देर अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुवज्जह रहे फिर फ़रमाने लगे अभी अभी मेरे लिए इल्मे लदुन्नी के सत्तर दरवाज़े खोल दिए गए हैं उनमें से हर दरवाज़े का फैलाव ज़मीन व आसमान के दरमियान फैलाव की तरह है। उसके बाद हज़रते ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने ख़ास तबक़े की मारिफ़त का बयान शुरू कर दिया। उससे हाज़रीन हैरत और दहशत में डूब गए। हमने कहा कि हमें यक़ीन नहीं आता कि हज़रते ग़ौसे आज़म के बाद कोई ऐसी गुफ़्तगू कर सके।

<u>हज़रते ग़ौसे आज़म की इल्म की ज़्यादती</u> : अबू मुहम्मद ख़श्शाब नहवी का बयान है कि मैं जवानी में इल्मे नहव (अरबी ग्रामर का एक इल्म) पढ़ा करता था और मुझे बहुत शौक़ था कि किसी माहिर उस्ताज़ की शागिर्दी इख़्तियार करूँ जो मुझे इल्मे नहव और दूसरे उलूम में माहिर बना दे। इसी दरमियान हज़रते ग़ौसे आज़म के इल्म व फ़ज़्ल की शुहरत फैल गई। जो शख़्स एक दफ़ा आपकी मजलिसे मुबारक में जाता हमेशा के लिए आपके इल्म व फ़ज़्ल का अक़ीदतमन्द हो

जाता। जब बहुत ज़्यादा लोगों से हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी की तारीफ़ सुनी तो मैं भी एक दिन आपकी मजलिस में जा पहुँचा। मेरे वहाँ पहुँचते ही हज़रते ग़ौसे आज़म मेरी तरफ़ मुतवज्जह हुए और फ़रमाया अगर तुम हमारे पास रहो तो हम तुम्हें सीबवै (एक बहुत बड़ा नहवी था जो गुमराह फ़िरक़े से था) का ज़माना दिखा देंगे। अबू मुहम्मद ख़श्शब नहवी कहते हैं कि मैं तो दिल से यही चाहता था। चुनांचे उसी वक़्त से मैं ख़िदमते मुबारका में रहने लगा। थोड़े ही ज़माने में मुझे इल्मे नहव और उलूमे अक़लिया और उलूमे नक़लिया में ऐसा माहिर बना दिया कि मेरे वहमो गुमान में भी नहीं आ सकता था। मैंने आप जैसा मुफ़स्सिर, मुहद्दिस, फ़क़ीह और दूसरे उलूम का माहिरे कामिल अपनी पूरी ज़िन्दगी में नहीं देखा।

शैख़ अब्दुल्लाह जुबाई बयान करते हैं कि हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का एक शागिर्द उमर हल्लावी बग़दाद से बाहर चला गया और चन्द साल के बाद जब बग़दाद वापस आया तो मैंने पूछा कि तुम कहाँ ग़ायब हो गए थे तो उमर हल्लावी ने बयान किया कि मैं मिस्र शाम और मग़रिब के मुल्कों में घूमता फिरा जहाँ मैंने 360 बुज़ुर्गों से मुलाक़ात की लेकिन उन बुज़ुर्गों में से एक भी ऐसा न मिला जो इल्म व फ़ज़्ल में हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बराबर हो और तमाम बुज़ुर्गों को यही कहते सुना कि हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी हमारे शैख़ और पेशवा हैं।

फ़तवा नवीसी : हज़रते महबूबे सुब्हानी ग़ौसे आज़म शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इल्म व फ़ज़्ल का चर्चा जब दुनिया में चारों तरफ़ हुआ तो हर तरफ़ से बहुत इस्तिफ़ते (दीनी इल्मी सवालात) आने लगे और सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हर सवाल का जवाब बिल्कुल ठीक देते थे। फ़तवा लिखने की तेज़ी का आलम यह था कि कभी कोई सवाल आपके पास रात भर भी नहीं रहा और आपको फ़तवा देने में ग़ौर व फ़िक्र करने

या किसी किताब के देखने की ज़रूरत कभी नहीं हुई। आप सवाल पढ़ते ही उसका जवाब लिख देते थे। इराक़ के बड़े बड़े उलमाए क़िराम सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु के फ़तावा के बिल्कुल सही होने और जवाब की तेज़ी पर बहुत तअज्जुब करते और बहुत तारीफ़ करते और बग़ैर कुछ सोचे समझे आपके फ़तवों की तसदीक़ करते हुए अपना नाम लिखते। चुनांचे शैख़ मौफ़िक़ुद्दीन इब्ने क़दामा का बयान है कि हम 561 हिजरी में बग़दाद पहुँचे उस वक़्त शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के बराबर इल्म व फ़ज़्ल और पढ़ाने और फ़तवा देने में कोई नहीं था। तालिब इल्मों और फ़तावा पूछने वालों को आपकी मौजूदगी में किसी दूसरे की हाजत न होती थी।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु के पास जिस मज़हब के भी फ़तवे आते हुज़ूर फ़ौरन उस मज़हब के मुताबिक़ फ़तवा देते क्यूँकि हुज़ूर मुहीउद्दीन यानी दीन को ज़िन्दा फ़रमाने वाले हैं यही वजह है कि आप हर मज़हब के मुताबिक़ बिल्कुल सही फ़तवा देते थे। किसी मज़हब वाले को भी उगंली रखने की गुन्जाइश नहीं होती थी। शहज़ादए सरकारे ग़ौसे आज़म ताजुद्दीन हज़रते शैख़ अब्दुल रज़्ज़ाक़ रद़ियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि एक मरतबा मुल्के अजम से मेरे वालिदे माजिद सरकारे ग़ौसे आज़म के पास एक सवाल आया जो इससे पहले इराक़ के बड़े बड़े मुफ़्तीयों के सामने पेश हो चुका था मगर किसी मुफ़्ती ने भी उस सवाल का जवाब न दिया। सवाल की सूरत यह थी कि एक शख़्स ने क़सम खाई कि वह कोई ऐसी इबादत करेगा जिस इबादत के वक़्त पूरी कायनात में कोई दूसरा शरीक न होगा और अगर वह शख़्स ऐसी इबादत न कर सके तो उसकी बीवी को तीन तलाक़। ऐसी हालत में वह कौन सी इबादत है कि साइल वह इबादत करे जिसमें उसके साथ कोई शरीक न हो। तमाम उलमाए किराम इस सवाल का जवाब देने से मजबूर हो गए। फ़िर जब यह सवाल मेरे वालिदे माजिद सरकारे ग़ौसे आज़म

के पास आया तो आपने फ़ौरन उस पर यह फ़तवा दिया कि वह शख़्स मक्का मुअज़्ज़मा चला जाए और मताफ़ यानी तवाफ़ करने की जगह उसके लिए ख़ाली कर दी जाए और वह तन्हा काबा शरीफ़ का सात मरतबा तवाफ़ करे तो उसकी क़सम नहीं टूटेगी। यह जवाब सुनकर बड़े बड़े उलमाए किराम और औलिया किराम हैरान रह गए क्यूँकि सिर्फ़ यही एक सूरत थी जिसमें वह शख़्स तन्हा इबादत कर सकता था और उसकी क़सम पूरी हो सकती थी। यह फ़तवा मिलते ही वह शख़्स मक्का मुअज़्ज़मा रवाना हो गया और काबा शरीफ़ का तन्हा सात मरतबा तवाफ़ किया और उसकी बीवी तलाक़ से बच गई।

सरकारे ग़ौसे आज़म का मसलक

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मसलक के बारे में कुछ लोगों का कहना है कि आप पहले हनफ़ी थे बाद में हम्बली हो गए मगर यहाँ पर एक सवाल जो काठियावाड़ से सरकारे आलाहज़रत अज़ीमुल बरकत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बारगाह में आया था और आलाहज़रत सरकार ने उसका जवाब तहरीर फ़रमाया मैं उस सवाल और उसके जवाब को फ़तावा रज़विया शरीफ़ नवीं जिल्द सफ़ा 129 से यहाँ नक़ल कर रहा हूँ।

मसअला : क्या यह रिवायत सही है कि हज़रते क़ुतुबुल अक़ताब शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने ख़्वाब में देखा कि हज़रते इमामे अह़मद इब्ने हम्बल रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मेरा मज़हब कमज़ोर हुआ जाता है लिहाज़ा आपके मेरे मज़हब में आने से मेरे मज़हब को तक़वियत हो जाएगी। इसलिए हज़रते ग़ौसे पाक हनफ़ी से हम्बली हो गए।

अलजवाब : यह रिवायत सही नहीं हुज़ूर (ग़ौसे आज़म) हमेशा से हम्बली थे और बाद को जब ऐनुश्शरीअतुल कुबरा तक पहुँच कर मुतलक़ इजतेहाद का मरतबा हासिल हुआ तो मज़हबे

हम्बल को कमज़ोर होता हुआ देख कर उसके मुताबिक़ फ़तवा दिया कि हुज़ूर (ग़ौसे आज़म) मुहीउद्दीन और दीने मतीन के यह चारों सुतून हैं (यानी इमामे आज़म, इमामे मालिक, इमामे शाफ़िई और इमामे अहमद इब्ने हम्बल रदियल्लाहु तआला अन्हुम) लोगों की तरफ़ से जिस सुतून में ज़ोफ़ (कमज़ोरी) आता देखा उसकी तक़वियत फ़रमाई। वल्लाहु तआला आलम।

तसनीफ़ात

इमाम याफ़िई रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने आपकी तसनीफ़ात के मुताल्लिक़ यह लिखा है कि हज़रते ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने मुफ़ीद और कारआमद किताबें भी लिखी हैं और आपके क़लमी नुस्ख़े भी महफ़ूज़ हैं यानी आपके इरशादात व ख़ुतबात और तक़रीरात को आपके शागिर्दों या मुरीदों ने जमा किया है।

हज़रते शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने अख़बारुल अख़यार में लिखा है कि हज़रते ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की मजलिसे वाज़ में 400 लोग क़लम व दावात लेकर बैठते थे और जो कुछ आपसे सुनते थे लिखते जाते थे।

इमाम याफ़िई रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने हज़रते ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की किसी किताब का नाम नहीं लिखा है हाँ इमाम इब्ने कसीर ने फ़ुतूहुल ग़ैब और गुनयतुत्तालिबीन का ज़िक्र किया है और हज़रत शाह वली उल्लाह साहब मुहद्दिस देहलवी ने 'अल इन्तेबाह फ़ीसलासिले औलिया अल्लाह' में इन दो किताबों के साथ "मजालिसे सित्तीन" का भी ज़िक्र किया है। कश्फ़ुज़्ज़ुनून के मुसन्निफ़ ने लिखा है कि "जिलाउल ख़ातिर मिन कलामे शैख़ अब्दुल क़ादिर" में उन मजालिसों के इरशादात हैं जो यौमे जुमा 9 रजब हिजरी 546 से शुरू हो कर 14 रमज़ानुल मुबारक हिजरी 546 पर ख़त्म होते हैं, ग़ालिबन "जिलाउल ख़ातिर" का नाम है जिसका ज़िक्र शाह वली उल्लाह साहब ने किया है क्यूँकि

9 रजब से 14 रमज़ान तक 64 या 65 दिन होते हैं, हो सकता है कि चार या पाँच दिन किसी वजह से मजलिस न हुई हो।

दाराशिकोह ने अपनी किताब 'सफ़ीनतुल औलिया' में लिखा है कि शैख़ ताजुद्दीन अबूबक्र अब्दुल रज़्ज़ाक़ फ़र्ज़न्दे हज़रत ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु के दस्ते मुबारक का लिखा हुआ "जिलाउल ख़ातिर" का एक नुस्ख़ा मेरे पास मौजूद है जो आपके वालिदे बुज़ुर्गवार के मलफ़ूज़ात पर मुश्तमिल है।

कश्फ़ुज़्ज़ुनून में एक और किताब 'हिज़्बुर्रजा वल इन्तेहा' को भी हज़रते ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु की तसनीफ़ बातई गई है और लिखा है कि इसकी शुरूआत इन अल्फ़ाज़ से हुई है سُبْحَانَ اللّٰهِ تَسْبِيحاً يَلِيْقُ بِحَالِ مَنْ

मज़कूरा तसनीफ़ात की रोशनी में .फ़ुतूहुल ग़ैब, ग़ुनयतुत्तालिबीन और हिज़्बुर्रजा आपकी कामयाब किताबें हैं।

जिलाउल ख़ातिर आपके मलफ़ूज़ात का मजमूआ है जिसे आपके शाहज़ादे ताजुल असफ़िया हज़रते शैख़ अब्दुल रज़्ज़ाक़ रद़ियल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु ने जमा फ़रमाया है।

ज़ौक़े शाइरी

तहक़ीक़ी तौर पर यह बात मालूम हुई है कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु शाइरी का ख़ासा ज़ौक़ रखते थे। चुनांचे आपके अरबी क़सीदा को क़सीदए लामिया के नाम से दुनियाए इसलाम में बड़ी शोहरत और आम मक़बूलियत हासिल है, इसके अलावा इमाम याफ़िई रह़मतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैह ने अपनी किताब में हज़रत ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु का एक और अरबी क़सीदा क़सीदए बाइया के नाम से नक़ल किया है गो कि क़सीदए बाइया क़सीदए लामिया से ज़्यादा मशहूर तो नहीं है लेकिन बिला शुबहा यह हज़रत ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु का कलाम बलाग़त निज़ाम है और इसमें भी इम्तियाज़ी शान और ख़ुसूसियत पाई जाती है जो क़सीदए लामिया की जान है।

<u>आगाह</u> : हिन्दी वालों की दिक़्क़त में पड़ने की वजह से हम यहाँ पर कोई क़सीदए मुबारका नहीं नक़्ल करेंगे जिन हज़रात को शौक़ हो तो चाहिए कि वह हज़रते सूफ़ी सय्यिद नस्र उद्दीन हाशमी क़ादिरी बरकाती की किताब हयाते ग़ौसुल वरा या किसी दूसरी किताब में देखें और यह भी कि किसी आलिमे दीन से समझ लें।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म के शागिर्दों के नाम

हुज़ूर पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी .कुद्दिसा सिर्रुहुन्नूरानी जब इल्मी और अमली दुनिया में चाँद और सूरज की तरह चमके तो बहुत से हज़रात आपसे इल्मो अमल में कमाल हासिल करने के बाद इस्लाम की दुनिया में रौशन सितारों की तरह चमके। फिर उन हज़रात ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की तालीमो तरबीयत की वजह से दुनिया वालों से इल्म और इरफ़ान का सिक्का मनवाया। हुज़ूर ग़ौसे आज़म के शागिर्दों की तादाद तो बहुत ज़्यादा है मगर वह शागिर्द जिन्हें नामवरी हासिल हुई उनमें से चन्द ख़ास शागिर्दों के नामे मुबारक यह हैं :-

शैख़ मुहम्मद इब्ने अहमद इब्ने बख़्तियार, अबू मुहम्मद अब्दुल्लाह इब्ने अबुल हसन जुबाई, ख़लफ़ इब्ने अब्बास बिसरी, अब्दुल मुनइम इब्ने अली हर्रानी, .इब्राहीम हद्दाद यमनी, अब्दुल्लाह असदी यमनी, अतीफ़ इब्ने ज़ियाद यमनी, उमर इब्ने अहमद यमनी, मदाफ़ेअ इब्ने अहमद, इब्राहीम इब्ने बशारत, उमर इब्ने मसऊद बज़्ज़ाज़, मीर इब्ने मुहम्मद जीलानी, अब्दुल्लाह बताएही, अब्दुल रहमान सालेह और उनके वालिदे गिरामी, अब्दुल्लाह इब्ने हसन, अबुल क़ासिम इब्ने अबू बक्र अहमद, अहमद अतीक़, अब्दुल अज़ीज़ इब्ने अबू नस्र, मुहम्मद इब्ने अबुल मकारिम, अब्दुल मलिक, अबुल फ़र्ज, अबू अहमद, अब्दुल रहमान इब्ने नज्म, यहया तिकरीनी, हिलाल इब्ने उमइया, यूसुफ़ मुज़फ़्फ़र आकूली, अहमद इब्ने इसमाईल, अब्दुल्लाह इब्ने

अह़मद, सदूना सरीफ़ीनी, उसमान बासिरी, मुह़म्मद वाइज़ ख़य्यात, ताजुद्दीन, शैख़ उमर, अ़ब्दुल रह़मान इब्ने बक़ा, मुह़म्मद नख़्ख़ाल, अ़ब्दुल अ़जीज़ इब्ने कल्फ़, अ़ब्दुल करीम इब्ने मुह़म्मद, अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुह़म्मद, अ़ब्दुल मोहसिन, मुह़म्मद इब्ने अबुल हुसैन, अह़मद इब्ने दयबक़ी, मुह़म्मद इब्ने अह़मद मुअज़्ज़िन, यूसुफ़ इब्ने हिबातुल्लाह, अह़मद इब्ने मुतीअ, अली इब्ने नफ़ीस मामूनी, मुह़म्मद इब्ने लैस, अह़मद इब्ने मन्सूर, अली इब्ने अबू बक्र, मुह़म्मद इब्ने नसरा, अ़ब्दुल लतीफ़ इब्ने मुह़म्मद ह़र्रानी वग़ैरहुम। (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अजमईन)

सिलसिलए क़ादिरिया का इजरा

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इस्मे गिरामी की निसबत से सिलसिलए आलिया क़ादिरिया जारी हुआ और आपके दरियाए फ़ैज़ की रवानी आसमान के सितारों की तरह सारी दुनिया में फैल गई। ताजदारे विलायत होने के सबब सिलसिलए आलिया क़ादिरिया को इतनी मक़बूलियत हासिल हुई कि दूसरे सिलसिलों में इसकी नज़ीर नहीं मिलती। हिन्दुस्तान ही में नहीं बल्कि अरब व अजम के तमाम मुल्कों में सिलसिलए क़ादिरिया के लातादाद मुरीद हुए। इस सिलसिलए आलिया क़ादिरिया की इम्तियाज़ी शान यह है कि दूसरे मुख़्तलिफ़ सिलसिलों में यह सिलसिला दाख़िल है मगर ख़ुद इस नूरानी सिलसिले में कोई दूसरा सिलसिलए शामिल नहीं। चुनांचे सरकारे आलाहज़रत अज़ीमुल बरकत इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ अलैहिरहमतुल मन्नान इसी तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाते हैं :-

सफ़े हर शजरा में होती है सलामी तेरी
शाख़ें झुक झुक के बजा लाती हैं मजरा तेरा
किस गुलिस्ताँ को नहीं फ़सले बहारी से नियाज़
कौन से सिलसिला में फ़ैज़ न आया तेरा
नहीं किस चाँद की मन्ज़िल में तेरा जलवए नूर
नहीं किस आइना के घर में उजाला तेरा

राज किस शहर में करते नहीं तेरे ख़ुद्दाम
बाज किस नहर से लेता नहीं दरैया तेरा
मज़रए चिश्तो बुख़ारा व इराक़ो अजमेर
कौन सी किश्त पे बरसा नहीं झाला तेरा

मसलके तसव्वुफ़

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं :-

"जब बन्दे का दिल हक़ीक़त में मालिके बेनियाज़ से वाबस्ता हो जाता है तो कोई शय उस बन्दे से जुदा नहीं रहती और न ही उससे बाहर निकलती है"

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु अपनी बेनज़ीर तस्नीफ़ (मख़ज़ने तसव्वुफ़) ".फ़ुतूहुल ग़ैब" में एक मक़ाम पर इरशाद फ़रमाते हैं कि

"तुम फ़ज़्ले रब्बानी और नेमते यज़दानी से इसलिए महरूम हो कि तुम अपने ताक़ते बाज़ू पर भरोसा करते हो। मख़लूक़ से उम्मीद की वाबस्तगी तुम्हें रोज़ी कमाने के जाएज़ तरीक़े से रोकती है अगर तुमने मख़लूक़ के दरवाज़ों पर साइल बनकर हाथ फैलाया तो गोया तुमने ख़ुदाए वहदहू लाशरीक लहू के साथ शिर्क किया और हलाल रोज़ी न होने के सबब तुम अज़ाबे इलाही में मुबतला रहोगे और अगर तुम अल्लाह की मख़लूक़ की लेन देन से बेनियाज़ हो कर रोज़ी हासिल करते हुए ख़ालिके काएनात की रज़्ज़ाक़ियत पर भरोसा करोगे और उसको रज़्ज़ाक़े हक़ीक़ी जानोगे तो तुम्हारे और रब्बुल आलमीन के दरमियान जो हिजाब है वह हट जाएगा और अल्लाह तआला पर्दाए ग़ैब से तुम्हें रिज़्क़ अता फ़रमाएगा"

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं "शिर्क की दो क़िस्में हैं ज़ाहिर और बातिन। शिर्के ज़ाहिर तो ग़ैरे ख़ुदा की परस्तिश है और शिर्क बातिन ग़ैरे ख़ुदा पर भरोसा"

इन तमाम तालीमात पर सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ज़ाती अमल था और हज़रत की मुक़द्दस ज़िन्दगी इस आयते रब्बानी की मुकम्मल आइनादार है

اِنَّ صَلٰوتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ط

तर्जमा : बेशक मेरी नमाज़ और मेरी .क़ुबानियाँ और मेरा जीना और मेरा मरना सब अल्लाह के लिए है जो रब सारे जहान का। (पारा 8 रुकू 7)

होशयार : यहाँ पर कोई शख़्स यह न समझे कि औलियाए किराम से मांगना भी शिर्क है क्यूँकि औलियाए किराम से मांगना हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला ही से मांगना है। इसलिए कि कोई शख़्स किसी वली से जब अपनी मुराद मांगता है तो वह शख़्स यह नहीं ख़्याल करता कि यह अल्लाह के वली अपनी तरफ़ से देते हैं बल्कि उस शख़्स का यही अक़ीदा होता है कि यह अल्लाह तआ़ला से ही लेकर देते हैं।

सरकारे ग़ौसे आज़म की तालीमात

ज़ुहद व वरा : सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि ज़ुहद व वरा यह है कि आदमी तमाम चीज़ों से परहेज़ करने लगे, शरीअते मुतह्हरा जिस चीज़ और जिस काम की इजाज़त दे उसे इख़्तियार करे और जिन कामों और जिन चीज़ों से रोके उसे छोड़ दे। ज़ुहद व वरा के तीन दर्जे होते हैं। 1. अवाम का वरा 2. ख़वास का वरा 3. ख़वासुल ख़्वास का वरा

ख़वास का ज़ुहद यह है कि ख़्वाहिशाते नफ़सानी की तमाम चीज़ों से परहेज़ किया जाये। ख़वासुल ख़्वास का ज़ुहद यह है की बन्दा हर उस शय से जिस का वह क़स्द (इरादा) कर सकता है परहेज़ करता रहे। वरा की दो क़िस्म हैं।
1. ज़ाहिरी वरा 2. बातिनी वरा

1. ज़ाहिरी वरा तो यह कि अल्लाह के हुक्म के सिवा कोई काम और कोई बात न कहे।

2. बातिनी वरा यह है कि क़ल्ब में अल्लाह तआला के सिवा किसी दूसरे का ख़याल भी न गुज़रे। जिस शख़्स के पेशे नज़र वरा की यह बारिकयाँ नहीं हैं वह इन मरातिबे आलिया तक नहीं पहुँच सकता ज़ुहद वरा की पहली मंज़िल है जो क़नाअत के रज़ा की पहली मन्ज़िल है। वरा के असर का दाइरा इतना फैला हुआ है कि खाने पीने उठने बैठने तमाम चीज़ों से मुतअल्लिक़ है। चुनांचे मुत्तक़ियों का खाना पीना भी आम इन्सानों के ख़िलाफ़ होता है।

वरा का हुसूल : सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि उस वक़्त तक वरा कामिल नहीं हो सकता जब तक अपने लिए इन दस सिफ़ाते आलिया (बलन्द ख़ूबियाँ) की पाबन्दी ज़रूरी न क़रार दे ली जायें।

1. ज़बान को क़ाबू में रखना।

2. ग़ीबत से परहेज़ करना। अल्लाह तआला का फ़रमान है : कोई तुम में एक दूसरे की ग़ीबत न करे।

3. किसी भी आदमी को अपने से हक़ीर न जाने। अल्लाह तआला का फ़रमान है कि एक क़ौम दूसरी कौम की हंसी न उड़ाए शायद वह उससे बेहतर हो।

4. ग़ैरमहरम (जिससे निकाह जाएज़ हो) पर नज़र न डाले। अल्लाह तआला का फ़रमान है : ऐ महबूब तुम फ़रमा दो मुसलमानों से अपनी-अपनी निगाहें नीची रखा करें।

5. सच्चाई अल्लाह का फ़रमान है जब तुम कोई बात कहो तो सच कहो और इन्साफ़ की कहो।

6. इनामात व एहसानात को मानता रहे ताकि नफ़्सपरस्ती व गुरूर में मुबतला होने से महफ़ूज़ रहे। अल्लाह का फ़रमान है अल्लाह ही ने तम्हारे ऊपर यह एहसान फ़रमाया है कि उसने तुम्हें ईमान की दौलत दी। हमारे ऊपर अल्लाह का एहसाने अज़ीम है कि उसने हमें दौलते ईमान बख़्शी।

7. माल व दौलत राहे ख़ुदा में ख़र्च करता रहे। अल्लाह का फ़रमान है वह लोग जब ख़र्च करते हैं तो न फ़ुज़ूलख़र्ची करते

हैं और न कंजूसी करते हैं। वह अपना माल गुनाह में नहीं ख़र्च करते अलबत्ता नेक रास्ते में ख़र्च करने से बाज़ नहीं रहते।

8. अपनी ही ज़ात के लिए भलाई को न चाहे और ग़ुरूर व तकब्बुर से बचा रहे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है जन्नत में उन्हीं लोगों को जगह दूंगा जो दुनिया में अपनी बरतरी के ख़्वाहाँ (चाहने वाला) नहीं होते हैं और फ़साद करने वाले काम नहीं करते।

9. पंजवक्ता नमाज़ की पाबन्दी करना। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो ख़ासकर नमाज़े अस्र की और कमाले आजिज़ी के साथ रब की बारगाह में खड़े हुआ करो।

10. सुन्नते नबवी और इजमाए मुस्लेमीन का इहतराम करो यानी सहाबए किराम और औलियाए इज़ाम की बातों का अदब करो। अल्लाह का फ़रमान है बेशक यह मेरी सीधी राह है तुम इसकी पैरवी करते रहो।

सरकार ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हु ने यह दस सिफ़ात वरा के कामिल होने के बारे में बयान फ़रमाई हैं। यही वह अहम ख़ूबियाँ हैं जिन पर इस्लामी तसव्वुफ़ की मज़बूत बुनयाद क़ाइम है जिन के हासिल हो जाने के बाद एक इन्सान इन्साने कामिल बन जाता है। ख़ुदा वन्दा आजकल के सूफ़ियों को तौफ़ीक़ अ़ता फरमा कि इन हिदायात पर अमल कर के अपने ऊपर ज़ुहद और वरा को मुकम्मल फ़रमा लें।

पीरे कामिल : पीरे कामिल वह है जो अपने सामने तुम्हारे दिल को सुकून से रखे और अपनी पीठ पीछे भी तुम्हें महफ़ूज़ रखे और अपने आदाब व अख़लाक़ के ज़रिए तुम्हारी तरबियत करता रहे। और तुम्हारे बातिन को रौशन करे। मुरीद वह है जो हर हाल में तवाज़ो इख़्तियार करे फ़क़ीरों के साथ महब्बत रखे। सूफ़ियाए किराम के साथ अदब व अच्छे अख़लाक़ से, उलमा के साथ उनकी नेक बातों पर अमल करने से, अहले मारिफ़त के साथ सुकून व वक़ार से और औलियाए किराम को मानने के साथ साथ अल्लाह को एक जानता रहे।

<u>वज्दे हक़ीक़ी</u> : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं जो वज्द (यादे इलाही में मस्त हो जाना) मुशाहदा यानी दिल की आंखों से अल्लाह का दीदार करने से ख़ाली हो वह झूट है। वज्द करने वालों की रूहें निहायत साफ़ और सुथरी होती हैं। उनकी गुफ़्तगू मुर्दा दिलों को ज़िन्दा करती है और अक़्ल को ज़्यादा करती है। बहुत सी जगहों को एक मकान और बहुत सी हक़ीक़तों को एक ह़क़ीक़त बना देती है। वज्द की शुरूआत अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से पर्दे का उठ जाना है। वज्द करने वाले को अल्लाह तआ़ला के हुस्न का दीदार और ग़ैब के भेदों का इल्म हासिल होता है। जिस वज्द से बशरियत ख़त्म न हो वह वज्द नहीं। वज्द के दो मरतबे हैं नाज़िर यानी देखने वाले का मरतबा और मन्ज़ूर इलैह यानी जिसको देखा जाए उसका मरतबा। नाज़िर से मुशाहदा का मरतबा मुराद है। मन्ज़ूर इलैह के मरतबे से ग़ैब का मरतबा मुराद है।

<u>मारिफ़त और अल्लाह तआ़ला की महब्बत</u> : ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जो शख़्स महब्बते इलाही की शराब पी लेता है उसका नशा महबूब के दीदार के बग़ैर नहीं उतरता गोया महब्बते इलाही ऐसी शराब है जिसकी सुबह महबूब के हुस्न का मुशाहदा है यानी अल्लाह की महब्बत का नशा ऐसा है कि जब तक उसकी तजल्लियों का दीदार न होगा यह नशा नहीं उतरेगा जैसे सिद्क़ एक ऐसा दरख़्त है जिसका फल मुजाहदा और रियाज़त है।

महब्बत के तीन उसूल हैं वफ़ा, अदब और मुरव्वत। वफ़ा यह है कि अल्लाह की वह़दानियत में मशग़ूल रहे अपने दिल को सबसे जुदा कर ले और सिर्फ़ उसी के नूरे अज़ल से दिल मानूस हो जाए।

अदब यह है कि वक़्तों की हिफ़ाज़त करता रहे और अल्लाह तआ़ला के सिवा हर चीज़ से अलग होता रहे।

मुरव्वत यह है कि बात और काम में सच्चाई और दिल की सफ़ाई के साथ अल्लाह के ज़िक्र पर क़ाइम रहे। खुले और

छुपे तौर में ग़ैरों से चेहरा फेर ले यानी अलग हो जाए। जब बन्दा में यह तीनों आ़दतें जमा हो जाती हैं तो अल्लाह तआ़ला के विसाल की लज़्ज़त पाने लगता है और बन्दे के दिल में शौक़ की आग भड़क उठती है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला की मारिफ़त की फ़िक्र अल्लाह तआ़ला की ज़ात व सिफ़ात की मारिफ़त का रास्ता है। अक़्ल में अल्लाह तआ़ला की ज़ात की हक़ीक़त मालूम करने की बिल्कुल ताक़त नहीं है। अल्लाह तआ़ला की .कुदरतें और हिकमतें अगर महदूद (घिरी हुई) होतीं और इन्सान के इल्म व अक़्ल में आ सकतीं तो यह अल्लाह तआ़ला की अज़मत और अल्लाह तआ़ला की .कुदरत का बहुत बड़ा ऐब होता जिससे अल्लाह तआ़ला यक़ीनन और क़तअन पाक और मुनज़्ज़ा है। अल्लाह तआ़ला की तमाम मख़लूक़ अर्श से फ़र्श तक अल्लाह तआ़ला की मारिफ़त के रास्ते की निशनियाँ हैं और अल्लाह तआ़ला की .कुदरत व अज़मत की मज़बूत दलीलें हैं। सारी मख़लूक़ हाल की ज़बान से अल्लाह तआ़ला के एक होने की गवाही दे रही हैं। सारा आलम मारिफ़त का सबक़ है। उस सबक़ को सिर्फ़ वही लोग पढ़ सकते हैं जिनके दिलों को अल्लाह तआ़ला ने रौशन कर दिया है।

.कुर्बे हक़ की इब्तिदा व इन्तिहा : ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि ख़्वाब में मुझसे एक बूढ़े शख़्स ने सवाल किया कि वह कौन सी चीज़ है जिसके ज़रिए बन्दा अल्लाह तबारक व तआ़ला से क़रीब हो जाए। मैंने जवाब दिया उसकी इब्तिदा व इन्तिहा से, इब्तिदा तक़वा व परहेज़गारी है इन्तिहा रज़ा व तस्लीम व तवक़्कुल है।

ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया मोमिन के लिए ज़रूरी है कि पहले फ़राइज़ में मशग़ूल हो। जब इससे फ़ारिग़ हो जाए तो सुन्नतों में मशग़ूल हो। जब तक फ़राइज़ से फ़ारिग़ न हो जाए सुन्नतों में मशग़ूल होना बेवक़ूफ़ी व

रुऊनत (सरकशी) है। अगर फ़राइज़ से पहले सुन्नतों व नवाफ़िल में मशग़ूल होगा तो इबादत क़बूल न होगी और वह ज़लील किया जाएगा। उसकी मिसाल उस शख़्स की सी है जिसको बादशाह ने अपनी ख़िदमत के लिए बुलाया हो लेकिन वह बादशाह की तरफ़ आने के बजाए उस अमीर की ख़िदमत में जा कर खड़ा हो जाए जो बादशाह का ग़ुलाम व ख़ादिम है और बादशाह की क़ुदरत व विलायत के तहत (आधीन) में है।

सय्यिदुना हज़रते अली मुर्तज़ा कर्रमल्लाहु तआला वजहहुल करीम से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया है कि नफ़्ल पढ़ने वाला जिस पर अभी फ़राइज़ बाक़ी हैं उसकी मिसाल उस हामिला औरत की है जिसकी मुद्दते हमल पूरी हो चुकी हो, निफ़ास का वक़्त आ गया है और इस्क़ाते-हमल (गर्भपात) हो जाए। अब न तो वह हमल वाली न औलाद वाली है।

इस तरह अल्लाह तआला उस नमाज़ी के नवाफ़िल क़बूल नहीं फ़रमाता जब तक वह फ़राइज़ न अदा करे। नमाज़ी एक ताजिर की तरह है जब तक ताजिर माल का जमा हासिल नहीं कर लेता उसे नफ़ा नहीं मिलता। इसी तरह नवाफ़िल का पढ़ने वाला भी है कि उसकी नफ़्ली इबादात क़बूल नहीं की जातीं जब तक वह फ़राइज़ अदा न करे।

ऐसे ही वह शख़्स भी जो सुन्नतों को छोड़ कर नवाफ़िल में मशग़ूल हो गया। फ़राइज़ में से यह है कि हराम छोड़ दे। ख़ुदा के साथ उसकी मख़लूक़ को शरीक करने, उसकी क़ज़ा व क़द्र पर एतराज़ करने अल्लाह तआला के अहकाम व इताअत से दूर रहने को तर्क कर दे कि यह सब के सब फ़राइज़ हैं बाक़ी नवाफ़िल हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि अल्लाह तआला की नाफ़रमानी में किसी मख़लूक़ की ताबेदारी कभी हरगिज़ जाएज़ नहीं।

<u>ख़्वाब और बेदारी</u> : हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया हैं बेदारी के मुक़ाबले में जो होशयारी व आगाही का सबब है जिस शख़्स ने नींद को इख़्तियार किया उसने नाक़िस और अदना चीज़ को इख़्तियार किया, वह मुर्दों से जा मिला अच्छी मसलहतों से उसने ग़फ़लत बरती। नींद मौत की बहन है। इसी लिए अल्लाह तआला के लिए ख़्वाब जाएज़ नहीं माना गया। इसी तरह फ़िरिश्तों से भी नींद दूर है क्यूँकि वह अल्लाह के क़रीब हैं। इसी तरह जन्नतियों से भी नींद दूर कर दी गई। इसी लिए तमाम भलाईयों में बेहतर भलाई शब्बेदारी में है और तमाम बुराईयों में बदतर बुराई सो जाने और नेक कामों से ग़फ़लत बरतने में है।

जो शख़्स अपने नफ़्स की ख़्वाहिशात की बिना पर खाएगा पिएगा वही सोएगा। उसकी बहुत सी भलाईयाँ व नेकियाँ फ़ौत हो जायेंगी --- जिस शख़्स ने हराम ग़िज़ा में से थोड़ा सा भी खाया उसकी मिसाल उस आदमी जैसी है जिसने नफ़्स की ख़्वाहिश से मुबाह (जाएज़) चीज़ ज़्यादा खा ली क्यूँकि हराम ग़िज़ा ईमान के नूर को ढाक लेती है और दिल को काला कर देती है। जब ईमान ही ख़राब हो गया तो फिर न नमाज़ है न इबादत और न इख़्लास ---- जिसने हुक्मे इलाही के साथ हलाल ग़िज़ा में से थोड़ा खाया और इसलिए खाया कि इबादत में ज़ौक़ और क़ुव्वत पाए उसे एक नूर मिला। हराम ग़िज़ा तारीकियों में से एक तारीकी हैं। हराम में न कोई नेकी है न भलाई है न ख़ैर फिर हुक्मे इलाही के बग़ैर नफ़्स की ख़्वाहिश से हलाल खाना भी हराम की तरह है। इसलिए कि यह भी नींद लाने वाला है। इसमें भी कोई भलाई और ख़ैर नहीं रह जाती।

<u>क़ुर्बे ख़ुदा का रास्ता</u> : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया हैं तुम्हारा मामला दो तरह से ख़ाली नहीं हैं या तो तुम अल्लाह तआला से दूर होगे या अल्लाह तआला से क़रीब होगे --- अगर तुम अल्लाह तआला से

ग़ायब व दूर हो तो फिर क्या वजह है दीन व दुनिया की नेमत, हमेशा की इज़्ज़त, अज़ीम नफ़ा, बहुत बड़ा आराम, सलामती और मालदारी हासिल करने में तुम्हारी सुस्ती करने का।

तुम फ़ौरन उठो और अल्लाह की तरफ़ जल्द चलो एक बाज़ू हराम मुबाह लज़्ज़तें, शहवतें और आराम सब को छोंड़ देता है और दूसरा बाज़ू सख़्तियों व तकलीफ़ों को बर्दाश्त करता है। फ़राइज़ का अदा करना अमल में सख़्ती उठाना नफ़्स की ख़्वाहिश और दुनिया व आख़िरत के इरादे से निकल जाना है।

यहाँ तक कि तुम अल्लाह से मुलाक़ात की कोशिश में कामयाब हो जाओ। फिर उस वक़्त जिस चीज़ की तमन्ना करोगे उसे हासिल कर लोगे और तुम्हें बड़ी बड़ी करामतें और बड़ी बड़ी इज़्ज़तें हासिल होंगी और मुमकिन है कि तुम उन मुक़र्रबीन व वासेलीन में शामिल हो जाओ जिन्होंने अल्लाह तआ़ला की इनायात हासिल कर ली है, हक़ की मेहरबानी जिनके शामिले हाल हो गई है और महब्बते इलाही ने जिन लोगों को अपनी तरफ़ खींच लिया है और अल्लाह तआ़ला की रहमत व बख़्शिश ने हर तरफ़ से जिनको घेर लिया है। तुमने ख़्वाहिश व इरादा और इख़्तियार व ग़ौर व फ़िक्र से जिस चीज़ को छोड़ दिया है उसकी तरफ़ फिर मत झुको, क़ल्ब की हिफ़ाज़त करो, बला नाज़िल होने के वक़्त सब्र व रज़ा व मुवाफ़क़ते हक़ यानी अल्लाह की रज़ा न छोड़ो। अल्लाह तआ़ला के सामने तुम गेंद की तरह बन जाओ, मुर्दे को ग़ुस्ल देने वाले के सामने मुर्दे की तरह बन जाओ और माँ व दाई की गोद में दूध पीते बच्चे की तरह बन जाओ।

अल्लाह तआ़ला के सिवा जो कुछ भी है सबसे अलग हो जाओ। नफ़ा व नुक़सान अता व मना के मामले में हक़ के सिवा किसी को न देखो। तकलीफ़ व बला के वक़्त में तमाम मख़लूक़ और असबाब को अल्लाह तआ़ला का

ताज़याना (सज़ा) समझो जिस ताज़याना से वह तुम्हें मारता हैं और नेमत व अता के वक़्त उन्हीं असबाब से तुम्हें अल्लाह तआ़ला इस तरह खिलाता है जैसे कि अपने दस्ते कुदरत से तुम्हें लुक़में खिला रहा हो।

ज़ाहिदों की फ़ज़ीलत : सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया है कि ज़ाहिदों को दो मरतबा सवाब दिया जाएगा। अव्वल तो दुनिया को तर्क करने की वजह से। इसलिए कि वह अपनी ख़्वाहिश से दुनिया को क़बूल नहीं करते हैं बल्कि सिर्फ़ उसे हुक्मे ख़ुदा से लेते हैं। ज़ाहिदों से जब अपने नफ़्स की दुश्मनी व ख़्वाहिश की मुख़ालफ़त साबित हो जाती है और वह मुहक़्क़िक़ीन व वलियों में शुमार कर लिए जाते हैं, अबदाल और आरिफ़ों के गिरोह में शामिल कर लिए जा हैं तो ज़ाहिदों को उन नेमतों की क़िस्मों को लेने और उन नेमतों से तअल्लुक़ात क़ाइम करने का हुक्म दिया जाता है। इसलिए कि अब इस हाल में उन ज़ाहिदों के लिए नेमतों के हिस्से ज़ुरूरी हैं क्यूँकि वो नेमतें उन ज़ाहिदों के सिवा किसी दूसरे के लिए नहीं पैदा की गई हैं। ज़ाहिदीन जब नेमतों के क़बूल करने के हुक्म को बजा लाते हैं और उन नेमतों से फ़ायदा हासिल करते हैं, उनसे तअल्लुक़ात पैदा कर लेते हैं मगर उन नेमतों से तअल्लुक़ात पैदा करने में ज़ाहिदों के इरादे और ख़्वाहिश व हिम्मत का कोई लगाव नहीं होता तो ऐसे ज़ाहिदों को इस बग़ैर इरादा के लेने की वजह से दुगुना सवाब दिया जाता है क्यूँकि ज़ाहिद उस हाल में अल्लाह तआ़ला के काम की मुवाफ़क़त और अल्लाह तआ़ला के हुक्म पर अमल कर रहे हैं। अल्लाह तआ़ला ये सवाब उन ज़ाहिदों को सिर्फ़ अपने फ़ज़्ल व करम से अता फ़रमाता है और उन ज़ाहिदों को अपनी नेमतों के साए में रखता है, अपने लुत्फ़ व रह़मत और बेशुमार बख़्शिश से परवरिश करता है इसलिए कि उन ज़ाहिदों ने अपनी ज़ात के लिए फ़ायदा हासिल करने और तकलीफ़ को दूर करने से दुनिया में अपने हाथ रोक लिए हैं।

वो ज़ाहिद दूध पीते बच्चों की तरह हो गए हैं जिसमें नफ़्स की मसलेहतों के लिए कोई जुम्बिश नहीं है जिसे ख़ुदा के फ़ज़्ल और माँ बाप के हाथों पहुँचने वाले रिज़्क़ के साथ नाज़ व नेमत में रखा गया है और माँ बाप ख़ुदा की तरफ़ से उस बच्चे के वकील और ज़ामिन हो गए है। जब अल्लाह तआला अपने उन ज़ाहिदों को नफ़्स की ख़्वाहिशों से बेपरवाह कर देता है तो मख़लूक़ के दिलों को उन ज़ाहिदों की तरफ़ झुका देता है। उन ज़ाहिदों पर मख़लूक़ को मेहरबान कर देता है और लोगों के दिलों में उन ज़ाहिदों के लिए रहमत व शफ़क़त पैदा कर देता है। हर शख़्स उन ज़ाहिदों पर मेहरबानी करता है और उन ज़ाहिदों की तरफ़ झुक जाता है, उन ज़ाहिदों के साथ एहसान ही करता है। हर उस शख़्स की यही हालत होती है जो अल्लाह तआला के इलावा से फ़ानी हो गया जिसे अल्लाह तआला के हुक्म और काम के सिवा कोई भी हरकत और जुम्बिश नहीं दे सकता। ये बन्दे दुनिया और आख़िरत में अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वासिल हो जाते हैं यानी अल्लाह तआला की बारगाह में नज़दीकी हासिल कर लेते हैं और दोनों आलम में नाज़ व नेमत के साथ रखे जाते हैं। उन ज़ाहिदों से तमाम तकलीफ़ें दूर कर दी जाती हैं। हर हाल में अल्लाह तआला उनका ज़ामिन होता है। अल्लाह तबारका व तआला ने पैग़म्बरे इसलाम अलैहिस्सलातु वस्सलाम से इरशाद फ़रमाया है ऐ महबूब तुम फ़रमा दो अल्लाह मेरा मददगार है जिसने क़ुर्आन को नाज़िल फ़रमाया और नेकों को दोस्त रखता है।

<u>मुसीबतों के आने की वजह</u> : सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं अल्लाह तआला मुमिनीन में से विलायत और मारिफ़त वाली एक जमाअत को बलाओं में मुबतला करता है मगर इसलिए कि उन वलियों को बला की वजह से दुआ की जानिब मुतवज्जा करे फिर जब वह औलियाए किराम दुआ करते हैं तो अल्लाह तआला उनकी दुआ को पसन्द फ़रमाता है और उनकी दुआ के बाद उनकी

दुआ की क़बूलियत को दोस्त रखता है ताकि उन औलियाए किराम पर मुकम्मल फ़ज़्ल व करम की बारिश फ़रमाए क्यूँकि मोमिन अल्लाह तआ़ला से दुआ करता है तो फ़ज़्ल व करम ख़ुद अल्लाह तआ़ला से मोमिन की दुआ के क़बूल होने की दुआ करते हैं। बन्दे को चाहिए कि बला के नाज़िल होने के वक़्त अल्लाह तआ़ला के अदब का लिहाज़ रखे, अहकाम को छोड़ने और गुनाहों के क़रने के ज़ाहिरी और बातिनी बातों को सोचे इसलिए कि कभी ऐसा भी होता है कि गुनाह के सबब बन्दा बला में मुबतला कर दिया जाता है अगर वह बला दूर हो गई तो मक़सूद हासिल हो गया वर्ना चाहिए कि दुआ और गिरया व ज़ारी में हमेशा मशग़ूल रहे। यानी अल्लाह तआ़ला की बारगाह में रोता गिड़गिड़ाता रहे और उसके रह़मत वाले नामों के ज़रिए उससे दुआ भी करता रहे जैसे या अल्लाहु या रह़मान या मन्नान या सत्तार या रह़ीम या करीम हमारे ऊपर रह़म व करम फ़रमा और हमारे गुनाहों को मिटा कर हम मुसलमानों पर एहसाने अज़ीम फ़रमा आमीन या रब्बल आलमीन बिजाहि सय्यिदिल मुरसलीन अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीम। ---- क्यूँकि हो सकता है कि उसका मुसीबत में फंसना इसी लिए हो कि ख़ुदाए तआ़ला से दुआ करता रहे, दुआ के क़बूल होने की देर होने पर ख़ुदाए तआ़ला से बुरा ख़्याल न रखे जैसा कि हमने ज़िक्र किया बल्कि दुआ के क़बूल होने का उम्मीदवार रहे क्यूँकि दुआ ज़ुरूर क़बूल होगी अगर वह दुआ बन्दे के हक़ में बेहतर है।

<u>राहते क़ुबरा और जन्नते आलिया</u> : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआ़ला से रज़ा बिल क़ज़ा तलब करो क्यूँकि यह बहुत बड़ी राहत है और जन्नत का बहुत आला मक़ाम है और अल्लाह तआ़ला के क़ुर्ब का यही सबसे आला दर्जा है। मोमिन के लिए यही महब्बते इलाही का ज़रिया है। अल्लाह तआ़ला जिसे अपना दोस्त बना लेता है दुनिया व आख़िरत में उस पर अज़ाब न फ़रमाएगा।

रज़ा व फ़ना क्या है? ख़ुदा से मिलना, ख़ुदा की तरफ़ पहुँचना, ख़ुदा के ज़िक्र से आराम पाना। उन नेमतों की तलाश में मशग़ूल मत हो जाओ जो या तो तुम्हारे लिए तक़सीम ही नहीं की गईं या तक़सीम कर दी गईं हैं और उनमें तुम्हारा हिस्सा रख दिया गया है और अगर तुम्हारे लिए नहीं तक़सीम की गईं तो उनकी तलाश में मशग़ूल होना बेवक़ूफ़ी व जहालत है और अज़ाबों में से यह भी एक सख़्त्तरीन अज़ाब है जैसा कि फ़रमाया गया है कि अज़ाबों में से सख़्त अज़ाब है उस चीज़ की तलब जो तुम्हारी क़िसमत में नहीं है। अगर वह नेमतें तुम्हारे लिए हैं भी तो उनकी तलाश व तलब में मशग़ूल हो जाना सरासर लालच व हिर्स है जो बन्दगी व महब्बत और हक़ीक़त के मरतबे में शिर्क है इस लिए कि यह अल्लाह तआला के इलावा है और अल्लाह के इलावा किसी चीज़ के साथ मशग़ूल रहना शिर्क है।

<u>तम्बीह</u> : यहाँ यह मतलब नहीं है कि अल्लाह तआला के दोस्तों से भी तअल्लुक़ न रखा जाए क्यूँकि अल्लाह तआला के दोस्तों से तअल्लुक़ रखना अल्लाह तआला ही से तअल्लुक़ रखना है।

<u>अच्छे आमाल</u> : सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया है जो बन्दा अपने मालिके हक़ीक़ी से सच्चाई और रास्तबाज़ी (सच बोलना) इख़्तियार करके तक़वा व परहेज़गारी को इख़्तियार करता है वह रात व दिन अल्लाह तआला के इलावा से बेज़ार रहता है मेरे दोस्तो! जो बात तुम्हारे अन्दर न हो उसका दावा न करो। ख़ुदा को एक जानो किसी को उसका शरीक न बनाओ जिस शख़्स का राहे ख़ुदा में कुछ नुक़सान हो जाता है ख़ुदाए करीम उसका बहुत अच्छा बदला ज़रूर देता है। याद रखो दिल की कुदूरत नहीं जा सकती जब तक कि नफ़्स की कुदूरत न चली जाए। जब तक नफ़्स असहाबे कहफ़ के कुत्ते की तरह रज़ा के दरवाज़े पर न बैठ जाए उस वक़्त तक दिल में सफ़ाई नहीं पैदा हो सकती उसी वक़्त उन्हें यह ख़िताब मिलेगा

يٰاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِیْ اِلٰی رَبِّکِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ٥

तर्जमा : ऐ इत्मीनान वाली जान अपने रब की तरफ़ वापस हो यूँ कि तू उससे राज़ी वह तुझसे राज़ी (पारा 30 रुकू 14) ---- उसी वक़्त वह अल्लाह तआला की बारगाह में फ़ैज़याब होगा और मक़ामे आला से उसे यह पैग़ाम सुनाई देगा يَا عِبَادِیْ اَنْتَ لِیْ وَاَنَا لَکَ (तर्जमा : ऐ मेरे बन्दे तू मेरे लिए है और मैं तेरे लिए हूँ) ---- जब इस हाल में उसे मुद्दत तक अल्लाह तआला का .कुर्ब हासिल रहेगा तो ख़ुदा के ख़ास बन्दों में शामिल हो जाएगा। ज़मीन पर अल्लाह तआला का ख़लीफ़ा कहलाने का हक़दार होगा, अब यह ख़ास बन्दा ख़ुदा तआला का अमीन है।

ख़ुदाए तआला ने उसे दुनिया में इस लिए भेजा है कि गुनाहों के दरिया में डूबने वालों को डूबने से बचाए, गुमराही के बियाबानों में राहे हक़ से गुमशुदा लोगों को राहे हक़ पर लगाए फिर अगर किसी मुर्दा दिल पर उस ख़ास बन्दे की नज़र पड़ जाती है तो वह उस मुर्दा दिल को ज़िन्दा कर देता है और अगर किसी गुनहगार इन्सान पर उसकी तवज्जो होती है तो उस गुनहगार इन्सान को नसीहत करता है और बदबख़्त को नेकबख़्त बना देता है।

मक़ामे फ़ना : सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया है तुम ख़ुदा को मद्देनज़र रख कर मख़लूक़ात से नज़र फेर लो तो उस वक़्त तुम इल्मे इलाही के लाएक़ हो सकोगे। मख़लूक़ से फ़ना हो जाने की अलामत यह है कि उस मख़लूक़ से तुम्हारा तअल्लुक़ बिल्कुल ख़त्म हो जाए मख़लूक़ के नफ़ा से उम्मीदवार और उसके नुक़सान से बेख़ौफ़ हो जाओ और ख़ुद अपनी हस्ती अपने नफ़्स व ख़्वाहिश से अलग हो जाने की पहचान यह है कि नफ़ा हासिल करने और नुक़सान ख़त्म करने में ज़ाहिरी असबाब से नज़र फेर लो और सब कुछ अल्लाह तआला के ही सुपुर्द कर दो और समझ लो कि जिस

ज़ाते पाक ने सबसे पहले हमारे तमाम कामों में तसर्रुफ़ किया है वही हममें अब भी तसर्रुफ़ फ़रमाने वाला है। अपने इरादे से फ़ना हो जाने की पहचान यह है कि अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी के सामने तुम्हारा इरादा कुछ भी न हो बल्कि अल्लाह तआ़ला का काम तुम्हारे अन्दर जारी रहे। तुम्हारे आज़ा जिसके हुक्म से ख़ामोश हों और दिल मुतमइन्न और ख़ुश रहे ज़रा भी दिल पर मैल न आए तुम्हारा बातिन नूर से भरा हो और तमाम बातों से अलग रहे और तुम कुदरते इलाहिया के हाथ में आ जाओ जो कुछ भी वह तुम पर अपना तसर्रुफ़ करे। ज़बाने अज़ली तुम्हें उस वक़्त पुकारेगी इल्मे लदुन्नी तुम्हें हासिल होगा, तुम अल्लाह के नूर के हुस्न का लिबास पहन लोगे और जब अल्लाह के इरादे के सिवा तुम्हारे अन्दर कुछ न रहेगा तो उस वक़्त तसर्रुफ़ात और करामात तुम्हारी तरफ़ मन्सूब होंगे मगर यह भी ज़ाहिर में है वर्ना हक़ीक़त में वह अल्लाह का काम होगा।

उस वक़्त अपने दिल में जब तुम कोई इरादा पाओ तो ख़ुदा की अज़मत व बुज़ुर्गी का ख़याल करो और अपने वुजूद को हक़ीर जानो यहाँ तक कि तुम्हारे वुजूद पर क़ज़ाए इलाही वारिद हो। उस वक़्त तुम्हें बक़ा हासिल होगी क्यूँकि फ़ना की हद है और वह यह कि सिर्फ़ ख़ुदाए तआ़ला ही बाक़ी रहे जैसा कि ख़ल्क़ पैदा करने से पहले भी अल्लाह तआ़ला तन्हा था यही हालते फ़ना है। जब तुम ख़ल्क से जुदा हो जाओगे तो कहा जाएगा رحمك الله تعالى وحياك (तर्जमा - ख़ुदाए तआ़ला तुम पर अपनी रह़मत नाज़िल करे और हक़ीक़ी ज़िन्दगी तुम्हें अता फ़रमाए) और उसी वक़्त तुम्हें हक़ीक़ी ज़िन्दगी नसीब होगी।

<u>सदाक़त और सच्चाई</u> : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं कि सच्चाई और रास्त बाज़ी (सच बोलना) इख़्तियार करो। अगर ये दोनों सिफ़तें न होतीं तो किसी को भी क़ुर्बे इलाही हासिल न होता। अगर इख़लास और

रास्तबाज़ी का मूसा अलैहिस्सलातु वस्सलाम का असा तुम्हारे दिल के पत्थर पर मार दिया जाए तो उस दिल से हिकमत के चश्मे फूट पड़ेंगे। आरिफ़ इसी इख़्लास और सच्चाई के बाज़ू से कौन व फ़साद के आलम के पिंजरे से निकल कर अल्लाह तआ़ला के नूर की फ़ज़ा में पहुँच सकता है और मक़ामे आला पर बैठ सकता है जिस किसी के दिल पर भी सच्चाई और यक़ीन का नूर ज़ाहिर होता है आलमे मकनून में फ़िरिश्ते उसका नाम पुकारते हैं और क़ियामत के दिन वह आरिफ़ सिद्दीक़ीन के साथ उठाया जाएगा। याद रखो ख़्वाहिशाते नफ़्सानी से बचना इश्क़ की आग के शोलों को साफ़ करता है क्यूँकि ग़ैरों की नज़दीकी से किसी तरह की लज़्ज़त हासिल नहीं हो सकती। वह आशिक़ों के दिल की वहशत है जो उन्हें महब्बत के जंगल में लिए फिरती है। याद रखो राहे ह़क़ पर आना सच्चाई के बग़ैर नामुमकिन है और जब आरिफ़ की नज़र बलन्द हो जाती है तो उसके सर पर तजल्लियाँ और अनवार ज़ाहिर होने लगते हैं।

<u>अल्लाह तआ़ला का तमाम ऐबों से पाक होना</u> : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं हम से क़रीब अल्लाह तआ़ला है और वह ख़ालिक़े कुल है उसने अपनी हिकमते कामिला से तमाम काम मुक़द्दर कर दिए हैं। उसका इल्म सभी चीज़ों पर हावी है यानी अल्लाह तआ़ला का इल्म तमाम चीज़ों को घेरे हुए है कोई चीज़ भी उसके इल्म से बाहर नहीं और अल्लाह तआ़ला की रह़मत सब पर साया किए हुए है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं है। वो लोग बहुत बड़ झूटे है जो उसकी मख़लूक़ात में किसी को भी उसके बराबर समझते हैं, किसी को उसका शरीक जानते हैं या किसी को भी उसके मिस्ल ठहराते हैं سُبْحَانَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ (तर्जमा : पाक है अल्लाह तआ़ला उन तमाम ऐबों से जिनको कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन उस पर लगाते हैं) वह मालिक अलल इतलाक़ है

तमाम ऐबों से पाक है, सब पर ग़ालिब है, बहुत बड़ी हिकमत वाला है, वह तन्हा है, न खाता है न पीता है न तो वह ख़ुद किसी को जनता है और न उसको किसी ने जना है और न उसकी कोई बीवी है لَیْسَ کَمِثْلِہٖ شَیْءٌ وَ ھُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْر (तर्जमा : कोई भी शय उस जैसी नहीं है वह सबकी सुनता है वह सब कुछ देखता है) न उसका कोई मददगार है न कोई वज़ीर है। वह कोई ऐसी शय नहीं है जिसे कोई छू सके न जौहर है कि रौशनी पाए और न अर्ज़ (जो चीज़ किसी के साथ होकर पाई जाए) है कि फ़ना हो जाए न वह चन्द चीज़ों से मिल कर बना हुआ है। तमाम चीज़ें उसके इल्म में हैं वह सब को देख रहा है वही सब का माबूद है हमेशा से ज़िन्दा है हमेशा ज़िन्दा रहेगा न उसे मौत है न फ़ना है वह हाकिम है आदिल है बन्दों के ऐब से चश्मपोशी करने वाला है और वह ख़ालिक़ व राज़िक़ है उसी की सलतनत हमेशा से है उसकी अज़मत व बुज़ुर्गी हमेशा वाली है न वह किसी के वहम व ख़्याल में आ सकता है और न किसी के वहम व ख़्याल में समा सकता है।

अल्लाह तआला की हक़ीक़त मालूम करने से सारी दुनिया आजिज़ है और तमाम ज़हन उसकी हक़ीक़त मालूम करने से मजबूर हैं न उसकी मिसाल दी जा सकती है न किसी शय की तरफ़ निसबत की जा सकती है। तमाम सांसें उसके शुमार में हैं और सबके आमाल व अफ़आल उसकी गिनती में हैं। वह खिलाता है ख़ुद नहीं खाता। वह सब को रोज़ी देता है ख़ुद उसे रोज़ी की हाजत नहीं। वह जो चाहे करे उससे कोई पूछने वाला नहीं है। उसने बिला किसी नज़ीर व मिसाल के सिर्फ़ अपने इरादे से यह सारी मख़लूक़ पैदा की है जैसा कि .क़ुर्आने पाक फ़रमाता है ذُوالْعَرْشِ الْمَجِیْدُ فَعَّالٌ لِّمَا یُرِیْدُ ○ (तर्जमा : बुज़ुर्ग व बरतर अर्श वाला है पस जो चाहता है करता है) जो कुछ उसने मुक़द्दर कर दिया है वक़्ते मुक़र्ररा

पर उसे जारी फ़रमाता है। उसकी तदबीरे बादशाहत में कोई उसका मददगार नहीं। वह आलिमुल ग़ैब है, क़ादिरे मुतलक़ है उसकी .कुदरत की कोई इन्तिहा नहीं। वह मुदब्बिर है उसका कोई इरादा नाक़िस नहीं है। वह भूलता नहीं बल्कि भूलने से अल्लाह तआला हमेशा से पाक है और हमेशा पाक रहेगा।

इन्सान का पैदा करना : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं सुब्हानल्लाह उस ख़ालिक़े कौनो मकाँ ने इन्सान को किस उम्दा और बेहतरीन सूरत में पैदा किया। इस कमज़ोर बुनयाद के वुजूद में अपनी क्या क्या हिकमतें दिखलाईं। अगर इन्सान में अपनी ख़्वाहिशों की पैरवी करने की आदत न हो तो वह अपनी फ़ज़ीलत की वजह से बहुत ही अकमल व आला है। अगर इन्सान में कसाफ़ते तबई (पैदाइशी भारीपन) न होती तो वह एक ऐसा ख़ज़ाना है जिसमें ग़ैब और राज़ और तमाम क़िस्म के कमालात अमानत रखे गए हैं। इन्सान का वुजूद एक मकान है जो नूर और तारीकी दोनों से भरा हुआ है। फ़िरिश्तों पर उसकी फ़ज़ीलत ने उसे बुज़ुर्गी का ताज पहनाया है। इन्सान के जिस्म का सदफ़ (सीप) रूहानी मोतियों से भरा हुआ है। वुजूद के दरिया में इल्म की कश्तियाँ लदी हुई हैं और वो कश्तियाँ हवाए रूह के ज़रिए रियाज़त और मुजाहदा की तरफ़ जा रही हैं। इन्सान के वुजूद के मैदान में अक़्ल का बादशाह नफ़्स के बादशाह के ऊपर खड़ा है और दोनों लश्कर सीने में बड़ी जवाँमर्दी के साथ एक दूसरे के मुक़ाबले के लिए तैयार हैं। नफ़्स के बादशाह के लश्कर का सरदार इब्लीसे लईन है और अक़्ल के बादशाह के लश्कर का सरदार रूह है। इन दोनों लश्करों की तैयारी के बाद अल्लाह तआला के हुक्म के मुअज़्ज़िन ने पुकार कर कह दिया है ऐ लश्करे इलाही के जवाँ मर्दो आगे बढ़ो और नफ़्स के बादशाह के लश्कर के बहादुर सामने आओ फिर लड़ाई शुरू कर दो। ये हुक्मे इलाही जारी होने के बाद दोनों लश्कर लड़ने लगते हैं और दोनों तरफ़ से एक दूसरे पर फतह पाने की ग़र्ज़ से

तरह तरह के मक्र और हीले किए जाते हैं। उसी वक़्त तौफ़ीक़े इलाही भी ज़बाने हाल से पुकार कर दोनों लश्करों से कह देती है कि मैं जिसकी मदद करूंगी फ़तह का मैदान उसी के हाथ होगा और दुनिया और आख़िरत में वही नेकबख़्त कहलाएगा। मुसलमानो अक़्ल की पैरवी करो ताकि तुम्हें हमेशा वाली नेकबख़्ती हासिल हो, नफ़्स की पैरवी को छोड़ दो और .कुदरते इलाही पर ग़ौर करो कि अल्लाह तआला ने जिस्म के साथ रूह को जो आसमानी है और आलमे अरवाह से आई है। तुम्हें ऐसी ज़िन्दगी बसर करनी चाहिए कि रूह का पाकीज़ा परिन्दा अल्लाह तआला की इनायत के बाज़ूओं से उड़ता हुआ जिस्म के भारी भरकम पिंजरे को छोड़ कर अल्लाह तआला की बारगाह के दरख़्त में अपना आशयाना बना ले और .कुर्बे इलाही की शाख़ों पर बैठ कर शौक़ की ज़बान से चहचहाए। मारिफ़त के मैदान से जवाहिराते हक़ाइक़ चुने और जिस्म को वुजूद की तारीकी में पड़ा रहने दे फिर जिस्मे ख़ाकी फ़ना हो जाएगा और क़ल्ब के राज़ ज़ाहिर होने लगेंगे। अगर अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ एक लम्हा भी तुम्हारे शामिले हाल हो जाए तो उसकी एक तवज्जोह की नज़र ही तुम्हें अर्श तक पहुँचा देगी और तुम्हारे दिल में उलूम की हक़ीक़तें भर कर उसे यानी दिल को मारिफ़त के राज़ों का ख़ज़ाना बना देगी। उस वक़्त तुम्हें दिल की आंखों से अल्लाह तआला का हुस्न नज़र आएगा।

<u>इस्मे आज़म शरीफ़</u> : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया है लफ़्ज़े अल्लाह ही इस्मे आज़म है मगर इसका असर उस वक़्त ज़ाहिर होता है कि पढ़ने वाले के दिल में सिवा अल्लाह के और कुछ न हो। आरिफ़ की ज़बान से बिस्मिल्लाह अल्लाह तआला के हुक्मे कुन के मरतबे में है। अल्लाह तआला जब किसी शय को मौजूद करना चाहता है तो उसकी निसबत फ़रमाता है कुन (हो जा) पस वह मौजूद हो जाती है यही हाल आरिफ़ की ज़बान से बिस्मिल्लाह का है।

"अल्लाह" वह कलिमा है जो हर मुहिम को आसान और हर ग़म को दूर कर देता है। यह वह कलिमा है कि ज़हर के असर को भी ख़त्म कर देता है। यह वह कलिमा है कि जिसका नूर आम है। अल्लाह हर ग़ालिब पर ग़ालिब है। अल्लाह अजाएबात को ज़ाहिर करने वाला है। अल्लाह तआ़ला की बादशाहत तमाम सलतनतों से ज़बरदस्त है। अल्लाह तआ़ला तमाम बन्दों के हालात से बाख़बर और उनके दिली भेद से वाक़िफ़ है। अल्लाह तआ़ला तमाम सरकशों को पस्त करने वाला तमाम ज़बरदस्तों को तोड़ने वाला है। अल्लाह तआ़ला आलिमुल ग़ैब वश्शहादह है। अल्लाह तआ़ला से कोई चीज़ छुपी नहीं है जो अल्लाह तआ़ला का है वह अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में है। जो अल्लाह तआ़ला को दोस्त रखता है वह ग़ैरुल्लाह को दोस्त नहीं रखता। जो अल्लाह तआ़ला की राह में क़दम रखता है वह उस तक पहुँच जाता है और उसके सायए रहमत में ज़िन्दगी बसर करता है। जो अल्लाह तआ़ला का मुश्ताक़ होता है वह अल्लाह तआ़ला से महब्बत रखता है। जो ग़ैरों को छोड़ देता है उसके औक़ात अल्लाह तआ़ला के साथ गुज़रते हैं वह ख़ुदाए तआ़ला ही के दर पर उसी से इल्तिजा करता है। अल्लाह तआ़ला से भागने वालो! अब भी अल्लाह की तरफ़ आओ, तुम उसका नाम उसकी अज़मत फ़ानी दुनिया में सुन रहे हो तो आलमे बाक़ी में उसके हुस्न का क्या हाल होगा। मशक़्क़त के घर में तुम्हारे लिए ये सब कुछ है तो आराम के घर में क्या कुछ न होगा? ख़ुदा का नाम लो और उसके दर पर आकर उसे पुकारो और जब हिजाब उठ जाए तो देखोगे कि तुम मुशाहदा में रहोगे और विसाल के दरिया तुम्हारे ऊपर से बह रहे होंगे।

इल्म और अमल : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया है कि पहले इल्म हासिल करो फिर गोशानशीन बनो। जो इल्मे दीन के बग़ैर इबादते इलाही में मशग़ूल हो जाता है उसके तमाम काम सुधरने के बजाए बिगड़

जाते हैं। पहले अपने साथ शरीअते इलाही का चराग़ ले लो फिर इबादते इलाही करो। जो शख़्स अपने इल्म पर अमल करता है अल्लाह तआला उसके इल्म को बढ़ा देता है और उसे इल्मे लदुन्नी (इल्मे अताई) अता फ़रमाता है। तुम असबाब और तमाम मख़लूक़ से अलग हो जाओ अल्लाह तआला तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर देगा। इबादत व परहेज़गारी की तरफ़ दिल में झुकाव पैदा हो जाएगा। सिवा अल्लाह के सबसे जुदा रहो और अपनी रूह के चराग़ बुझ जाने से डरते रहो। अल्लाह तआला से डरते रहो। चालीस दिन अगर तुम उसकी याद में बैठे रहे तो तुम्हारे दिल से ज़बान की राह हिकमत के चश्में फूट निकलेंगे और तुम्हारा दिल उस वक़्त मूसा अलैहिस्सलाम की तरह अल्लाह तआला की महब्बत की आग में दहक़ने लगेगा। महब्बत की आग देख कर तुम्हारा नफ़्स तुम्हारी ख़्वाहिश, तुम्हारा शैतान, तुम्हारी तबीयत, तुम्हारे असबाब कहने लगेंगे ठहर जाओ मैने आग देखी है और राज़ के मक़ाम से निदा होगी मैं हूँ तेरा रब, तो तू मेरे ग़ैर से तअल्लुक़ न रख मुझे पहचान ले और मेरे सिवा सब को भूल जा। मुझ ही से तअल्लुक़ रख और सबसे तअल्लुक़ तोड़ दे, मेरा ही तालिब बना रह और बाक़ी सब से परहेज़ कर ले। मेरे इल्म से मेरा क़ुर्ब हासिल कर फिर जब बक़ा तमाम हो जाएगी तो तुम्हें बहुत कुछ हासिल होगा और जो कुछ हासिल होगा इलहाम होगा, हिजाबात उठ जायेंगे, कुदूरत दूर हो जाएगी, नफ्स भी ठहर जाएगा और अल्लाह तआला की मेहरबानियाँ होने लगेंगी और तुमसे ख़िताब होगा ऐ क़ल्ब नफ़्स के फ़िरऔन और ख़्वाहिश के शैतान के पास जाओ और उन्हें मेरे पास ले आओ मैं उन्हें हिदायत करूंगा और उनसे कहना तुम मेरी पैरवी करो मैं तुम्हें नेक राह दिखाऊँगा।

<u>इत्तिबाए सुन्नत</u> : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने फ़रमाया है कि सुन्नत की पैरवी करो। दीने इलाही में गुमराही वाली बिदअत न निकालो। ख़ुदा और उसके रसूल के

हर हुक्म पर अमल करो। ख़ुदा को एक जानो, उसका किसी को शरीक न बनाओ। ख़ुदा को तमाम ऐबों से पाक जानो, उसके ऊपर किसी क़िस्म की तोहमत न लगाओ, दीने इस्लाम को सच्चा दीन जानो इसमें कोई शक न करो। मुसीबतों में सब्र करो बेसब्री की राह न इख़्तियार करो। अपनी जगह पर साबित क़दम रहो, भागो मत ख़ुदा का फ़ज़्ल मांगो और मांगने में रंजीदा न हो, अपने मतलब के पूरा होने का इन्तेज़ार करो, उम्मीदवार रहो नाउम्मीद न हो। एक दूसरे के भाई बनो, आपसी दुश्मनी न रखो, इकट्ठे रहो और आपस में फूट न डालो, आपस में महब्बत पैदा करो। एक दूसरे को अपनी ख़्वाहिशात की बुनयाद पर दुश्मन न बनाओ। गुनाहों से पाक रहो और नाफ़रमानी न करो। अपने रब की इताअत के साथ ज़िन्दगी गुज़ारो और तौबा करने में देर न करो।

अलफ़ाज़ के सर पर उड़ते नहीं मअना
अलफ़ाज़ के सीने में उतर कर देखो

दुनिया के छोड़ने का ग़लत मअना : दुनिया का अजीब आलम है लोग मअना से ज़्यादा ज़ाहिरी अलफ़ाज़ और मग़्ज़ से ज़्यादा छिलके या दूसरे लफ़्ज़ों में हक़ीक़त से ज़्यादा ख़्याल के पुजारी हैं। बहुत कम लोग ऐसे मिलेंगे जो हक़ीक़त पहचानने वाले और बारीकियों तक पहुँचने वाले दिमाग़ के मालिक और साहिबेनज़र मुस्तक़ीम हों। अगर हक़ीक़त देखने की और बारीकी तक पहुँचने की आदत बन जाती तो इल्म और अमल की इस पस्ती से हरगिज़ उन्हें दोचार न होना पड़ता और कभी भी ज़िल्लत और रुसवाई न होती। हमारी तमाम कमज़ोरियों और पस्तियों की बुनयादी वजह ये है कि हम हक़ीक़त में इसलाम के मिज़ाज को नहीं पहचानते हैं ख़ुद अपनी नासमझी और ग़लत रास्ते पर चलने और जहालतों में ग़फ़लत की वजह से इसलाम को बच्चों का खिलौना बना डाला है। मुसलामानों की ग़फ़लत और जहालत व शरारत की वजह से मुसलमानों के बार बार करने के सबब फैले हुए बुरे अक़ाइद की तरह

दुनिया के छोड़ने का एक ग़लत अक़ीदा भी है (जैसे ताज़ियादारी का ग़लत अक़ीदा कि आज यह ग़लत अक़ीदा मुसलमानों के दिल व दिमाग़ में इतना जम गया है कि उलमाए किराम के लाख समझाने पर भी नहीं समझते और कितने मुसलमान तो इतने बड़े ज़ालिम हैं कि तख़्त या ताज़िया को मस्जिद में या मस्जिद के हुजरे में रख देते हैं और लकड़ी काग़ज़ के उस ढांचे से मुरादें मांगते हैं और उस ढांचे के आगे झुकते हैं अदब करते हैं। इस ग़लत अक़ीदे से ख़ुदा की पनाह। सही तरीक़ा यह है कि हज़राते हसनैन करीमैन रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के नाम की फ़ातिहा .क़ुर्आनख़्वानी और मीलादे पाक करवाना चाहिए जिसमें हज़राते सहाबए किराम और हसनैन करीमैन के सही वाक़ियात बयान हों और ढोल ताशा पीटने से दूर रहें क्यूँकि ढोल वग़ैरह बजाना हराम हैऔर अहले सुन्नत के बिल्कुल ख़िलाफ़ है) ऐसे ही दुनिया के छोड़ने का ग़लत अक़ीदा भी है।

आम तरीक़े से दुनिया के छोड़ने का यह ग़लत मतलब ख़्याल किया जाता है कि इन्सान जाइज़ लज़्ज़तों और ख़्वाहिशों को छोड़ कर दुनिया से बिल्कुल अलग हो जाए और दुनिया की हर चीज़ से अपना लगाव ख़त्म कर दे, नाम निहाद सूफ़िया और वाज़ कहने वालों ने तर्के दुनिया का मतलब समझे बग़ैर ही दुनिया को छोड़ने की तालीम और वाज़ शुरू कर दिया जिसके नतीजे में ऊपरी नज़र रखने वालों की नज़र में उसी आदमी को बुज़ुर्ग और वली समझा जाने लगा जो मुआमलाते दुनिया से अलग हो जाए और हर वक़्त तसबीह के दाने फिराता रहे और शादी बियाह ख़ानदान व ब्रादरी से कोई वास्ता न रखे लेकिन अगर तर्के दुनिया का यही मअना है तो इस कसौटी पर बड़े बड़े सूफ़िया भी वली नहीं साबित किए जा सकते और तो और हैं ख़ुद मुअल्लिमे कायनात बानीए इस्लाम यानी सरकारे दो आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के बारे में क्या कहा जाएगा जिनका हर क़ौल और हर फ़ेल

मुसलमानों के लिए मुकम्मल क़ानून और अमल का नमूना है। हुज़ूर के दामने करम के सायए पाक में तो ग्यारह बीवियाँ थीं और दुनिया के बहुत से काम और मुआमलात से भी हुज़ूर का तअल्लुक़ रहा।

<u>दुनिया के छोड़ने का सही मअना</u> : ज़ुहद व तर्के दुनिया की वह तालीम जो इस्लाम ने दी है और तमाम सूफ़ियाए किराम में पाई जाती है उसमें दुनिया से मुराद दुनिया के तअल्लुक़ात का ख़त्म कर देना नहीं है बल्कि उससे हर वह चीज़ें मुराद हैं जो ख़ुदा से ग़ाफ़िल कर दें और अगर किसी वली ने ग़लबए हाल के सबब दुनिया को तर्क कर दिया है तो यह उसकी ख़ुदा तलबी का कमाल है लेकिन यह फ़ेल दूसरों के लिए दलील या क़ानून नहीं है। दरअसल ज़ुहद और तर्के दुनिया से मक़सद यह है कि सालिक अपने दिल से अल्लाह के सिवा सब की महब्बत निकाल दे और सरकश नफ़्स पर क़ाबू पा जाए। अगर दुनयवी तअल्लुक़ात रखते हुए यह सिफ़त हासिल हो जाती है तो फिर इससे बढ़ कर कमाल और क्या हो सकता है? बजाए इसके कि दुनयवी तअल्लुक़ात को ख़त्म करके सुलूक की मन्ज़िल तय की जाए। इससे बहुत ज़्यादा कमाल यह है कि दुनयवी तअल्लुक़ात को क़ाइम रखते हुए मअबूदे हक़ीक़ी का .क़ुर्ब और विसाल हासिल किया जाए। अच्छी तरह दिमाग़ में यह बात बैठा लीजिए कि दुनिया के तर्क करने में हक़ीक़त और मारिफ़त का वह राज़ छुपा है जो रूहानी ज़िन्दगी की क़ीमती पूंजी है। यह तसलीम की हुई बात है कि दुनिया और दीन की हर कामयाबी का राज़ नफ़्स को मारने में पोशीदा है। आरज़ूमन्दी और ख़्वाहिशात ही इन्सान को दुनिया में ज़लील व ख़्वार करती हैं, दीन का मतलब हासिल करने में रुकावट पैदा करती हैं और दुनिया को हज़ारहा परेशानियों और ग़म का गहवारा बना देती हैं। दुनिया की जिस चीज़ को आपका दिल चाहे और उस चाहत को आप अपने दिल में जगह दे लें तो बस यही नाकामी की बुनयाद बन जाती है क्यूँकि जब अपनी

महबूब चीज़ या मतलूब ज़ात नहीं मिलती या मिल कर जुदाई इख़्तियार कर लेती है तो दिल में ग़म के शोले भड़क उठते हैं लेकिन बख़िलाफ़ इसके कि जिस चीज़ की आरज़ू हो और उससे लापरवाही बरती जाए तो दुनिया में किसी क़िस्म के रंज व ग़म का सवाल ही नहीं पैदा होता और उसके सामने तमाम मुल्कों की बादशाही की भी कोई हक़ीक़त नहीं होती। नफ़्स के जिहाद और दुनिया के तर्क का यह मतलब नहीं है कि आपको भूक लगे मगर खाना न खायें, प्यास मालूम हो और पानी न पियें, सर्दी लगे मगर कपड़ा न पहनें, निकाह की ताक़त व ख़्वाहिश होते हुए निकाह न करें बल्कि इसका मतलब यह है कि आप इस दुनिया में क़नाअत, सब्र, शुक्र व हिल्म और सब्र के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें। दीन के मसीहा उम्मत के रूहानी जिस्मानी पेशवा हुज़ूर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इस मतलब का दर्स ज़ुहद और नफ़्स को मारने के मुताल्लिक़ दिया है।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म की तक़रीरें

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तक़रीर बिलाशुबाह मुसलमानों के वास्ते उनकी ज़िन्दगी को इस्लाम की रूहानी तालीमात से संवारने के लिए बहुत अच्छा सामान है और सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की उन तक़रीरों के ज़रिए तरीक़त और मारिफ़त के राही को हक़ीक़त की मंज़िल का पता मिल सकता है। जिन तक़रीरों को उल्माए किराम और इल्म वालों ने उर्दू तर्जमा करके किताबों की शक्ल में मुख़्तलिफ़ नामों से पेश कर चुके हैं बिलाशुबह अगर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के चन्द ही महीनों की तक़रीरें पेश की जायें तो वह तक़रीरें ख़ुद एक बड़ी किताब हो जायें इसलिए किताब के बड़ी हो जाने के ख़ौफ़ से सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की सारी तक़रीरें नहीं नक़ल की जायेंगी सिर्फ़ चन्द तक़रीरें ही नक़ल की जायेंगी

ताकि उन तक़रीरों के ज़रिए अवाम फ़ायदा हासिल कर सकें। ऐ सारी कायनात के मालिको मौला तू अपने फ़ज़्लो करम से हुज़ूर पुर नूर ग़ौसुल आरिफ़ीन कुतुबुल आलमीन सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुक़द्दस पैग़ामात के ज़रिए हम तमामी मुसलमानाने अहले सुन्नत को मज़हबे इस्लाम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा आमीन बिजाहि सय्यिदिल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम।

ख़ुतबए सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु
15 शव्वालुल मुकर्रम हिजरी 545 बरोज़ हफ़्ता

*** औलिया अल्लाह के दिल पाक व साफ़ होते हैं वह मख़लूक़ को भूलते हैं और ख़ालिक़ को याद रखते हैं। दुनिया को भूलते हैं आख़िरत को याद रखते हैं तुम अपनी दुनियावी मसरूफ़ियतों की बिना पर उनकी शान व तमकेनत को नहीं देख सकते। तुम्हारे और उनके बीच एक ज़बरदस्त ख़ला (ख़ाली जगह) है।

*** अगर कोई मोमिन तुझे नसीहत करे तो सुन कर मुख़ालफ़त न करो क्यूँकि वह तेरे अन्दर वह बातें देखता है जो तू ख़ुद नहीं देख सकता। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया है मोमिन मोमिन का आइना होता है। मोमिन अपने भाई मोमिन को सच्चे दिल से नसीहत करता है उसमें क्या ऐब है क्या ख़ूबियाँ हैं साफ़ साफ़ बयान कर देता है।

*** पाक है वह ज़ाते ज़ुलजलाल जिसने मेरे दिल में भी हमारे मोमिन भाईयों के नसीहत व ख़ैरख़्वाही की आमादगी पैदा कर दी। अब यही मेरा दिलचस्प मशग़ला है कि मैं तुमसे वह सच्ची बातें कहता जाऊँ और बताता जाऊँ जो मैं समझता हूँ, इसका कोई दुनियावी बदला मैं नहीं चाहता न उख़रवी बदला, बदला तो मेरा मअबूदे हक़ीक़ी ख़ुद होना चाहिए और यही मेरा अस्ल मक़सद है हाँ मुझे अपनी क़ौम की फ़लाह व कामरानी से ख़ुशी होती है उनकी तबाही मेरे दिल पर तीर

चलाती हैं अगर मैं किसी मुरीदे सादिक़ को कामयाब बामुराद देखता हूँ तो मेरा दिल अपने ख़ालिक़े काएनात के आगे बहुत ज़्यादा ख़ुशी के साथ सजदे में झुक जाता है।

*** ऐ ग़ुलाम! मैं तेरी इस्लाह को अपना मक़सद समझता हूँ अपने ज़ाती नफ़ा को अपना मक़सद नहीं समझता। मैंने इस मरहले को तय कर लिया है हाँ मैं तुझे इस रास्ते (यानी नेक रास्ते पर) पर चला कर तेरी दस्तगीरी (मदद) करना चाहता हूँ, तो तू मुझसे मदद ले और कामयाबी की राह पर तेज़ी के साथ रवाना हो ---- न तुमको ग़ुरूर अल्लाह तआला के मुक़ाबले में ज़ेब दे सकता है न मख़लूक़ के मुक़ाबले में बल्कि तुमको अपनी हैसियत पहचानना चाहिए तुम क्या थे? एक हक़ीर नुतफ़ा एक बहते पानी के क़तरों की तरह, बेजान तुम्हारा अन्जाम क्या होगा एक मुर्दा लाश जिसे कीड़े और कुत्ते खाने के लिए बेताब रहेंगे इसलिए जो शख़्स तुम्हें दुनिया की लालच व हिरस के लिए दुनिया के मग़रूर बादशाहों की चौखट पर माथा रगड़ना सिखाता है ताकि तुम्हें सोने चांदी के कुछ टके मिल जायें जिसको तुम अपनी क़िस्मत के हक़ीक़ी और जाएज़ टुकड़ों से ज़्यादा समझ रहे हो वह तुम्हें सख़्त गुमराही में डालने वाला शैतान है। याद रखो तुम्हारे लिए इस हिरस व लालच का नतीजा ज़िल्लत व रुसवाई के सिवा कुछ नहीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है ख़ुदा के पास वह बन्दा ज़्यादा सज़ा के लायक़ है जो अपने रिज़्क़ से बढ़कर रिज़्क़ चाहता है अगर तुम यह समझते हो कि दुनिया के यह बन्दे तुमको इतना ज़्यादा दे सकेंगे कि हक़ीक़ी तलब घिर जाएगा तो तुम तक़दीर के फ़ैसलों से ग़ाफ़िल हो, यह वसवसा तुम्हारे दिल में शैतान का डाला हुआ है तुम ख़ुदा के बन्दे नहीं अपने नफ़्स व हवस के बन्दे हो, शैतान के क़ैदी हो दिरहम व दीनार का तुम पर जादू चल गया है, कोशिश करो कि तुम्हें इस क़ैद से रिहाई मिले और रिहाई हासिल करने के लिए तुम्हें किसी कामिल रहनुमा की

ज़रूरत है। इसलिए रहनुमा की तलाश करो लेकिन ऐसा रहनुमा ज़ाहिरी आंखों के टटोलने से नहीं मिलता, दिल और बातिन की आंखों के ज़रिए ढूंढने से मिल सकता है। इस तलाश के लिए ईमान ज़रूरी है जब ईमान न हो तो दिल भी रौशन नहीं होता। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया है :-

فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَٰكِن تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ

तर्जमा : इसलिए कि आंखें अंधी नहीं होतीं और लेकिन वह दिल अंधे होते हैं जो सीनों में हैं।

ईमान का न होना ज़ाहिरी आंखों को अन्धा नहीं बनाता है बल्कि उन दिलों को अंधा बना देता है जो सीनों में हैं। लालच और ख़ुशामद के ज़रिए दुनिया हासिल करने की मिसाल ऐसी है जैसे सोना घास के वज़न पर लिया जाए। घास थोड़ी देर में जल कर राख हो जाएगी और सोना भी हाथ से गया।

अगर तुम्हारा ईमान नाक़िस है तो लोगों से मेलजोल रख कर कुछ दुनिया ज़रूर ज़रूर हासिल करो, इस का नाम मईशत है यानी ज़िन्दगी के गुज़ारने का सामान है मगर जिस क़द्र जल्द हो सके अपनी मईशत की ऐसी इसलाह कर लो कि तुम आला दर्जे के मक़सदों पर आ जाओ। जब तुम्हारा ईमान क़वी हो जाएगा तो अब तुम तवक्कुल पैदा कर लो और असबाब से बेपरवाह हो जाओ। दुनिया वालों से मेल जोल व सुहबत कम होते होते आख़िर तुम में वह रूहानी यक़ीन पैदा हो जाना चाहिए कि गोया अब तुम मलकुल मौत को रूह हवाले कर देने के लिए तैयार ख़ड़े हो।

इस ज़िन्दगी के समुन्द्र में क़ज़ा व क़द्र की मौजें जहाँ तुम्हें ले जायें उसी तरफ़ तुम्हारी तवज्जो भी होनी चाहिए कि गोया अब असबाब के ख़्यालात तुम्हें काटने नहीं आयेंगे। मईशते दुनियवी की फ़िक्र तुम्हारी रूह में ज़र्रा बराबर भी बेचैनी पैदा न कर सकेगी।

ऐ शख़्स ये तुझको मेरी नसीहत है इस पर अमल तेरी रूह को आला दर्जे की बलन्दी पर पहुँचाने का ज़िम्मेदार है

अगर तू इस पर पूरे तौर पर अमल नहीं कर सकता तो थोड़ा ही सही। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि "लोगो जितना भी तुमसे हो सके दुनिया की फ़िक्रों से नजात हासिल करो"

ऐ ग़ुलाम जिस क़द्र जल्द दुनिया के ग़म से छुटकारा हासिल कर सकता है कर ले। अपने दिल को उस बेइन्तिहा रहमत के एक कनारे से बांध ले जो तेरे दिल की नाव को हक़ीक़ी इत्मिनान के कनारे पर पहुँचा दे। अल्लाह तआला हर चीज़ पर क़ादिर है, हर चीज़ का आलिम है उसके हाथ में सब कुछ है उससे मांगो तो पहले अपने दिल की तहारत मांगो, ईमान व मारिफ़त मांगो, इल्म मांगो और दिल में शाने बेनियाज़ी मांगो, यक़ीन की रौशनी मांगो, अल्लाह तआला ही से महब्बत व उनसियत मांगो। जब ये चीज़ें मिल जायें तो सब कुछ मिल सकता है, ग़ैर के आगे हाथ फैलाने की ज़रूरत ही नहीं तुम्हारा हक़ीक़ी मामला अल्लाह तआला से है, मग़रूर व मख़लूक़ के दर पर पेशानी रगड़ने की ज़रूरत नहीं।

ऐ ग़ुलाम अगर तूने सिर्फ़ ज़बान से कलिमए शहादत अदा कर लिया है और दिल ने अमल के ज़रिए उसका असर अपने अन्दर नहीं लिया है तो समझ ले कि तू एक क़दम भी ख़ुदा की तरफ़ नहीं बढ़ा है। असली रवानगी तो दिल की रफ़तार पर मौक़ूफ़ है, और असली नज़दीकी तो रूह की नज़दीकी का नाम है, अमल वह है जिसके अन्दर रूह यानी इख़्लास हो। यह इख़्लास ज़ाहिरी आज़ा और शरीअत के शरीअत के हुदूद की हिफ़ाज़त किए बग़ैर पैदा नहीं हो सकता, यही उसकी कसौटी है जो अल्लाह तआला के नेक बन्दों की ख़िदमत किए बग़ैर पैदा नहीं हो सकता जो अपनी ज़ाती ज़िन्दगी को बुज़ुर्गों की ज़िन्दगी के ख़िलाफ़ अपना अलग मेआर बनाए तो यह झूटी मेआर है।

लोगों को दिखाने की ख़ातिर 'अमल' अमल नहीं है, आमाल तो तन्हाई में होते हैं लोगों के सामने तो सिर्फ़ वह

फ़राइज़ होते हैं जिनका ज़ाहिर करना ज़रूरी है। आमाल की बुनयाद तौहीद व इख़्लास है अगर तौहीद व इख़्लास नहीं तो आमाल की इमारत खोखली बुनयाद पर है, वह जल्द ज़मीन पर ढेर बन जाएगी। पहले इस बुनयाद को मज़बूत कर लो तो फिर अमल की बलन्द व बाला इमारत भी बनाना ठीक होगा। ख़ुदा ने चाहा तो यह कभी नहीं गिरेगी, उसकी .कुव्वत उसकी बुनयाद का राज़ है। तौहीद ही की वजह से तुम्हारा अमल सच्चाई के आसमान पर चाँद बन कर चमकने लगेगा और सूरज की तरह रोशनी देगा।

सरकारे ग़ौसे आज़म की तक़रीर बमक़ाम मदरसा मामूरा में 19 शव्वालुल मुकर्रम हिजरी 545 बरोज़े सहशम्बा (मंगल)

रियाकार (दिखावे की नेकियाँ करने वाले) का ज़ाहिर तो साफ़ मगर दिल गन्दा होता है। वह शरई मुबाह चीज़ों से भी नफ़रत करता है, कस्बे हलाल से परहेज़ करता है, हाँ मज़हब को अपनी रोटी का ज़रिया बनाता है, उसकी हक़ीक़त अवाम की नज़रों से पोशीदा (छुपी हुई) होती है मगर ख़ास लोग उसको बराबर देखते रहते हैं, उसका सारा तक़वा (परहेज़गारी) व फ़रमाबरदारी बनावटी होती है, उसका बातिन (यानी दिल के अन्दर की बात) ख़राब होता है।

अफ़सोसनाक होगा अगर तुम न समझो कि अल्लाह तआ़ला की इताअत दिल से होती है नाकि जिस्म से। इबादत की यह सारी चीज़ें दिल से, बातिन से और माफ़ी से तअल्लुक़ रखती हैं तू इस ज़ाहिरी लिबासों की दौलत से अलग हो जा ताकि बातिनी नेमत के बेहतरीन लिबास से सरफ़राज़ हो जाए। इस मक्र के लिबास को उतार दे ताकि अल्लाह तआ़ला तुझे हक़ीक़त का लिबास पहना दे और काहिली के लिबास को उतार दे यहाँ तक कि ख़ुशामद और निफ़ाक़ (दिल में कुछ

ज़ाहिर कुछ) के लिबास को भी उतार कर फेंक दे। इन ख़्वाहिशों, गुरूरों और उज्ब (गुरूर की एक क़िस्म) और निफ़ाक़ के चमकीले पोशाक को उतार कर जला दे ताकि तेरे लिए हक़ीक़ी महब्बत का उम्दा लिबास हक़ीक़ी अज़मत का जन्नती लिबास अल्लाह तआला की तरफ़ से इनाम में मिल जाए।

ग़र्ज़ कि तू दुनिया का लिबास उतार दे और आख़िरत का लिबास पहन ले। अपनी ताक़त अपने वुजूद अपनी .क़ुव्वत या मख़लूक़ की .क़ुव्वतों पर घमंड छोड़ दे। इस घमंड को छोड़कर उसके दरबार में आ जा तो तुझे उसकी बेशुमार मेहरबानियाँ अपनी आग़ोश में ले लेंगी। उसकी बेइन्तिहा रह़मत तुझे अपने दामने करम में पनाह देगी बल्कि तू अपने वुजूद से भी हटकर अपने आक़ा के सामने आ जा और जब तू उसका हो जाएगा तो वह तेरा हो जाएगा। उसकी वसीअ और बेशुमार रह़मत व इनायत के साए में तेरी आरामगाह होगी। तेरे नफ़्से शैतान के लिए वही दवा है, तेरी शिकस्तगी (ज़ख़्म) के लिए वही मरहम है, तेरे हर दर्द का इलाज उसी के पास है, तेरे हर दुख को वही दूर कर सकता है, तू अपने को उसके लिए तोड़ेगा तो वही उसे जल्द जोड़ेगा, तू उसके लिए कट जाएगा यानी .क़ुर्बान हो जाएगा तो आख़िरकार वही तुझसे जुड़ जाएगा।

अब इससे बढ़ कर तेरे लिए कौन सी दौलत चाहिए जब वह तेरे टूटे को जोड़ेगा तेरे दर्द का ख़ुद मुदावा (दर्द को ठीक करने वाला) होगा तो सारी दुनिया मिल कर भी तुझे कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगी अगर वह तेरा दोस्त हो जाएगा तो दुनिया की सारी बलाओं के मुक़ाबले में भी तेरे लिए पहरा रहेगा।

जो तौहीद को ज़िन्दा करके कमज़ोर मख़लूक़ की नारवा महब्बत को फ़ना कर देता है जो ज़ुहद को ज़िन्दा करके दुनिया के लालच को मुर्दा करता है, अपने ख़ालिक़ की रग़बत (चाहत) को अपने दिल में ज़िन्दा करके अल्लाह तआला के सिवा हर चीज़ को ठुकरा देता है तो वही है जो सलाहियत

(क़ाबिलियत) की चोटी पर पहुँच गया, अपनी फ़लाह व कामरानी की ज़मानत हासिल कर ली, दीन व दुनिया की सआदतों को हासिल करने का राज़ उसने मालूम कर लिया। इसलिए ज़रूरी है कि तुम मौत आने से पहले यह मौत अपने ऊपर तारी कर लो जो कि नफ़्स की मौत है और हवस की मौत है तुम्हारे शैतान लईन की मौत है। यह ख़ास मौत उस मौत के इलावा है जिसे आम बोलचाल में मौत कहते हैं आम मौत है यानी नफ़्स को मार देना एक ख़ास मौत है जो नेकों के लिए बहुत बड़ी नेमत है।

ऐ क़ौम मेरे कहे को क़बूल कर लो क्यूँकि मैं तुमको ख़ुदा के रास्ते की तरफ़ बुला रहा हूँ, उसकी इताअत की दावत दे रहा हूँ मैं तुमको अपनी ज़ात की तरफ़ नहीं बुला रहा हूँ। मुनाफ़िक़ लोगों को अल्लाह तआला की तरफ़ नहीं बल्कि अपनी ज़ात की तरफ़ बुलाता है वह दुनिया का लालची है।

ऐ जाहिल तू बुज़ुर्गों की नसीहत से कान में रूई डाल लेता है क्यूँकि तौहीद के घर में ठहरने से तुझे शर्म आती है हाँ मआज़ अल्लाह तू बुतख़ाना में बैठना चाहता है ताकि तू बुत पर अपनी ज़मीर की आज़ादी को भेंट चढ़ा दे मगर यह तेरे लिए हलाकत का सामान है। इसलिए मेरी हमदर्दाना नसीहत यह है कि तू बुज़ुर्गों की सुहबत इख़्तियार कर, अक़्लमन्द पीर के नक़्शेक़दम पर चल ख़बीस नफ़्स के फंदे से अपने गले को छुड़ा ले। कामिल मुर्शिदों का दामन मज़बूती से थाम ले।

हाँ अगर तुझमें कमाल पैदा हो जाए तो उनसे अलग अपनी एक मुस्तक़िल शान हासिल कर सकता है ताकि दूसरे दिलों के अन्धेरे में अपनी ताबनाकी (रोशनी) से उजाला पैदा करे तो तू इस क़ाबिल बन जा कि दूसरों के क़ल्ब और रूह का भी इलाज कर दे।

अगर ज़ुहद व तक़वा की तारीफ़ें सिर्फ़ ज़बान पर हों और दिल गुनाहों में मुबतला हो तो ऐसी सूरत में इन्सान ज़ाहिरी मुसलमान है मगर बातिन में काफ़िर है? ज़ाहिर में मुवह्हिद

(अल्लाह को एक जानने वाला) है मगर बातिन में मुशरिक। मोमिन बातिन की तामीर से शुरूआत करता है तो फिर ज़ाहिर की तामीर करता है यानी पहले वह दिल से इबादत करता है फिर उसकी ज़ाहिरी इबादत या नेकी ज़ाहिर होती है जैसे कोई होशयार मुहन्दिस (बमअनी नक़्शा या बिल्डिंग बनाने वाला) घर की तामीर उम्दगी से करता है तो फिर दरवाज़ा भी अच्छा बनाता है।
तम्बीह : इस वाज़ की तफ़सील किसी अच्छे आलिमे दीन से इत्मिनान के साथ समझ लीजिए यहाँ हिन्दी में समझाना दुश्वार है।

सरकारे ग़ौसे आज़म की तक़रीर

बमक़ाम मदरसए बग़दाद

13 रजबुल मुरज्जब हिजरी 545 बरोज़ सहशम्बा

जनाबे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इस्लाम की एक ख़ूबी यह है कि वह उन चीज़ों को छोड़ना सिखाता है जो बेमक़सद और बेमअना हैं --- जिस शख़्स ने अपने अच्छे इस्लाम का सुबूत दिया वह मक़सद वाला काम करता है और ग़ैर मक़सद वाले कामों से दूर होता है क्यूँकि जिन कामों का कोई उसूली मक़सद न हो वह बेकारों और लालचियों के कारोबार हैं। वह शख़्स मौला तआ़ला की ख़ुशी से महरूम है जो ऐसे काम नहीं करता जिनका हुक्म दिया गया है और वह काम करता है जिनका हुक्म नहीं है। यह यक़ीनन महरूमी है बल्कि यह तो मौत है और एक क़िस्म की अपने रब के दर से दूरी है। दुनिया के कामों में मसरूफ़ियत के लिए नियत का ठीक होना शर्त है वर्ना तबाही है, पहले तो तुम दिल की सफ़ाई का काम करो क्यूँकि यह तो फ़र्ज़ है फिर कहीं मअरिफ़त की तरफ़ जाना, अगर तुम जड़ ही खोदो तो भला डालियों से क्या मिलेगा? दिल तो नापाक हो और बदन पाक हो तो क्या फ़ायदा? बदन भी उसी वक़्त पाक होगा जबकि तुम क़ुर्आन व सुन्नत पर अमल करोगे, दिल महफ़ूज़ है तो बदन भी महफ़ूज़ रहेगा।

बर्तन में जो होता है वही निकलता है, दिल में जो तुम्हारे होगा वही बदन से जारी होगा। होशयार! यह अमल उसका नहीं जो मौत का यक़ीन रखता है, यह अमल उसका नहीं जो अल्लाह तआला से मुलाक़ात करने पर ईमान रखता है और क़ियामत के दिन से डरता है। सही क़ल्ब तो वह है जिसके अन्दर तौहीद व तवक्कुल (अल्लाह तआला पर भरोसा) व यक़ीन व तौफ़ीक़ व इल्म व ईमान व क़ुर्बे इलाही की शराब हो और सारी मख़लूक़ से अपने आपको आजिज़ व ज़लील व फ़क़ीर समझे। इसके बावुजूद एक छोटे बच्चे के मुक़ाबिल भी ग़ुरूर न करे। जब कुफ़्फ़ार व मुनाफ़िक़ीन और ख़ुदा के नाफ़रमानों से मुक़ाबला हो तो शेर की तरह डट जाए मगर रज़ाए इलाही के सामने कटे हुए गोश्त की तरह गिर जाए। नेक और परहेज़गार लोगों के सामने अपने को कमतर और ज़लील समझे। ऐसे ही लोगों की तारीफ़ में अल्लाह तआला फ़रमाता है :- اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ तर्जमा : काफ़िरों के मुक़ाबले में सख़्त आपस में रहमदिल (पारा 26 रुकू 12)

मगर अफ़सोस है तुझ पर ऐ बिदअती ख़ुदा के सिवा किसकी मजाल है कि अपने आपको ख़ुदा और सारे जहान का रब कहे। हमारा रब बात करता है, वह गूंगा नहीं है, उसने मूसा से बातें की थीं। وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا (तर्जमा : और बेशक अल्लाह ने मूसा से गुफ़्तगू की) उसकी बात सुनी जाती है और समझी जाती है। उसने हज़रते मूसा से कहा था يَامُوْسٰى اِنِّىْٓ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ (तर्जमा : ऐ मूसा मैं अल्लाह हूँ सारे जहान का पालने वाला) यानी अल्लाह ने यह बतला दिया कि यह न समझो कि मैं कोई फ़िरिश्ता हूँ या जिन्न हूँ या आदमी हूँ नहीं नहीं मैं सारे जहान का मालिक हूँ गोया अल्लाह तआला ने फ़िरऔन को झुटलाया जिसने कहा था اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى (तर्जमा : मैं तुम्हारा सबसे बड़ा रब हूँ) मेरे सिवा कोई ख़ुदा नहीं। ------ इसलिए ख़ुदा ने मूसा को बता दिया कि मैं ख़ुदा हूँ फ़िरऔन हरगिज़ ख़ुदा नहीं है, न ही कोई और ख़ुदा है।

---- हज़रते मूसा अल्लाह तआला की यह सुन रहे थे और उनको बड़ी परेशानी थी क्यूँकि उस वक़्त अन्धेरी रात थी फ़िक्रों का हुजूम था, एक तरफ़ हामिला बीवी बच्चे की पैदाइश के दर्द में मुब्तला है मगर उस तारीकी में ऐ नूर ज़ाहिर हुआ जो अल्लाह तआला ने ज़ाहिर फ़रमााया था। उन्होंने अपनी शरीके हयात यानी बीवी को सामान समैत वहीं ठहरा दिया। यह कहते हुए कि اُمْكُثُوْا اِنِّی اٰنَسْتُ نَارًا (तर्जमा : ज़रा ठहरो मुझे आग नज़र आ रही है) मुझे एक रोशनी दिखाई दे रही है वह रोशनी जो मेरे दिल में मेरी रूह में मेरी रूह की गहराई में असर कर रही है, मेरे अन्दर हिदायत की चमक पैदा कर रही है जिसकी वजह से मैं सारी दुनिया से मुस्तग़नी (लापरवाह होने वाला) हो रहा हूँ। यह मेरे लिए विलायत व ख़िलाफ़त का पैग़ाम है इसमें मेरे लिए असली ज़िन्दगी है जिसने मेरी फ़रई ज़िन्दगी (यानी दुनियावी ज़िन्दगी) को रुख़सत कर दिया है, उसने मुझे वह हुक्म दिया जिसने मुझे महकूमी से बेपरवाह कर दिया, अब ख़ौफ़ मेरे दिल से रुख़सत हो रहा है, अब यही ख़ौफ़ मेरे दुश्मन (फ़िरऔन) के दिल में घर कर लेगा। हज़रते मूसा ने यह कहा और अपनी बीवी को रब की हिफ़ाज़त में दे कर आगे बढ़ गए, यक़ीनन इसका नतीजा यह हुआ कि रब हीं ने उनकी हिफ़ाज़त का ज़िम्मा लिया। इसी तरह मोमिन जब अल्लाह के क़रीब होना चाहता है और ख़ुदा उसको अपने क़रीब आने की दावत देता है तो वह चौकन्ना हो कर चारों तरफ़ देखने लगता है उसकी ज़ाहिरी नज़रों में ऐसा दिखाई देता है कि हर सम्त बन्द है बस एक सम्त खुली है जो उसके मौला तआला की है। वह मोमिन बन्दा अपने ज़ाहिरी तअल्लुक़ात की शरीके ज़िन्दगी से मुख़ातब होकर कहता है اِنِّی اٰنَسْتُ نَارًا (तर्जमा : देखो वह मुझे रोशनी नज़र आ रही है) अब मैं उधर जा रहा हूँ तुम्हारा ख़ुदा हाफ़िज़ अगर है क़िसमत में लौटना तो लौट ही आऊँगा वरना तुम इधर और हम उधर। इस तरह वह दुनिया व माफ़िहा यानी अल्लाह के सिवा जो कुछ दुनिया

में है उसको रुख़सत कर देता है, मसनूआत (बनाई हुई चीज़ों) को छोड़ कर वह सानेअ (यानी बनाने वाले) के दरे फ़ैज़ की तरफ़ लपक जाता है। अब जब वह मिल जाता है तो सब कुछ मिल जाता है। बीवी भी बच्चे भी माल व असबाब भी सब महफ़ूज़ हो जाते हैं। अहवाल की बातें दूर वालों से छुपाई जाती हैं नज़दीक वालों से नहीं छुपाई जाती हैं, दोस्तों से नहीं दुश्मनों से छुपाई जाती है, ख़ास लोगों से नहीं आम लोगों से छुपाई जाती है। यह दिल तो वह है कि जब इसके अन्दर सेहत व सफ़ाई पैदा की जाती है तो चारों तरफ़ से अल्लाह तआला ही की बातें उसके कानों में आने लगती हैं, हर नबी हर वली हर सिद्दीक़ की आवाज़ें उसे सुनाई देने लगती हैं, उस वक़्त वह अल्लाह तआला से क़रीब हो जाता है उस बन्दे के हक़ में अल्लाह तआला की नज़दीकी ज़िन्दगी है अल्लाह तआला से दूरी मौत है, मुनाजात में उस मोमिन बन्दे को सुकून मिलता है और अल्लाह तआला की याद में उस मोमिन बन्दे को ख़ुशी हासिल होती है, दुनिया उसके हाथ से निकल जाए उसकी बला से भूक प्यास और दुनिया की सख़्तियाँ अपनी डरावनी शक्ल उसके आगे पेश करें वह ख़ौफ़ज़दा नहीं होता है वह मुरीद (मुराद को पहुँचने वाला) है उसकी ख़ुशी की पूंजी फ़रमाबरदारी है वह आरिफ़ है और उस मोमिन बन्दे की मुराद उसके क़रीब है यानी अल्लाह तआला की ज़ात उससे क़रीब है। एक मोमिन बन्दे को इससे बढ़कर और क्या चाहिए।

मगर तू ऐ बनावटी शैख़ क्या ये नेमत तुझे हासिल है क्या दिन भर रोज़ा रख लेने रात भर नमाज़ें पढ़ लेने सूफ़ियों का लिबास पहन लेने से तुझे यह दर्जा हासिल होगा? यह दर्जा तुझे कहाँ से हासिल होगा जबकि तूने अपने नफ़्स व हवस ही को नहीं ठुकराया अपनी तबीयत और आदत को तूने लगाम नहीं दी।

जहालत व मख़लूक़ की सोहबत ही में रहा, नहीं यह नेमत तेरे लिए नहीं है लेकिन अगर लेना है तो तौबा कर ले, ख़ुलूस व सिदक़ को दावत दे तुझे भी रुतबा मिल जाएगा,

क़ुर्ब व विसाल की दौलत से तू भी मालामाल हो जाएगा यानी अल्लाह तआला की नज़दीकी तुझे हासिल होगी, हिम्मत बलन्द कर ले बलन्दी तेरा इन्तेज़ार कर रही है, इस्लाम पैदा कर ले सलामती तेरी आग़ोश में है, तू अल्लाह से राज़ी हो जा वह भी तुझसे राज़ी हो जाएगा, काम शुरू करना बस तेरा काम है उस काम को पूरा कर देना अल्लाह तआला का काम है।

ऐ अल्लाह! तू दुनिया व आख़िरत में हमारा कारसाज़ हो जा, हम को अपनी मख़लूक़ के हाथ में न दे, अपने हाथ में रख ले, ख़ुद हमको हमारे हाथ से बचा।

नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है अल्लाह तआला जिब्रील अलैहिस्सलाम से फ़रमाता है फ़लाँ आदमी को आराम से सुला दो फ़लाँ शख़्स को उठा दो किसको? उसको जिसने महब्बत का दावा किया है अब मेरा उससे मुक़ाबला है मैं उसको आज़माऊँगा उसको चैन नहीं लेने दूंगा। सुला दो उसको जिसने मेरी महब्बत का सुबूत दे दिया उसने पूरी मेहनत उठाई अब उसके दिल में मेरे सिवा किसी का वुजूद नहीं उसकी दोस्ती मुझसे मुत्तहिद (मिल गई है) हो गई वह अपनी वफ़ादारी में पक्का निकला अब वह मेरे घर में मेहमान है मेरा काम है उसकी ख़ातिर करना, मेहमान को कोई तकलीफ़ नहीं दी जाती है वह मेरी मेहरबानी के गहवारे में सोएगा, मेरे फ़ज़्ल के दसतरख़्वान पर से नमतें खाएगा मेरे उन्स (महब्बत) के क़रीब होगा, ग़ैर की नज़रों से उसको छुपाया जाएगा वह सच्चा महबूब जिसने महब्बत को सच कर दिखाया उसकी तकलीफ़ दूर होगी।

दुश्मन की आवाज़ से मुझे नफ़रत है दोस्त की आवाज़ मेरे लिए नग़मए शीरीं है कौन है यह दोस्त जिसने दिल को साफ़ कर लिया अल्लाह के सिवा अपने दिल से हर एक को आज़ाद कर दिया यानी सिर्फ़ अल्लाह का होकर रहा और दुनिया से आज़ाद हो गया। उसी से तौहीद व तवक्कुल व मअरिफ़त में कमाल पैदा होता है और वही दोस्त हो जाता है

उसी को शिफ़ा हासिल होती है हर मर्ज़ से। कोई शख़्स जो दुनिया के किसी बादशाह का दोस्त बन गया तो क्या क्या तकलीफ़ें उसके मिलने के लिए उठाता है। उसके लिए घर छोड़ कर निकल जाएगा ताकि उसके शहर को पहुँचे, दिन को दिन रात को रात नहीं समझेगा और चलता ही रहेगा यहाँ तक कि उसके घर पहुँच जाएगा। उसके बग़ैर उसे खाना पीना अच्छा न लगे। इधर बादशाह को भी उसके हाल से ख़बर मिलती है कि फ़लाँ शख़्स दूर से यहाँ आ रहा है तो वह क्या करता है? अपने ख़ादिमों को उसके इस्तिक़्बाल के लिए भेजता है, ख़ुशआमदीद कहते हुए उसे महल में लाया जाता है उस शख़्स को बादशाह बैठने का हुक्म देता है फिर बादशाह उससे मीठी मीठी बातें करता है मिज़ाज पूछता है, बादशाह हसीन व जमील लौंडियाँ उसके निकाह में देता है मुल्क का एक हिस्सा इनाम में देता है। अब क्या उसका ख़ौफ़ या थकान बाक़ी रहेगी, क्या अपने वतन को लौटने की धुन रहेगी ऐसे नेमत वाले की जुदाई वह शख़्स कैसे चाहेगा। उस बादशाह के पास तो वह शख़्स अब मकीन व अमीन का रुतबा हासिल कर चुका है, वैसे ही वह तुम्हारा दिल है जो आशिक़ का रुतबा हासिल कर चुका है और ख़ुदा को तलब करते हुए आगे बढ़ रहा है। जब वह बन्दा अल्लाह तआला से विसाल हासिल कर लेता है तो उस बन्दे को इतना मिल जाता है कि अब उसे अपने देश में वापस लौटने की कोई तमन्ना और फ़िक्र नहीं रहती। ------

आशिक़ का इस रुतबे तक पहुँचना फ़र्ज़ की अदायगी के बग़ैर मुमकिन नहीं न हराम से परहेज़ के बिना मुमकिन है बल्कि आशिक़ के लिए तो उन मुबाहात को भी तर्क करना होगा जो हवा व हवस के दाएरे में हैं और अपने वुजूद से भी दस्तबरदार होना पड़ेगा। गर्ज़ यह कि ज़ुहद व तक़वा इख़्तियार करना होगा, अल्लाह के सिवा सब कुछ तर्क करना होगा, नफ़्स की मुख़ालफ़त करनी होगी शैतान से मुक़ाबला कर के इस इम्तेहान में कामयाब होना होगा और मख़्लूक़ की महब्बत से दिल को

ख़ाली करना होगा। उस दर्जे पर पहुँच जाना होगा जहाँ अच्छाई और बुराई एक हो जायें यानी तुम्हारे साथ कोई अच्छाई करे या बुराई मगर तुम्हें कोई ग़म और फ़िक्र बिल्कुल न हो। मख़लूक़ के मना और अता एक हो जायें सोना और पत्थर एक ही नज़र से देखा जाए जिसका दिल सही हो गया उसके लिए हीरा और कंकर एक ही हैं। दुनिया की ख़ुशनसीबी और बदनसीबी उसके पास एक ही लाइन पर हैं जिसको यह कमाल हासिल हो गया उसका दुश्मन ज़ेर हो गया दुनिया और दुनिया वाले उसकी नज़र में हेच हो गए फिर आख़िरत और आख़िरत वाले उस आशिक़ की नज़रों में अच्छा लगने लगें मगर उसके बाद तो वह दर्जा आता है कि आख़िरत भी उसकी नज़र में हेच हो जाती है। उसके दिल में सिर्फ़ अल्लाह ही अल्लाह रह जाता है। इस तरह वह मख़लूक़ की सफ़ों को चीरता हुआ अपने मौला तक पहुँच जाता है और ये सफ़ें उसे रास्ता भी दे देती हैं, वह उसकी सिद्क़ की आग और बातिन की हैबत से भाग जाते हैं जिसके अन्दर यह बात जम गई तो फिर कोई उसकी तरक़्क़ी को रोक नहीं सकता उसका झंडा नीचा नहीं हो सकता उसकी फ़ौज शिकस्त नहीं खा सकती।

वह आशिक़ एक ऐसा परिन्दा है जो हमेशा चहचहाता रहेगा वह आशिक़ एक शमशीर का मालिक है जो कुन्द नहीं होगी, उसके इख़्लास के क़दम थकने का नाम नहीं लेते, उसका मक़सद अटल है, उसके महबूब यानी अल्लाह तआ़ला के दरवाज़े पर कोई उसको कोई रोकने वाला नहीं, वहाँ कोई रुकावट उस आशिक़ के लिए नहीं दरवाज़े ख़ुद ब ख़ुद उस आशिक़ के लिए खुल जाते हैं। इस तरह अल्लाह तआ़ला और उस आशिक़ के दरमियान कोई चीज़ आड़ नहीं बन सकती है न बनेगी। अल्लाह तआ़ला उसको अपनी महब्बत की गोद में सुलाएगा और वहीं उसको आराम मिलेगा। वह बन्दा अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व करम का मेहमान है, ख़ुदा के उस बन्दे के आराम के लिए खाने पीने की वह नेमतें हाज़िर हैं कि

لَاعَيْنٌ رَأَتْ وَلَا اُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلٰى قَلْبِ بَشَرٍ

तर्जमा : जिन नेमतों को न किसी आँख ने देखा न किसी कान ने सुना न उनका तसव्वुर किसी इन्सानी दिल पर आया।

ऐसा बन्दा फिर मख़लूक़ की तरफ़ लौटेगा तो अल्लाह तआला के बन्दों को सीधा रास्ता बताने की ग़रज़ से ताकि दूसरे को भी उस दर तक ले आ सके और उस दरबार का क़ासिद बन कर उनकी रहनुमाई का फ़र्ज़ अन्जाम दे।

इस तरह आलमे मलकूत यानी फ़िरिश्तों का आलम में ख़ुदा के उस ख़ास बन्दे का डंका बज जाता है। उसके दिल की हुकूमत के साए में सारा जहान आ जाता है मगर ऐ बनावटी तू विलायत की झूटी शेख़ी बघार रहा है अभी तो तेरे दिल पर नफ़्स छाया हुआ है मख़लूक़ छाई हुई है दुनिया का तुझ पर क़ब्ज़ा है और तुझे अल्लाह की याद से ज़्या हैं दुनिया की फ़िक्रें तुझे घेरे है। अभी तू उन बुज़ुर्गों की सफ़ में नहीं आ सकता, अगर वाक़ई तेरा दिल उस रुत्बे पर आना चाहता है तो आ मगर पहले दिल को पाक व साफ़ कर ले। अल्लाह के सिवा सब को अपने दिल व दिमाग़ से निकाल दे रब के हुक्म के सामने अपनी गर्दन झुका दे तक़दीरे इलाही के आगे हथियार रख दे उसके बाद आ जा अब तू मुझसे मुँह लगाने के क़ाबिल है तुझे मालूम हो जाएगा कि वहाँ क्या बात है जब तू ऐसा करेगा तो तेरे मन की मुराद मिल जाएगी इससे पहले की तेरी सब बातें बकवास हैं।

मगर अफ़सोस तेरी तो यह हालत है कि ज़रा ज़रा सी बातें तुझे नराज़ कर देती हैं तू आपे से बाहर हो जाता है तुझको अपने आप पर क़ाबू नहीं रहता। एक लुक़मा तेरा कम हो जाए एक पैसा तेरा गुम हो जाए तेरी झूटी इज़्ज़त में ज़रा सा धब्बा आ जाए तो तेरे होश ठिकाने नहीं रहते, गुस्से से तेरे मुँह में झाग आने लगते हैं कभी बीवी पर हाथ चलाने लगता है कभी बेटे पर, कभी तू मज़हब को बुरा कहने लगता

है (अल्लाह की पनाह) तो कभी बानीए मज़हब पर तोहमत लगाने लगता है --- अगर तुझे होश होता और तेरे हवास दुरुस्त होते तो क्या ऐसे पागलपन की हरकतें करता नहीं हरगिज़ नहीं बल्कि तू तो अल्लाह तआ़ला के आगे अपने को ग़ुमसुम पाता अल्लाह तआ़ला के कामों को अपने हक़ में नेमत समझता कोई झगड़ा न करता। बजाए मोमिन होने के काफ़िर न बनो ताकि शुक्रगुज़ार हो नाराज़ होने की जगह अल्लाह तआ़ला के हुक्म पर राज़ी हो, और अल्लाह तआ़ला की बारगाह में तेरे लबों आह व .फ़ुग़ाँ की ख़ामोशी की मोहर होनी चाहिए तुझे तो कहा गया है कि اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ (तर्जमा : क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं है) ऐ जल्दबाज़ सब्र कर तुझे वह मिलेगा कि तू हैरान रह जाएगा तू क्या जानता है अल्लाह को अगर जानता होता तो यूँ गिले शिकवे न करता ---- अगर अल्लाह तआ़ला को जानता होता तो उसके सामने तू गूंगा बहरा बन जाता --- तड़प तड़प के मांगना तो अलग बात है मांगता ही नहीं और मांगने की तुझे .ज़रुरत क्या है तुझे तो बस सब्र करना चाहिए और होश में रहना चाहिए क्यूँकि अल्लाह तआ़ला का कोई काम हिकमत और मसलेहत से ख़ाली नहीं वह तो तुझे तपा तपा कर देख रहा है कि तू खरा है भी या नहीं वह देख रहा है कि तुझे उसके वुजूद का उसकी नज़रों का यक़ीन है भी या नहीं तुझे मालूम नहीं कि मज़दूर अगर बादशाह के घर में काम कर रहा है तो उसका काम करके मज़दूरी मांगना बड़ी बेवक़ूफ़ी है बल्कि अगर ऐसा करेगा तो हो सकता है कि महल से बाहर कर दिया जाए क्यूंकि उसे मांगने की ज़रूरत ही क्या है बादशाह को ख़ुद ही ख़्याल है। मोमिन का ईमान जभी कामिल होता है जबकि मोमिन के दिल में लालच की आग बुझ जाए मख़लूक़ से ख़ौफ़ और उम्मीद ख़त्म हो जाए उसके लिए हमेशा की फ़िक्र और उसूल व .फ़ुरअ पर नज़र रखने की ज़रूरत है।

अम्बियाए किराम और नेक लोगों के हालात मालूम करने से मालूम होगा कि ख़ुदाए तआला ने किस तरह अपने ख़ास बन्दों को दुश्मनों के चंगुल से छुटकारा दिया। किस तरह ग़ैबी मदद फ़रमा कर अपने प्यारों की ज़िन्दगी को संवार दिया सही ग़ौर व फ़िक्र से तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) भी सही होता है और दुनिया दिल से निकल जाती है। जिन्न व इन्सान और फ़िरिश्ते सब भूल जाते हैं सिर्फ़ ख़ुदा की याद दिल में आ जाती है और क़ल्ब ऐसा बन जाता है गोया कि उसके सिवा कोई मख़लूक़ ही नहीं गोया सारी मख़लूक़ में से वही इताअत पर मामूर है उसी पर अल्लाह तआला के इनामात हुए हैं और सारी तकलीफ़ों का बोझ उसी की गर्दन पर है। मुख़्तलिफ़ क़िस्म की तकलीफ़ों और पहाड़ों जैसी मुसीबतों को ख़ुदावन्द क़ुद्दूस का पैग़ाम समझ कर वह इन्सान उठा लेता है। इस तरह अपनी सच्ची बन्दगी का सुबूत देता है मख़लूक़ का बार उठा लेता है ख़ुदा उसका बार उठा लेता है। वह इन्सान मख़लूक़ का तबीब बनता है ख़ुदाए तआला उस इन्सान का तबीब बनता है। वह इन्सान मख़लूक़ को ख़ुदा के दर तक पहुँचाने के लिए रहबर बन जाता है। वह इन्सान ऐसा सूरज बन जाता है जिससे उस राह के सब सितारे रौशनी हासिल करते हैं। वह इन्सान मख़लूक़ का आबो दाना हो जाता है यानी इन्सान अपनी ज़रूरियात उस बन्दए ख़ुदा से हासिल करते हैं और अल्लाह तआला के उस ख़ास बन्दे से अलग नहीं होते उस ख़ास बन्दे की सारी तवज्जो मख़लूक़ के फ़ायदे पर ख़र्च होती है। वह ख़ास बन्दा अपनी ज़ात को भूला देता है गोया उसकी ज़ात ही नहीं। इस राह में वह खाना पीना भूल जाता है यहाँ तक कि वह अपने नफ़्स को भूल जाता है उसकी सारी कोशिश मख़लूक़ को नफ़ा पहुँचाने के लिए होती है उसने अपनी ज़ात को क़ज़ाए इलाही के हाथों सौंप दिया और अपनी ज़ात से अलग थलग हो गया।

यह है तारीफ़ उस क़ाएद (रहनुमा) की जो दरे हक़ तक मख़लूक़ को ले आने का फ़र्ज़ अन्जाम देता है मगर तू ऐ

लालची अल्लाह से नावाक़िफ़ उसके रसूलों से नावाक़िफ़, उसके वलियों के मरतबों को भूला हुआ मख़लूक़ की हक़ीक़त से बेख़बर और इस पर नेक होने का दावेदार है। हालांकि दिल में दुनिया भर की लालच का अम्बार लगा हुआ है तेरा यह ज़ुहद (नेकी) लंगड़ा है उसके पांव नहीं है। तुझे शौक़ तो सारी दुनिया का है या मख़लूक़ का है तुझे रब से मिलने का शौक़ ही कब है। थोड़ी देर मेरे पास अच्छे ख़्याल व अदब के साथ ठहर तो सही तो मैं बतला दूँ तुझे कि रब का रास्ता कौन सा है। उतार फेंक यह शेख़ी का लिबास। वह लिबास पहन जिस में शान न नज़र आए। ज़लील बन तो इज़्ज़त मिलेगी नीचे उतर तो तू ऊपर किया जाएगा जिस हालत में कि तू है वह तो सरापा हवस है। इस तरह तो अल्लाह तआला की नज़र ही नहीं पड़ती। यह बलन्द रुतबा सिर्फ़ दुनिया में डूबने से नहीं मिल सकता इसीलिए तो रूहानी आमाल की ज़रूरत है फिर कहीं जिस्म के काम की ज़रूरत पड़ती है।

हमारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं ज़ुहद यहाँ है तक़वा यहाँ है इख़लास यहाँ है। (यह अपने सीने की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया)

जो कामयाबी चाहता है उसको मशाइख़ के क़दमों तले ख़ाक बनना चाहिए मगर कौन से मशाइख़ जो तारिके दुनिया और मख़लूक़ को छोड़ने वाला हो जिन्होंने अर्श से लेकर तहतुस्सरा तक सारी कायनात को अलविदा कह दिया हो कौन हैं जिन्होंने अपनी ज़ात और अपने वुजूद को भी अलविदा कह दिया हो। अब हर हाल में उनका वुजूद अल्लाह तआला के साथ है जो शख़्स रब को तलब करता है और जो अपनी ज़ात का भी तालिब है वह दो टकराने वाली चीज़ों को तलब करता है जो सरासर बेवक़ूफ़ी है।

बनावटी ज़ाहिद अकसर व बेशतर तो वह हैं जो मख़लूक़ के पुजारी हैं उन्हें मुशरिक कहना ठीक है। असबाब पर भरोसा करना मख़लूक़ पर सारा एतिमाद रखना क्या है? शिर्क ही तो

है यही तो ख़ुदा के ग़ज़ब का निशाना बनाता है मुसब्बेबुल असबाब यानी अल्लाह तआ़ला पर तुम्हारी नज़र नहीं जो इन सारे असबाब की चोटी अपने क़ब्ज़े में रखता है और उसका ख़ालिक़ है जो किताब व सुन्नत को मानते हैं उनका एतिक़ाद तो यह है कि तलवार भी ख़ुद से काटने वाली नहीं है आग भी ख़ुद से जलाने वाली नहीं बल्कि ख़ुदा ने यह सिफ़त उसके अन्दर रखी है खाना पेट नहीं भरता बल्कि ख़ुदा के हुक्म से पेट भरता है पानी प्यास नहीं बुझाता बल्कि ख़ुदा का हुक्म तुम्हारी प्यास बुझाता है। इस तरह सारे असबाब हैं ज़ात व हक़ीक़त सबकी अलग अलग है मगर असली तसर्रुफ़ सबके अन्दर ख़ुदाए तआ़ला का है यह चीज़ें वसीले हैं जो अल्लाह तआ़ला के क़ब्ज़े में हैं। हक़ीक़त में तसर्रुफ़ फ़रमाने वाला तो सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही है फिर तुम्हारा इधर उधर देखना बेकार है किसी दूसरे को हाजतरवा समझना या किसी और को मुल्ज़िम ठहराना बातिल है यानी हर काम अल्लाह तआ़ला ही की तरफ़ से है। तौहीद इसी का नाम है कि हर चीज़ में उसी को मुख़्तार माना जाए। यह इतनी खुली बात है कि हर अक़्लमन्द इस बात से इत्तेफ़ाक़ किए हुए है। मसल मशहूर है अक़्लमन्द को इशारा काफ़ी है और बेवक़ूफ़ को लाठी से समझाने की ज़रूरत है।

बहरहाल इताअत करो कि इसी में इज़्ज़त है नाफ़रमानी छोड़ो कि इस में ज़िल्लत है नुसरत व मदद वही अल्लाह तआ़ला ही करता है, रुसवा व नामुराद वही करता है

وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط

तर्जमा : और (अल्लाह) जिसे चाहे इज़्ज़त दे और जिसे चाहे ज़िल्लत दे -- पारा 3 रुकू 11) --- वह .कुर्ब अता करता है तो इज़्ज़त होती है दूर करता है तो ज़िल्लत हो जाती है।

<u>नोट</u> : हुज़ूर ग़ौसे पाक की तालीमात और तक़रीरों को किसी अच्छे आलिम से समझ लें। हिन्दीं वालों को समझाना बड़ा मुश्किल है।

बदमज़हबों का रद्द

ऊपर यह बात बयान की जा चुकी है कि उस दौर में बिदतियों, ख़्वारिज (ख़ारजी लोग आजकल के वहाबी उन्हीं की नसल के हैं), राफ़ज़ियों और मुअतज़ला (दो गुमराह फ़िर्क़े के नाम) के फ़ितने एक साथ सर उभार चुके थे और इसके इलावा दूसरे बदमज़हब फ़िरके भी फ़ितना फैला रहे थे और ये बदमज़हब और गुमराहकुन फ़िरक़े भोले भाले मुसलमानों को अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से दूर करने की स्कीमें बना रहे थे। तो उस वक़्त हालात यह हो गए कि ग़लत अक़ीदा और गुमराही लोगों में बड़ी तेज़ी से फैल रही थी। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपनी बलन्द हिम्मत और ख़ुदादाद ताक़त से इन्तेहाई बेख़ौफ़ी व बेबाकी के साथ इन फ़ितनों का डट कर मुक़ाबला किया और तमाम फ़िरक़ों और फ़ितनों का डट कर रद्द फ़रमाया फ़ितनों व फ़ितना फैलाने वालों का सर कुचल दिया और अल्लाह तआ़ला के बन्दों को तौहीद व रिसालत का सच्चा रास्ता दिखाया और बुज़ुर्गाने दीन व औलियाए किराम का सच्चा अक़ीदतमन्द बनाया। ऐ मालिक बेनियाज़ हम क़ादिरी भिकारियों की जानिब से हमारे सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु क मज़ारे मुबारक को रहमत व नूर और जन्नत की ख़ुशबुओं से बिल्कुल भर दे। आमीन या रब्बल आ़लमीन बिजाहि सय्यिदिल मुरसलीन अ़लैहिस्सलातु वत्तस्लीम।

सरकारे ग़ौसे आज़म की नूरानी ज़िन्दगी पर तबसिरा

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बहुत बड़ी शान वाले अल्लाह के वली, बहुत बड़े रूहानी पेशवा, उलूमे नबवी के सच्चे वारिस, जलीलुल क़द्र आलिमे दीन होने के साथ साथ एक अज़ीमुश्शान दीनी मुबल्लिग़ (सच्ची तबलीग़ करने

वाले) और निडर क़ाएद (ठीक रास्ते पर चलाने वाले) भी थे। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु इन्तेहाई हक़गो (हक़ और सच कहने वाले) और हक़ पसन्द थे, जो बात कहनी होती बड़ी सफ़ाई व दिलेरी और बेख़ौफ़ी के साथ फ़रमा देते थे। बुरी बातों से लोगों को रोकना और अच्छी बातों को बड़े ही अच्छे तरीक़े से लोगों के दिल व दिमाग़ में बैठा देना सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ज़िन्दगी का एक बहुत बड़ा कारनामा था। हज़ारहा बदकार इन्सानों को सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तबलीग़ व हिदायत की वजह से दीनदारी तक़वा व परहेज़गारी की बहुत अच्छी दौलत हासिल हुई। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हर किसी को उसकी ग़लती पर सख़्ती के साथ भी रोकते थे ग़लती करने वाला इन्सान चाहे दुनिया का कितना ही बड़ा राजा महाराजा और इ़ज़्ज़त वाला क्यूँ न होता मगर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु किसी राजा महाराजा की बिल्कुल परवाह नहीं करते थे। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की पाकीज़ा ज़िन्दगी में ऐसी बेशुमार मिसालें पाई जाती हैं कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपनी आला तरीन रूहानी ताक़त व हिकमते अमली से काम लेकर उस दौर के बहुतेरे मग़रूर व ज़ालिम सरमायादारों की अकड़ी हुई गर्दनों को सीधी कर दिया।

तारीख़ गवाह है कि पाँचवीं सदी हिजरी का वह आख़िरी ज़माना था जिस में सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बग़दादे मुक़द्दस की सरज़मीन पर तशरीफ़ फ़रमा थे, अब्बासिया ख़ानदान के आख़िरी ख़लीफ़ा का दौर था जिसमें अवाम तो अवाम ख़वास का भी अख़लाक़ी व दीनी हालात रोज़-ब-रोज़ गिरते जा रहा था। एक तरफ़ दौलत की ज़्यादती और अख़लाक़ी कमज़ोरी और ऐशपरस्ती ने बहुत सी बुराईयों में मशग़ूल कर दिया था और दूसरी जानिब दीनी व रूहानी

बेसरोसामानी ने सीधे रास्ते से उन्हें हटा दिया था। ख़ास तौर पर दौलतमन्द लोग अपनी दौलत के नशे में चूर थे। कहीं बात बात पर दीनी मुनाज़रे होते तो कहीं .कुरआन को मख़लूक़ बता कर फ़ितना उठाया जाता था। शरीअत के अहकाम से लोग लापरवाह हो गए थे। तरीक़त मीरास की शक्ल में नाअहलों की जागीर हो चुकी थी। बिदअती और मोतज़ला (एक गुमराह फ़िरक़े का नाम) शिद्दत से सर उभार चुके थे, उसूलों को ताक़ पर रख दिया गया था। ऐसे परागन्दा माहौल में किसी कामिल इन्सान हिदायत के पैकर की शिद्दत से ज़रूरत महसूस की जा रही थी जो अपनी रूहानी ताक़तों के ज़रिए मख़लूक़ को गुमराही से बचा कर इस्लाम के रास्ते पर लाकर खड़ा करे और इसके लिए ख़ुदाए हक़ीम व दाना क़ादिर व तवाना ने हम सब के मर्कज़े अक़ीदत जीलानी ताजदार सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को मुन्तख़ब फ़रमाया और यह अहम तरीन ख़िदमत सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ही के सिपुर्द की गई। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इस बड़ी ख़िदमत को जिस ख़ूबी से अन्जाम दिया तारीख़ में ऐसी मिसाल नहीं मिलती।

सरकारे ग़ौसे आज़म के अख़लाक़ व आदात और ख़ूबियाँ

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का अख़लाक़ हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के ख़ुल्क़े अज़ीम का परतौ और सिराते मुस्तक़ीम का मजमूआ था। आप इतने जाह ओ जलाल, इज़्ज़त व मरतबा वाले और ज़्यादा इल्म वाले होने के बावुजूद बिला झिझक ग़रीबों के साथ बैठ जाते। फ़क़ीरों के साथ अज्ज़ व इन्किसारी के साथ पेश आते, बड़ों की इज़्ज़त करते छोटों पर नज़्रे इनायत फ़रमाते और किसी से मिलते तो पहले सलाम करते। मेहमानों और तलबा के साथ ख़न्दापेशानी से पेश आते और उनकी लग़ज़िशों को माफ़ फ़रमा दिया करते।

ख़लीफ़ए वक़्त या किसी दौलतमन्द शख़्स के यहाँ जाने की सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की आदते मुबारिका न थी। अमीर शख़्स की कभी ताज़ीम न फ़रमाते थे। ख़लीफ़ए वक़्त के आने की ख़बर सुनते तो फ़ौरन मकान के अन्दर चले जाते फिर बाहर तशरीफ़ लाते थे ताकि ख़लीफ़ए वक़्त की ताज़ीम को अपने इरादे से न उठना पड़े। जब ख़लीफ़ए वक़्त के पास आपको ख़त लिखने की ज़रूरत होती तो आप यूँ तहरीर फ़रमाया करते थे यह अ़ब्दुल क़ादिर का तुझसे इरशाद है और उसका इरशाद तुम पर जारी है। ख़लीफ़ए वक़्त उस ख़त को अदब व एहतिराम के साथ अपने सर और आँखों पर रखता था।

मुतकब्बिर, ज़ालिम, नाफ़रमान और मालदार के यहाँ हरगिज़ न रुकते और कभी भी बादशाहे वक़्त और वज़ीरों के यहाँ नहीं जाते। आपके ज़माने के रहने वालों में हुस्ने अख़लाक़ बख़्शिश व करम माफ़ी और दरगुज़र में कोई भी सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बराबर न था।

सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अल्लाह तबारक व तआ़ला के कामिल इताअत गुज़ार, नबीए करीम रह़मते आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मुतीअ व फ़रमाबरदार और तालीमाते इसलाम के हक़ीक़ी वफ़ादार थे इसलिए आपका हर अमल इसलाम के मुताबिक़ हुआ करता था।

अ़ल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी यह है कि अल्हुब्बो फ़िल्लाह वल बुग़्ज़ो फ़िल्लाह पर अमल किया जाए यानी इन्सान अगर किसी से महब्बत करे तो सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी के लिए और किसी से दुश्मनी करे तो सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी के लिए यह ख़ूबी कायनात में मुकम्मल तौर पर सय्यदुल अम्बिया महबूबे ख़ुदा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ज़ाते अनवर में पाई जाती हैं क्यूँकि सरकारे दो आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मुकम्मल नाइब हैं और अल्लाह

तआला ने अपने महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को रहमतुल्लिलआलमीन बनाया है क्यूँ कि अल्लाह तआला की हर मख़लूक़ से महब्बत व इनायत रहमत व नवाज़िश का सुलूक करना आपकी हयाते मुक़द्दसा के लिए बहुत ज़रूरी था। सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी ज़िन्दगी की रविश को उसी आफ़ताबे जमाल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रौशन किया था। यही वजह है कि आप अल्लाह के बन्दों के साथ महब्बत से पेश आते थे। अमीर ग़रीब हर इन्सान के दुख दर्द में मदद करना आपने अपने लिए ज़रूरी क़रार दे रखा था।

कोई शख़्स कितना ही सब्र करने वाला क्यूँ न हो लेकिन सिर्फ़ तक़रीरों या नसीहतों से अच्छे किरदार वाला नहीं बन सकता। यह तो पहली मन्ज़िल पर वालिदैन उस्ताद और पीर हुआ करते हैं जो इन्सान के अन्दर अपनी पाकीज़ा तरबियत अपने अमल का नमूना अपनी कोशिश और अक़्ल की ग़ौर व फ़िक्र से बेहतरीन ख़सलतों और अच्छी आदतों की रूह फूंक देते हैं जो इन्सानियत की मेराज है और जो इन्सान के लिए अच्छे मरतबे पर पहुँचने का सबब है।

वाक़ियात गवाह हैं कि जिन क़ौमों ने अपने अख़लाक़ व किरदार बिगाड़ लिए उनका अन्जाम बहुत ही बुरा हुआ और वह क़ौम बुरी तरह नेस्तो नाबूद कर दी गई। आज के मुसलमान ही को देख लीजिए ताजे शाही खोए हुए अभी एक सदी भी नहीं गुज़री है कि यह मुल्क की गिरी हुई क़ौम हो गई है। अच्छे अख़लाक़ वाले ही तरक़्क़ी व हुकूमत किया करते हैं।

क़ुर्आने करीम ने जगह जगह अख़लाक़ की तालीम दी है और बानीए इस्लाम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अख़लाक़े इन्सानी का वह नमूना थे जिसकी कोई मिसाल नहीं। अल्लाह तआला का फ़रमान है "बेशक अल्लाह के नज़दीक तुम में ज़्यादा बुज़ुर्ग और इज़्ज़त वाले वो लोग

हैं जो ज़्यादा मुत्तक़ी और नेक क़िरदार हैं" हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है कि क़ियामत में मीज़ान पर सबसे ज़्यादा वज़नी चीज़ इन्सान के अच्छे अख़लाक़ होंगे। और फ़रमाया सबसे अच्छे अख़लाक़ वाले हमारे आक़ा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अल्लाह के नज़दीक दो ख़सलतें ज़्यादा पसन्दीदा हैं सख़ावत और अच्छे अख़लाक़। किसी से मीठे तौर पर बात करना भी नेकी है।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं मुझे दो चीज़ें बुनयादी और पसन्दीदा नज़र आती हैं हुस्ने अख़लाक़ और भूकों को खाना खिलाना --- अगर मुझको सारी दुनिया की दौलत मिल जाए तो मैं उसे उन लोगों को खिला दूँ जो फ़ाक़े से हों और हर शख़्स से अच्छे अख़लाक़ से पेश आता रहूँ।

मेहरबानी और बख़्शिश

इन्सानियत की यह मेराज है यानी इन्सान को ऊँचे मरतबे पर पहुँचने का ज़रिया है कि आदमी अल्लाह के बन्दों को फ़ाइदा पहुँचाने की अपने दिल के अन्दर तड़प रखता हो। जिस इन्सान के दिल में रहम व करम का जज़बा न हो बूढ़ों, कमज़ोर लोगों और मुसीबतज़दा और ज़ुल्म के मारों को देखने के बाद जिसका दिल बेक़रार न हो जाए वह इन्सान कामिल नहीं होता। अल्लाह के रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का इरशाद है कि तुम ज़मीन वालों पर रह़म व करम से पेश आओ आसमान व ज़मीन का पैदा करने वाला तुम्हारे ऊपर रह़म व करम फ़रमाएगा।

करो मेहरबानी तुम अहले ज़मीन पर
ख़ुदा मेहरबाँ होगा अर्शे बरीं पर

रह़म व करम व क़ुर्बानी करी जाए और अल्लाह तआ़ला की ख़ुशी के लिए की जाए तो अल्लाह तआ़ला बहुत ख़ुश होता है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

की ज़ात में ग़रीबों बूढ़ों और कमज़ोरों के लिए रह़म व करम का ख़ास क़िस्म का जज़बा और तड़प पाई जाती थी और इससे आपकी रूह ख़ुश होती थी और इससे आपको एक लुत्फ़ मिलता था।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह जुबाई का बयान है कि सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अकसर ये फ़रमाया करते मैंने अपने सारे आमाल का तजज़िया किया यानी ग़ौर और फ़िक्र करके सारी नेकियों की छान बीन की तो इस नतीजे पर पहुँचा कि भूकों को खाना खिलाने और दुनिया के साथ अख़लाक़ से पेश आने से बढ़ कर कोई नेकी नहीं है न अमल। मेरे पास दुनिया भर के ख़ज़ाने होते तो मैं दुनिया के भूकों को खाना खिलाता रहता।

हज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद इब्ने ख़िज़्र हुसैनी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह से रिवायत है कि एक मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की नज़र एक परेशान हाल फ़क़ीर पर पड़ी। एक इन्सान को इस हालत में देखकर आपका दिल तड़प उठा और बिला ताख़ीर दरयाफ़्त किया क्या हाल है? फ़क़ीर ने दुखी दिल के साथ कहा मुझे दरया के उस पार जाना था लेकिन मेरे पास पैसे नहीं थे और मल्लाह ने मेरी मजबूरी जानने के बावुजूद मुझे कश्ती पर बैठाने से इन्कार कर दिया जिससे मेरा दिल टूट गया है कि मेरे पास भी कुछ होता तो यह महरूमी क्यूँ होती।

इत्तेफ़ाक़ से सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास भी उस वक़्त कुछ न था मगर उसकी परेशानी आपसे बर्दाश्त न हो सकी और अल्लाह तआ़ला की बारगाह में दुआ के लिए हाथ उठाए। अचानक एक शख़्स ने आकर आपकी ख़िदमत में अशर्फ़ियों से भरी हुई एक थैली पेश की। आप बहुत ख़ुश हुए और फ़ौरन उस फ़क़ीर को बुला कर फ़रमाया कि लो यह थैली ले जाकर मल्लाह को दे दो और कह देना कि अब कभी भी किसी फ़क़ीर को कश्ती में बैठाने से इन्कार मत करना।

क़ाज़ी उल .क़ुज़ात हज़रते अबू नस्र रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह बयान फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे गिरामी शैख़ अ़ब्दुल रज़्ज़ाक़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने मुझसे बयान फ़रमाया कि एक मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हज को तशरीफ़ ले गए। जब क़स्बए आजला के क़रीब पहुँचे तो आपने क़ियाम का इरादा ज़ाहिर फ़रमाया और ख़ादिम को हुक्म दिया कि इस क़स्बे में जाकर मालूम करो कि यहाँ सबसे ज़्यादा ग़रीब व परेशान कौन है। जब सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने सबसे ग़रीब मुसलमान का मकान मालूम करा लिया फिर आप उस ग़रीब के मकान पर तशरीफ़ ले गए। देखा कि एक बोसीदा मकान है और एक बड़े मियाँ और एक बुढ़िया और एक लड़की मौजूद हैं। इस्लामी तरीक़े के मुताबिक़ सबसे पहले सलाम करके उन बड़े मियाँ से उस टूटे हुए मकान में ठहरने की सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु इजाज़त ने तलब की और फिर उसी टूटे मकान में ठहरे। और जब मुसलमानों को यह मालूम हुआ कि पीरों के पीर बेसहारों के सहारे सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तो एक ग़रीब मुसलमान के गिरे पड़े मकान पर ठहरे हुए हैं फिर तो सूफ़ियों आलिमों पीरों और बड़े बड़े मालदारों और दूसरे अवाम की सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बारगाह में एक भीड़ लग गई और सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से अर्ज़ किया गया कि या तो आप हमारे यहाँ ठहरें या किसी दूसरी जगह ठहरें यहाँ तो आपको तकलीफ़ होगी मगर सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने किसी की बात न मानी और उसी ग़रीब मुसलमान के यहाँ ही ठहरे रहे। आख़िर में उसी ग़रीब के घर पर लोगों ने सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को नज़राने पेश करना शुरू कर दिए और आन की आन में सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बारगाह में माल और दौलत के ढेर लग गए। ख़ुसूसन वक़्त के पीरों और

उमूमन मुसलमानों को सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआला अ़न्हु के इस रह़मो करम के भरपूर अमल से सबक़ लेना चाहिए कि जब सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु इतनी अ़ज़ीम शख़्सियत के मालिक होते हुए एक परेशान हाल के यहाँ कि़याम फ़रमाने में कोई शर्म महसूस नहीं की और सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की अज़मत और शान को कोई नुक़सान नहीं हुआ तो फिर किसी और को यह ख्याल करने का क्या हक़ पहुँचता है कि वह शख़्स यह सोचे कि इज़्ज़त तो किसी मालदार के यहाँ या किसी अच्छी ही जगह पर ठहरने में है। बहरहाल ग़रीब नवाज़ी का यह बहुत बड़ा मुज़ाहरा है। हज़रते शैख़ अ़ब्दुल्लाह इब्ने शुऐब रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का बयान है कि सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआला अ़न्हु ग़रीबों कमज़ोरों और मिस्कीनों से बेपनाह महब्बत करते थे और अकसर फ़रमाते थे कि अमीरों से तो सभी महब्बत करते हैं बेचारे ग़रीबों का कौन हाल पूछने वाला होता है क्या मैं भी इन ग़रीबों से महब्बत न करूँ। बहुत सी रिवायतें गवाह हैं कि सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बेइन्तिहा ग़रीब परवर थे और सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दरबारे आलिया में बराबर तौर पर अमीरों और ग़रीबों की इज़्ज़त की जाती थी। इस बात में भी सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु सरकारे दोआलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के फ़रमाबरदार थे।

रह़म व करम

सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के रह़म व करम का दरिया हर वक़्त जारी रहता था। इत्तेफ़ाक़न कभी आपको ग़ुस्सा आ जाता और ज़बान पर कोई सख़्त बात आ जाती जिससे किसी का दिल टूट जाता तो आप परेशान हो जाते।

एक मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु वाज़ फ़रमा रहे थे कि अचानक एक चील आकर

मजलिसे मुबारक के ऊपर शोर मचाने लगी जिसकी वजह से लोगों के सुनने में ख़लल होने लगा तो सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को एक दम जलाल आ गया और ग़ुस्से से चील की तरफ़ देख कर आपने फ़रमाया कि ऐ हवा तू इस चील का सर उड़ा दे। सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इतना फ़रमाते ही चील का सर एक तरफ़ कट कर गिर पड़ा और धड़ दूसरी तरफ़ जा गिरा। फिर सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने वाज़ ख़त्म फ़रमाने के बाद मिम्बर शरीफ़ से नीचे तशरीफ़ लाए और चील के सर और धड़ को मिला कर बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम पढ़ा और अपना मुबारक हाथ उस मरी हुई चील पर फेर दिया तो फ़ौरन ही वह चील ज़िन्दा होकर उड़ गई।

इसी तरह शैख़ अबुल मुज़फ़्फ़र बयान फ़रमाते हैं कि एक मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपने मकान में तशरीफ़ रखते थे और कुछ लिख रहे थे कि अचानक छत से मिट्टी गिरी। तो सरकारे ग़ौसे आज़म ने उस मिट्टी को तीन बार झाड़ा लेकिन चौथी बार जब फिर मिट्टी गिरी तो आपने सर उठाया और छत पर एक जलाली निगाह डाली, देखा कि एक चुहिया मिट्टी गिरा रही है। सरकारे ग़ौसे आज़म की निगाह पड़ते ही वह चुहिया दो टुकड़े होकर ज़मीन पर आ गिरी। आपने लिखना छोड़ दिया और रोने लगे। शैख़ अबुल मुज़फ़्फ़र कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर यहाँ रोने की क्या वजह है? सरकारे ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया कि मुझे ख़याल आता है कि अगर किसी मुसलमान की तरफ़ से मुझे ज़र्रा भर नुक़सान पहुँचा तो कहीं उस मुसलमान की हालत भी इस चुहिया की तरह न हो जाए।

शैख़ अबुल क़ासिम रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाते हैं कि सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु एक मरतबा मदरसे में बैठे वुज़ू फ़रमा रहे थे कि उड़ती हुई एक चिड़िया ने आप पर बीट कर दी। आपने अपनी जलाली नज़रों

से जो उसकी तरफ़ देखा तो वह ज़मीन पर आ पड़ी और तड़प कर उसी वक़्त मर गई। वुज़ू से फ़ारिग़ होने के बाद आपने कपड़े उतार कर ख़ादिम को दिए और फ़रमाया इसे ले जाओ बाज़ार में बेच कर जो क़ीमत मिले वह फ़क़ीरों को तक़सीम कर दो मेरे उस काम का यही कफ़्फ़ारा है कि यह बेचारी मुफ़्त में मेरी निगाहे ग़ज़ब का शिकार हो गई।

सख़ावत और फ़य्याज़ी

सय्यिदे आलम मुख़्तारे कुल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से बढ़ कर फ़य्याज़ भला कायनात में और कौन पैदा हुआ है। अहले बैत की क़ुर्बानी और फ़य्याज़ी देख कर इन्सानियत को हातिम ताई की सख़ावत की दास्तान अपने दिलो दिमाग़ से भुलाने पर मजबूर होना पड़ा है।

ख़ुद अपने आप तो भूके रह जाते थे मगर दूसरों का पेट भर दिया करते थे। ऐसा भी हुआ कि दो दो महीने गुज़र गए और काशानए नुबुव्वत में चूल्हे से धुआँ नहीं उठ सका। घर का तो यह हाल मगर पैग़म्बराना शान यह है कि सुबह से शाम तक नुबुव्वत के हाथों के ज़रिए हज़रहा बकरियाँ तक़सीम होती हैं, मदीने की गलियों में दौलत बरस रही है।

प्यारे मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की जब यह शान है तो फिर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु के अन्दर ये ख़ूबी क्यूँकर न पैदा होती। चुनांचे आप भी बड़े मेहमान नवाज़ और बहुत बड़े सख़ी थे। आपकी बख़्शिश व अता की कोई इन्तेहा नहीं थी। करोड़ों रुपये आपने अपने हाथों से तक़सीम फ़रमा दिए। उमूमन मेहमानों के साथ खाना तनावुल फ़रमाते आपका दसतरख़्वान बहुत वसीअ था।

वैसे तो आप फ़राख़ी व तंगी हर हाल में दरयादिली से ख़र्च किया करते थे और बिना परवाह किए हुए राहे मौला में ख़र्च किया करते थे लेकिन अल्लाह के फ़ज़्ल से जब वह वक़्त आया कि आपकी ख़िदमत में लोगों की जानिब से नज़्र

व .फुतूहात की आमद शुरू हुई तो फिर तो अल्लाह की राह में ख़र्च का कोई शुमार ही नहीं। न जाने कितने रुपये नज़राने में रोज़ आते थे मगर अल्लाह रे आपकी फ़य्याज़ी और दरियादिली कि जो कुछ भी रुपये नज़राने में आते उनमें से ज़्यादातर रक़म उसी दिन राहे मौला में बांट देते थे। बड़ी बड़ी रक़में नज़राने में आतीं कम से कम 15 या 20 हज़ार रुपये तो रोज़ाना आते ही थे मगर हाथ में आया और ग़रीबों मिस्कीनों और मुहताजों के पास पहुँच गया। रोज़ाना दिन के नज़राने दिन के उजाले ही में तक़सीम हो जाते थे। सख़ावत और फ़य्याज़ी का एक दरया था जो हर वक़्त मौजें मार रहा था। दूर दूर से लोग आप से फ़ैज़ हासिल करने आ रहे थे। हर तरफ़ आपकी बख़्शिश व अता की धूम मची थी। दुनिया व आख़िरत ज़ाहिरी व बातिनी हर दौलत यहाँ तक़सीम हो रही थी। किसी सवाली को आपने महरूम वापस नहीं किया और दिया भी तो फ़य्याज़ी के साथ इतना दिया कि दामने मुराद भर गया बल्कि लेने वालों को अपने दामन छोटे नज़र आने लगे। आपकी नज़र हमेशा सवाल पर रही सवाली पर नहीं, ज़रूरतमन्द है या नहीं बस सवाल हुआ और सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अता फ़रमा दिया। अकसर तो आप मांगने से पहले ही अता फ़रमा देते। सवाल रद्द करना आपकी फ़ितरत के ख़िलाफ़ा था। आप फ़रमाया करते थे "मुस्तहिक़ और ग़ैरे मुस्तहिक़ दोनों को दे क्यूँकि अल्लाह तआ़ला दोनों को देता है"

हज़रते अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने ख़िज़्र हुसैनी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की रिवायत है कि एक दिन एक बहुत बड़ा ताजिर आप से आकर कहने लगा कि मेरे पास सदक़े की एक भारी रक़म है जो तक़सीम की नियत से अलग रखी है। मेरी ख़्वाहिश है कि राहे मौला में इसे तक़सीम करूँ मगर कोई मुस्तहिक़ नहीं मिलता।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया मुस्तहिक़ व ग़ैर मुस्तहिक़ की तमीज़ किए बग़ैर दोनों को दे

दो ताकि अल्लाह तआ़ला तुम से राज़ी होकर तुम्हें वह इनायत फ़रमाए जिसके तुम मुस्तहिक़ हो और वह भी अता फ़रमाए जिसके तुम मुस्तहिक़ नहीं हो।

आपकी फ़य्याज़ी व सख़ावत पर इन वाक़ियात से कितनी ज़बरदस्त रौशनी पड़ती है जिस से आम मुसलमानों को मुतास्सिर होकर सबक़ लेना चाहिए। आज के दौर में हर किसी को देना तो दूर मुस्तहिक़ को भी लोग देना पसन्द नहीं करते और ज़कात व उश्र का माल नहीं निकालते बल्कि ख़ुद ही खाते रहते हैं और समझते हैं कि मैंने हलाल कमाई का खाना खाया हालांकि ज़कात न निकालने वाले और उश्र न निकालने वाले शरीअते मुतह्हरा के नज़दीक हरामख़ोर हैं। यहाँ तक कि अब हालत यह है कि कुछ लोग चन्दा के वास्ते जगह जगह जाते हैं और ज़कात व ख़ैरात का माल लेकर ख़ुद ही खा जाते हैं या ख़ुद जमा कर के रख लेते हैं और उसे देख देख कर ख़ुश होते हैं हालांकि चाहिए यह था कि ज़कात का माल जिसके लिए आया है उसी में ख़र्च किया जाए या हीला शरई करके नेक काम में लगाया जाए नाकि अपनी तिजोरियों में रखा जाए। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त मुसब्बिबुल असबाब से हमारी दुआ है कि हम तमामी मुसलमानाने अहले सुन्नत को ऐसी लानतों और गिरे हुए कामों से महफ़ूज़ रखे आमीन बिजाहि सय्यिदिल मुरसलीन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम।

किस क़द्र अफ़सोसनाक बात है कि हम अपने को बग़ैर उसकी अताओं का मुस्तहिक़ बनाए हुए उससे हर नेमत के तलबगार हैं और जब हमसे उसके बन्दे कुछ सवाल करते हैं तो झट उनके दरमियान हम तमीज़ करने लग जाते हैं। ये बात बहुत ही बुरी है कि जिसे हाजत न हो और वह मांगे मगर यह तो मांगने वाले की ज़िम्मेदारी है देने वाले पर किसी क़िस्म की कोई ज़िम्मेदारी नहीं। हाँ हट्टे कट्टे भिकारियों को भीख मांगना भी सख़्त हराम है और ऐसे बेशरम ज़ालिम मंगते को देना भी सख़्त हराम है। देने वाले और लेने वाले दोनों

हरामकार और अज़ाब के हक़दार हैं। जो लोग बिला ज़रूरते शरीइया भीक मांगा करते हैं उनके लिए सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि क़ियामत के दिन वो लोग ऐसी ज़िल्लत की हालत में होंगे कि अपने नाख़ुनों से अपने चेहरे के गोश्त नोचत होंगे। अल्लाह की पनाह।

हज़रते अबुल ख़ैर रहमतुल्लाहि तआला अलैह का बयान है कि एक दिन मैं और चन्द दूसरे मशाइख़ीने किराम सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में हाज़िर थे। बेसाख़्ता सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने हाज़िरीन को मुख़ातब करके फ़रमाया इस वक़्त मैं मज़हरे सख़ा हूँ जिसके दिल में जो भी ख़्वाहिश हो मांग ले जो तलब करेगा दिया जाएगा। यह सुनकर शैख़ अबू सईद ने दुनिया के तर्क करने को मांगा, शैख़ क़ाइद ने मुजाहदा की ताक़त मांगी, शैख़ उमर बज़्ज़ाज़ ने ख़ौफ़े ख़ुदा मांगा, शैख़ हसन क़ादिरी ने बातिन की हालात में तरक़्क़ी मांगी, शैख़ जमील ने वक़्तों की हिफ़ाज़त मांगी, शैख़ अबुल बरकात ने इश्क़ मांगा और शैख़ ख़लील ने क़ुतबियत का मरतबा मांगा। दो शख़्स ऐसे भी थे जिन्होंने दुनिया के मनसबों की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। सबकी हाजतें और सवालात सुनने के बाद सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया

كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ○

तर्जमा : हम सबको मदद देते हैं उनको भी इनको भी तुम्हारे रब की अता से और तुम्हारे रब की अता पर रोक नहीं।(पारा 15 रुकू 2)

हज़रते अबुल ख़ैर ही का बयान है कि ख़ुदा की क़सम मैंने देखा कि जिस शख़्स ने जो मांगा सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उसे दिया मगर शैख़ ख़लील कि अभी तक उनका वक़्त नहीं पहुँचा था। जब वक़्त आया तो सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें क़ुतबियत का मरतबा अता फ़रमाया।

ईसार का जज़्बा और इख़लास

ख़ुलूस व ईसार ही वो ख़ूबियाँ हैं जो हक़ीक़त में इन्सान को इन्सान बनाती हैं। ख़ुलूस के यह मअना हैं कि जो काम किया जाए उसमें अपनी कोई ज़ाती ग़र्ज़ न शामिल हो बल्कि अल्लाह तआला की ख़ुशनूदी का जज़्बा मुकम्मल तौर पर हो। फ़र्ज़ को फ़र्ज़ ही समझ कर करना चाहिए।

ईसार यह है कि अपने से ज़्यादा दूसरों का ख़्याल रखे। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सिखाए हुए के मुताबिक़ सहाबए किराम में ईसार की वो ख़ूबियाँ पैदा हो गई थीं कि सख़्त ज़रूरत होने के बावुजूद अगर कोई भूका आ गया तो जो भी हुआ सारा का सारा उठा कर दे दिया और ख़ुद भूके रह गए। दूसरों की ज़ुरूरत के मुक़ाबिल अपनी ज़रूरत को क़तई अहमियत न देते थे।

तारीख़े इसलाम का एक अहमतरीन वाक़िया है जंगे यरमूक में एक मुजाहिद सहाबी ज़ख़्मों से चूर होकर ज़मीन पर गिर पड़े, प्यास से तड़पते हुए पानी मांगा। एक शख़्स पानी लेकर पहुँचा ही था कि दूसरी तरफ़ से पानी मांगने की आवाज़ आई। सुनते ही फ़रमाया कि पहले उन्हें पिलाओ। उनके क़रीब गए अभी गिलास लबों तक पहुँचा ही था कि तीसरी तरफ़ से पानी मांगने की आवाज़ पहुँची। फ़ौरन मुँह से गिलास हटा कर फ़रमाया कि पहले उन्हें पिलाओ। इसी तरह सात आवाज़ें आईं। सातवें सहाबी के क़रीब छटे तड़प रहे थे उन्होंने इसरार के साथ कहा पहले उन्हें पिलाओ। यह इधर जो आए तो देखा कि उनका विसाल हो चुका था। दोबारा पलट कर इधर आए तो वह भी शहीद हो चुके थे। ग़र्ज़ यह कि सातों सहाबी प्यासे ही इस दुनिया से रुख़सत हो गए। अल्लाह अल्लाह क्या ईसार का जज़्बा था। अल्लाह तआला इन पाक आशिक़ों पर रहमत फ़रमाए।

सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआला अन्हु भी ऐसे ही सहाबियों के पैरवी करने वाले थे। आपकी ज़िन्दगी में भी ईसार

और कुर्बानी के ऐसे ही जलवे नज़र आते हैं। एक मरतबा बग़दादे मुक़द्दस में ज़बरदस्त क़हत पड़ा, मख़लूक़े ख़ुदा बहुत परेशान थी लोगों को कई कई दिन का फ़ाक़ा हो जाता। दजला के क़रीब अमीरों के दरवाज़ों के आस पास फ़ाक़ाकशों के गिरोह चक्कर लगाते कि कुछ फेंका फांका ही मिल जाए या सब्ज़ीयाँ और फलों के छिलके ही मिल जायें, साग पात ही मिल जाए तो खा लें लेकिन यह चीज़ें भी बग़दाद की दुनिया से नापैद हो चुकी थीं। सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की उम्र शरीफ़ उस वक़्त कुल बाइस साल की थी। आपके तालिबे इल्मी का दौर था, दिन भर मेहनत और दिल व दिमाग़ लगाकर इल्म हासिल करना आपका काम था। ख़र्च के लिए वालिदा माजिदा कुछ रक़म भेज दिया करती थीं और आपकी यह हालत थी कि रक़म आई और ग़रीबों और मिस्कीनों में तक़सीम फ़रमा दी और फ़ाक़े से रहने लगे।

यहाँ तक कि फ़ाक़ों से परेशान होकर एक मरतबा दरिया दजला के कनारे तशरीफ़ ले गए ताकि वहाँ कोई चीज़ खाने पीने की मिल जाए मगर जिस तरफ़ जाते सैकड़ो ग़रीबों और फ़ाक़ाकशों को खाने पीने की चीज़ तलाश करते हुए देखते, मजबूरन वापस लौट आए और जब भूक की वजह से चन्द क़दम भी चलना मुश्किल हो गया तो किसी तरह एक मस्जिद में जाकर एक कोने में बैठ गए। अचानक एक आदमी कुछ रोटियाँ और भुना हुआ गोश्त लेकर मस्जिद में दाख़िल हुआ और उसी मस्जिद में एक तरफ़ बैठ गया और थैले से रोटी और भुना हुआ गोश्त खाने लगा। अचानक उसकी नज़र सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर पड़ी तो उसने कहा आओ भाई खाना खा लो तो सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इन्कार फ़रमा दिया मगर जब उस आने वाले आदमी ने मजबूर किया तो आप उसके साथ खाने के लिए बैठ गए। खाने के दौरान बातचीत हुई तो यह बात ज़ाहिर हुआ कि आप जीलान के रहने वाले तालिबे इल्म हैं

तो उस शख़्स ने पूछा कि आप अ़ब्दुल क़ादिर को भी जानते हैं। फिर जब उस शख़्स को यह मालूम हुआ कि अ़ब्दुल क़ादिर आप ही हैं तो उस शख़्स की आंखों में आंसू आ गए और वह कहने लगा कि मैं कई दिन से आपकी तलाश में घूम रहा हूँ। सफ़र का सामान ख़त्म हो जाने के बाद तीन दिन के फ़ाक़े के बाद आज आपकी वालिदा की भेजी हुई आठ अशर्फ़ियों में से यह खाना लाया हूँ। अब आप मेरी तरफ़ से नहीं बल्कि मैं आपकी तरफ़ से खा रहा हूँ, इस ख़ियानत के लिए माफ़ फ़रमा दें। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बड़ी ख़ुशी के साथ उस अजमी शख़्स को माफ़ कर दिया। फिर आपने उस शख़्स की ख़ूब ख़ातिर की और उन आठ दीनारों में से कुछ दीनार उसे भी अता फ़रमाए। यहाँ तक कि उन आठ अशर्फ़ियों में से तीसरे ही दिन एक न बची जो हाजतमन्द नज़र आया उसे दे दिया। सोचिए कि नादारी के सबब किस क़द्र तकलीफ़ बर्दाश्त फ़रमा चुके थे मगर जब दीनार हाथ आए तो सब कुछ भूल गए और दूसरों की तकलीफ़ के सामने अपनी किसी तकलीफ़ को ख़्याल न फ़रमाया।

इसलाम बताता है कि जो शख़्स ख़ुदा की राह में देता है वह कभी महरूम नहीं होता है। ज़िन्दगी में तकलीफ़ व परेशानी किसी न किसी सूरत में इन्सान पर आती ही रहती हैं। मरने वाले मर कर चले जाते हैं कोई याद नहीं करता मगर दुनिया से जाने वाले कुछ ऐसे पाक इन्सान भी हैं कि जब इस दुनिया से रुख़सत होते हैं तो हमेशा के लिए दुनिया के दिलों में रोशनी का चेराग़ जला कर जाते हैं। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उन्हीं चेराग़ों में से एक ऐसे रौशन चेराग़ हैं कि आज भी दुनिया को आप अल्लाह की दी हुई क़ुदरत से अता कर रहे हैं और आने वाले वक़्त में भी अता फ़रमाते रहेंगे।

हज़रते शाह अबुल मआली रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह शैख़ अबू मुहम्मद तलहा इब्ने मुज़फ़्फ़र रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के हवाले से लिखते हैं कि सरकारे ग़ौसे आज़म

रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ख़ुद ने बयान फ़रमाया है कि बग़दादे मुक़द्दस में एक ज़माना मेरे ऊपर ऐसा भी गुज़रा है कि बीस दिन तक मुझे इस क़िस्म की कोई चीज़ नहीं मिली कि जिसे मैं ग़िज़ा के तौर पर खा लेता जब भूक ने बहुत ज़्यादा बेक़रार किया तो इस ख़्याल से ऐवानें किसरा के खंडरात में गया कि शायद वहाँ कोई हलाल चीज़ मिल जाए जिसे मैं खा सकूँ। चुनांचे जब मैं वहाँ पहुँचा तो देखा मुझसे भी पहले से सत्तर .फुक़रा मौजूद हैं मैंने सोचा कि यह मुरव्वत के ख़िलाफ़ है कि मैं भी उनके साथ शामिल हो जाऊँ, इन्हीं लोगों को कुछ मिल जाए तो बेहतर है। यह सोच कर मैं वहाँ से चला आया। शहर में पहुँचा तो जानने पहचानने वालों में से एक शख़्स से मुलाक़ात हुई तो सोने का एक टुकड़ा उस शख़्स ने देते हुए कहा आपकी वालिदा मुहतरमा ने आपके लिए भेजा है मैं ने सोने का वह टुकड़ा लेने के बाद थोड़ा सा अपने लिए रख लिया और बाक़ी सोना लेकर दोबारा ऐवाने किसरा के खंडरात में गया और उन सत्तर दुरवेशों को बराबर तक़सीम कर दिया। उन्होंनं तअज्जुब से पूछा यह क्या है? मैंने जवाब दिया वालिदा मुहतरमा ने मेरे ख़र्च के लिए भेजा था। मुझे यह बात मुनासिब न मालूम हुई कि मैं सब सोना ख़ुद रख लेता, मैंने इसमें आप सब हज़रात को भी शमिल कर लेना बेहतर समझा। वहाँ से वापस आकर अपने हिस्से के सोने से खाना ख़रीदा फिर बहुत से फ़क़ीरों को बुला लाया और उनके साथ बैठ कर मैंने खाना खाया। उसके बाद उस सोने में से मेरे पास कुछ बाक़ी न रहा। मैंने अल्लाह तबारक व तआ़ला का शुक्र अदा किया।

यह मामूली बात नहीं कि बीस दिन बराबर भूक और फ़ाक़ों की तकलीफ़ बर्दाश्त करने के बाद खाने की तलाश के लिए जाना और सिर्फ़ इस वजह से वापस लौट आना कि वहाँ पर दूसरे दुरवेश भी इसी लिए हैं इनका क्या होगा। ख़ुलूस व क़ुर्बानी का यह नमूना आज कहीं नज़र नहीं आता। मुरव्वत का बलन्द मरतबा यह है कि इन्सान अपनी बहुत ज़्यादा

तकलीफ़ को दूसरों की छोटी तकलीफ़ के सामने भूला दे। अल्लाह तआ़ला इस मुरव्वत और .कुर्बानी का बेहतरीन बदल अता फ़रमाता है। अल्लाह तआ़ला के लिए जो कुछ भी ख़र्च किया जाता है उसका सिला ज़रूर मिलता है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के वापस आते ही वालिदा की तरफ़ से भेजा हुआ सोना मिला। अब ज़रा शाने ग़ौसियत तो देखिए कि उसी वक़्त उसे लिए हुए ऐवाने किसरा पहुँचे और ज़रूरत भर अपने लिए रख कर सब तक़सीम फ़रमा दिया। फिर अपने हिस्से के सोने से कुछ ख़रीद कर फ़क़ीरों को बुलाया और अपने साथ बैठा कर सब को खिलाया और शाम तक आपके हिस्से से कुछ बाक़ी न रहा।

दोस्तो! इस वाक़िए की अहमियत उस वक़्त कितनी बढ़ जाती है जबकि इस चीज़ को पेशे नज़र रख कर सोचा जाए कि उस वक़्त आपकी उम्र क्या थी और आप पढ़ाई कर रहे थे लेकिन उस ज़माने में भी दूसरों को खिला कर खाते थे। यही आपने तालीमाते नबवी से सीखा था।

आपके हाथ मुबारक में पैसा रुकना जानता ही नहीं था। सारी ज़िन्दगी यही कैफ़ियत रही रोज़ाना हज़ारों दीनार आते और शाम होने से पहले सब ग़रीबों पर ख़र्च फ़रमा देते। ग़रीबों के लिए लंगर अलग से जारी रहता था साथ ही मेहमानों को बैठाए बग़ैर ख़ुद न खाते थे। मेहमानों में तलिब इल्म और फ़कीर लोग भी साथ होते थे। अकसर व बेशतर आपके ख़ादिमे ख़ुसूसी हज़रते मुज़फ़्फ़र रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह खाना खाने के वक़्त पुकार पुकार कर लोगों को बुलाते थे। मुसाफ़िरों के लिए खाने के अलावा ठहरने का इन्तेज़ाम भी रहता था। आपके मदरसे व ख़ानक़ाह में हर वक़्त मुसाफ़िरों, मेहमानों, फ़क़ीरों, मिस्कीनों और उलमा व मशाइख़ीन का हुजूम रहता था।

हमदर्दी और शफ़क़त

ख़ास लोगों और मुरीदीन के ऊपर शफ़क़त व रह़मत का पूछना ही क्या मजलिस में आम आने वाले लोगों में से कोई

नज़र न आता तो आपको फ़िक्र होती। बार बार उसे पूछते और ख़ादिम से फ़रमाते जाओ फ़लाँ शख़्स को देखो कहीं किसी परेशानी में तो मुबतला नहीं है, तबीयत तो नहीं ख़राब हो गई है। जब तक उसकी ख़ैरियत न मालूम कर लेते मुतमइन न होते अगर वह शख़्स बीमार होता और आपको ख़बर मिलती तो उसकी इयादत को आप तशरीफ़ ले जाते उसके पास बैठ कर इतमिनान और तसल्ली बख़्श बातें करते और हमदर्दी का इज़हार फ़रमाते थे।

अहबाब में से एक साहब बग़दादे मुक़द्दस से काफ़ी फ़ासले पर एक गांव में रहते थे। एक मरतबा वह बीमार पड़े। आपको ख़बर मिली तो आप सफ़र की तमाम दुश्वारियाँ बर्दाश्त करके उसी गांव में उनकी इयादत फ़रमाने तशरीफ़ ले गए। इत्तेफ़ाक़ से उस वक़्त वह अपने घर के बजाए अपने खजूरों के बाग़ में लेटे हुए थे। आपने उसी बाग़ में जाकर इयादत फ़रमाई। उस बाग़ में दो दरख़्त ऐसे थे जो ख़ुश्क हो गए थे और वह उन्हें कटवाने का इरादा कर चुके थे। बातचीत के दौरान इसका भी ज़िक्र आया। सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उन दरख़्तों में से एक दरख़्त के नीचे बैठ कर वुज़ू किया और दूसरे के नीचे खड़े होकर दो रकअत नमाज़ अदा की। उसके बाद एक हफ़्ते के अन्दर ही उन दरख़्तों में दोबारा ज़िन्दगी आ गई और वह शादाब होकर फिर से फल देने लगे। सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की तशरीफ़ आवरी से उनके कारोबार में भी बरकत हो गई।

हदिये और तोहफ़े

आप अपने अहबाब और साथियों को तोहफ़े भी भेजा करते थे। ख़ुद भी लोगों के तोहफ़े क़बूल फ़रमाया करते थे फिर लोगों में तक़सीम फ़रमा दिया करते थे। आपका दस्तूर था कि कोई शख़्स आपकी ख़िदमत में हदिया पेश करता तो आप उसके यहाँ उससे अच्छा और नफ़ीस तोहफ़ा भेज कर उसे ख़ुश करने की कोशिश फ़रमाते थे क्यूँकि हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का यह इरशादे मुबारका आपके पेशे नज़र था कि जो तुम्हें हदिया पेश करे तुम उसे उससे उमदा हदिया पेश करो इससे आपस में महब्बत बढ़ती है। बादशाहों से हदिया क़बूल नहीं फ़रमाते थे। हाँ उनके इलावा अगर कोई शख़्स तोहफ़ा भेजता तो क़बूल फ़रमा लेते थे और उसी वक़्त लोगों को तक़सीम फ़रमा देते थे। एक दिन ख़लीफ़ा मुसतन्जिद बिल्लाह आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अशर्फ़ियों की दस थैलियाँ नज़राना पेश करने के लिए लाया। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने लेने से इन्कार फ़रमाया। जब ख़लीफ़ा ज़्यादा ज़िद करने लगा तो आपने एक थैली दाहिने हाथ में और एक बायें हाथ में लेकर निचोड़ीं तो अशर्फ़ियों से ख़ून बहने लगा।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया ऐ ख़लीफ़ा क्या तू मुझे ऐसा माल दे रहा है जिसमें ग़रीबों का ख़ून शामिल है तुझे शर्म नहीं आती। ये माजरा देख कर ख़लीफ़ा बेहोश हो गया और सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने तड़प कर इरशाद फ़रमाया अगर इसको ख़ानदाने नुबुव्वत से निसबत न होती तो मैं इन अशर्फ़ियों को इतना निचोड़ता कि ख़लीफ़ा के महल तक ख़ून जारी हो जाता।

हज़रते शैख़ शेहाबुद्दीन उमर सुहरवर्दी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाते हैं कि जवानी में इल्मे कलाम से मुझे बड़ी दिलचस्पी थी, कई किताबें मुझे हिफ़्ज़ हो गईं थीं। मेरे चचा हज़रते नजीबुद्दीन सुहरवर्दी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह मुझको इससे मना फ़रमाया करते थे लेकिन मैं बाज़ न आता था। एक रोज़ वह मुझे सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बारगाह में ले गए। आस्तानए आलिया से जब क़रीब हुए तो चचा जान कहने लगे कि इस वक़्त हम एक सच्चे और हक़ीक़ी नाइबे रसूल की बारगाह में चल रहे हैं जिसके क़ल्बे अतहर पर तजल्लियाते इलाही हर वक़्त कामिल तौर पर जलवाफ़िगन रहती है इसलिए यह ज़रूरी है कि हम अदब से रहें और होशयार रहें ताकि फ़ैज़याब हों और महरूम न रहें।

यही ख़्याल व तसव्वुर लिए हुए हम बारगाहे गिरामी में हाज़िर हुए। थोड़ी देर के बाद चचा मुहतरम ने अर्ज़ किया हुज़ूर यह मेरा भतीजा इल्मे कलाम के हासिल करने में लगा रहता है और मेरी सख़्त ताकीद के बावुजूद नहीं मानता। यह सुनकर सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपना मुबारक हाथ जो मेरे सीने पर रखा तो मेरे सीने से इल्मे कलाम ख़त्म हो गया, जो कुछ मुझे इल्मे कलाम से याद था सब भूल गया। अपनी यह कैफ़ियत देख कर मुझे बड़ा सदमा हुआ। सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़ौरन मेरे दिल के एहसास को जान लिया और मुस्कुराने लगे। अचानक मेरी ख़ुशी का ठिकाना न रहा कि मेरे क़ल्ब पर आपकी तवज्जो से इल्मे लदुन्नी के दरवाज़े खुल गए और इल्म व हिकमत की रोशनी चमकने लगी। उसके बाद आपने फ़रमाया कि उमर अब तुम इराक़ के मशहूर औलियाए किराम में से हो गए। चुनांचे ऐसा ही हुआ कि हज़रते सुहरवर्दी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह एक जदीद सिलसिलए मारिफ़त के बानी की हैसियत से दुनियाए इस्लाम में मशहूर हुए और अर्सए दराज़ तक बग़दादे मुक़द्दस में आपकी धूम रही। सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बाद आप ही का बोल बाला रहा और मख़लूक़े ख़ुदा बड़ी तदाद में आपकी तरफ़ राग़िब हुई।

हज़रते शैख़ शेहाबुद्दीन सुहरवर्दी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के दोस्त शैख़ नजमुद्दीन रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं हज़रते शैख़ शेहाबुद्दीन सुहरवर्दी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के पास चिल्ले में था। चालीसवें दिन मैंने देखा कि हज़रते शैख़ शेहाबुद्दीन सुहरवर्दी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह एक पहाड़ की चोटी पर बैठे हैं और एक पैमाना हाथ में है जिसे जवाहिरात से भर भर कर पहाड़ के नीचे खड़े हुए लोगों पर फेंक रहे हैं। ये मन्ज़र देख कर मुझे बड़ा तअज्जुब हुआ कि लोग उन जवाहिरात को जब चुन लेते हैं तो उतने ही जवाहिरात फिर पैदा हो जाते हैं और आप उसी

पैमाने से भर कर फिर नीचे फेंक देते हैं ऐसा मालूम होता है कि जैसे कोई चश्मा है जिससे जवाहिरात उबल रहे हों। जब मैं चिल्ले से बाहर आया तो हज़रते शैख़ शेहाबुद्दीन सुहरवर्दी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह से इसका ज़िक्र किया। हज़रते शैख़ शेहाबुद्दीन सुहरवर्दी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने फ़रमाया नजमुद्दीन तुम जो कुछ देख रहे थे बिल्कुल वह हक़ीक़त है और यह दौलत सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के करम से हासिल हुई है। इल्मे कलाम के बदले में यह दौलत अता की गई है। ये सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का ख़ास करम था।

चूंकि शैख़ सुहरवर्दी से सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इल्मे कलाम ख़त्म फ़रमा दिया था इसलिए उसका बदला ज़रूरी था। यही करीम की पहचान है कि जब वह किसी से कोई चीज़ मसलेहतन ले लेता है तो उसका कई गुना बढ़ा कर बदला अता करता है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु करीम इब्ने करीम हैं भला आप क्यूँकर न बदला इनायत फ़रमाते, दिया और इस क़द्र दिया कि जिसकी कोई मिसाल मौजूद नहीं।

सब्र व साबित क़दमी

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को जिस क़द्र मुसीबतें, दिक़्क़तें और दुशवारियाँ झेलनी पड़ीं थी फिर उन्हें जिस सब्र के साथ आपने बर्दाश्त किया है वह आपका अपना मख़सूस हिस्सा था। बहुत से ऐसे मशाइख़ व बुज़ुर्ग गुजरे हैं जिन्हें मुसीबतों और परेशानियों का सामना करना पड़ा और उन्होंने अपने सब्र का इम्तिहान बड़ी शान से दिया मगर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने मुसीबतों और तकलीफ़ों फ़ाक़ा व तंगदस्ती के जिस माहौल में रह कर कमाल हासिल किया उसकी नज़ीर बहुत कम मिलती है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बहुत अक़्लमन्द बड़े मेहनती

बड़े सब्र करने वाले बेख़ौफ़ और मुस्तक़िल मिज़ाज इन्सान थे। ज़ाहिरी व बातिनी इल्म हासिल करने का अपने अन्दर बहुत ज़ौक़ रखते थे। आपने शैख़ ह़म्माद से जवानी में अपने आइन्दा होने वाले मुरीदों के मुताल्लिक़ जो कुछ फ़रमाया था उससे साफ़ तौर पर मालूम होता है कि अपनी कामरानी व बलन्दी के मरतबों का पूरा यक़ीन रखते थे और यही बुज़ुर्गी की दलील है।

अल्लाह तआ़ला अपने उन बन्दों की मदद फ़रमाता है जो ख़ुद अपनी मदद करते हैं। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने भी अपनी कामयाबी हासिल करने के लिए पक्का इरादा फ़रमा लिया तो ख़ुदाए क़दीर ने आपके इरादे को कामयाब बना दिया। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपने शुरू के दौर में बड़ी हिम्मत से काम लिया तो आप जो कुछ भी होना चाहते थे उससे भी ज़्यादा हो गए।

हज़रते शैख़ ह़म्माद रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने आपके अन्दर सिर्फ़ पुख़्तगी पैदा करने की ग़रज़ से आपको ख़ूब तकलीफ़ें दीं, सख़्तियाँ भी कीं। हद यह कि एक मरतबा सर्दी के मौसम में साथ जाते हुए पुल पर से दरिया में ढकेल दिया मगर झट सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने दरिया में गिरते गिरते ग़ुस्ल की नियत कर ली। फिर अपने कपड़े को निचोड़ा और हज़रते शैख़ ह़म्माद के साथ हो गए। कभी कभी शैख़ ह़म्माद रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह आप से इरशाद फ़रमाते थे आज मेरे पास बहुत काफ़ी खाना आया था। मैंने ख़ुद खाया और दूसरों को तक़सीम किया लेकिन तुम्हारे लिए कुछ नहीं रखा। हज़रते शैख़ ह़म्माद रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का यह इरशाद सुनकर भी कभी सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बद्दिल न हुए और सब्र किया।

हज़रते शैख़ ह़म्माद रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की यह बातें देख कर दूसरों को भी ये सब करने की हिम्मत होने लगी लेकिन किसी क़िस्म की तकलीफ़ से सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कभी भी रंजीदा नहीं हुए।

एक मर्तबा हज़रते शैख़ ह़म्माद रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की मजलिस के एक तालिबे इल्म ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को किसी क़िस्म की कोई तकलीफ़ पहुँचाई तो आदत के मुताबिक़ सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने सब्र से काम लिया मगर हज़रते शैख़ ह़म्माद रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह को इसकी ख़बर पहुँच गई। उन्होंने उस .तालिबे इल्म को सख़्त तम्बीह की और फ़रमाया ऐ कुत्तों तुम अ़ब्दुल क़ादिर को क्यूँ तकलीफ़ पहुँचाते हो तुममें से किसी एक को भी यह मरतबा हासिल नहीं है। फिर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को बुला कर हज़रते शैख़ ह़म्माद रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने फ़रमाया

"अ़ब्दुल क़ादिर अब तक मैंने जो कुछ तुम्हारे साथ किया वह सिर्फ़ पुख़्तगी और तरबियत के लिए था। अब तुम पक्के हो गए और पहाड़ से भी ज़्यादा सख़्त हो गए ख़ुदावन्द .क़ुद्दूस तुम्हें बेपनाह इ़ज़्ज़त देगा।"

पच्चीस साल तक एक हालत से मुजाहदे करते रहना शब व रोज़ इन्तिहाई अज़ियतें तकलीफ़ें और सख़्तियाँ बर्दाश्त करना पूरे पन्द्रह साल तक हर रात दो रकअतों में पूरा .क़ुर्आने अ़ज़ीम पढ़ना बे सरोसामानी के आलम में रहना, घास और पत्तों पर गुज़र करना। अपनी जवानी को मुजाहदात रियाज़ात और इल्म हासिल करने में गुज़ार देना इन्सान के सब्र का बहुत बड़ा मुज़ाहरा व इम्तिहान है।

जवानी के आलम में आपने अपने वक़्त को जिस तरह गुज़ारा इसकी मिसाल दुनिया में नहीं मिलती। दिन दिन भर किताबों में दिमाग़ ख़र्च करना और रातों को इबादत में मशग़ूल रहना, खंडरात और वीरानों में पड़े रहना न बिस्तर न तकिया न ब़दन पर पूरा कपड़ा न सोने की जगह न खाने का ठिकाना न महीने भर में एक दिन भी पेट भर कर खाना। घर से आए हुए दीनार फ़क़ीरों व हाजतमन्दों को तक़सीम कर दिए हैं और फिर अपने दिन फ़ाक़ाकशी में गुज़ार रहे हैं। फ़ाक़ा भी ऐसा

वैसा नहीं बल्कि तीन तीन दिन कुछ भी न मिला न साग मिले न पत्ते लेकिन पढ़ाई व इबादात में कोई फ़र्क़ न आया वही दिन दिन भर पढ़ाई और रातों को इबादत। जब मुसीबतें हद से बढ़तीं और सब्र करना मुश्किल होता तो आप ज़मीन पर लेट जाते और فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا (तर्जमा : इसलिए कि बेशक सख़्ती के साथ आसानी है) पढ़ने लगते थे। अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु के क़ल्बे मुबारक को ताक़त अता फ़रमाता और दिमाग़ का बोझ हलका हो जाता था और परेशानी दूर हो जाती थी और फिर आप ताज़ा होकर इल्मी मशग़ले में मशग़ूल हो जाते।

इरादे की पुख़्तगी और हिम्मत

इन्तिहाई परेशानी में भी सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु हमेशा ख़ुश रहते और अल्लाह तआला से उम्मीदवार रहते। किसी के सामने अपने दुख दर्द का कभी इज़हार नहीं होने दिया। अपनी ग़रीबी को छुपाना और मुसीबतों और परेशानियों को न बयान करना और हर तकलीफ़ को सब्र और शुक्र के साथ झेलना इन्सानियत का कमाल है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने किसी के ऊपर अपनी तकलीफ़ और मुसीबत का इज़हार नहीं फ़रमाया और न कभी किसी से कोई सवाल किया। हमेशा हंसमुख रहा करते थे। अल्लाह तबारक व तआला की रह़मत से नाउम्मीद हो जाना और मुसीबतों से मायूस हो जाना इन्सान के लिए बड़ा ख़ौफ़नाक अज़ाब है। अल्लाह तबरक व तआला हर मुसलमान को महफ़ूज़ रखे। क़ुर्आने करीम का एक लफ़्ज़ لَا تَقْنَطُوْا बेशुमार इल्म और भेदों को अपने अन्दर लिए हुए है और हज़ारों आरज़ूओं का उम्मीद दिलाने वाला पैग़ाम है। ख़ुदाए क़ादिर व तवाना की शाने करीमी हरगिज़ यह नहीं चाहती कि उसके बन्दे उससे मायूस हों और हक़ीक़तन ख़ुदाए क़दीर का

बन्दए कामिल होकर उसकी .कुदरत और तवानाई का यक़ीन रखते हुए उससे मायूस हो जाना और उसकी मुकम्मल अज़मत और आम रहमत से चेहरा फेरना है।

इसी लिए .कुर्आने हकीम में जगह जगह मायूसी की सख़्त मज़म्मत और मायूस होने वालों के बारे में ज़िक्र व इताब आया है। .कुर्आने हकीम के हुक्म के मुताबिक़ मायूसी कुफ़्र के बराबर है। किसी नेमत से महरूम होना हक़ीक़ी महरूमी नहीं है अलबत्ता अल्लाह तआला की रहमत व इनायत से मायूस होना सबसे बड़ी महरूमी है। जो लोग अपनी उम्मीदें ख़ुदावन्द .कुद्दूस से वाबस्ता रखते हैं और उस पर पूरा भरोसा रखते हैं वह यक़ीनन कामयाब हो कर रहते हैं। काइनात में कोई भी ऐसी बारगाह नहीं न कोई ऐसी ज़ात है जो यह एलाने आम कर सके कि मेरे दरबार से कोई महरूम नहीं जा सकता, भला यह हिम्मत व ताक़त किस के अन्दर है?

यह शान सिर्फ़ और सिर्फ़ परवरदगारे आलम ही की है कि वह एलाने आम फ़रमाता है कि उसकी रहमत व मेहरबानी से मायूस होने वाले ईमानदार नहीं हो सकते। क्या इस एलान से यह साफ़ पता नहीं चलता कि अल्लाह तबारक व तआला हर वक़्त अपने बन्दों पर करम फ़रमाने के लिए तैयार है। बख़्शने व अता फ़रमाने में वह ख़ुश होता है और जो नाउम्मीद हो जाते हैं। उन पर वह ग़ज़ब फ़रमाता है।

मुन्कसिरुल मिज़ाजी व तवाज़ो

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु बड़े ही मुन्कसिरुल मिज़ाज और नर्म दिल, नर्म तबीयत और सादा दिल थे। आला तरीन मक़ाम पर होने के बावजूद इतनी बुज़ुर्ग शख़्सियत के अन्दर अपनी शान व रिफ़अत का ज़र्रा बराबर ख़्याल न था। हर शख़्स से बड़ी इन्किसारी से मिलते थे। सबसे महब्बत व रवादारी के साथ पेश आते थे। सादगी का यह आलम था कि एक मरतबा कहीं जा रहे थे कि एक गली से

आपका गुज़र हुआ जहाँ कुछ बच्चे खेल रहे थे। फ़ितरत के मुताबिक़ उन बच्चों से महब्बत व शफ़क़त के साथ पेश आए। बच्चे तो बच्चे होते हैं वह आपकी अज़मत व शख़सियत को क्या जानें। चुनांचे एक बच्चे ने आगे बढ़ कर कहा कि एक पैसे की आप मुझे मिठाई ला दीजिए। बिना देर किए आपने उसे मिठाई लाकर दे दी। अब तो दूसरे बच्चों को भी मिठाई मांगने की हिम्मत हुई। आपने सब को मिठाई ला लाकर दी।

घर पर भी आपकी यही हालत रहती थी। आपकी बीवियों में से अगर किसी की तबीयत ख़राब हो जाती तो ख़ुद घर के सारे काम अपने हाथ से कर लेते थे, ख़ुद ही आटा गूंध कर रोटियाँ पका लेते थे और बच्चों को बैठा कर खिला भी देते थे। कुएं से पानी खींच कर ले आते थे। बिला कराहत घर में झाड़ू भी लगा लिया करते थे। ग़र्ज़ किसी काम में आप शर्म महसूस नहीं करते थे। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का यह तरीक़ा सिर्फ़ घर तक ही नहीं था बल्कि जहाँ कहीं भी आप तशरीफ़ ले जाते या हालते सफ़र में होते और किसी मन्ज़िल में पहुँच कर क़ियाम फ़रमाते तो वहाँ पर भी आपका यही तरीक़ा होता यानी अपना तमाम काम अपने ही नूरानी हाथों से किया करते थे। आटा गूंधते रोटियाँ पकाते और दूसरों को भी खिलाते थे। सफ़र की हालत में आप जब इस क़िस्म के कामों में मशग़ूल होते तो ख़ुद्दाम आपको अदब के साथ इन कामों से अलाहिदा करने की कोशिश करते मगर उनकी कोशिश बेकार साबित होती थी। आप फ़रमाते थे मैं भी तुम ही जैसा एक इन्सान हूँ तुम रोटियाँ पकाते हो तो मैं क्यूँ नहीं पका सकता।

सरकारे दो जहाँ स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और मुक़द्दस सहाबए किराम रद़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हुम का भी यही तर्ज़े अमल था। पैग़म्बरे इसलाम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मदीनए तय्यबा में होते तो अपना काम ख़ुद करते थे। सफ़र में होते तो काम तक़सीम फ़रमा देते और अपने ज़िम्मे

भी कोई न कोई काम ले लेते थे। जब सारी काइनात के मालिक व मुख़्तार होते हुए भी अल्लाह के रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम कामों को अपने हाथों में ले लिया करते थे तो मेरी क्या मजाल है कि मैं ऐसा न करूँ और दूसरों ही के सर डाल दूँ। ज़िन्दगी के हर माहौल में पैग़म्बरे इसलाम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की इत्तेबा ही नजात का ज़रिया है। आजकल के रहनुमा, पेशवा और दौलतमन्द हज़रात ग़ौर फ़रमायें कि क्या वह भी ख़ादिमों के होते हुए घर का काम ख़ुद करना पसन्द फ़रमाते हैं। अगर वह ऐसा करते हैं तो उनके लिए बहुत बड़ा सवाब है क्यूँकि वह पैग़म्बरे इसलाम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की इत्तेबा कर रहे हैं।

यक़ीनन अल्लाह तआ़ला उनकी इन्किसारी व आजज़ी व सादगी को पसन्दीदा नज़रों से देख रहा है और अगर वह अपने घर का काम करने को ज़िल्लत व हिक़ारत समझते हैं और नौकरों ही से सब काम कराना पसन्द करते हैं तो इस ग़ुरूर करने का अज़ाब भुगतने के लिए तैयार रहें और एक न एक दिन दुनिया में ही यह बला उन्हें ज़लील करेगी और आख़िरत में भी दर्दनाक अज़ाब होगा। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इस तर्ज़े ज़िन्दगी पर हर मुसलमान को ग़ौर करना चाहिए और अमल करने की कोशिश करनी चाहिए।

सवाल न करने का अहद

हज़रात! रिवायत है कि बग़दाद शरीफ़ में क़हत पड़ने के ज़माने में बहुत से तालिब इल्म ग़ल्ला वुसूल करने के लिए दिहातों में जाने लगे तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु भी एक मरतबा उन तालिब इल्मों के साथ चले गए और याक़ूबा नाम के एक गांव में पहुँचे। वहाँ उस गांव में एक अल्लाह के वली रहते थे जिनको शरीफ़ याक़ूबी कहा जाता था। उनकी नज़र जब हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला

अन्हु के चेहरए अनवर पर पड़ी तो वह अपनी विलायत की नज़र से ताड़ गए कि यह ज़र्रा कभी आफ़ताब बन कर चमकने वाला है। चुनांचे उन बुज़ुर्ग ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को सामने बुलाकर इरशाद फ़रमाया कि बेटा अ़ब्दुल क़ादिर तालिबाने ह़क़ कभी किसी के सामने सवाल के लिए हाथ नहीं फैलाते। फिर उन बुज़ुर्ग ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से अहद लिया कि कभी सवाल नहीं करेंगे। चुनांचे हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तमाम उम्र अपने इस अहद के पाबन्द रहे और बड़ी से बड़ी मुश्किलात में भी किसी के आगे सवाल के लिए हाथ नहीं फैलाया।

हज़ारों अज़मतें .कुर्बान उन हाथों की अज़मत पर
जो मजबूरी के आलम में भी फैलाए नहीं जाते

ब्रादराने मिल्लत! हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का यह अहद और अमल उन लोगों के लिए सबक़ हासिल करने का सामान है जो दिन रात मुरीदों की जेबों पर नज़र रखते हैं और हर वक़्त किसी न किसी फ़रमाइश और सवाल से दुनिया वालों के सामने अपनी ख़ानदानी अज़मत को पामाल करते रहते हैं और सिवाए लेने के किसी को कुछ देने का ख़्याल ही नहीं करते।

वादा की पाबन्दी

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हज़रत मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के कामिल फ़रमाबरदार थे। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपनी ज़िन्दगी ख़ुदाए क़दीर और नबीए करीम जनाबे मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की इताअ़त में गुज़ारना चाहते थे इसलिए वादा व क़ौल को पूरा करने की आपकी हर मुमकिन कोशिश रहती थी। जब भी किसी से कोई वादा फ़रमाते तो उसे ज़रूर पूरा करते।

एक मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में आपका एक अक़ीदतमन्द ताजिर दूसरी

जगह तिजारत के लिए जाने से पहले आपके पास हाज़िर हुआ और दुआ व बरकत की इल्तिजा पेश की। आपने फ़रमाया जाओ ख़ैरियत के साथ रहोगे और सलामती के साथ वापस आओगे इन्शाअल्लाह तआ़ला। ख़ुशअक़ीदा ताजिर यह सुनकर इत्मिनान के साथ रवाना हो गया। लेकिन बाद को इलहाम के ज़रिए आपको यह पता चला कि इस सफ़र में उसके लिए मुकम्मल तबाही मुक़द्दर हो चुकी है। अब आप परेशान हुए कि आप तो उसको सलामती और आफ़ियत का पैग़ाम सुना चुके हैं।

चुनांचे ख़ुदाए क़ादिर की बारगाहे करम में सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उसके हक़ में बेहद दुआयें कीं। हत्तांकि सत्तर मरतबा बड़ी आजिज़ी व इन्किसारी के साथ सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उसकी सलामती की दुआयें कीं। अल्लाह तआ़ला ने करम फ़रमाया और उसे जो तकलीफ़ें होना थीं उसे ख़्वाब से बदल दिया और ताजिर सेहत व आफ़ियत के साथ वापस आया।

एक मरतबा का ज़िक्र है कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मजलिस में तशरीफ़ फ़रमा थे। एक शख़्स ने कहा कि आप यहीं इन्तिज़ार फ़रमायें मैं अभी आता हूँ। इतना कह कर वह चला गया। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इन्कार नहीं फ़रमाया। गोया आपने उसके कहने पर रज़ामन्दी ज़ाहिर फ़रमा दी और उसी जगह मौजूद रहने का वादा कर लिया। इसलिए आप एक दिन एक हफ़्ता एक माह नहीं बल्कि एक साल तक उसी मक़ाम पर मौजूद रहे और किसी दूसरी जगह तशरीफ़ नहीं ले गए। यह ऐन सरकारे दो आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत थी। पैग़म्बरे इसलाम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को भी तिजारत के सिलसिले में कई बार इस क़िस्म का वाक़िया पेश आया था। एक मरतबा तीन दिन तक हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम किसी के वादा करने पर इसी तरह तीन दिन तक उसी मक़ाम पर रहे थे।

गुफ़्तगू में सच बोलना

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ज़ाबने मुबारक कभी भी झूट नहीं बोलती थी। बचपन से लेकर ज़िन्दगी के आख़िरी लमहात तक कभी भी आपकी ज़बान पर झूट नहीं आया।

एक मरतबा किसी शख़्स ने सवाल किया कि अज़मत व बुज़ुर्गी का मदार किस चीज़ पर है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बिला तकल्लुफ़ जवाब दिया सदाक़त और सच्चाई यानी सच बोलने पर है। इस जवाब से सदाक़त व सच्चाई की अहमियत पर कितनी ज़बरदस्त रोशनी पड़ती है जिससे मुसलमानों को और ख़ासकर उन लोगों को कितना सबक़ मिलता है जो बिला वजह भी झूट बोला करते हैं और झूट बोलने को अपनी आदत बना लेते हैं और वो लोग झूट के ख़तरनाक नतीजों को भूल जाते हैं।

अल्लाह रे सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की सच्चाई की इन्तिहा कि आपने बचपन में भी अपनी ज़बान को झूट बोलने से महफ़ूज़ रखा जबकि एक जंगल में आंखों के सामने क़ाफ़िला लुट रहा था। ऐन उसी लूट के वक़्त डाकूओं ने आपसे नक़दी के बारे में पूछा तो आपने साफ़ साफ़ ज़ाहिर फ़रमा दिया कि हाँ मेरे पास दीनार हैं और इतने दीनार इस जगह मौजूद हैं। ऐसी सूरत में आप इन्कार न फ़रमा कर सिर्फ़ ख़ामोश ही रहते जब भी आपकी रक़म की पर्दापोशी हो सकती थी। लेकिन अब इस सच बोलने का नतीजा वह ज़ाहिर हुआ जिसकी आज भी ज़मीन से आसमान तक धूम मची हुई है। न सिर्फ़ यह कि आप सच बोलते थे बल्कि दूसरों को भी सच बोलने वाला समझते थे। आपके सामने कोई शख़्स क़सम खाता तो आप फ़ौरन यक़ीन फ़रमा लेते थे। सच बोलने के साथ साथ आपने अपनी ज़बान को बेहूदा और फ़ुज़ूल बातें बकने से भी अपने आपको हमेशा महफ़ूज़ रखा।

ग़ीबत, बदकलामी, गाली गलौज, चुग़लख़ोरी, बेहूदगी, फ़ुहश बयानी (गन्दी बातें), झूट बोलना ये सब ज़बान के गुनाह हैं और अकसर देखने में आया है कि इनसे बड़े बड़े फ़ितने खड़े हो जाते हैं। सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु इन सब बातों से पाक थे, ख़ामोशी को ज़्यादा पसन्द फ़रमाते थे। दूसरों को भी ज़बान की हिफ़ाज़त और सच्चाई की ताकीद किया करते थे। मीठा बोलना सच बोलना दिल को अच्छी लगने वाली बातें करना ये सब आप में बहुत अच्छी तरह पाई जाती थीं।

जब किसी शख़्स को अल्लाह तआ़ला के हुक्म के ख़िलाफ़ काम करते देखते तो पहले उसे नर्मी से समझाते और नसीहत फ़रमाते थे लेकिन यह एहसास हो जाने के बाद कि यह शख़्स बार बार समझाने और नसीहत करने के बावुजूद नहीं बाज़ आता है तो फिर उसे सख़्ती से मलामत करते और अपनी नाराज़गी का इज़हार फ़रमाते थे। शरीअत के ख़िलाफ़ और बेहूदगियों से सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को बेहद नफ़रत थी। ख़्वाहिशात और इख़्तिलाफ़ात देखते ही सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को जलाल आ जाता था मगर शुरू में हमेशा नर्मी से काम लेते थे।

<u>सच्चाई का हैरत अंगेज़ करिश्मा</u> : अभी पिछले सफ़हात पर आपने पढ़ा कि सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु एक तिजारती क़ाफ़िले के साथ, बग़दादे मुक़द्दस रवाना हुए थे। वालिदे गिरामी के तर्के से मिले वालिदा के पास हिफ़ाज़त से रखे हुए अस्सी दीनारों में से मुक़द्दस माँ ने चालीस दीनार आपके छोटे भाई के लिए अलाहिदा कर के अपनी क़ीमती दुआओं के साथ आपको घर से रवाना करते वक़्त चालीस दीनार आपकी बग़ल के नीचे हिफ़ाज़त से एक कपड़े में सी दिए उसके बाद आपको प्यार किया और हलाल कमाई और सच बोलने के बारे में नसीहत फ़रमाई। सारी बुराईयों की जड़ तमाम गुनाहों और ख़ताओं की जड़ हराम ग़िज़ा है कि जब आदमी के पेट में हराम ग़िज़ा पहुँचेगी तो चूंकि ग़िज़ा ही से

जिस्म में ख़ून पैदा होता है। जब शिकम के अन्दर हराम व शक वाली ग़िज़ा होगी तो उससे हराम काम ज़्यादा होंगे और अगर हलाल व नेक कमाई से ग़िज़ा खाएगा तो यक़ीनन नेक काम करेगा और अच्छे किरदार का होगा वह इसलिए कि इन्सान के तमाम किरदार और अमल उसी .कुव्वत के ज़रिए ज़ाहिर होते हैं जो जिस्मानी आज़ा में ग़िज़ा की बदौलत इकट्ठा होती है। इसीलिए बुज़ुर्गाने दीन फ़रमाते हैं कि तुम ऐसे शख़्स को जो माले हराम से तअल्लुक़ रखता हो उसे अच्छे काम करते हुए देख कर यह यक़ीन न करो कि उसका वह अमल ख़ुदाए तआला की बारगाह में मक़बूल होगा बल्कि ऐसे लोगों के आमाल अल्लाह तआला की बारगाह में बिल्कुल मक़बूल नहीं। इसलिए कि इस अमल में क़बूलियत हासिल करने के लिए वह ख़ुलूस आ ही नहीं सकता जो ख़ुदाए तआला के नज़दीक क़िसी अमल के मक़बूल होने की बुनियादी शर्त है। हर मुसलमान और ख़ासकर राहे सुलूक के मुसाफ़िरों के लिए हलाल खाना बहुत ज़रूरी है और उसकी बुनियादी अहमियत से भला कौन इन्कार कर सकता है।

हलाल खाने के बाद बात की सच्चाई की अज़मत है। झूट तमाम बुराईयों की जड़ है और सच्चाई तमाम भलाईयों की जड़ है अगरचे कभी ऐसा भी होता है कि बाज़ मौक़े पर झूट बोलने से फ़ायदा नज़र आता है मगर दुनियावी फ़ायदे के सामने आख़िरत का अज़ाब बहुत सख़्त है लिहाज़ा हमें हमेशा सच बोलने का पक्का इरादा कर लेना चाहिए।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद्रियल्लाहु तआला अन्हु का सिर्फ़ यही एक वाक़िया सच्चाई का फ़ायदा व हक़ीक़त मालूम करने के लिए काफ़ी है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद्रियल्लाहु तआला अन्हु अपनी वालिदा की पाक नसीहतें और चालीस दीनार लिए हुए एक क़ाफ़िले के साथ जीलान से रवाना हुए। रास्ते में मक़ामे हमदान से कुछ दूर आगे पहुँचे तो साठ हथियारबन्द डाकूओं ने घेर लिया और काफ़िले वालों का सारा सामान लूट लिया।

इसी दौरान एक डाकू ने सरकारे ग़ौसे आज़म के पास आकर पूछा तुम्हारे पास क्या है? सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बिना डरे हुए फ़रमाया मेरे पास चालीस़ दीनार हैं। दुनिया में ऐसी हाल़त में सच बोलते हुए शायद डाकू ने कभी किसी को न देखा होगा। इसलिए डाकू ने सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बात को मज़ाक़ समझा और हंस कर चल दिया। जब सारे क़ाफ़िले को लूट कर डाकूओं ने माल व दीनार अपने सरदार के सामने जमा किया तो उसने मालूम किया कि क़ाफ़िले का कोई आदमी बच तो नहीं रहा। उसके जवाब में एक डाकू ने कहा ऐ मेरे सरदार आज तक तो क़ाफ़िले वालों का हम मज़ाक़ करते हुए उनको लूट लिया करते थे मगर आज ऐसे क़ाफ़िले से साबेक़ा पड़ा है जिसमें एक नौजवान है जो हम से मज़ाक़ कर रहा था। उसकी बेसरोसामानी पूरे तौर पर यक़ीन दिला रही थी कि उसके पास कुछ नहीं हैं मगर जब मैंने उससे पूछा कि तुम्हारे पास क्या है तो वह नौजवान कहता है कि मेरे पास़ चालीस दीनार हैं। ज़ाहिर है कि जिस माहौल में उससे पूछा गया भला जिस किसी के पास कोई मामूली सी भी रक़म होगी वह ऐसी सूरत में छुपाने ही की कोशिश करेगा नाकि अपनी छुपी रक़म को ज़ाहिर कर देगा। यह कैफ़ियत सुन कर सरदार ने सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को अपने पास बुलाया और उससे भी यही बातें हुईं। आख़िर में उसने पूछा अच्छा तो वो चालीस़ दीनार कहाँ हैं। सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया बग़ल के नीचे कपड़े में सिले हुए हैं। चुनांचे कपड़ा जो उधेड़ा गया तो दीनार खनखना कर ज़मीन पर आ गए। डाकूओं के सरदार को बड़ी हैरत हुई और उसने पूछा आपने हमें सच क्यूँ बता दिया? फ़रमाया वालिदा माजिदा ने रुख़सत करते हुए हलाल खाना खाने और सच बोलने की हिदायत की थी और मैंने वादा किया था कि हर हाल में उसकी पाबन्दी करूँगा। क़िसमत से रास्ते ही में इम्तिहान की घड़ी आ गई। मैंने

झूट बोलना अपने वादे और माँ की नसीहत के ख़िलाफ़ समझा। इन्हीं दो चीज़ों ने मुझे सच्चाई पर आमादा किया है। आपकी इस सच्चाई ने डाकूओं के सरदार पर बिजली की तरह असर किया और सच्चाई का हैरतअंगेज़ करिश्मा ज़ाहिर हुआ।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद्दियल्लाहु तआला अन्हु का जवाब सुनकर डाकूओं के सरदार की आंखों से आंसू जारी हो गए और रोते हुए सरकारे ग़ौसे आज़म रद्दियल्लाहु तआला अन्हु से कहने लगा तुम अपनी वालिदा से किए हुए वादे की इस क़द्र पाबन्दी व लिहाज़ करते हो मगर अफ़सोस हमारा क्या हश्र होगा मैं तो एक ज़माने से ख़ुदाए तआला के हुक्म और वादे की नाफ़रमानी और उससे खुली हुई बग़ावत कर रहा हूँ। ऐ ज़मीन और आसमान के मालिक तेरी शाने करीमी के सहारे अब मैं सरकशी व बग़ावत और तेरी वादा ख़िलाफ़ी से बाज़ आता हूँ। यह कहते हुए सरकारे ग़ौसे आज़म रद्दियल्लाहु तआला अन्हु के नूरानी हाथ पर डाकूओं के सरदार ने तौबा की। उसके बाद अपने साथियों से यूँ कहने लगा आज मुद्दतों का भागा हुआ सरापा गुनाहों और सरकशी में डूबा हुआ एक बन्दा अपने मौला व मालिके हक़ीक़ी के आस्ताने आलिया तक पहुँच गया है। अब मैंने सच्चे दिल से गुनाहों और नाफ़रमानियों से किनाराकशी इख़्तियार कर ली है इस लिए अब न तुम मेरे साथ रह सकते हो न मैं तुम्हारे साथ रहूंगा तुम आज़ाद हो जो चाहो करो लेकिन अब तुम्हारी राह कोई और है और मेरी राह कोई और है।

लुटेरे साथियों ने जवाब में कहा डकैती में आप हम सबके सरदार थे, तो जब गुनाह व नाफ़रमानी और बग़ावत में हमने आपका साथ दिया है तो क्या नेकूकारी और अल्लाह तआला की इताअत व फ़रमाबरदारी में आप हम को अपने से जुदा कर देंगे? यह कहते हुए सबके सब डाकूओं ने उसी वक़्त तौबा की और तमाम लूटा हुआ सामान सरकारे ग़ौसे आज़म रद्दियल्लाहु तआला अन्हु के क़ाफ़िले वालों को वापस किया और पूरी जमाअत ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद्दियल्लाहु तआला अन्हु के नूरानी हाथों पर तौबा की। हो सकता है कि यहाँ झूट भी काम दे सकता और इस तरह वह चालीस

दीनार महफ़ूज़ भी रह जाते लेकिन सच्चाई की करिश्मासाज़ी कितनी हैरतअंगेज़ सबित हुई कि उस चालीस दीनार के साथ सारे क़ाफ़िले वालों का माल वापस मिल गया और सबसे बड़ी बात तो यह है कि साठ डाकूओं को तौबा की तौफ़ीक़ मिल गई जो बजाए ख़ुद इतना बड़ा कारनामा है कि अगर पूरी जमाअत में से सिर्फ़ एक ही आदमी की हिदायत के लिए सारा माल व असबाब चला जाता तो इस सूरत में भी यह सौदा महंगा न बैठता।

सरकारे ग़ौसे आज़म की सीरत एक नज़र में

सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु अख़लाक़ी एतेबार से बहुत बड़े मक़ाम पर थे और अल्लाह तआला के बन्दों के साथ इस क़द्र मेहरबान थे कि हर शख़्स अपनी जगह पर यह जानता था कि आपको जितनी शफ़क़त व महब्बत मुझसे है किसी ग़ैर से नहीं है। तलबा पर इस हद तक मेहरबानी करते थे कि उनकी बेलाग फ़ितरत को भी गवारा फ़रमा लेते थे बावुजूद यह कि वक़्त के अमीर लोग और बादशाह वग़ैरह आपकी बारगाह में आना फ़ख़्र समझते थे।

हमेशा आप ज़ईफ़ों और ग़रीबों के साथ महफ़िल किया करते थे और बेइन्तिहा महब्बत फ़रमाते थे। बड़ी उम्र वाले और बुज़ुर्गों की इज़्ज़त किया करते थे और उनका बड़ा इहतेराम करते थे। छोटों पर बेहद शफ़क़त फ़रमाते थे। किसी की तकलीफ़ व मुसीबत सुनते ही आप रंजीदा हो जाते थे। मिसकीनों और नातवानों और फ़क़ीरों से तवाज़ो व इन्किसारी से पेश आते थे। कोई शख़्स कोई सवाल करता उसी वक़्त पूरा कर दिया करते थे।

आपके ज़माने के कुछ औलियाए किराम ने आपके औसाफ़े मुबारका लिखे हैं जो चन्द लफ़्ज़ों में हैं लेकिन हक़ीक़त यह है कि वो चन्द लफ़्ज़ हर एतिबार से बिल्कुल मुकम्मल है जिसका तर्जमा यह है :-

हज़रते शैख़ मुहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर रदियल्लाहु तआला अन्हु ख़ूबसूरत हंसमुख ख़ुश्तबा शर्म वाले इताअत गुज़ार अच्छे

अख़लाक़ वाले ख़ुशबूदार पसीना वाले शफ़ीक़ और मेहरबान साथ में बैठने वाले की इज़्ज़त करने वाले और उनकी ख़ुशी से ख़ुश होने वाले और उन्हें रंजीदा देख कर रंजीदा होने वाले अच्छी ज़बान वाले और साफ़ साफ़ अलफ़ाज़ बोलने वाले थे।

और बाज़ दूसरे औलियाए किराम ने यूँ लिखा है सय्यिदी शैख़ मुहीउद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु नर्म दिल वाले ख़ुदा से डरने वाले बावक़ार मुसतजाबुद्दावात (वह शख़्स जिसकी दुआयें क़बूल होती हों) और अच्छी आदत वाले थे और आपका पसीना ख़ुशबूदार था आप बेहूदगी से दूर रहते थे हमेशा अल्लाह तआ़ला की तरफ़ मुतवज्जा रहते थे। जब कोई अल्लाह तआ़ला के फ़रमान के ख़िलाफ़ करता तो आप ख़ौफ़ज़दा हो जाते और अपने लिए कभी भी किसी पर ग़ुस्सा नहीं फ़रमाते हाँ रब की बारगाह में किसी ने अगर बेअदबी की तो आपने उसको माफ़ नहीं किया। किसी मांगने वाले को आपने कभी महरूम नहीं लौटाया अगर किसी ने आपके जिस्मे अतहर के लिबास का सवाल किया तो लिबास भी दे दिया। अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ आपके साथ रहती थी और अल्लाह तआ़ला की इमदाद आपकी मददगार थी। अल्लाह तआ़ला ने आपको संवार दिया था और अल्लाह तआ़ला की नज़दीकी ने आपको बाअदब बना दिया था। ख़ुतबा और तक़रीर आपके साथी और ख़त और तहरीर आपके पैग़ाम पहुँचाने वाले थे। उन्स और महब्बत आपके दोस्त थे। आपके दरयाए करम से हर शख़्स फ़ैज़याब था। सच्चाई आपका मुशाहदा, फ़तह आपकी दौलत और बुर्दबारी आपका काम था। अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र आपका वज़ीर था और अल्लाह तआ़ला की सिफ़ात में रातों को ग़ौर व फ़िक्र करना आपका महबूब मशग़ला था। कश्फ़ आपकी ग़िज़ा थी। अल्लाह तआ़ला के हुस्न का मुशाहदा आपके लिए शिफ़ा थी। आपका ज़ाहिर शरीअते मुहम्मदी अलैहित्तहीयतो वस्सना के आदाब से सजा था और आपका बातिन अल्लाह तआ़ला के नूर से रौशन था।

ये सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के औसाफ़े हमीदा और कमालाते रफ़ीआ का बहुत मुख़्तसर मगर मुकम्मल तबसिरा कहा जा सकता है और अगर ज़हन व फ़िक्र की तवानाइयों के साथ ग़ौर किया जाए तो यह हक़ीक़त खुल सकती है कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को इन औसाफ़े हमीदा और कमालाते रफ़ीआ को हासिल करने के सिलसिले में किस क़द्र मेहनत और मशक़्क़त उठानी पड़ी होगी, कितने मुजाहदे और रियाज़तें की होंगी, कितनी मुसीबतें और परेशानियाँ आपने उठाई होंगी और इन मेहनतों रियाज़तों को ख़ुदाए क़दीर ने क़बूल करके आपको इन मेहनतों और कोशिशों के सिला में कितना बलन्द मरतबा अता फ़रमाया। मुसलमानों को चाहिए कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के अख़लाक़े हसना और हयाते तय्यबा के ज़िक्रे जमील को बग़ौर पढ़ें और सोचें कि इसलाम अपने चाहने वालों से किन पाकीज़ा किरदार और आला अख़लाक़ का मुतालबा करता है और दुनिया में कामयाबी और आख़िरत की कामरानी हासिल करने के लिए किस तरह के अख़लाक़ और औसाफ़ दरकार हैं अगर मुसलमान सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की मुक़द्दस ज़िन्दगी के आइना में उन अख़लाक़े करीमा और औसाफ़े हमीदा को पढ़ कर हक़ के मुताबिक़ सबक़ हासलि करें और अपनी ज़िन्दगी में यही अख़लाक़ और औसाफ़ पैदा कर लें तो यक़ीनन यह मुसलमानों के लिए बहुत बड़ी कामयाबी और सआदत-मन्दी की ज़मानत होगी, ख़ास कर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से हक़ीक़त में महब्बत रखने वालों को दीन के मसीहा अपने रूहानी पेशवा सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की मुबारक ज़िन्दगी के उसूलों को अपना कर सआदतमंदी हासिल करनी चाहिए।

और मुहक़्क़िक़ अलल इतलाक़ शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुहद्दिस देहलवी ने अपनी किताब अख़बारुल अख़यार में ह़म्द और नात के बाद अपनी किताब की शुरूआत सरकारे ग़ौसे आज़म

रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुक़द्दस हालात और फ़ज़्ल व कमालात से की है। अपनी इस किताब में शैख़ अ़ब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ज़ाते मुबारका से मुताल्लिक़ जो कुछ तहरीर फ़रमाया है अगर हम उस पर नज़र डालें तो वह गोया इजमाली तौर पर सीरते सरकारे ग़ौसे आज़म है। यहाँ उसका तर्जमा पेश किया जा रहा है जो मुख़्तसर तौर पर यूँ है :-

हज़रते सय्यिदुना मुहीउद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अहले बैत के वलियों में कामिल तरीन वली और तमाम औलियाए किराम के सरदार हैं और सादाते हसनिया से हैं। बहुत अज़ीम व बुज़ुर्ग अ़ब्दुल्लाह महज़ इब्ने हसन मुसन्ना इब्ने इमामुल मुस्लिमीन हसन मुजतबा इब्ने अमीरुल मोमिनीन हज़रते अली करमुल्लाहु तआ़ला वजहहुल करीम (रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम) के पोते हैं। ईरान के एक गांव जीलान में आप 470 हिजरी या 471 हिजरी में पैदा हुए। इसी मुनासबत से सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जीलानी या गीलानी कहलाते हैं।

तैंतीस साल पढ़ाने व फ़तवा लिखने में गुज़ारे। चालीस साल तक मख़लूक़ को अपने वाज़ व तक़रीरों के ज़रिए सीधी राह की तरफ़ बुलाते रहे। नव्वे साल की उम्र पाई और हिजरी 561 में विसाल फ़रमाया। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हिजरी 488 में जब सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की उम्र शरीफ़ अट्ठारह साल थी, बग़दाद तशरीफ़ लाए और यहाँ के उलमा व मशाइख़ से पहले .कुर्आने करीम को नक़्लन व अक़्लन तजवीद से ख़त्म फ़रमाया। उसके बाद जय्यद आलिमों और मुहद्दिसों से हदीसें सुनी। उसूल और हदीस और फ़िक़्ह और तफ़सीर और दूसरे राइज उलूम व फुनून को पूरा किया और सिर्फ़ बग़दाद ही के उलमा नहीं बल्कि अपने वक़्त के तमाम उलमा से बढ़ गए और दुनिया के तमाम उलमा और .फुज़ला के मरकज़े अक़ीदत बन गए।

इसके बाद अल्लाह तआ़ला ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को लोगों पर ज़ाहिर फ़रमा दिया। लोगों के दिलों में आपके लिए अज़मत व महब्बत पैदा कर दी। ग़ौसियते कुबरा, विलायते उज़मा और इज्तिहादे मुतलक़ा के मरतबा पर पहुँचा कर तमाम उलमा और .फुज़ला और मशाइख़ और तलबा और आम लोगों के दिलों को सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तरफ़ झुका दिया। आपका क़ल्बे मुबारक जो अल्लाह तआ़ला के भेदों का समुंद्र था। ज़बान के ज़रिए उस समुंद्र से हिकमत के चश्मे जारी होते थे। मलकूते आला से ज़मीन की तह तक आपकी अज़मत का एलान फ़रमा दिया। आपकी .कुदरत की अलामतें, विलायत और मुशाहदा की निशनियाँ, करामत की दलीलें दोपहर के सूरज से भी ज़्यादा ज़ाहिर फ़रमा दिया। जूद व सख़ा के ख़ज़ानों की कुंजियाँ और मख़लूक़ पर तसर्रुफ़ात की लगाम सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के क़ब्ज़े में दे दिया और तमाम लोगों के दिलों में आपका रोब डाल दिया, तमाम औलियाए किराम आपके फ़रमाबरदार बना दिए गए यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला का हुक्म हुआ कि तुम एला़न कर दो कि बेशक मेरा यह क़दम तमाम औलिया अल्लाह की गर्दन पर है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के एलान करते ही तमाम औलियाए किराम चाहे हाज़िर थे या ग़ायब नज़दीक थे या दूर ज़ाहिर थे या छुपे हुए सभी ने अपना अपना सर झुका लिया और आपके फ़रमाबरदार हो गए, इस उम्मीद पर कि आपकी फ़रमाबरदारी के ज़रिए हमारे मरतबे बलन्द हों और इस बात के ख़ौफ़ से कि कहीं आपकी नाफ़रमानी से हमारी विलायत न छिन जाए। हज़रते शैख़ .कुतुबे वक़्त ग़ौसे आज़म ख़लीफ़तुल्लाह वारिसे किताबे इलाही नाइबे रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हिदायत के बादशाह और मख़लूक़ में तसर्रुफ़ फ़रमाने वाले हैं।

महबूबे सुब्हानी हुज़ूर ग़ौसे आज़म जीलानी के कमालात व करामात

तू है वह ग़ौस कि हर ग़ौस है शैदा तेरा
तू है वह ग़ैस कि हर ग़ैस है प्यासा तेरा
क्यूँ न क़ासिम हो कि तू इब्ने अबिल क़ासिम है
क्यूँ न क़ादिर हो कि मुख़्तार है बाबा तेरा

(आलाहज़रत सरकार अलैहि रहमतुल ग़फ़्फ़ार)

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की करामात व कमालात किताबों के अन्दर इतने ज़्यादा लिखे हुए हैं कि शायद ही किसी दूसरे वली की इतनी करामतें होंगी।

हज़रते इमाम याफ़िई रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह बयान फ़रमाते हैं कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की करामात शुमार से बाहर हैं। अकसर करामतें तवातुर के मरतबे को पहुँची हुई हैं। (तवातुर औलियाए किराम और उलमाए किराम की ज़बान में ऐसे वाक़िए को कहते हैं जिस वाक़िए को बयान करने वाले हर ज़माने में बहुत से औलियाए किराम और बेहतरीन क़िस्म के उलमाए किराम रहे हों। मिसाल के तौर पर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की मशहूर करामत कि सरकारे ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया मेरा यह क़दम तमाम औलिया अल्लाह की गर्दन पर है तो हुज़ूर ग़ौसे पाक की इस अज़ीमुश्शान करामत को हर ज़माने के औलियाए किराम और उलमाए किराम ने लोगों में बयान फ़रमाया। इस तरह के वाक़ियात को तवातुर कहते हैं।)

मुह़क़्क़िक़ अलल इतलाक़ हज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ साहब मुहद्दिस देहलवी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़माने में रहने वाले एक मशहूर

वली हज़रते अली इब्ने हीती रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं :-

"मैंने अपने ज़माने में सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से ज़्यादा करामात वाला किसी दूसरे वलीउल्लाह को नहीं देखा। जो शख़्स जिस वक़्त सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से चाहता करामत देखता और कभी सरकारे ग़ौसे आज़म से ज़ाहिर होती थी कभी सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु में।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के फ़ज़ाइल व कमालात और आपकी बेशुमार करामात में से कुछ यहाँ पेश की जा रही हैं।

सरकारे ग़ौसे आज़म का इल्मे ग़ैब

अल्लामा जौज़ी : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इल्मी कमाल का यह हाल था कि जब बग़दाद में आपकी मजलिसे वाज़ में साठ साठ और सत्तर सत्तर हज़ार इन्सानों का मजमा होने लगा तो बाज़ आलिमों को हसद होने लगा कि एक अजमी शख़्स को बग़दाद में इस क़द्र मक़बूलियत क्यूँकर हासिल हो गई। चुनांचे हाफ़िज़ अबुल अब्बास अहमद इब्ने अहमद बग़दादी और अल्लामा हाफ़िज़ अब्दुल रहमान इब्ने जौज़ी जो दोनों अपने वक़्त में इल्म के समुन्द्र और हदीसों के पहाड़ जाने जाते थे सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के वाज़ की मजलिस में इम्तिहान की ग़रज़ से ये दोनों हज़रात आए और एक दूसरे के आमने सामने बैठ गए। जब सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने तक़रीर शुरू फ़रमाई तो एक आयते करीमा की तफ़सीर बयान फ़रमाने लगे। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने पहली तफ़सीर सुनाई तो इन दोनों आलिमों ने एक दूसरे की तरफ़ देखा और तसदीक़ करते हुए सर हिला दिया। इसी तरह ग्याहर तफ़सीरों तक तो दोनों हज़रात एक दूसरे की तरफ़ देख देख कर सर

हिलाते और तसदीक़ करते रहे मगर जब सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उसी आयते करीमा की बारहवीं तफ़सीर बयान फ़रमाई तो उस तफ़सीर से यह दोनों आलिमे दीन नावाक़िफ़ थे इसलिए आंखें फाड़ फाड़ कर दोनों हज़रात हुज़ूर ग़ौसे आज़म का चेहरए अनवर देखने लगे मगर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की इल्मी शान का यह आलम था कि उसी आयते करीमा की चालीस तफ़सीरें मुसलसल बयान फ़रमाते चले गए और ये दोनों हज़रात हैरत में डूबे हुए सुनते और सर धुनते रहे फिर आख़िर में हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया कि अब हम क़ाल से हाल की तरफ़ पलटे। यह फ़रमाया और एक मरतबा जो बलन्द आवाज़ से कलिमए तय्यबा का ज़ोरदार नारा लगाया तो सारी मजलिस में एक जोशे कैफ़ियत तारी हो गई और बेचैनी पैदा हो गई और हज़रत अल्लामा इब्ने जौज़ी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने तो जोशे हाल में अपने कपड़े तक फ़ाड़ डाले।

बग़दाद शरीफ़ के सौ .फुक़हा हैरान : मोतबर रिवायत है कि जब सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के वाज़ व इरशाद की शोहरत आम हुई तो दूर दूर से इल्म व मारिफ़त के शैदाई परवानों की तरह आपकी मजलिसे वाज़ में शरीक होने लगे हत्ताकि वक़्त के दूसरे मशहूर व मारूफ़ वाज़ कहने वालों की तरफ़ कम जाने लगे जिससे दूसरे वाज़ कहने वालों को मलाल हुआ। चुनांचे वक़्त के सौ .फुक़हा जो इल्मे फ़िक़्ह में आला मक़ाम रखते थे, उन्होंने यह प्रोग्राम बनाया कि अलग अलग इल्मों से सख़्त से सख़्त सौ मसाइल चुन लिए जायें और हर शख़्स एक एक मसअला ऐन वाज़ के वक़्त भरे मजमे के अन्दर आपसे पूछे तो आप एक ही वक़्त में मुश्किल सवालों के जवाब देने से आजिज़ हो जायेंगे और ख़ुद-ब-ख़ुद लोगों की अक़ीदत आप से ख़त्म हो जाएगी। अल्लाह की पनाह।

चुनांचे हर एक फ़क़ीह ने एक एक मसअला जो उनके जानने में मुश्किल से मुश्किल नज़र आया चुन लिया और एक

ही वक़्त में सब इकट्ठे होकर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की मजलिसे वाज़ में पहुँचे। ठीक उसी वक़्त सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के सीनए मुबारक से नूर की एक ऐसी बिजली चमकी जिसे हाज़िरीन में से कोई न देख सका मगर जिसे ख़ुदा ने चाहा उसने देखा। वह बिजली एक एक करके उन सभी सौ फ़क़ीहों के सीनों में पैवस्त हो गई। फिर वो सारे के सारे फ़क़ीह एक साथ चीख़ने लगे और अपने कपड़े फाड़ डाले और अपने इमामे उतार कर फेंक दिए और दौड़ कर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुबारक क़दमों में अपना अपना सर डालने लगे। उसके बाद सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हर एक को अपने सीनए अक़दस से लगाते जाते और फ़रमाते जाते थे कि तेरा यह सवाल है और इसका यह जवाब है। इस तरह सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उन सब के सावालात और उनके जवाबात इरशाद फ़रमाए।

हज़रत शैख़ मुफ़र्रिह रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाते हैं कि जब मजलिस ख़त्म हुई तो उनसे पूछा गया कि तुम्हें यह क्या हो गया था? उन फ़क़ीहों ने बताया कि जैसे ही हम लोग सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की मजलिसे मुबारक में आकर बैठे तो जो कुछ हमें आता था अचानक हमारे सीने से ऐसा ख़त्म हो गया गोया हमने एक लफ़्ज़ भी कभी न पढ़ा था। फिर जब सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपने मुबारक सीने से लगाया तो हमारा सारा इल्म वापस आ गया बल्कि इतना ज़्यादा इल्मों से हम लोग मालामाल हो गए जो हम पहले नहीं जानते थे।

शैख़ ज़ैनुद्दीन : बहजतुल असरार शरीफ़ में हज़रते शैख़ ज़ैनुद्दीन अबुल हसन अली इब्ने अबी ज़ाहिर से रिवायत है मैंने एक दफ़ा हज किया और हज के बाद मैं और मेरा एक साथी हम दोनों बग़दाद शरीफ़ में आये। हम इससे पहले कभी बग़दाद शरीफ़ में दाख़िल न हुए थे और किसी को पहचानते न थे।

हमारे पास एक छुरी के सिवा कुछ न था। मैंने उसको बेच डाला और उसकी क़ीमत से चावल ख़रीदे जिसको हमने खाया मगर वह अच्छे मालूम न हुए और हमारा पेट न भरा। हम शैख़ मुहीउद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर की मजलिस में हाज़िर हुए और जब हम बैठ गए तो आपने तक़रीर करनो बन्द कर दिया और फ़रमाया मसाकीन ग़ुरबा अरब से आये हैं, उनके पास छुरी के सिवा कुछ न था। उन्होंने उसको बेच डाला और उसकी क़ीमत से चावल ख़रीदे जो उनको अच्छे मालूम न हुए। उनको उन चावलों से पेट भी न भरा। मुझे यह बात सुन कर बड़ा तअज्जुब हुआ। अपनी बात कहने के बाद आपने दसतरख़्वान बिछाने का हुक्म दिया। मैंने अपने साथी से आहिस्ता से कहा कि तुम क्या चाहते हो। उसने कहा मैं कशक (एक क़िस्म का सालन) चाहता हूँ। मैंने अपने दिल में कहा कि शहद चाहता हूँ। फिर शैख़ ने ख़ादिम से फ़रमाया कि कशक और शहद लाओ। ख़ादिम ने वह दोनों हाज़िर कर दिए तो सरकारे ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया कि उन दोनों शख़्सों के सामने रख दो और हम दोनों की तरफ़ इशारा किया। ख़ादिम ने कशक को मेरे सामने रख दिया और शहद मेरे साथी के सामने रख दिया। शैख़ ने फ़रमाया इसका उल्टा करो यानी शहद इसके सामने और कशक उसके सामने रखो। फिर तो मैं चिल्ला उठा और लोगों पर से कूदते हुए आपके पास पहुँचा। फिर आपने मुझसे फ़रमाया कि ख़ुशआमदीद ऐ मिस्र में वाज़ कहने वाले। मैंने कहा ऐ मेरे सरदार यह कैसे आपने फ़रमाया क्यूँकि मैं तो अच्छी तरह सूरए फ़ातिहा भी नहीं पढ़ सकता। आपने फ़रमाया कि मुझे हुक्म हुआ है तुम को यह ख़ुशख़बरी दूँ। हज़रते शैख़ ज़ैनुद्दीन अबुल हसन बयान फ़रमाते हैं कि फिर मैं सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से इल्म पढ़ने लगा तो ख़ुदाए तआ़ला ने मुझ पर इल्म का दरवाज़ा एक ही साल में इतना खोल दिया कि इस क़द्र मेरे सिवा किसी और पर बीस साल तक न खोला होगा। मैंने बग़दाद में वाज़ कहना शुरू किया

फिर मैंने हुज़ूर ग़ौसे आज़म से मिस्र जाने की इजाज़त मांगी तो आपने फ़रमाया कि तुम जब दमिश्क़ के क़रीब पहुँचोगे तो तुम वहाँ तुर्कों को पाओगे जो मिस्र पर हमला करने के लिए तैयार होंगे ताकि उसके मालिक बन जायें। तुम उनसे कहना कि इस दफ़ा तुम हरगिज़ अपने मक़सद को हासिल नहीं कर सकते बल्कि तुम लौट जाओ और दूसरी दफ़ा हमला करना और उसके मालिक बनना। वह कहते हैं कि जब मैं दमिश्क़ के क़रीब आया तो मैंने वही मुआमला पाया जो हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने मुझे फ़रमाया था। मैंने उनसे वही बात कह दी जो आपने मुझसे फ़रमाई थी मगर उन्होंने मेरी बात न मानी। मैं मिस्र गया तो वहाँ का बादशाह उनसे लड़ने की तैयारी कर रहा है। मैंने मिस्र के बादशाह से कह दिया कि यह लोग नाकाम वापस जायेंगे और आप लोग कामयाब होंगे। फिर जब तुर्क मिस्र में आए तो हार गए। तो मुझको मिस्र के बादशाह ने अपना हमनशीन बनाया और मुझको अपने भेदों से ख़बरदार किया।

फिर दूसरी दफ़ा तुर्क जो आए तो वह मिस्र के मालिक हो गए और इस वजह से जो बात कि मैंने पहले उनसे कही थी मेरी बड़ी इज़्ज़त की। मुझको दोनों सलतनतों से शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की एक बतलाने की वजह से ढाई लाख दीनार हासिल हुए। और यह शैख़ ज़ैनुद्दीन मुद्दत तक मिस्र में रहे। उनके बारे में कहा जाता है कि दूसरे इल्म के इलावा किताबे तफ़सीर उनको याद थी और मिस्र में उनको बड़ी मक़बूलियत हासिल हुई।(बहजतुल असरार पेज 215)

हज़रते शैख़ बदीउद्दीन : हज़रते शैख़ बदीउद्दीन अबुल क़ासिम ख़लफ़ इब्ने एयाज़ शाफ़ेई ने बयान किया कि मुझको शाफ़ेइए ज़माना अबू अम्र उसमान इब्ने इस्माईल सादी ने बग़दाद की तरफ़ इसलिए भेजा कि मैं उनके लिए इमाम अहमद रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की किताब मुसनद शरीफ़ हासिल करूँ। चुनांचे जब मैं बग़दाद में आया तो मैंने लोगों को पाया कि लोग शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर मुहीउद्दीन रद़ियल्लाहु तआ़ला

अन्हु का ज़िक्र बड़े शौक़ से करते हैं। मैंने दिल में कहा कि अगर वह ऐसे ही बुज़ुर्ग हैं जैसा कि उनके बारे में कहा जाता है तो वह उस बात को मुझ पर ज़ाहिर कर देंगे जिसकी सूरत मैं दिल में सोचूँ। फिर मैंने एक सूरत सोची जो कि आदत के मुवाफ़िक़ न थी और दिल में यह सोचा कि जब मैं उनकी ख़िदमत में जाऊँ और सलाम करूँ तो वह बुज़ुर्ग मुझको सलाम का जवाब न दें बल्कि अपने चेहरे को मुझसे फेर लें और अपने ख़ादिम से कहें कि इस आने वाले मर्द की पेशानी के दाग़ बराबर एक छुआरा और दो दांग का शहद ला कि ज़र्रा भर इससे ज़्यादा या कम न हो। फिर जब ख़ादिम वह चीज़ें ले आये तो मुझे वह बुज़ुर्ग अपनी टोपी पहनायें और यह काम मेरे सवाल करने से पहले करें। फिर मेरे सलाम का जवाब दें। फिर मैं जल्दी खड़ा हुआ और मदरसे में आया तो शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर को मिहराब में बैठे हुए पाया। जब आपने मेरी तरफ़ देखा तो मैं समझ गया कि आपने मेरे दिल की सारी बातें समझ लीं। मैंने आपको सलाम कहा तो आपने सलाम का जवाब न दिया बल्कि मुझसे मुँह फेर लिया और अपने ख़ादिम से फ़रमाया कि खजूरें इतनी ला कि इस आने वाले शख़्स की पेशानी के दाग़ बराबर हों और दो दांग शहद ला जो कि कम और ज़्यादा न हो। शैख़ बदीउद्दीन कहते हैं कि ख़ुदा की क़सम शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ने वही अलफ़ाज़ कहे जो मेरे दिल में आए थे। एक बात भी उससे कम न थी। जब आपका ख़ादिम आया तो आपने मेरी टोपी ली और उसमें खजूरें डाल दीं गोया कि वह उनका सांचा था। फिर शैख़ ने अपनी टोपी जो उनके सर पर थी पहनाई और मेरे सलाम का जवाब दिया और मुझसे कहा कि ऐ ख़लफ़ क्या तुमने यह सब इरादा किया था, फिर मैं आपकी ख़िदमत में ठहरा और आपसे इल्म हासिल किया, आपसे हदीस सुनी। (बहजतुल असरार पेज 205)

शैख़ अबुल हसन इब्ने तनतना : बहजतुल असरार शरीफ़ में है कि शैख़ अबुल हसन इब्ने तनतना बग़दादी बयान

फ़रमाते हैं कि मैं सय्यिदी मुहीउद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमते अक़्दस में इल्म पढ़ा करता था और मैं रात को अकसर आपकी ज़रूरत के ख़्याल से जागता था। आप सफ़र के महीने हिजरी 553 में एक रात अपने घर के दरवाज़े से निकले तो मैंने आपको लोटा देना चाहा मगर आपने न लिया और मदरसे के दरवाज़े का इरादा किया। वह उनके लिए ख़ुद-ब-ख़ुद खुल गया और आप वहाँ से निकले मैं भी आपके पीछे पीछे बाहर निकल गया। मैं दिल में कहता था कि आपको मेरा इल्म नहीं है और आप चले यहाँ तक कि बग़दाद शरीफ़ के दरवाज़े तक पहुँच गए फिर दरवाज़ा आपके लिए खुल गया और आप वहाँ से निकल गए फिर दरवाज़ा बन्द हो गया और थोड़ी दूर तक आप गए तो क्या देखता हूँ कि हम एक ऐसे शहर में आ गए हैं कि जिस को मैं पहचान न सकता था। आप एक मकान में दाख़िल हुए जो कि सराए की तरह था और देखा तो उसमें छः लोग थे। सबने आपको सलाम किया और मैं वहाँ एक सुतून की आड़ में खड़ा हो गया। मैंने उस मकान की एक जानिब कराहने की आवाज़ सुनी। थोड़ी देर बाद वह आवाज़ बन्द हो गई और एक मर्द आया और उस तरफ़ गया जहाँ से मैंने कराहने आवाज़ आती थी। फिर वह इस हाल में आया कि उसने अपने कंधे पर एक शख़्स को उठाये हुआ था और वह एक तरफ़ को चला गया। फिर एक शख़्स को लाया गया जिसका सर नंगा था। उसकी मूंछों के बाल लम्बे थे। वह शख़्स सामने बैठ गया। शैख़ ने उसको कलिमए शहादत पढ़ाया और उसके सर और मूंछों के बाल कतरे और उसको टोपी पहनाई और उसका नाम मुहम्मद रखा और उन लोगों से कहा कि मुझको हुक्म दिया गया है कि यह शख़्स इस मरहूम के बदले में मुक़र्रर किया जाए। उन सबने कहा बहुत अच्छा। फिर शैख़ निकले और उनको आपने वहीं छोड़ा। मैं आपके पीछे हो लिया और हम थोड़ी दूर चले थे कि देखते हैं कि हम बग़दाद शरीफ़ के

दरवाज़े पर हैं। वह पहले की तरह खुल गया। फिर आप मदरसे में आए उसका दरवाज़ा भी खुल गया और अपने घर में दाख़िल हो गए। जब सुबह हुई तो मैं अपनी आदत के मुताबिक़ शैख़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के सामने पढ़ने के लिए बैठा लेकिन आपकी हैबत की वजह से न पढ़ सका। आपने फ़रमाया बेटा पढ़ कुछ मुज़ाएक़ा नहीं। तब मैंने आपको क़सम दिलाई कि जो मैंने हाल देखा है उसको साफ़ तौर पर बयान फ़रमायें। आपने फ़रमाया वह शहर नोहावन्द था और तुमने जो छः लोगों को देखा वह सब अबदाल थे। वह नर्म आवाज़ वाला उनमें से सातवाँ था। वह बीमार था। जब उसकी मौत क़रीब आई मैं उस वक़्त आया और जो शख़्स उसको अपने कंधे पर उठा कर बाहर ले गया था वह अबुल अब्बास हज़रते ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम थे। वह उसको बाहर इसलिए ले गए थे कि वह उसके ग़ुस्ल वग़ैरह का इन्तेज़ाम करें। जिस शख़्स को मैंने कलिमए शहादत पढ़ाया था वह .क़ुस्तनतेनिया का रहने वाला ईसाई था। मुझे हुक्म दिया गया था कि वह उस मरहूम का बदल और जाँनशीन बन जाए। उसको लाया गया और मेरे हाथ पर वह मुसलमान हुआ। अब वह उनमें से एक है। शैख़ ने मुझसे अहद लिया कि मेरी ज़िन्दगी में यह बात किसी से न कहना। (बहजतुल असरार पेज 207)

<u>पाँच कबूतर की तसबीह</u> : बहजतुल असरार शरीफ़ में है कि शैख़ आरिफ़ अबू अम्र उसमान सरीफ़ीनी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि एक रात सरीफ़ीन में बाहर चित लेटा हुआ था। तब पाँच कबूतर उड़ते हुए मुझ पर से गुज़रे। उन कबूतरों में से एक को मैंने आदमी की आवाज़ में बिल्कुल साफ़ तौर पर यह कहते सुना :-

سُبْحَانَ مَنْ عِنْدَهٗ خَزَائِنُ كُلِّ شَيْءٍ وَمَا يُنَزِّلُهٗ اِلَّا بِقَدْرٍ مَّعْلُوْمٍ

तर्जमा : वह अल्लाह पाक है जिसके पास हर शय के ख़ज़ाने हैं और उन्हें उतारता है एक मालूम अन्दाज़े के मुताबिक़।

दूसरे कबूतर को यह कहते सुना :-

سُبْحَانَ مَنْ اَعْطٰی کُلَّ شَیْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰی

तर्जमा : वह पाक ज़ात है कि जिसने हर शय को पैदा किया फिर हिदायत दी।

तीसरे कबूतर को यह कहते सुना :-

سُبْحَانَ مَنْ بَعَثَ الْاَنْبِیَآءَ حُجَّةً عَلٰی خَلْقِهٖ وَفَضَّلَ عَلَیْهِمْ مُحَمَّدًا صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَسَلَّم

तर्जमा : वह अल्लाह पाक है कि अम्बिया अलैहिमुस्सलाम को मख़लूक़ पर हुज्जत भेजा और उन सब पर मुहम्मद सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को फ़ज़ीलत दी।

चौथे कबूतर को यह कहते सुना :-

کُلُّ مَا کَانَ فِی الدُّنْیَا بَاطِلٌ اِلَّا مَا کَانَ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ

तर्जमा : हर शय कि दुनिया में है बरबादी मगर जो कि अल्लाह व रसूल के लिए हो उसे बरबादी नहीं।

और पांचवें को सुना वह कहता है :-

یَآ اَهْلَ الْغَفْلَةِ عَنْ مَوْلَاکُمْ قُوْمُوْا اِلٰی رَبِّکُمْ رَبٌّ کَرِیْمٌ یُعْطِی الْجَزِیْلَ وَیَغْفِرُ الذَّنْبَ الْعَظِیْمَ

तर्जमा : ऐ मौला से ग़फ़लत करने वालो तुम अपने रब की तरफ़ खड़े हो जाओ जो कि बहुत करीम है बहुत कुछ देता है और बड़े गुनाह बख़्शता है।

हज़रते अबू अम्र उसमान सरीफ़ीनी कहते हैं कि मुझे यह सुनकर ग़श आ गया और होश आया तो मेरे दिल से दुनिया और उसकी हर चीज़ की महब्बत जाती रही। जब सुबह हुई तो मैंने ख़ुदा से अहद किया कि मैं अपने आपको ऐसे शख़्स के सिपुर्द करूंगा जो मेरे रब का रास्ता मुझे बताए और मैं वहाँ से चल दिया मुझे मालूम नहीं था किधर जा रहा हूँ। तब मुझको एक शख़्स मिला जो कि हैबत वाला और रौशन चेहरे वाला था। मुझसे उसने कहा अस्सलामुअलैकुम या उसमान। मैंने उनके सलाम का जवाब दिया और क़सम दी कि आप कौन हैं? और मेरा नाम आपने कैसे जान लिया हालांकि मैंने

आपको कभी नहीं देखा। उन्होंने कहा कि मै ख़िज़्र हूँ और इस वक़्त शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर के पास था। उन्होंने मुझसे कहा "ऐ अबुल अब्बास आज की रात सरीफ़ीन वालों में एक शख़्स को जिसका नाम उसमान है कशिश हुई है। वह ख़ुदा की तरफ़ मुतवज्जह है। ख़ुदा की तरफ़ से वह मक़बूल हुआ और सातवें आसमान से उसको पुकारा गया ऐ मेरे बन्दे ख़ुशआमदीद। उसने ख़ुदाए तआ़ला से अहद किया कि अपने आपको ऐसे शख़्स के सिपुर्द करे जो कि उसको परवरदगार की राह दिखाए। इसलिए आप जाइये और उसको रास्ते में आप पायेंगे उसको मेरे पास ले आयें" फिर हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने मुझसे कहा कि ऐ उसमान इस ज़माने में शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर आरिफ़ों के सरदार हैं और इस वक़्त आने वालों के क़िब्ला (यानी पेशवा) हैं। तुम्हें उनकी ख़िदमत में हाज़िर होना और उनकी ख़िदमत व इज़्ज़त करना लाज़िम है। फिर मुझको ख़बर न हुई मगर इस हाल में कि मैं बग़दाद में बहुत जल्द पहुँच गया और हज़रते ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम मुझसे ग़ायब हो गए। फिर मैंने उनको सात साल तक न देखा।

तब मैं शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने मुझसे फ़रमाया कि ऐसे शख़्स को मुबारक हो जिसको उसके मौला तबारक व तआ़ला ने जानवरों की ज़बानों में अपनी तरफ़ खींच लिया और उसके लिए बहुत सी नेकी जमा कीं।

ऐ उसमान अनक़रीब ख़ुदाए तआ़ला तुमको एक ऐसा मुरीद देगा जिसका नाम अब्दुल ग़नी इब्ने नक़्ता होगा। वह बहुत से औलिया से बढ़ जाएगा। अल्लाह तआ़ला उसके सबब फ़िरिश्तों के साथ फ़ख़्र फ़रमाएगा। फिर हुज़ूर ग़ौसे पाक ने मेरे सर पर एक टोपी रखी। जब वह टोपी मेरे सर पर आई तो मैंने अपने तालू में ऐसी ठंडक पाई जो मेरे दिल तक पहुँची मेरा दिल बर्फ़ की तरह ठंडा हो गया। तब मुझको आलमे मलकूत का हाल मालूम हो गया। मैंने सुना कि तमाम जहान

और उसकी तमाम चीज़ें मुख़्तलिफ़ बोलियों में ख़ुदा की तस्बीह और पाकी बयान कर रही हैं। क़रीब था कि मेरी अक़्ल जाती रहे। तब हुज़ूर ग़ौसे पाक ने मुझ पर अपनी चादर शरीफ़ डाल दी। फिर अल्लाह तआला ने मेरी अक़्ल क़ायम रखी और मेरा हौसला बढ़ाया। फिर मुझे ख़लवत में हुज़ूर ग़ौसे पाक ने बैठाया और मैं उसमें कई महीने तक रहा। ख़ुदा की क़सम मैंने कोई बात ज़ाहिर व बातिन में ऐसी नहीं पाई कि जिसकी मुझे हुज़ूर ग़ौसे पाक ने मेरे बोलने से पहले ख़बर न दी हो और न मैं किसी मक़ाम पर पहुँचता और न कोई हाल मुशाहदा करता और न कोई ग़ैब का हाल मुझ पर खुलता मगर हुज़ूर ग़ौसे आज़म पहले ही से मुझे ख़बर दे देते और उसके अहकाम तफ़सील के साथ मुझसे बयान कर देते और उसकी मुश्किलात हल कर देते। उसकी अस्ल व फ़रअ मुझे बता देते, हमेशा आप मुझको एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम तक पहँचाते रहे। जहाँ तक ख़ुदा ने चाहा हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने मुझे उन बातों की ख़बरें दीं जो मुझ पर पेश आने वाले थीं। तीस साल के बाद वह बात वैसे ही हुई जैसे आपने ख़बर दी थी। और हुज़ूर ग़ौसे पाक से मुझे ख़िरक़ा पहनने और इब्ने नक़ता के मुझसे ख़िरक़ा पहनने के ज़माने तक पच्चीस साल का फ़ासिला था। वह वैसा ही निकला जैसा कि हुज़ूर ग़ौसे पाक ने फ़रमाया था।

(बहजतुल असरार शरीफ़ पेज 115)

असा का हैरतअंगेज़ करिश्मा : हज़रते अब्दुल्लाह ज़य्याल रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि एक मरतबा रात के वक़्त सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु के मदरसे में खड़ा था कि सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु अन्दर से अपने मुबाकर हाथ में एक असा लिए हुए बाहर तशरीफ़ लाए। अचानक मेरे दिल में ख़्याल पैदा हुआ कि काश आप इस असा के ज़रिए कोई करामत दिखाते। यह ख़्याल मेरे दिल में आते ही सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने असा को ज़मीन में गाड़ दिया। बस वह

मशाल की तरह रौशन हो गया और काफ़ी देर तक रौशन रहा। जब आपने उसे ज़मीन से उखाड़ा तो फिर अपनी असली हालत में आ गया। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इरशाद फ़रमाया ऐ अ़ब्दुल्लाह तुम यही चाहते थे।

हमेशा के लिए रेज़िश का आना बन्द : हज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अह़मद मन्ज़ूर कनानी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बारगाह में हाज़िर था। उस वक़्त शैख़ मुह़म्मद को छींक आई और रेज़िश यानी नाक का पानी निकल आया। उन्होंने झट रुमाल से साफ़ कर लिया मगर इस पर उन्हें सख़्त शर्म महसूस हुई और दिल में कहने लगे कि मुझे ऐसे पाकीज़ा दरबार में नाक साफ़ नहीं करनी चाहिए क्यूँकि यह अदब के ख़िलाफ़ है। मगर वाह रे निगाहे हज़रते ग़ौसियत मआब का कश्फ़ कि शैख़ मुह़म्मद के दिल की इस बात को जान लिया और फ़रमाया ऐ मुह़म्मद कोई हर्ज नहीं है, घबराओ मत आज से तुम्हें कभी थूक और रेज़िश नहीं आएगी।

शैख़ मुह़म्मद इस वाक़िए के बाद काफ़ी अर्से तक ज़िन्दा रहे मगर पूरी ज़िन्दगी में उसके बाद उन्हें थूक और रेज़िश कभी न आई हत्ताकि खांसी व नज़ले की हालत में भी उन्हें बलग़म तक न आया।

लोगों के दिल मेरे हाथ में हैं : हज़रते उमर बज़्ज़ाज़ रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाते हैं कि मैं 15 जुमादल उख़रा हिजरी 556 को जुमा के दिन सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साथ जामे मस्जिद जा रहा था। रास्ते में किसी शख़्स ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को सलाम न किया। मैंने हैरत में डूब कर अपने दिल में कहा कि हर जुमा को तो लोगों की इतनी भीड़ होती है कि बड़ी मुश्किल से हम मस्जिद तक पहुँचते थे, मालूम नहीं आज क्या माजरा है कि कोई आप को सलाम तक नहीं करता। इस ख़याल का आना था कि सरकारे ग़ौसे आज़म

रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने तबस्सुम फ़रमाते हुए मेरी जानिब देखा। इसके साथ ही लोग कसरत से सलाम व मुसाफ़े को टूट पड़े और इसी हंगामे में मैं आप से दूर हो गया। मैं अपने दिल में सोचने लगा कि अपने लिए तो इस हालत से पहली ही वाली हालत अच्छी थी कि मैं सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के क़रीब था।

यह ख़्याल मेरे दिल में आते ही सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फिर तबस्सुम फ़रमाते हुए मेरी जानिब देखा और इरशाद फ़रमाया ऐ उमर तुम्हीं ने तो इसकी ख़्वाहिश की थी क्या तुमको मालूम नहीं है कि लोगों के दिल मेरे हाथ में हैं अगर मैं चाहूँ तो उन्हें अपनी तरफ़ से फेर दूँ और अगर चाहूँ तो उन्हें अपनी तरफ़ झुका लूँ।

नज़रे मुबारक : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मजमे में जिस पर पर अपनी मुक़द्दस आंखों से तवज्जोह फ़रमाते वह कैसा ही सख़्त तबीयत संगदिल क्यूँ न होता मुतीअ व फ़रमाबरदार और आपका ग़ुलाम बन जाता। चुनांचे हज़रते शैख़ मकारिम रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि मैं एक दिन हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमते आली में उनके मदरसे में हाज़िर था कि उसी दौरान फ़ज़ा में तीतर परिन्दा उड़ता हुआ गुज़रा। हज़रते शैख़ मकारिम कहते हैं कि मेरे दिल में ख़्याल आया कि क्या ही अच्छा होता कि मैं तीतर का गोश्त जौ के साथ खाता। इस ख़्याल के आते ही हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ने मेरी तरफ़ देखा और मुस्कुराए और फ़ज़ा की तरफ़ निगाहे मुबारक उठाई। इतने में तीतर मदरसे के सहन में आ गिरा और दौड़ कर मेरी रान पर सवार हो गया। सरकारे ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया ऐ मकारिम तुम्हें जिस चीज़ की ख़्वाहिश है वह ले लो, अल्लाह तआ़ला तुमसे तीतर को जौ के साथ खाने की ख़्वाहिश छीन लेगा। उस वक़्त से आज के दिन तक तीतर के गोश्त से मेरी नफ़रत का यह आलम है कि अगर उसे भून

पका कर मेरे सामने रखा जाए तो मैं उसकी महक भी बर्दाश्त नहीं कर सकता हालांकि इससे पहले तीतर मुझे बहुत ज़्यादा पसन्द था।

दिल की बात का इल्म : शैख़ अबुल बक़ा इकबिरी फ़रमाते हैं कि एक रोज़ मैं हज़रते ग़ौसे आज़म की मजलिसे वाज़ के क़रीब से गुज़र रहा था कि मेरे दिल में ख़याल आया कि इस अजमी का कलाम सुनते चलें। इससे पहले मुझे हुज़ूर ग़ौसे आज़म का वाज़ सुनने का इत्तेफ़ाक़ नहीं हुआ था। जब आपकी मजलिस में हाज़िर हुआ तो आप वाज़ फ़रमा रहे थे। आपने अपना कलाम छोड़ कर फ़रमाया ऐ आँख और दिल के अंधे इस अजमी का कलाम सुन कर क्या करेगा। आपका यह फ़रमान सुनकर मुझसे ज़ब्त न हो सका और आपके मिम्बर के क़रीब जाकर अर्ज़ किया कि मुझे ख़िरक़ा पहनायें। चुनांचे आपने ख़िरक़ा पहनाया और फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआ़ला तुम्हारी आक़िबत (अन्जाम) की मुझे इत्तेला न फ़रमाता तो तुम गुनाहों की वजह से हलाक हो जाते।

(क़लाएदुल जवाहिर)

बातिन का हाल जान लिया : शैख़ अबुल फ़ज़्ल अह़मद इब्ने क़ासिम बज़्ज़ाज़ का बयान है कि एक दफ़ा सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी तैलसान (एक क़िस्म की उमदा चादर) सरे अनवर पर रखते और बग़दाद शरीफ़ के उलमा के तरीक़े पर बड़ा क़ीमती लिबास पहना करते थे। एक दिन हुज़ूर ग़ौसे आज़म का ख़ादिम मेरे पास आया और कहा कि हज़रत के लिए एक ऐसा नफ़ीस कपड़ा चाहिए जिसकी क़ीमत फ़ी गज़ एक अशर्फ़ी हो। मैंने उस ख़ादिम से पूछा कि इतना क़ीमती लिबास किसके लिए है। ख़ादिम ने कहा सय्यिदी ग़ौसे आज़म के लिए है। मैंने कपड़ा तो दिया लेकिन दिल में ख़याल किया कि शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ने तो आज ख़लीफ़ए वक़्त के लिए भी कपड़ा नहीं छोड़ा। इतना ख़्याल आना था कि एक कील आकर मेरे पांव के तलवे में चुभ गई। मैंने जो उस कील

को देखा तो उसमें मेरी मौत नज़र आने लगी। देखते ही देखते मेरे इर्द गिर्द लोग जमा हो गए और उस कील को निकालने लगे। इन्तेहाई कोशिश के बावुजूद भी वह कील नहीं निकल सकी। दर्द की शिद्दत से मेरा बुरा हाल हो गया। जब कोई सूरत कारगर नहीं हुई तो मैंने लोगों से कहा कि मुझे उठा कर हुज़ूर ग़ौसे आज़म की बारगाहे आली में ले चलो। लोग मुझे आपकी ख़िदमते मुबारक में लेकर पहुँचे तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने देखते ही फ़रमाया ऐ अबुल फ़ज़्ल तुझे मेरे लिबास पर एतिराज़ करने का क्या हक़ था ख़ुदा की क़सम मैंने आज तक कोई कपड़ा नहीं पहना जिसका मुझे अल्लाह तआ़ला ने पहनने का हुक्म नहीं दिया। अल्लाह तआ़ला हुक्म देता है कि अ़ब्दुल क़ादिर उस ह़क़ के बदले यह कपड़ा पहन लो जो ह़क़ मैंने तुम्हें अता किया है। फिर इरशाद फ़रमाया ऐ अबुल फ़ज़्ल अस्ल में यह लिबास हमारा कफ़न होता है और कफ़न हमेशा बेहतरीन कपड़े से तैयार किया जाता है, ऐसे हज़ारों कफ़न मैं पहन चुका हूँ। यह बातें करते हुए हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने अपने नूरानी हाथ से कील को मेरे पैर से निकाल दिया और फ़रमाया कि इस शख़्स का एतिराज़ कील की शक्ल इख़्तेयार कर गया था। (क़लाएदुल जवाहिर)

ख़ियानत करने से बचा लिया : शैख़ अबू बक्र तमीमी का बयान है कि एक दफ़ा मैं हज की नियत से मक्का मुअज़्ज़मा जा रहा था। रास्ते में एक जीलानी मुसाफ़िर का साथ हो गया। सफ़र के दौरान वह बहुत बीमार हो गया यहाँ तक कि उसे अपने मरने का पूरा यक़ीन हो गया। चुनांचे उसने मुझे दस दीनार एक चादर और एक कपड़ा दिया और वसीयत की कि जब बग़दाद वापस जाओ तो ये चीज़ें शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी की ख़िदमत में पेश कर देना और उनसे दरख़्वास्त करना कि मेरे लिए दुआए मग़फ़िरत करें। उसके बाद वह फ़ौत हो गया।

हज के बाद मैं बग़दाद वापस आया तो मेरी नियत बदल गई और मैंने उस मरहूम शख़्स की अमानत अपने पास ही रख

ली। एक दिन मैं कहीं जा रहा था कि रास्ते में शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी से मुलाक़ात हो गई। मैंने आपसे मुसाफ़ा किया तो आपने मेरा हाथ पकड़ कर ज़ोर से दबाया और फ़रमाया अबू बक्र तुम दस दीनार की ख़ातिर अल्लाह तआला के ख़ौफ़ से बेपरवाह हो गए।

आपका यह इरशाद सुन कर मुझ पर लरज़ा तारी हो गया और मैं बेहोश हो कर गिर पड़ा। जब होश आया तो दौड़ा हुआ घर गया और उस जीलानी की अमानत ला कर हज़रते ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में पेश कर दी। (क़लाएदुल जवाहिर)

लड़के की विलादत की ख़बर : हज़रते सय्यिद अब्दुल क़ादिर जीलानी के साहबज़ादे सय्यिदुना अब्दुल वह्हाब फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा हज़रते ग़ौसे आज़म सख़्त बीमार हो गए और हम लोग उनके चारों तरफ़ रुआंसू हो कर बैठे हुए थे। तो आपने फ़रमाया अभी मुझे मौत नहीं आएगी मेरी पुश्त में यहया नामी लड़का है जिसकी ज़रूर पैदाइश होगी। चुनांचे आपके फ़रमान के मुताबिक़ साहबज़ादे की विलादत हुई तो आपने उसका नाम यहया रखा। फिर आप अर्से दराज़ तक ज़िन्दा रहे। (क़लाएदुल जवाहिर)

लड़के की बशारत : हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु के अक़ीदतमन्दों में ख़िज़्र हुसैनी मौसली थे। सरकारे ग़ौसे आज़म ने ख़िज़्र हुसैनी को यह ख़ुशख़बरी दी कि तू मौसिल चला जा क्यूँकि वहाँ तेरी पुश्त से एक लड़का मुहम्मद नाम का पैदा होगा जो एक नाबीना हाफ़िज़ जिसका नाम अली होगा। उससे वह लड़का .क़ुर्आने मजीद हिफ़्ज़ करेगा और ऐ ख़िज़्र हुसैनी तू लम्बी उम्र पाकर होशो हवास की हालत में मरेगा। चुनांचे ऐसा ही हुआ कि 601 हिजरी में ख़िज़्र हुसैनी के फ़र्ज़न्द मुहम्मद पैदा हुए और एक नाबीना हाफ़िज़ से .क़ुर्आने मजीद पढ़ कर सात महीने में .क़ुर्आन मजीद हिफ़्ज़ कर लिया और ख़िज़्र हुसैनी ने नव्वे साल एक माह सात दिन की उम्र पाकर इन्तेक़ाल फ़रमाया और आख़िर उम्र तक उनके

होशो हवास बिल्कुल दुरुस्त रहे। मौलाना जाललुद्दीन रूमी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने सच फ़रमाया है :-

लौहे महफ़ूज़स्त पेशे औलिया

अज़ चे महफूज़स्त महफ़ूज़ज़ ख़ता

मफ़हूम : ख़ुदावन्द .कुद्दूस अपने वलियों की आंखों में वह .कुदरतो ताक़त बख़्श देता है कि वो औलियाए किराम ज़मीन पर बैठ कर लौहे महफ़ूज़ की तहरीरों को पढ़ लेते हैं और लोगों की तक़दीरों से आगाह हो ज़ाते हैं।

ख़ुद हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का इर्शादे गिरामी है कि बेशक मेरी आँख की पुतली लौहे महफ़ूज़ में लगी है। इमाम शारानी ने तबक़ाते कुबरा में फ़रमाया है कि आरिफ़े बिल्लाह वह है जिसके दिल में ख़ुदावन्द आलम ने एक ऐसी तख़्ती रख दी है कि मुल्को मलकूत के तमाम राज़ उसमें लिखे होते है और आरिफ़े बिल्लाह उन सबको अपने इल्मो कश्फ़ से जानता और अपने दिल की आंखों से देखता रहता है। हज़रते जामी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने नफ़्हातुल इन्स में लिखा है कि हज़रते ख़्वाजए ख़्वाजगान बहाउद्दीन नक़्शबन्द रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु इस तरह फ़रमाया करते थे कि ख़्वाजा अ़ज़ीज़ान अली राएतनी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का तो यह फ़रमान है कि तमाम रू-ए ज़मीन अल्लाह वालों की नज़र के सामने एक दसतरख़्वान की तरह है मगर बहाउद्दीन नक़्शबन्द कहता है कि तमाम रू-ए ज़मीन औलिया की निगाह के सामने नाख़ुन की तरह से है कि रू-ए-ज़मीन की कोई चीज़ औलियाए किराम की नज़र से छुपी नहीं रह सकती और हुज़ूर ग़ौसे आज़म का तो यह इर्शादे गिरामी है "अल्लाह के तमाम शहरों को मैं इस तरह देख रहा हूँ जिस तरह कोई राई के दाने को देखता है और वह भी मिनट दो मिनट के लिए नहीं बल्कि मुसलसल लगातार और हमेशा यूँ ही देखता रहता हूँ और हर दम हर हाल में सारा जहान मेरे सामने रहता है"

इससे मालूम हुआ कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु की नज़रों से आलम का कोई ज़र्रा छुपा हुआ नहीं। हज़रते अह़मद रिफ़ाई रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह बन्दए कामिल की तारीफ़ (परिभाषा) फ़रमाते हैं कि दुनिया भर में कोई एक दानां ज़मीन से उगे या कोई पत्ता दरख़्त का सब्ज़ होवे बन्दए कामिल की नज़रों से छुपा नहीं होता तो फिर ताजदारे विलायत सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की निगाहों से कोई ज़र्रा क्यूँकर छुपा रह सकता है।

हर मौज़ू पर तक़रीर : शैख़ अबुल हसन सादुल ख़ैर का बयान है कि मैं एक दफ़ा शैख़ मुहीउद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी की मजलिस में हाज़िर हुआ और सब लोगों के पीछे बैठ गया उस वक़्त आप ज़ुह्द के बारे में तक़रीर फ़रमा रहे थे। मेरे दिल में ख़्वाहिश पैदा हुई कि आप मारिफ़त का मज़मून बयान करें। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने यकायक ज़ुह्द का बयान छोड़ कर मारिफ़त के बारे में तक़रीर शुरू कर दी। फिर मैंने चाहा कि आप शौक़ के बारे में तक़रीर फ़रमायें। तो हज़रत ग़ौसे आज़म ने फ़ौरन शौक़ के बारे में तक़रीर शुरू कर दी। अब मैंने चाहा कि आप फ़ना व बक़ा के मसअले की वज़ाहत करें। तो आपने फ़ना व बक़ा का मसअला बयान करना शुरू कर दिया। फिर मेरा दिल ग़ैबत (ग़ायब होने) और हुज़ूर (हाज़िर होने) के बारे में आपके इरशादात सुनने के लिए बेताब हुआ। तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने उसी बारे में एक मुकम्मल तक़रीर फ़रमा दी। फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने बाआवाज़ बलन्द फ़रमाया "अबुल हसन तुम्हें यही काफ़ी है"

मैं हैरत से दम-ब-ख़ुद हो गया और फिर आलमे बेख़ुदी में अपने कपड़े फाड़ डाले। (क़लाएदुल जवाहिर)

पहले ही से मौत की ख़बर देना : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का एक शागिर्द इल्मे फ़िक़्ह में बहुत ही कमज़ोर और कुंद ज़हन था लेकिन आप उसके साथ बहुत मेहनत करते। आपके एक अक़ीदतमन्द ने एक दिन

कहा हज़रत आप ऐसे कुंद ज़हन तालिबे इल्म पर ऐसी मेहनत फ़रमाते है? आपने फ़रमाया कि एक हफ़्ते बाद यह मेहनत ख़त्म हो जाएगी। इब्ने समहिल कहते हैं कि जब सातवाँ दिन आया तो वह तालिबे इल्म यकायक बीमार हो गया और शाम से पहले फ़ौत हो गया। (क़लाएदुल जवाहिर)

भूक अल्लाह तआला का ख़ज़ाना है : शैख़ अबू मुहम्मद जूनी बयान करते हैं कि एक दफ़ा मुझ पर बड़ी तंगदस्ती के दिन आए और मेरे घर वाले फ़ाक़े पर फ़ाक़े कर रहे थे। इसी परेशानी की हालत में मैं सय्यिदुना ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आपने मुझे देखते ही फ़रमाया "जूनी भूक अल्लाह तआला का एक ख़ज़ाना है जिसे वह दोस्त रखता है उसी को अता फ़रमाता है। जब बन्दा तीन रोज़ तक कुछ नहीं खाता तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐ मेरे बन्दे तूने अब तक मेरे लिए फ़क्र व फ़ाक़ा इख़्तियार किया है, मुझे अपनी इज़्ज़त व बुज़ुर्गी की क़सम मैं तुझे ख़ुद खिलाऊँगा।

हज़रत के इरशादात सुनकर मैं हक्का बक्का हो गया। फिर फ़रमाया कि जो शख़्स अपनी मुसीबत को पोशीदा रखता है अल्लाह तआला उसे दुगना अज्र देता है। ऐ जूनी फ़क्र को छुपाने ही में बेहतरी है। फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने पोशीदा तौर पर मुझे कुछ दिया और उसे छुपाने की ताकीद फ़रमाई। (क़लाएदुल जवाहिर)

छत गिरने की इत्तिला : एक दिन सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने मेहमानख़ाने में तशरीफ़ फ़रमा थे। तीन सौ के क़रीब लोग भी आपकी ख़िदमत में हाज़िर थे। यकायक आप उठ कर मेहमानख़ाने से बाहर तशरीफ़ ले गए और तमाम लोगों को बाहर आने के लिए कहा। सब लोग दौड़ कर बाहर आए। लोगों का बाहर आना था कि उस मकान की छत धड़ाम से गिर पड़ी। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया कि मैं बैठा हुआ था कि मुझे ग़ैब से इत्तेला दी गई कि इस मकान की छत गिरने वाली है। चुनांचे मैं बाहर आ गया और आप लोगों को भी अपने पास बुला लिया कि कोई दब न जाए। (क़लाएदुल जवाहिर)

दुआ के ज़रिए मुरीद की इसलाह : शैख़ अबू ग़नाइम शरीफ़ हुसैनी दिमिश्क़ी का बयान है कि एक दफ़ा हमारे हज़रत सय्यिदी अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का मुरीद एक ही रात में सत्तर बार बदख़्वाबी यानी इहतेलाम का शिकार हुआ। वह अपने आपको ख़्वाब में हर बार एक नई औरत से सोहबत करते देखता। उनमें से बाज़ औरतों को पहचानता था और बाज़ को नहीं जानता था। सुब्ह उठा तो हज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में आया ताकि आपसे रात वाले वाक़िए की शिकायत करे। उसके कुछ बोलने से पहले ही आपने फ़रमाया कि रात वाले वाक़िए से परेशान न हो। मैंने लौहे महफ़ूज़ में तेरे नाम के साथ देखा तो उसमें पाया कि तू .फुलाँ .फुलाँ सत्तर औरतों से ज़िना करेगा। चुनांचे मैंने अल्लाह तआ़ला से सवाल किया तो उसने बेदारी की हालत में ज़िना को ख़्वाब में इहतेलाम से बदल दिया। फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने उन औरतों के नाम और पहचान भी उसे बताए जिनमें से बाज़ को वह जानता था और बाज़ को नहीं जानता था।

(ख़ुलासतुल मफ़ाख़िर)

अल्लाह की बारगाह में हर दुआ की मक़बूलियत : शैख़ सालेह अबू मुहम्मद दाऊद इब्ने अली इब्ने अहमद बयान करते हैं कि मैंने ख़्वाब में देखा कि शैख़ मारूफ़ कर्ख़ी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के सामने कुछ लोगों के वाक़ियात पेश किए जा रहे हैं और आप उन लोगों के वाक़ियात बारगाहे ख़ुदावन्दी में पेश करते जाते हैं। मुझे देखते ही हज़रते शैख़ मारूफ़ कर्ख़ी फ़रमाने लगे दाऊद तुम भी अपना वाक़िया बयान करो ताकि मैं अल्लाह तआ़ला की बारगाहे आली में पेश कर

दूँ। मैंने अर्ज़ किया कि मुझे जनाबे ग़ौसे आज़म रदि्यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने क्या छोड़ दिया है। हज़रते मारूफ़ कर्ख़ी फ़रमाने लगे नहीं तुम नहीं छोड़े गए हो और न ही तुम्हें छोड़ा जाएगा। मैं बेदार होकर सुबह के वक़्त हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर के मदरसे की तरफ़ आया और दरवाज़े पर बैठ गया ताकि आपको ख़्वाब वाले वाक़िया की ख़बर दूँ। अभी मैं सोच ही रहा था कि अन्दर से हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने मुझे आवाज़ दी कि तुम्हें माज़ूल नहीं किया गया और न ही माज़ूल किया जाएगा। तुम अपना वाक़िया सुनाओ ताकि मैं बारगाहे इलाही में उसे पेश करूँ। मुझे क़सम है ख़ुदा की कि आज तक मैंने अपने अहबाब व असहाब में से जिसका वाक़िया भी पेश किया है ख़ुदावन्द तआ़ला ने उसे अपने करम से क़बूल फ़रमाया है। (ग़ौसुल वरा)

अपने ही पीर की तरफ़ रुजू : एक साहब हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आज़म रदि्यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ग़ुलामों में से थे। उन्होंने ख़्वाब में देखा कि एक टीले पर याक़ूत की कुर्सी बिछी है उस पर हज़रते सय्यिदुना जुनैदे बग़दादी रदि्यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तशरीफ़ फ़रमा हैं और नीचे एक मख़लूक़ जमा है। हर एक अपनी अपनी अर्ज़ी देता है और हज़रते जुनैदे बग़दादी अर्ज़ी को बारगाहे रब्बुल इज़्ज़त में पेश करते हैं। हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आज़म रदि्यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ग़ुलाम चुप चाप खड़े रहे। जब हज़रते जुनैद बग़दादी ने बहुत देर तक उन्हें देखा और उन्होंने कुछ न कहा तो ख़ुद फ़रमाया लाओ मैं तुम्हारी अर्ज़ी पेश करूँ। उन्होंने अर्ज़ किया क्या मेरे शैख़ को माज़ूल कर दिया गया। हज़रते जुनैद बग़दादी ने इरशाद फ़रमाया ख़ुदा की क़सम उनको माज़ूल नहीं किया गया और न कभी उन्हें माज़ूल करेंगे तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म के ग़ुलाम ने अर्ज़ किया कि तो बस मेरे पीर मेरे लिए काफ़ी हैं। आँख खुली तो सय्यिदुना ग़ौसे आज़म रदि्यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दरबार में हाज़िर हुए कि वाक़िया बयान करें। इससे पहले

कि कुछ अर्ज़ करें हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने इरशाद फ़रमाया लाओ मैं तुम्हारी अर्ज़ी को अल्लाह तआला की बारगाह में पेश करूँ।

(मलफ़ूज़ाते आलाहज़रत हिस्सा सोम)

गाने बजाने से तौबा : हज़रते सय्यिद अब्दुल क़ादिर जीलानी ईसार के बारे में तक़रीर फ़रमा रहे थे। यकायक आप ख़ामोश हो गए और आसमान की तरफ़ नज़र उठाई। फिर आपने हाज़रीन से मुख़ातब होकर फ़रमाया कि 'ज़्यादा नहीं सिर्फ़ सौ दीनार चाहिए'

आपका इरशाद सुन कर कई लोग सौ सौ दीनार लेकर हाज़िर हुए। आपने सिर्फ़ एक शख़्स से सौ दीनार ले लिए और अपने ख़ादिम को हुक्म दिया कि यह सौ दीनार लेकर शूनीज़िया के क़ब्रस्तान में जाओ। वहाँ तुम्हें एक बूढ़ा बाजा बजाता मिलेगा। उसे यह दीनार देकर मेरे पास ले आओ।

ख़ादिम जब वहाँ पहुँचा तो एक बूढ़ा बाजा बजा बजा कर गा रहा था। ख़ादिम ने उसे सलाम किया और वह सौ दीनार उसके हाथ पर रख दिए। बूढ़े ने एक चीख़ मारी और बेहोश हो गया। जब उसे होश आया तो ख़ादिम ने कहा तुम्हें हज़रते शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी बुला रहे हैं। बूढ़ा फ़ौरन ख़ादिम के साथ हो लिया। जब दोनों हज़रत की ख़िदमत में पहुँचे तो आपने बूढ़े से फ़रमाया तुम अपना क़िस्सा बयान करो। बूढ़ा कहने लगा हज़रत लड़कपन में बहुत अच्छा गाता बजाता था और बाजा बजाने में कमाल रखता था। लोग मेरी आवाज़ पर फ़िदा थे लेकिन जब मैं बूढ़ा हुआ तो मेरी मक़बूलियत बहुत कम हो गई। मेरा दिल टूट गया और मैंने शहर छोड़ दिया और अहद कर लिया कि आइन्दा सिर्फ़ मुर्दों को अपना गाना सुनाया करूंगा। चुनांचे मैंने क़ब्रस्तान ही में रहना सहना इख़्तेयार कर लिया और वहाँ ही गाता बजाता रहा। एक दिन मैं अपने शुग़ल में मसरूफ़ था कि एक क़ब्र से आवाज़ आई ऐ शख़्स तू मुर्दों को कब तक अपना गाना

सुनाएगा अब ख़ुदा की तरफ़ पलट जाओ। मुझ पर सख़्त दहशत तारी हुई और मैंने आलमे बेख़ुदी में ये अशआर पढ़े।

يارب مالی عدة یوم اللقا

الا رجا قلبی و نطق لسانی

तर्जमा : ऐ मेरे रब हश्र के दिन के लिए मेरे पास कोई पूंजी नहीं सिवाए इसके कि मेरे दिल में तेरी बख़्शिश व रहमत की उम्मीद है और मेरी ज़बान पर हम्दो सना है।

قصادمک الراجون یفون المنی

واخیبتا ان عدت بالحرمان

तर्जमा : (ऐ अल्लाह) तेरी रहमत के उम्मीदवार कल तेरे हुज़ूर में ख़ुश होंगे अगर मैं महरूम रह गया तो अफ़सोस है मेरी बदबख़्ती पर।

ان کان لا یرجوک الامحسن

فمن یلوذ ویستجیر الجانی

तर्जमा : (ऐ अल्लाह) अगर सिर्फ़ नेकोकार ही तेरी रहमत के आरज़ूमन्द होते तो तेरे गुनहगार बन्दे किसकी पनाह लेते।

شیبی شفیع یوم عرضی واللقا

فعساک تنفذنی من النیران

तर्जमा : (ऐ अल्लाह) मेरा बुढ़ापा हश्र के दिन तेरी बारगाह में मेरी शफ़ाअत करेगा। उम्मीद है कि तू इस पर रहमत की नज़र फ़रमाएगा और मुझे अपने दामने रहमत में जगह देगा और जहन्नम से बचा लेगा।

ये अश्आर मेरी ज़बान पर थे कि आपके ख़ादिम ने आकर मेरे हाथ पर सौ दीनार रख दिए अब मैं गाने बजाने से तौबा करता हूँ और अपने ख़ालिक़े हक़ीक़ी की तरफ़ मुतवज्जह होता हूँ। यह कह कर उसने अपना बाजा तोड़ फ़ोड़ दिया।

उस बूढ़े की दास्तान सुन कर लोग दम-बख़ुद हो गए और चालीस आदमियों ने उसी वक़्त सौ सौ दीनार उस बूढ़े को नज़्र किए। हुज़ूर ग़ौसे आज़म के ख़ादिम अबुर्रज़ा का बयान है कि यह वाक़िया देख कर पांच आदमियों पर ऐसा असर हुआ कि वह तड़पने लगे और तड़पते तड़पते इन्तेक़ाल कर गए।(क़लाएदुल जवाहिर)

ख़िरक़ा की सनद का अतिया : शैख़ सालेह अबुल हसन अ़ली इब्ने मुहम्मद इब्ने अहमद बग़दादी का बयान है कि मैंने बचपन के ज़माने में ख़्वाब में देखा कि नहरे ईसा (एक नहर का नाम) का पानी ख़ून और पीप में बदल गया है और उसकी मछलियाँ सांप और कीड़े मकोड़े बन कर मेरी तरफ़ आ रही हैं। उनके ख़ौफ़ से भाग कर मैं अपने घर पहुँचा। घर में से एक साहब ने मेरे हाथ में पंखा दिया और कहा इसे मज़बूती से पकड़ लो। मैंने कहा यह पंखा तो मुझे नहीं बचा सकेगा। उन साहब ने कहा तेरा ईमान तुझे बचाएगा। मैंने उस पंखे को एक कोने से पकड़ लिया। इतने में क्या देखता हूँ कि मैं अपने घर में एक तख़्त पर मौजूद हूँ और मेरा ख़ौफ़ भी दूर हो गया है। मैंने उन साहब से कहा क़सम है उस ज़ात की जिसने आपके सबब या आपकी वजह से मुझ पर बड़ा एहसान फ़रमाया, मुझे बताइये कि आप कौन हैं। उन साहब ने कहा मैं तेरा नबी मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह हूँ (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ---- मैं आपकी हैबत से कांपने लगा। फिर मैंने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम आप अल्लाह तआ़ला से मेरे हक़ में दुआ फ़रमायें कि मैं अल्लाह तआ़ला की किताब और आपकी सुन्नत पर मरूँ। उस ,पर मुख़्तारे कौनेन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ और तेरा पीर शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर है। रावी का बयान है कि मैंने अपनी बात तीन दफ़ा बारगाहे रिसालत मआब सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम में दोहराई और सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हर दफ़ा मुझसे यही फ़रमाया। उसके बाद मैं जाग उठा। अपने

वालिद और तमाम घर वालों से अपना ख़्वाब बयान किया। फ़ज्र की नमाज़ के बाद मुझे साथ लेकर मेरे वालिदे मुहतरम हुज़ूर ग़ौसे आज़म की ज़ियारत के इरादे से रवाना हुए। उन दिनों हुज़ूर ग़ौसे आज़म रिबात में वाज़ कहा करते थे, जिस वक़्त हम लोग मजलिस में पहुँचे आप वाज़ फ़रमा रह थे। लोगों की भीड़ की वजह से हमें आख़िर में जगह मिली, आपका .कुर्ब हासिल न हो सका। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने कलाम बन्द कर दिया और हमारी तरफ़ इशारा करते हुए इरशाद फ़रमाया कि इन दोनों मर्दों को हमारे पास ले आओ। लोगों ने मुझे और मेरे वालिद को हुज़ूर ग़ौसे आज़म की कुर्सी मुबारक के क़रीब पहुँचा दिया। इतने में हमें एक जवान ने इशारा किया। चुनांचे मेरे वालिद और पीछे पीछे मैं हुज़ूर ग़ौसे आज़म की तरफ़ बढ़े। आपने फ़रमाया तुम हमारे पास बग़ैर दलील के नहीं आए। यह फ़रमा कर मेरे वालिद को आपने अपना कुर्ता मुबारक पहनाया और मुझे अपने सरे मुबारक की टोपी पहनाई। हम लोगों के दरमियान बैठ गए। मेरे वालिद को जो कुर्ता पहनाया गया था इत्तेफ़ाक़ से वह उलटा था। मेरे वालिद ने इरादा किया कि कुर्ते को सीधा पहन लें। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया ज़रा सब्र करो लोगों को जाने दो। फिर जब हुज़ूर ग़ौसे आज़म कुर्सी से उतरे तो मेरे वालिद के दिल में दोबारा ख़्याल आया कि लोगों के भरे मजमा में कुर्ता सीधा कर लूँ। इतने में हम क्या देखते हैं कि कुर्ता बिल्कुल सीधा है। यह देख कर वालिद साहब पर ग़शी तारी हो गई और लोग परेशान होने लगे। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया इसे मेरे पास ले आओ हम लोग आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए उस वक़्त आप .कुब्बतुल औलिया में तशरीफ़ फ़रमा थे। यह रिबात में एक .कुब्बा था, .कुब्बतुल औलिया इसलिए उसका नाम पड़ा कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म की ज़ियारत के लिए यहाँ औलियाए किराम और मर्दाने ग़ैब बहुत हाज़िर होते थे। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने मेरे वालिद से फ़रमाया बेशक जिसकी दलील रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ाते गिरामी हो और उसका पीर अब्दुल क़ादिर हो उसके लिए इज़्ज़तो करामत क्यूँ न हो, यह तेरे लिए करामत है। यह फ़रमा कर हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने क़लम, दवात और काग़ज़ मंगाया और हमारे लिए अपने ख़िरक़ा शरीफ़ की सनद तहरीर फ़रमाई।(ख़ुलासतुल मफ़ाख़िर)

हुज़ूर ग़ौसे आज़म के जलाल का असर : शैख़ बक़ा इब्ने बतू रह़्तुल्लाहि तआला अलैह बयान फ़रमाते हैं कि हज़रते शैख़ अब्दुल क़ादिर की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुआ। उसके साथ एक नौजवान भी था। उस शख़्स ने हज़रते शैख़ अब्दुल क़ादिर से दरख़्वास्त किया कि इस नौजवान के लिए दुआ फ़रमायें ख़ुदा की क़सम यह मेरा बेटा है हालांकि वह नौजवान उस शख़्स का बेटा न था वह झूट बोल रहा था और दोनों किरदार के लिहाज़ से भी बहुत बुरे थे। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ग़ज़बनाक हो गए और फ़रमाने लगे अब नौबत यहाँ तक पहुँची है कि तुम लोग मेरे सामने भी झूट बोलने से नहीं शरमाते। मुआशरा की यह हालत देख कर हुज़ूर ग़ौसे आज़म बड़े रंजीदा हुए और जलाल के आलम में घर आ गए। इसके बाद उन दोनों बदकिरदार आदमियों के घरों में आग के शोले भड़क उठे यहाँ तक कि ये शोले फैलते गए और शहर के काफ़ी हिस्सों को अपनी लपेट में ले लिया। हज़रते शैख़ बक़ा इब्ने बतू फ़रमाते हैं मुझे यूँ मालूम हो रहा था कि बग़दाद पर ख़ुदाए तआला के अज़ाब की अलामात ज़ाहिर हो रही हैं और बादल के टुकड़ों की सूरत में आग बरस रही थी। चुनांचे मैं हैरानी की हालत में हज़रते शैख़ अब्दुल क़ादिर के घर आया देखा कि आप अभी तक ग़ज़बनाक हैं। मैं आपके पास बैठ गया और दिल चाहता था कि आपसे अर्ज़ करूँ कि हज़रत अब अल्लाह की मख़लूक़ पर रह़म व करम फ़रमाइये बहुत कुछ हो गया। मेरी इल्तिजा पर हज़रते शैख़ अब्दुल क़ादिर का गुस्सा ठंडा हो गया तो मैंने देखा कि मुसीबतों के बादल छट गए और आग बुझ गई। (ख़ुलासतुल मफ़ाख़िर)

हज़रते ग़ौसे आज़म की बात न मानने की सज़ा : अबू मुहम्मद इब्ने रजब का बयान है कि शैख़ इबाद और शैख़ अबू बक्र बलन्द मरतबों के मालिक थे। हज़रते सय्यिदी शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी शैख़ अबू बक्र से फ़रमाया करते थे कि ऐ अबू बक्र शरीअ़ते मुत्तहहरा मुझसे तेरी शिकायत करती है। हुज़ूर ग़ौसे आज़म उन्हें कई बातों से मना करते थे मगर शैख़ अबू बक्र उन बातों से बाज़ नहीं आते थे। एक मरतबा हुज़ूर ग़ौसे आज़म मसजिदे रुसाफ़ा में दाख़िल हुए तो शैख़ अबू बक्र वहाँ मौजूद थे। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने अपना एक हाथ उनके सीने पर मारा और फ़रमाया कि अबू बक्र के मरतबों को छीन लिया जाए। चुनांचे उस दिन के बाद सुलूक के तमाम मरतबों से अबू बक्र महरूम हो गए और वह कर्फ़ की तरफ़ चले गए। अब शैख़ अबू बक्र का हाल यह था कि जब कभी बग़दाद में दाख़िल होने का इरादा करते तो मुँह के बल गिर पड़ते और अगर कोई शख़्स उन्हें उठा कर बग़दाद का रुख़ करता तो वह भी मुँह के बल गिर पड़ता। एक दिन शैख़ अबू बक्र की वालिदा रोती हुज़ूर ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अपने बेटे से मुलाक़ात का शौक़ ज़ाहिर किया और अर्ज़ किया कि मैं जब भी अबू बक्र के पास जाने का इरादा करती हूँ गिर पड़ती हूँ। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने कुछ देर मुराक़बा करने के बाद फ़रमाया जाओ हम उसे बग़दाद आने की इजाज़त देते हैं वह तुम्हारे घर के कुंए से तुम्हारे साथ बात करेगा। चुनांचे बुज़ुर्गों ने देखा कि हफ़्ते में एक मरतबा शैख़ अबू बक्र बग़दाद में ज़मीन के नीचे नीचे अपने घर के कुंए में आते और अपनी वालिदा से बातें करते। हज़रते शैख़ अदी इब्ने मुसाफ़िर को हुज़ूर ग़ौसे आज़म के पास सिफ़ारिश के लिए भेजा तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने माफ़ी का वादा फ़रमा लिया। शैख़ मुज़फ़्फ़र जमाल और शैख़ अबू बक्र में गहरी दोस्ती थी। एक मरतबा शैख़ मुज़फ़्फ़र जमाल को अल्लाह तआ़ला की बारगाह में गुफ़्तगू करने का मौक़ा मिला तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया

ऐ मेरे बन्दे तुम्हारी कोई ख़्वाहिश हो तो बताओ। शैख़ मुज़फ़्फ़र जमाल ने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह मेरे भाई शैख़ अबू बक्र के हालात को ठीक कर दिया जाए। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया अबू बक्र के मरतबे का छिन जाना तो मेरे ख़ास वली शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर के कहने पर हुआ है तुम शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर के पास जाओ और उससे मेरी तरफ़ से कहो कि अब अबू बक्र को माफ़ कर दो और अपनी आम बख़्शिश से उसे नवाज़ो। मैंने शैख़ अबू बक्र को माफ़ कर दिया है तुम भी उससे राज़ी हो जाओ। इसी दरमियान मुख़्तारे कौनैन स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया मुज़फ़्फ़र! मेरे नाइब शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर से जाकर कह दो कि ऐ अ़ब्दुल क़ादिर अबू बक्र के हाल को लौटा दो क्यूँकि यह तुम्हारी ज़ाती नाराज़गी नहीं थी बल्कि मेरी शरीअत में कोताही की वजह से थी अब मैंने उसे माफ़ कर दिया है। जब शैख़ मुज़फ़्फ़र को यह ख़ुशख़बरी मिली तो वह ख़ुशी ख़ुशी शैख़ अबू बक्र की तरफ़ चले ताकि उन्हें तमाम वाक़ियात सुनायें और ख़ुशख़बरी दें मगर शैख़ अबू बक्र को पहले ही कश्फ़ से यह सारी बातें मालूम हो गईं थीं। हालांकि उससे पहले जब से उनके मरतबे छिन गए थे उन पर किसी शय का ज़ुहूर नहीं हुआ था। ये दोनों हज़रात रास्ते में एक दूसरे से मिले फिर दोनों मिल कर हज़रते सय्यिदी शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर की ख़िदमत में आए। शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ने फ़रमाया ऐ मुज़फ़्फ़र! तूने दोस्ती का हक़ ख़ूब अदा किया। फिर यह सारा वाक़िया शैख़ मुज़फ़्फ़र ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म के सामने सुना दिया मगर एक चीज़ जो उस वाक़िया से भूल गए थे तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने उन्हें याद दिलाई। फिर हज़रते ग़ौसे आज़म ने शैख़ अबू बक्र को तौबा करने के लिए फ़रमाया और उन चीज़ों से ख़ास तौर पर दूर रहने की हिदायत की जिनकी वजह से मरतबे छीन लिए गए थे। फिर अपने नूरानी सीने से लगाया और शैख़ अबू बक्र को तमाम छीने हुए मरतबे वापस किए

और बहुत से और मरतबे अता फ़रमाए। शैख़ मुज़फ़्फ़र के साथ जो वाक़ियात पेश आए थे वह उन्हें हिकायत के तौर पर बयान किया करते थे और शैख़ मुज़फ़्फ़र फ़रमाते हैं कि मैंने शैख़ अबू बक्र से पूछा कि तुम उन हालात में अपनी वालिदा के पास ज़मीन के नीचे कैसे आया करते थे? तो शैख़ अबू बक्र ने बताया कि मैं जब अपनी वालिदा की ज़ियारत का इरादा करता था तो कोई चीज़ मुझे उठा कर ज़मीन के नीचे खींच लाती थी और मैं अपने घर के कुंए में पहुँच जाता था फिर उसी तरह ज़मीन के नीचे नीचे मुझे अपने मक़ाम पर वापस कर दिया जाता था। (ख़ुलासतुल मफ़ाख़िर)

रूहानी तसर्रुफ़ का वाक़िया : शैख़ अबुल बक़ा मुहम्मद इब्ने अज़हरी सरीफ़ीनी का बयान है कि मैं अल्लाह तआला से एक मुद्दत तक यह सवाल करता रहा कि रिजालुल ग़ैब से मुझे कोई ख़ुदा तआला का ख़ास बन्दा मिले। मैंने एक रात ख़्वाब में देखा कि मैं हज़रत इमाम अहमद इब्ने हम्बल के मज़ार की ज़ियारत कर रहा हूँ और उनके मज़ार के क़रीब ही एक मर्द मौजूद है। मुझे ख़याल आया कि हो न हो यह मर्दाने ग़ैब में से हो। ख़्वाब से बेदार हुआ तो उसे जागते में देखने की उम्मीद का मेरे दिल को यक़ीन हो गया। मैं उसी वक़्त हज़रते इमाम हम्बल के मज़ार शरीफ़ पर आया, देखा तो वही शख़्स मौजूद है जिसे मैं ख़्वाब में देख चुका था। वह मेरे आगे निकला और मैं उसके पीछे पीछे चला। वह दरियाए दजला पर पहुँचा तो मैंने देखा कि दरियाए दजला के दोनों कनारे मिल गए और वह एक क़दम उठा कर दजला के पार हो गया। अब मैंने उसे क़सम दे कर रोका ताकि उससे कुछ बातें करूँ। वह ठहर गया। मैंने पूछा तेरा क्या मज़हब है? कहने लगा मैं हनफ़ी मुसलमान हूँ और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूँ। मैंने अपने तौर पर समझा कि वह हनफ़ी मज़हब पर है। उसके बाद वह चल दिया। मुझे ख़्याल आया कि हज़रत सय्यिद अब्दुल क़ादिर की ख़िदमत में हाज़री दूँ और उन्हें यह वाक़िया

बताऊँ। मैं आपके मदरसे में आया और दरवाज़े पर रुक गया। आपने अन्दर से मुझे आवाज़ दी ऐ मुहम्मद मश्रिक़ से मग़रिब तक रूए ज़मीन पर इस वक़्त उससे बढ़ कर कोई और हनफ़ी वली नहीं है।

(ख़ुलासतुल मफ़ाख़िर)

तीन चादरें : हज़रते मुहम्मद इब्ने अबुल अ़ब्बास ख़िज़्र हुसैनी मौसली फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे मुहतरम ने ख़्वाब में देखा कि दुनिया कि तमाम बुज़ुर्गाने दीन एक बहुत बड़े मैदान में जमा हैं और उन बुज़ुर्गों के बीच में हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी सदर की हैसियत से जलवा फ़रमा हैं। उन बुज़ुर्गों में से बाज़ के सर पर सिर्फ़ इमामा है और बाज़ के इमामे के ऊपर एक चादर है और बाज़ के इमामे के ऊपर दो चादरें हैं और जनाबे ग़ौसियत मआब के इमामे शरीफ़ पर तीन चादरें हैं। ख़्वाब के दरमियान मुझे यह ख़्याल हुआ कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म के इमामा शरीफ़ पर यह तीन चादरें कैसी हैं। इतने में मेरी आँख खुल गई तो मैंने देखा कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मेरे सरहाने खड़े फ़रमा रहे हैं एक चादर शरीअत की और दूसरी चादर ह़क़ीक़त की और तीसरी चादर अज़मत की है।

तिबारा वसीयत : हज़रते मुतह्हर रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का बयान है कि जब मेरे वालिदे मोहतरम का वक़्ते आख़िर हुआ तो मैंने दरयाफ़्त किया कि आपके बाद मैं किस की पैरवी करूँ। फ़रमाया शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी की। मैंने समझा कि शायद मरज़ की वजह से ऐसा फ़रमा रहे हैं। दोबारा पूछा फिर वही जवाब दिया। मेरे दिल में फिर यही ख़्याल पैदा हुआ कि शायद मरज़ की शिद्दत की वजह से फ़रमा रहे हैं। तीसरी बार दरयाफ़्त किया वालिदे मुहतरम आपके बाद मैं किसकी पैरवी करूँ। फ़रमाया शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ही की पैरवी करो क्यूँकि अनक़रीब वह ज़माना आने वाला है कि सिर्फ़ शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी की ही पैरवी की जाएगी। ग़रज़ यह कि वालिद साहब की वफ़ात के बाद मैं बग़दाद

शरीफ़ आया। उस वक़्त सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु वाज़ फ़रमा रहे थे। बड़े बड़े बुज़ुर्गाने दीन मजलिस में हाज़िर थे। सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने मुझसे फ़रमाया ऐ मुतह्हर तुम्हें अपने वालिद की वसीयत एक मरतबा काफ़ी न हुई तीन मरतबा में एतेबार हुआ मैं ख़ौफ़ज़दा हो गया और क़दमों पर सर रख कर माफ़ी मांगी।

सरकारे ग़ौसे आज़म के इख़्तेयारात

हज़रते अ़ब्दुल रह़मान तफ़सूंजी : सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुबारक ज़माना में एक बुज़ुर्ग सय्यिदी अ़ब्दुल रह़मान तफ़सूंजी रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु एक रोज़ मिम्बर पर सबके सामने फ़रमाया मैं वलियों में ऐसा हूँ जैसे कुलन्ग परिन्दा सब परिन्दों में ऊँची गर्दन वाला। इत्तेफ़ाक़ से उसी मजलिस में सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के एक मुरीद हज़रते सय्यिदी अह़मद रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु भी तशरीफ़ फ़रमा थे। यह सुन कर उन्हें नागवार हुआ कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म पर अपने आपको इन्होंने फ़ज़ीलत दे दी। हज़रते सय्यिदी अह़मद ने अपनी गुदड़ी उतार कर फेंक दी और खड़े होकर फ़रमाने लगे मैं आपसे कुश्ती लड़ना चाहता हूँ। हज़रते सय्यिदी अ़ब्दुल रह़मान तफ़सूंजी ने सय्यिदी अह़मद को सर से पैर तक देखा फिर पैर से सर तक देखा फिर सर से पैर तक देखा। ग़रज़ यह कि इसी तरह कई बार नज़र डाली और ख़ामोश हो गए। लोगों ने हज़रते अ़ब्दुल रह़मान से बार बार उनकी जानिब देखने का सबब पूछा। फ़रमाया मैंने इसके जिस्म को देखा कि कोई रोंगटा रह़मते इलाही से ख़ाली नहीं है। फिर हज़रते अ़ब्दुल रह़मान ने सय्यिदी अह़मद से फ़रमाया अपनी गुदड़ी पहन लो। उन्होंने कहा कि फ़क़ीर जिस गुदड़ी को उतार कर फेंक देता है दुबारा नहीं पहनता। बारह दिन की दूरी पर उनका मकान था और आपकी मुक़द्दस बीवी का नाम फ़ातिमा था। आपने अपनी बीवी को

तफ़सून्ज ही से आवाज़ दी फ़ातिमा मेरे कपड़े दो तो उनकी बीवी हज़रते फ़ातिमा ने वहीं से हाथ बढ़ा कर कपड़े दिए और सय्यिदी अहमद ने हाथ बढ़ा कर पहन लिए। फिर हज़रते सय्यिदी अब्दुल रहमान ने दरयाफ़्त फ़रमाया किसके मुरीद हो? सय्यिदी अहमद ने फ़रमाया मैं सरकारे ग़ौसे आज़म का ग़ुलाम हूँ। तो हज़रते अब्दुल रहमान ने अपने दो मुरीदों को बग़दाद शरीफ़ भेजा कि सरकारे ग़ौसे आज़म से जाकर अर्ज़ करो कि बारह बरस से अल्लाह तआला के क़ुर्ब में हाज़िर होता हूँ आपको न जाते देखा न आते देखा। इधर तफ़सूंज से ये दोनों मुरीद चले कि उधर सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने दो मुरीदों से इरशाद फ़रमाया कि तुम दोनों तफ़सूंज (एक जगह का नाम) जाओ। रास्ते में शैख़ अब्दुल रहमान के दो मुरीद मिलेंगे उनको वापस ले जाओ और शैख़ अब्दुल रहमान को जवाब दो कि वह शख़्स जो सहन में है दालान वाले को कैसे देख सकता है और जो दालान में है वह कोठरी वाले को कैसे देख सकता है और वह जो कोठरी में है उसे क्यूँकर देख सकता है जो ख़ास तहख़ाना में हो मैं ख़ास तहख़ाना में हूँ और पहचान यह है कि फ़ुलाँ रात बारह हज़ार वलियों को ख़िलअत अता हुए थे, याद करो कि तुमको जो ख़िलअत मिला था वह सब्ज़ था और उस पर सोने से सूरए इख़लास शरीफ़ लिखी थी। यह सुन कर शैख़ अब्दुल रहमान ने सर झुका लिया और फ़रमाया शैख़ अब्दुल क़ादिर ने सच फ़रमाया और वह वक़्त के बादशाह हैं।(अलमल्फ़ूज़ आलाहज़रत हिस्सा-3)

<u>दिनों और महीनों की हाज़िरी</u> : शैख़ अबुल क़ासिम से रिवायत है कि एक रोज़ मैं और अबू मसऊद अबूबक्र, शैख़ अबुल ख़ैर, बसर इब्ने महफ़ूज़, शैख़ अबू हफ़्स उमर शैख़ अबुल आस अहमद इमकानी और शैख़ अब्दुल वह्हाब सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर थे। जुमे का दिन था और हिजरी 560 जुमादुल उख़रा की 30 तारीख़ थी। इतने में एक ख़ूबसूरत व हसीन नौजवान आकर

अदब से बैठ गया और अर्ज़ करने लगा ऐ अल्लाह के वली आप पर सलाम हो, मैं रजब का महीना हूँ आपको ख़ुशख़बरी देने आया हूँ कि यह महीना लोगों के लिए बहुत मुबारक है। चुनांचे इस महीने में लोग नेक कामों में ज़्यादा मसरूफ़ रहे।

इतवार के दिन यह महीना ख़त्म हो गया मैं भी दरबार में हाज़िर था। एक शख़्स आकर सलाम के बाद बाअदब अर्ज़ करने लगा कि मैं शाबान का महीना हूँ आपको कोई ख़ुशख़बरी या बशारत सुनाने नहीं आया हूँ बल्कि बताने आया हूँ कि इस महीने में मुल्के हिजाज़ के अन्दर गिरानी ज़्यादा होगी। ख़ुरासान में ख़ूँरेज़ी होगी, तलवारें चलेंगी और शहरे बग़दाद में बीमारी से बहुत से लोग मर जायेंगे। चुनांचे चन्द ही दिनों के बाद ख़बरें आने लगीं और बग़दाद में बीमारी का ऐसा ज़ोर हुआ कि काफ़ी लोग मर गए।

फिर एक दिन शैख़ नजीबुद्दीन सुहरवर्दी, शैख़ अबुल हसन जूज़ी रहमतुल्लाहि तआला अलैह क़ाज़ी अबुल उला मुहम्मद इब्ने बज़्ज़ाज़ रहमतुल्लाहि तआला अलैह और शैख़ अली इब्ने हीती रहमतुल्लाहि तआला अलैह मौजूद थे। एक वजीह व बावक़ार शख़्स आया और सलाम के बाद अर्ज़ किया कि मैं रमज़ान का महीना हूँ अब आइन्दा आप से मुलाक़ात न हो सकेगी। चुनांचे आने वाले साल के रबीउस्सानी ही में हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु विसाल फ़रमा गए। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु अकसर यह फ़रमाया करते थे कि अल्लाह के बाज़ बन्दे ऐसे हैं जिनके पास महीने शक्ल व सूरत में होकर आते हैं, उसकी अच्छाई बुराई से उन्हें ख़बर देते हैं। आपके साहबज़ादे हज़रत शैख़ सैफ़ुद्दीन अब्दुल वहहाब रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि साल का कोई महीना ऐसा नहीं होता था कि शुरू होने से पहले हमारे वालिदे माजिद हुज़ूर ग़ौसे आज़म के पास न आता हो और अगर उस महीने में बरकतें नाज़िल होने वाली होतीं तो वह महीना अच्छी शक्ल में आता था और कोई बुराई पेश आने वली होती तो बुरी शक्ल में आता।

मेरी निगाहें लौहे महफ़ूज़ पर लगी रहती हैं : एक रिवायत में हज़रते अबू हफ़्स रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि हमारे सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु अपनी मजलिस में ज़मीन से हवा में चलते थे और फ़रमाते थे कि आफ़ताब तुलू नहीं होता है जब तक कि मेरी बारगाह में सलाम न भेजे। मेरे रब की इज़्ज़त व जलाल की क़सम तमाम बदबख़्त और नेकबख़्त मेरे सामने किए जाते हैं। मेरी निगाहें लौहे महफ़ूज़ से लगी रहती हैं। परवरदगारे आलम के इल्म व मुशाहदा के समुन्द्र में मैं ग़ोता लगाता रहता हूँ, मख़लूक़ पर मैं अल्लाह तआला की हुज्जत (दलील) हूँ और अपने जद्दे करीम यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का नाइबे ख़ास हूँ और ज़मीन पर हुज़ूर का वारिस हूँ।

रिजालुल ग़ैब पर हुकूमत : फ़क़ीह अबुल मआली अब्दुल रहीम इब्ने मुज़फ़्फ़र क़र्शी बग़दादी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने बयान किया कि मैं एक दफ़ा सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की ज़ियारत के लिए हाज़िर हुआ। आप उस वक़्त मकान की छत पर नमाज़े चाश्त अदा फ़रमा रहे थे। मैं भी वहीं चला गया। अचानक जो मेरी नज़र मैदान की जानिब उठी तो देखा कि रिजालुल ग़ैब की चालीस सफ़ें हाथ बांधे खड़ी हैं और हर सफ़ में सत्तर अफ़राद हैं। जब उनसे पूछा गया तुम लोग बैठते क्यूँ नहीं हो तो उन्होंने जवाब दिया कि जब तक .कुतुबे ज़माँ बैठने की इजाज़त न फ़रमायेंगे उस वक़्त तक हम लोग नहीं बैठ सकते क्यूँकि हमारे ऊपर इन्हीं का साया और इन्हीं का हाथ है और हम सब इन्हीं की हुकूमत में हैं। इसके बाद जब आपने सलाम फेरा और नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो रिजालुल ग़ैब की सफ़ों में कुछ हरकत पैदा हुई फिर एक के बाद एक सब आपकी ख़िदमत में क़दमबोसी के लिए हाज़िर होने लगे। उनमें से एक एक आता था और क़दमबोसी करके चला जाता था। जब सब फ़ारिग़ हो गए तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उन्हें बैठने का

हुक्म दिया और वह सब अदब के साथ बैठ गए फिर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उन्हें नसीहत फ़रमाने लगे।

एक ही वक़्त में कई जगहों पर तशरीफ़ ले गए :

एक रिवायत में है कि रमज़ान का महीना था। एक ख़ादिम ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बारगाह में हाज़िर होकर अर्ज़ किया हुज़ूर मेरी तमन्ना हैं कि आज मेरे ग़रीबख़ाने पर रोज़ा इफ़तार फ़रमायें। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने मन्ज़ूर फ़रमा लिया। वह ख़ादिम ख़ुशी ख़ुशी वापस चला गया। उसके बाद एक दूसरे ख़ादिम ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन्होंने भी यही ख़्वाहिश ज़ाहिर की कि आज मेरे यहाँ इफ़तार फ़रमायें। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उनकी भी दावत क़बूल फ़रमा ली। उनके जाते ही तीसरे ख़ादिम आए और आजिज़ी के साथ उन्होंने भी यही दरख़्वास्त की। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उनसे भी वादा फ़रमा लिया। इसी तरह सत्तर अक़ीदतमन्द आए और हर एक ने यही अर्ज़ किया कि हुज़ूर आज शाम को इफ़तारी मेरे ग़रीबख़ाने पर फ़रमायें और सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने किसी का भी दिल न तोड़ा और सबसे वादा फ़रमाते गए। जब इफ़तार का वक़्त आया तो हुज़ूर एक ही वक़्त में हर एक के यहाँ रौनक़ अफ़रोज़ हुए और रोज़ा इफ़तार किया। सुबह को जब अक़ीदतमन्द इकट्ठा हुए तो एक ने दूसरे से फ़ख़्र के साथ बयान किया कि कल हुज़ूर ग़ौसे आज़म का मेरे ऊपर बड़ा करम हुआ कि मेरे ग़रीबख़ाने पर रोज़ा इफ़तार फ़रमाया।, दूसरे ने कहा तुम ग़लत कहते हो कल तो सरकारे ग़ौसे आज़म मेरे यहाँ तशरीफ़ ले गए थे और मेरे ग़रीबख़ाने पर रोज़ा इफ़तार फ़रमाया था।

ग़रज़ यह कि वह जितने भी दावत देने वाले थे सभी जमा हो गए और आपस में बहस होने लगी। जब सब मदरसे में पहुँचे तो मदरसे वालों ने कहा कल तो सरकारे ग़ौसे आज़म ने मदरसे से बाहर क़दम भी नहीं निकाला, यहीं मौजूद रहे और मदरसे ही में इफ़तार किया।

आख़िर में सब लोग सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ करने लगे कि हुज़ूर यह क्या बात है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया इसमें तअज्जुब की क्या बात है? अल्लाह तआ़ला ने औलिया अल्लाह को इतनी ताक़त बख़्शी है कि वह एक ही वक़्त में बहुत से मक़ामात पर पहुँच सकते हैं।

आफ़ताब में छुपना : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की .कुदरत व ताक़त का क्या पूछना है। अपने दूध पीने के ज़माने में दाई की गोद से दूध पीते पीते उछल कर आफ़ताब में छुप जाते थे। जब बड़े हो गए तो एक दिन वही दाई सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास आकर पूछने लगीं ऐ बेटा अ़ब्दुल क़ादिर जब मैं तुम्हें दूध पिलाती थी तो कभी कभी तुम मेरी गोद से उछल कर सूरज में छुप जाते थे क्या अब भी वही हालत है तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया ऐ मादरे मोहतरम वह ज़माना तो मेरे बचपन और कमज़ोरी का था उस वक़्त मैं आफ़ताब में छुप जाता था और अब मेरी ताक़त और .कुव्वत का यह आलम है कि अगर ऐसे ऐसे हज़ारों आफ़ताब आ जायें तो मुझमें ग़ायब हो जायें और उनका कहीं पता न चले।

मर्ज़ों से छुटकारा : हज़रते शैख़ अली इब्ने इदरीस याक़ूबी फ़रमाते हैं कि मेरे पीरो मुर्शिद हज़रत अली इब्ने हीती मुझको सरकारे ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में ले गए और अर्ज़ किया हुज़ूर यह मेरा मुरीद है। उस वक़्त हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के जिस्मे अतहर पर एक चादर पड़ी थी। चादर उतार कर मुझे उढ़ा दी और इरशाद फ़रमाया ऐ अली तुमने सेहत और तंदरुस्ती का जामा पहन लिया। चुनांचे उस वक़्त से 65 साल तक मुझ को कोई मर्ज़ नहीं छू सका।

बुख़ार का दूसरी जगह चला जाना : एक मरतबा शैख़ अबुल मआली सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बारगाह में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मेरे बड़े लड़के को डेढ़ साल से बुख़ार आता है, इलाज करते करते आजिज़ आ चुका हूँ। सरकारे ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया जाओ अपने बेटे के कान में कह देना कि शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ने फ़रमाया है कि ऐ बुख़ार अब तू हुल्ला गांव में चला जा। सरकारे ग़ौसे आज़म के कहने के मुताबिक़ अपने बेटे के कान में यह जुमला मैंने कह दिया फिर उसको आइन्दा कभी बुख़ार आया ही नहीं।

दरिया छोड़ कर नहर के पास : शैख़ उमर रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का बयान है कि एक दिन शैख़ अदी इब्ने मुसाफ़िर रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह को सलाम के लिए हाज़िर हुआ। ज्यूँ ही उन्होंने मुझे देखा फ़रमाया दरिया छोड़ कर नहर के पास आए हो। इस वक़्त तो शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी तमाम औलिया के सरदार हैं।

जिसको चाहें रोक लें जिसे चाहें छोड़ दें : हज़रते शैख़ सुहरवर्दी जो सिलसिलए सुहरवर्दीया के इमाम हैं फ़रमाते हैं कि मैंने अपने चचा से पूछा ऐ चचा आप शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी का इस क़द्र क्यूँ अदब करते हैं। तो चचा जान ने फ़रमाया मैं उनका क्यूँ न अदब करूँ जबकि अल्लाह तआ़ला ने उनको तसर्रुफ़े कामिल अता फ़रमाया है। फ़रिश्तों के आलम पर भी उनको फ़ख़्र हासिल है। मेरे क्या तमाम औलिया अल्लाह के अहवाल ज़ाहिरी व बातनी पर उनको क़ाबू दिया गया है जिसको चाहें रोक लें जिसको चाहें छोड़ दें।

मुल्के ख़ुदा पर हुज़ूर ग़ौसे आज़म की हुकूमत : सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु क़सीदए ग़ौसिया में फ़रमाते हैं 'अल्लाह के तमाम शहरों पर मेरा क़ब्ज़ा व तसर्रुफ़ है और तमाम शहर मेरी हुकूमत में है' --- एक

मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने ख़ुद इरशाद फ़रमाया कि मैं तमाम .कुतुबों पर वली हूँ। जभी तो बड़े बड़े बुज़ुर्गाने दीन मसलन बक़ा इब्ने बतू शैख़ अली इब्ने हीती शैख़ अबू सईद क़ैलवी वग़ैरह फ़रमाते हैं कि हम आपके मदरसे में पानी और झाड़ू का इन्तिज़ाम किया करते थे। ये लोग जब ख़िदमत में हाज़िर होते अदब से खड़े रहते। जब ताजदारे विलायत सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते बैठ जाओ तो अर्ज़ करते क्या हमारे लिए अमान है? इरशाद होता अमान है। तब बैठते थे और जब सवार होते तो यह लोग रिकाब थाम कर थोड़ी दूर चलते थे। फिर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मना फ़रमाते तो अर्ज़ करते ऐ हमारे सरदार अल्लाह तआ़ला की .कुरबत इसी तरह हासिल होती है। शैख़ इब्ने नक़ता फ़रमाते हैं कि मैंने ख़ुद देखा है कि इराक़ के बड़े बड़े बुज़ुर्गाने दीन जब सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मदरसे में आते तो सबसे पहले मदरसे की चैखट चूमते थे।

कुत्ते ने शेर को मार डाला : तलख़ीसुल क़लाइद में शैख़ अबू मसऊद अह़मद इब्ने अबीबक्र से रिवायत है कि शैख़ अह़मद जाम ज़िन्दाफ़ील रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह शेर पर सवार होकर सफ़र किया करते थे और जिस शहर में पहुँचते वहाँ से एक गाय अपने शेर की ख़ुराक के लिए तलब करते। लोग पेश कर दिया करते थे। इत्तेफ़ाक़न एक शहर में पहुँच कर एक वली से एक गाय मंगाई। उन्होंने गाय तो ख़ैर भेज दी और साथ ही यह भी कहला दिया कि अगर आप बग़दाद शरीफ़ तशरीफ़ ले जायें तो आपके शेर की बहुत अच्छी तरह दावत होगी।

शैख़ अह़मद जाम रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह कुछ दिनों के बाद सफ़रे बग़दाद के लिए रवाना हो गए। जब बग़दादे मुक़द्दस पहुँचे तो शहर के बाहर पड़ाव डाल दिया और सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास कहला भेजा कि आपके शहर में एक बुज़ुर्ग शेर पर सवार होकर आये हैं, उनके

शेर की ख़ुराक के लिए एक गाय भेज दीजिए। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने ख़ादिम के ज़रिए कहला दिया अच्छी बात है अभी गाय भेजे दे रहा हूँ। ख़ादिम ने जाकर इसी तरह कह दिया। वह बहुत ख़ुश हुए और कहने लगे देख लिया तुम लोगों ने हमारा दबदबा।

बहरहाल सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने ख़ादिम के साथ गाय भेज दी। सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु के लंगर ख़ाने के दरवाज़े पर एक दुबला पतला कुत्ता पड़ा रहता था जो लंगरख़ाने की हड्डियों पर गुज़र बसर करता था। वह कुत्ता भी उस गाय के साथ हो लिया। जब वह गाय शैख़ अहमद जाम अलैहिर्रहमा के सामने पहुँची। शैख़ ने अपने शेर को इशारा किया कि अपनी ख़ुराक ले ले।

ज्यूँ ही वह शेर गाय के ऊपर झपटा फ़ौरन कुत्ते ने लपक कर शेर का गला अपने मुँह से पकड़ लिया और उसका पेट फाड़ दिया तो शेर ज़मीन पर गिर गया और कुत्ता गाय को हंकाता हुआ सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की ख़ानक़ाह में ले आया। शैख़ अहमद जाम शेर की हालत और कुत्ते की जुराअत देख कर बहुत शर्मिन्दा हुए और बारगाहे ग़ौसियत पनाह में हाज़िर होकर माफ़ी तलब की और दुआ के तलबगार हुए।

सरन्दीप का जिन्न : इस्फ़हान के बाशिन्दों में से एक शख़्स हाज़िरे ख़िदमत हुआ और अर्ज़ किया मेरी औरत को जिन्न बहुत सताते हैं, बहुत दौरे पड़ते हैं, बड़े बड़े आलिम आजिज़ आ गए हैं। सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया वह सरन्दीप के जंगल का सरकश जिन्न है जाओ तुम अपनी औरत के कान में कह देना कि बग़दाद वाले शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी ने फ़रमाया है आइन्दा कभी मत आना वर्ना हलाक कर दिए जाओगे। उसने आकर इसी तरह कह दिया। उसी वक़्त आराम हो गया और फिर कभी यह शिकायत न हुई।

महफ़िले वाज़ में जिन्नों का हाज़िर होना : अबू नज़र बग़दादी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ख़ुद बयान करते हैं कि मेरे वालिदे माजिद बहुत बड़े आमिल थे। एक मरतबा उन्होंने जिन्नों को हाज़िर होने के लिए दुआ पढ़ी लेकिन वक़्त पर कोई भी जिन्न न आया और सब जिन्न वक़्त के गुज़र जाने के बाद आये। वालिद साहब ने पूछा तुम लोग वक़्त पर क्यूँ नहीं आए। जिन्नों ने जवाब दिया हम ग़ौसुस्सक़लैन (इन्सान और जिन्नात के ग़ौस) की महफ़िले वाज़ में थे। जब उनकी मजलिस का वक़्त आता है तो हम सब वहाँ हाज़िर हो जाते हैं, ऐसे वक़्त हमें न बुलाया कीजिए। उन्होंने दरयाफ़्त किया कि क्या तुम लोग भी हुज़ूर ग़ौसे आज़म की मजलिसे वाज़ में जाते हो। जवाब दिया कि हमारी तादाद ग़ौसुस्सक़लैन की मजलिस में इन्सानों से ज़्यादा होती है।

जिन्नों पर हुकूमत : शैख़ अबुल .फ़ुतूह मुह़म्मद अबुल आस यूसुफ़ इब्ने इस्माईल इब्ने अह़मद अ़ली क़र्शी तमीमी बिकरी बग़दादी से रिवायत है कि शैख़ अबू सईद अ़ब्दुल्लाह इब्ने अह़मद इब्ने अ़ली इब्ने मुह़म्मद बग़दादी अज़जी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह 229 हिजरी में सरकारे ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया कि मेरी बच्ची फ़ातिमा जिसकी उम्र सोलह साल हो गई है बड़ी हसीन व जमील थी, वह छत पर चढ़ी और वहीं से ग़ायब हो गई। सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया घबराओ नहीं, आज रात को कर्ख़ के जंगल में जाओ और पांचवे टीले पर बैठ जाना लेकिन देखो ख़्याल रखना अपने चारों तरफ़ एक घेरा खींच लेना और लकीर खींचते वक़्त बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम नवैतु अ़ब्दल क़ादिर पढ़ लेना। रात का आधा हिस्सा गुज़रने के बाद जिन्नों की जमाअतें गुज़रना शुरू होंगी, उनकी शक्ल व सूरत बड़ी भयानक व डरावनी होगी मगर तुम डरना मत और वहीं बैठे रहना वह जिन्न तुम्हें कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे। ठीक सुबह के वक़्त जिन्नों का सबसे बड़ा बादशाह उस रास्ते से

गुज़रेगा और ख़ुद ही तुमसे तुम्हारा मक़सद दरयाफ़्त करेगा। तो तुम यह कह देना कि मुझे शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ने तुम्हारे पास भेजा है। उसके बाद अपनी लड़की के ग़ायब होने का वाक़िया बयान करना। मुहम्मद बग़दादी अज़जी रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाते हैं कि मैंने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इरशाद के मुताबिक़ अमल किया और टीले पर जाकर अपने चारों तरफ़ घेरा खींच कर बैठ गया। थोड़ी देर के बाद ख़ौफ़नाक सूरत वाले जिन्नों का क़ाफ़िला गुज़रना शुरू हो गया। उनके रास्ते में बैठना उन्हें सख़्त नागवार गुज़रा मगर दाइरे के अन्दर दाख़िल होने की हिम्मत उन्हें न हो सकी। सारी रात उस टीले के क़रीब से जिन्नातों का क़ाफ़िला गुज़रता रहा। सुबह होते ही जिन्नों का बादशाह शहाना ठाट के साथ आलीशान घोड़े पर सवार होकर आया। बादशाह ने मुझे देखते ही ख़ुद ही पूछा कि क्या मामला है। मैंने जवाब दिया कि मुझे शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ग़ौसुस्सक़लैन ने तुम्हारे पास भेजा है। सरकारे ग़ौसे आज़म का नामे मुबारक सुनते ही बादशाह घोड़े से नीचे उतर आया और अदब से ज़मीन चूमी फिर अदब के साथ घेरे के बाहर बैठ गया और उसके तमाम साथी भी अदब से बैठ गए, बड़ा ही अजीब मन्ज़र था जहाँ तक निगाह जाती थी जिन्न ही जिन्न नज़र आते थे। जब बादशाह ने दोबारा वाक़िए की तफ़सील मालूम की तो मैंने अपना पूरा वाक़िया बयान किया कि मेरी बच्ची छत पर गई और अचानक वहाँ से ग़ायब हो गई।

तफ़सीली हालात मालूम करने के बाद बादशाह अपने साथ के तमाम जिन्नों की तरफ़ मुख़ातब हुआ और बोला कि बताओ तुममें से कौन है वह जिसने यह गिरी हुई हरकत की है। सारे जिन्न लरज़ उठे और कहने लगे हमें इसका क़तई कोई इल्म नहीं है। फिर बादशाह ने अपने क़रीबी सिपाहियों को हुक्म दिया कि जिसने भी यह हरकत की है उसे जल्द से जल्द गिरफ़्तार करके मेरे पास लाओ।

थोड़ी देर में क्या देखता हूँ कि एक जिन्न ज़न्जीर में जकड़ा हुआ बादशाह की ख़िदमत में हाज़िर किया गया जिसके साथ मेरी बच्ची थी। मालूम यह हुआ कि यह चीन का सरकश जिन्न है। बादशाह ने उससे पूछा कि तुझे किस तरह हिम्मत हुई कि .कुतुबे ज़माँ के शहर से चोरी करे। उस जिन्न ने कहा मैं उड़ता हुआ जा रहा था, इस लड़की का हुस्न देख कर मैं आशिक़ हो गया और इसको साथ उठा लाया। जिन्नों के बादशाह को जलाल आ गया और उसी वक़्त सरकश जिन्न का सर तन से जुदा करवा दिया और मेरी बच्ची मेरे हवाले कर दी। मैंने बादशाह से दरयाफ़्त किया कि तुम लोग सरकारे ग़ौसे आज़म के बहुत मुतीअ व फ़रमाबरदार हो। बादशाह ने जवाब दिया बेशक हम उनके फ़रमाबरदार हैं हज़रत तो अपने मक़ाम से हमारी नक़्लो हरकत को मुलाहज़ा फ़रमाते रहते हैं, अल्लाह तआला जब किसी को .कुतुबे ज़माँ मुक़र्रर करता है तो उसे जिन्नों व इन्सानों पर .क़ुदरत व इख़्तियार अता फ़रमाता है।

बलन्द हिम्मती : शैख़ अबुल फ़ज़्ल अहमद इब्ने सालेह शाफ़ेई बयान करते हैं कि मैं मदरसा निज़ामिया में सय्येदुना शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के साथ था और .फुक़हा व .फुक़रा आपकी ख़िदमत में हाज़िर थे। आप उनके सामने क़ज़ा व क़द्र पर तक़रीर फ़रमाने लगे। तक़रीर के दरमियान छत से एक बड़ा सांप मजलिस में आ गिरा। तो हाज़रीन डर कर भाग निकले मगर सरकारे ग़ौसे आज़म इत्मिनान के साथ बैठे रहे। सांप आपके कपड़ों में घुस गया और जिस्म के गिर्द लिपट कर गिरेबान के रास्ते से बाहर निकल आया और फिर आपकी गर्दन में लिपट गया। उसके बावुजूद सरकारे ग़ौसे आज़म ने तक़रीर बन्द नहीं की और न ही अपनी जगह से हटे। वह सांप सरकारे ग़ौसे आज़म को छोड़ कर ज़मीन पर आ बैठा और दुम के बल खड़ा होकर सरकारे ग़ौसे आज़म से गुफ़्तगू करने लगा जिसे हमने कभी नहीं सुना था और फिर चला गया। लोग लौट आए तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया कि सांप ने मुझसे

कहा कि मैंने इस तरह बहुत से वलियों को आज़माया है मगर आपकी तरह कोई भी साबित क़दम नहीं रहा। मैंने सांप से कहा कि तुम मुझ पर उस वक़्त गिरे जब कि मैं क़ज़ा व क़द्र पर गुफ़्तगू कर रहा था। तू एक हक़ीर कीड़े से ज़्यादा हैसियत नहीं रखता जिसे क़ज़ा व क़द्र हरकत देते हैं और मैंने इरादा कर लिया था कि मेरा काम मेरी गुफ़्तगू के ख़िलाफ़ न हो।

इसी तरह सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बलन्द हिम्मती की दूसरी रिवायत शहज़ादए ग़ौसे आज़म शैख़ अबू बक्र अ़ब्दुल रज़्ज़ाक़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से यह है कि मैने अपने वालिदे गिरामी सरकारे ग़ौसे आज़म शाह अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से सुना कि फ़रमाते थे मैं एक रात जामेअ मन्सूर में नमाज़ पढ़ रहा था कि बोरी पर किसी चीज़ के चलने की आहट महसूस हुई। फिर एक बड़ा सांप आया और उसने मेरे सिजदे की जगह मुँह खोला। जब मैं सिजदे में गया तो उसको हाथ से हटा दिया। फिर जब अत्तहिय्यात के लिए बैठा तो वह सांप मेरी रान पर चढ़ा और मेरी गर्दन पर पहुँच कर लिपट गया। जब मैंने सलाम फेरा तो ग़ायब हो गया। दूसरे रोज़ मैं जामे मस्जिद मन्सूर से बाहर वीराने में गया तो मैंने एक शख़्स को देखा जिसकी आंखें लम्बाई में फटी हुई थीं। मैं समझ गया कि यह कोई जिन्न है। उसने मुझसे कहा कि मैं वही हूँ जिसे आपने कल रात सांप की शक्ल में देखा था। मैंने इस तरह बहुत से औलियाए किराम को आज़माया है। उनमें से कोई भी मेरे आगे आपकी तरह साबित क़दम नहीं रहा। बाज़ हज़रात का ज़ाहिर व बातिन बेचैन हो गया, बाज़ हज़रात का बातिन बेचैन हो गया और ज़ाहिर साबित रहा, बाज़ हज़रात का ज़ाहिर बेचैन हो गया और बातिन ठीक रहा मगर आपको देखा कि न आपका ज़ाहिर बेचैन हुआ न बातिन। फिर उसने मुझसे इल्तिजा की कि मुझे अपने हाथ पर तौबा करायें। चुनांचे मैंने उसको तौबा कराई।

शैख़ ज-बली : शैख़ अबुल क़ासिम बताएही का बयान है कि मैं हिजरी 579 में सालेहीन की ज़ियारत के लिए लुबनान पहाड़ की तरफ़ आया। उस वक़्त उस पहाड़ में इस्फ़हान के एक बड़े अल्लाह के वली रहते था जिन्हें लुबनान पहाड़ में बहुत ज़्यादा अर्से तक रहने की वजह से शैख़ ज-बली कहा जाता था। मैं उनके पास हाज़िर हुआ। पुछा हुज़ूर आप को यहाँ कितना अर्सा हो गया? उन्होंने कहा साठ साल। मैंने कहा इस दौरान आपके साथ कोई अजीब व ग़रीब वाक़िया गुज़रा हो तो बताइये। उन्होंने कहा कि हिजरी 559 का वाक़िया है कि एक दफ़ा चांदनी रात में इस पहाड़ वालों को मैंने देखा कि कुछ लोग दूसरों के साथ जमा हो रहे हैं और गिरोह के गिरोह इराक़ की तरफ़ हवा में उड़ रहे हैं। मैंने उनमें से एक दोस्त से पूछा आप लोग किधर जा रहे हैं? उस दोस्त ने कहा हमें ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने हुक्म दिया है कि हम लोग बग़दाद में .क़ुतुबे वक़्त के सामने हाज़िर हों। मैंने पूछा .क़ुतुबे वक़्त इस वक़्त कौन हैं? उसने कहा शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर। मैंने साथ चलने की इजाज़त तलब की जो उसने दे दी। चुनांचे हम लोग हवा में उड़े और ज़रा देर में बग़दाद पहुँच गए। मैंने देखा कि वह तमाम लोग सफ़ें बांध कर हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर के सामने खड़े हैं और उस जमाअत के बड़े बड़े बुज़ुर्ग हज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर से अर्ज़ कर रहे हैं आक़ा जो हुक्म हो। आप उन्हें मुख़्तलिफ़ अहकाम दे रहे हैं और वह उस हुक्म को बजा लाने के लिए एक दूसरे से आगे निकल जाना चाहते हैं। थोड़ी देर बाद आपने उन्हें वापस होने का हुक्म दिया तो वह उल्टे क़दम पीछे हटे। फिर हवा में चलते हुए सीधे खड़े हो गए। मैं अपने दोस्त के साथ पहाड़ पर वापस लौट आया तो मैंने उस दोस्त से कहा कि आज की रात हज़रत शैख़ के सामने तुम लोगों का अदब और उनके हुक्म को बजा लाने में एक दूसरे पर आगे बढ़ जाने का जो हाल मैंने देखा है मैं हैरान रह गया हूँ। उसने कहा मेरे भाई हम ऐसा क्यूँ न करें, यह

अल्लाह के वह मुक़द्दस वली हैं जिन्होंने फ़रमाया है कि *"बेशक मेरा यह क़दम हर वली की गर्दन पर है"* और फिर हमें उनकी इताअत और एहतराम का हुक्म भी तो दिया गया है।

दाहिने बाज़ू शरीअत बायें बाज़ू हक़ीक़त : हज़रते शैख़ बताएही रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं हज़रते अहमद कबीर रहमतुल्लाहि तआला अलैह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उन्होंनं फ़रमाया कि तुम शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के भी कुछ हालात जानते हो। मैने सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु के हालात बयान करना शुरू कर दिए। जब मैं ख़ामोश हुआ तो सय्यिद अहमद कबीर रिफ़ाई ने फ़रमाया कि शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी के मरतबे को कौन पहचान सकता है। आपके दाहिनी तरफ़ शरीअत का समुन्द्र और बाईं तरफ़ तरीक़त का समुन्द्र है जिससे चाहें भरें इस वक़्त कोई उनके बराबर नहीं।

सिलसिला छीन लेने की .क़ुदरत : इन्हीं हज़रते सय्यिद अहमद कबीर रिफ़ाई रहमतुल्लाहि तआला अलैह के भतीजे जब बग़दाद शरीफ़ जाने लगे तो उन्होंने चलते वक़्त अपने भतीजे को ताकीद फ़रमाया कि देखो जिस वक़्त बग़दाद शरीफ़ में दाख़िल होना तो सबसे पहले हज़रत ग़ौसुस्सक़लैन शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी की ख़िदमत में हाज़िरी देना क्यूँकि उनके मुताल्लिक़ अहद लिया जा चुका है कि जो शख़्स बग़दाद में आए पहले उनकी ज़ियारत को हाज़िर हो वर्ना उसका सिलसिला छीन लिया जाएगा।

तुम्हारा ज़ाहिर व बातिन हमारे सामने है : सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु इरशाद फ़रमाते हैं कि तुम्हारा ज़ाहिर व बातिन मेरे सामने आइना है अगर मेरी ज़बान पर शरीअत की रोक न होती तो मैं बतलाता कि तुम क्या खाते हो क्या पीते हो और क्या जमा करते हो।

एक क़दम में जाना चाहते हो या जिस तरह आए थे : हज़रते शैख़ अबू सालेह मग़रिबी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने रिवयात की है कि मेरे शैख़ सय्यिदी अबू शुऐब मदयनी रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया ऐ अबू सालेह तुम सफ़र कर के बग़दाद जाओ और महबूबे सुब्हानी मुहीउद्दीन शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी .कुद्दिसा सिर्रुहुन्नूरानी की ख़िदमत में हाज़िरी दो। वह तुमको फ़क्र की तालीम देंगे। चुनांचे मैं बग़दाद पहुँचा और सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाहे आली में हाज़िर हुआ। मैंने आज तक ऐसे जाह व जलाल का कोई बन्दा न देखा था। सरकारे ग़ौसे आज़म ने मुझे तन्हाई में तीन चिल्ले बैठाया। उसके बाद मेरे पास तशरीफ़ लाए और क़िब्ले की जानिब इशारा करते हुए फ़रमाया ऐ अबू सालेह उस तरफ़ देखो तुम्हें क्या नज़र आता है। मैंने अर्ज़ किया कि काबए मुकर्रमा। फिर मग़रिब की जानिब इशारा करते हुए फ़रमाया इस तरफ़ देखो तुम्हें क्या नज़र आता है। मैंने अर्ज़ किया कि मेरे पीर व मुर्शिद अबू शुऐब मदयनी। फ़रमाया किस तरफ़ जाना चाहते हो काबा को या पीर के पास। मैंने अर्ज़ की अपने पीर के पास। सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया एक क़दम में जाना चाहते हो या जिस तरह आए थे। मैंने अर्ज़ की जिस तरह आया था। सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया यह अफ़ज़ल है साथ ही इरशाद फ़रमाया ऐ अबू सालेह अगर तुम फ़क्र चाहते हो तो बिला ज़ीने के अल्लाह तक नहीं पहुँचोगे। उसका ज़ीना तौहीद है और तौहीद का मदार यह है कि अल्लाह तआला की ज़ात के साथ दिल से तमाम ख़तरात को मिटा कर दिल को मुकम्मल पाक साफ़ कर लो। मैंने अर्ज़ की हुज़ूर अपने करम से मुझे यह ख़ूबी अता फ़रमायें। यह सुन कर आपने एक तवज्जो फ़रमाई तो ख़्वाहिशों की तमाम बातें मेरे दिल से बिल्कुल निकल गईं और मैं फ़क्र की दौलत से मालामाल हो गया।

फ़ायदा : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का दिलों पर ऐसा क़ब्ज़ा है कि एक तवज्जो में दिल को तमामी ख़तरात से हमेशा के लिए पाक फ़रमा दिया।

कोहेक़ाफ़ के अकाबिर औलिया : हज़रते शैख़ अबू ग़नाइम रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह बयान फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दौलतख़ाने पर हाज़िर हुआ तो देखा कि चार अजनबी शख़्स आपकी ख़िदमते मुबारका में मौजूद हैं, मैं खड़ा रहा। जब वो हज़रात उठ कर चले तो सरकारे ग़ौसे आज़म ने मुझसे फ़रमाया जाओ उनसे अपने लिए दुआ कराओ। चुनांचे मैंने दरवाज़े पर आकर उन्हें रोका और दुआ का तलबगार हुआ। उन्होंने फ़रमाया तुम हमसे दुआ के तालिब हो हालांकि तुम ऐसे शख़्स की ख़िदमत में रहते हो जिनकी दुआ की बरकत से ख़ुदाए क़दीर ज़मीन को क़ाइम रखता है और तमाम मख़लूक़ पर रहम फ़रमाता है। हम भी सरकारे ग़ौसे आज़म के सायए करम में पलते हैं और आप ही के आस्तानए आलिया की ताबेदारी की बदौलत हमें यह शरफ़ हासिल हुआ है। इतना फ़रमाने के बाद वो हज़रात तशरीफ़ ले गए। मैंने वापस आकर हुज़ूर ग़ौसे आज़म से पूछा कि ये हज़रात कौन थे। सरकारे ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया कोहेक़ाफ़ के अकाबिर औलिया में से हैं। इस वक़्त वो अपनी जगह पर पहुँच रहे हैं।

मर्दाने ग़ैब : शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह का बयान है कि मैं 9 रबीउल आख़िर हिजरी 552 को मग़रिब और इशा के दरमियान मदरसे की छत पर पीठ के बल लेटा था। गर्मी का ज़माना था और सय्यिदी हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर मेरे आगे क़िब्ले की तरफ़ चेहरए अनवर किए हुए मौजूद थे। मैंने आसमान व ज़मीन के दरमियान एक शख़्स को देखा जो तीर की तरह तेज़ी से गुज़र रहा था। उसके सर पर निहायत बेहतरीन इमामा था जिसका एक शमला उसके शानों के

दरमियान लटक रहा था। वह सफ़ेद कपड़े पहने थे और उसकी कमर में पटका भी लटक रहा था। जब वह हज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर के सरे अनवर के बराबर गुज़रा तो जल्दी में यूँ उतर पड़ा जैसे उक़ाब शिकार पर उतरता है। वह शख़्स हज़रत शैख़ के सामने बैठ गया और उन्हें अदब से सलाम किया फिर हवा में चला गया और मेरी नज़रों से ग़ायब हो गया। मैं सय्यिदी हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर की तरफ़ उठ कर गया और उस शख़्स के बारे में पूछने लगा। तो आपने फ़रमाया तुमने उसे देख लिया? मैंने अर्ज़ किया जी हाँ। फ़रमाया यह मर्दाने ग़ैब में से है जो अल्लाह तआ़ला के हुक्म से दुनिया की सैर करते रहते हैं। उन पर अल्लाह का सलाम हो। (ख़ुलासतुल मफ़ाख़िर)

फ़लसफ़े से तौबा : शैख़ अबुल मुज़फ़्फ़र मन्सूर इब्ने मुबारक वास्ती का बयान है कि मैं जवानी के दिनों में एक रोज़ हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। उस वक़्त मेरे पास फ़लसफ़ा और रूहानियत के इल्म पर शामिल एक किताब थी। हाज़िरीन में से किसी ने भी उस किताब के बारे में मुझसे बात नहीं की। अलबत्ता हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी ने किताब को देखे बग़ैर मुझसे फ़रमाया ऐ मन्सूर तेरी यह किताब बुरा साथी है, उठ खड़ा हो और इसे पानी में धो डाल। उस वक़्त मुझे यह ख़्याल आया कि हज़रते शैख़ के सामने से उठ कर किताब को घर रख आऊँ और शैख़ के ख़ौफ़ से दोबारा उसे न उठाऊँ। अलबत्ता किताब के धो डालने पर मेरा दिल तय्यार नहीं हो रहा था क्यूँकि मुझे यह किताब बहुत पसन्द थी और उसके कुछ मज़मून मुझे याद हो चुके थे। मैं इस नियत से उठा ही था कि हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ने तअज्जुब की निगाहों से मुझे देखा तो मैं उठ न सका गोया उस वक़्त मैं क़ैद होकर रह गया था। हज़रते शैख़ ने फ़रमाया कि अपनी यह किताब ज़रा मुझे दिखाना। मैंने उसे खोला तो वह कोरे काग़ज़ों का एक पुलन्दा था जिसमें एक

हर्फ़ भी लिखा हुआ न था। मैंने किताब आपके हाथ में दे दी। आपने उसके कुछ वरक़ उल्टे पलटे और फिर फ़रमाया कि यह किताब तो मुहम्मद इब्ने ज़रीस की किताब फ़ज़ाइले .क़ुर्आन है। यह कह कर किताब आपने मुझे दे दी। अब मैं देखता हूँ तो वह वाक़ई मुहम्मद इब्ने ज़रीस की किताब फ़ज़ाइले .क़ुर्आन ही है जो निहायत अच्छी लिखी हुई है। उसके बाद आपने मुझसे फ़रमाया कि तुम इस बात से तौबा करते हो? कि ज़बान से वह बात कहो जो तुम्हारे दिल में न हो। मैंने कहा जी हुज़ूर। हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ने फ़रमाया खड़े हो जाओ। मैं उठा तो मेरे दिल व दिमाग़ से फ़लसफ़ा की वह तमाम बातें बिल्कुल मिट चुकीं थीं जो इससे पहले मैं याद कर चुका था और वो बातें आज के दिन तक ऐसी मिटी हुई हैं कि जैसे कभी मुझे याद ही न थीं। (ख़ुलासतुल मफ़ाख़िर)

मछलियों ने क़दमबोसी की : एक दफ़ा सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बग़दाद शरीफ़ के लोगों की नज़रों से ग़ायब हो गए। लोगों ने तलाश किया तो मालूम हुआ कि आप दरियाए दजला की जानिब तशरीफ़ ले गए हैं। वहाँ पहुँच कर लोगों ने देखा कि आप पानी पर चल रहे हैं और दरियाए दजला की सारी मछलियाँ निकल निकल कर आपको सलाम करती हैं और क़दमे मुबारक को चूम रही हैं। फिर देखते ही देखते एक बेहतरीन क़िस्म का हसीन मुसल्ला फ़ज़ा में बिछ गया और उसके ऊपर दो सतरें लिखीं हैं। पहली सतर यह थी :-

اَلآ اِنَّ اَوْلِيَاءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ○

तर्जमा : सुन लो बेशक अल्लाह के वलियों पर न कुछ ख़ौफ़ है और न कुछ ग़म।

और दूसरी सतर यह थी :-

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ اِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ○

तर्जमा : सलामती हो तुम पर ऐ अहले बैत बेशक वह हमीद और बुज़ुर्ग है।

इतने में बहुत से लोग उस मुसल्ले के क़रीब जमा हो गए। ज़ुहर का वक़्त था। तकबीर कही गई। आपने इमामत फ़रमाई। जब सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तकबीर कहते तो हामिलाने अर्श (अर्श को उठाने वाले फ़िरिश्ते) आपके साथ तकबीर कहते और जब आप तसबीह पढ़ते तो सातों आसमान के फ़िरिश्ते आपके साथ तसबीह पढ़ते थे और समिअ़ल्लाहु लिमन ह़मिदह कहते तो आपके लबों से निकल कर सब्ज़ रंग का नूर आसमान की तरफ़ जाता। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो यह दुआ फ़रमाई कि ऐ रब्बे क़दीर तेरी बारगाह में तेरे महबूब के वास्ते दुआ करता हूँ कि तू मेरे मुरीदों और मेरे मुरीदों के मुरीदों की रूहों को जो मेरी तरफ़ मन्सूब हों बग़ैर तौबा के क़ब्ज़ न फ़रमाना। हज़रते सहल इब्ने अ़ब्दुल्लाह तुस्तरी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाते हैं कि आपकी इस दुआ पर हम सभी ने फ़िरिश्तों की एक बड़ी जमाअत को आमीन कहते सुना। दुआ के बाद एक निदाए ग़ैबी सुनाई दी "ऐ अ़ब्दुल क़ादिर ख़ुशख़बरी हो तुम्हारे लिए यह कि मैंने तुम्हारी दुआ क़बूल कर ली"

शैख़ बक़ा इब्ने बतू रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाते हैं कि किसी शख़्स ने सरकारे ग़ौसे आज़म से पूछा कि आपके मुरीदों में परहेज़गार और गुनहगार दोनों होंगे। तो इस सवाल पर सरकारे ग़ौसे आज़म ने अपने ग़ुलामों के लिए कितना तसल्ली बख़्श जवाब दिया। सरकारे ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया कि हाँ अच्छे और बुरे दोनों होंगे मगर परहेज़गार मेरे लिए हैं और मैं गुनहगारों के लिए हूँ।

तक़दीर का सर्राफ़ : बहजतुल असरार शरीफ़ में हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ख़ादिम से रिवायत है कि मेरे वालिद ने बयान फ़रमाया कि एक दफ़ा शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर 250 दीनार मुख़्तलिफ़ क़र्ज़ों के हो गए। एक शख़्स आया जिसको मैं नहीं पहचानता था। वह आपकी ख़िदमत में बग़ैर इजाज़त लिए हुए आ गया और देर तक आपसे बातें करता रहा फिर आपके लिए सोना

निकाला और कहा यह क़र्ज़ के अदा के लिए है और चला गया। तब मुझको शैख़ ने हुक्म दिया कि मैं हर एक हक़दार को उसका हक़ पहुँचा दूँ और फ़रमाया कि यह तक़दीर का सर्राफ़ है। मैंने कहा कि तक़दीर का सर्राफ़ कौन होता है। फ़रमाया एक फ़िरिश्ता होता है जिसको ख़ुदाए तआ़ला अपने औलिया के क़र्ज़दार के लिए भेजा करता है और वह सर्राफ़ औलिया अल्लाह की तरफ़ से उनका क़र्ज़ अदा कर देता है।

हवा में उड़ना : बहजतुल असरार शरीफ़ में हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ख़ादिम से रिवायत है कि मेरे वालिद ने बयान फ़रमाया कि एक दिन हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु वाज़ फ़रमा रहे थे, इसी दरमियान आप चन्द क़दम हवा में उड़ कर चले और फ़रमाया ऐ इस्राईली ठहर जा कलामे मुहम्मदी स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम सुनता जा। फिर आप अपनी जगह पर आ गए। आप से जब पूछा गया तो फ़रमाया कि अबुल अब्बास ख़िज़्र हमारी मजलिस पर से जल्द जल्द जा रहे थे इसलिए मैं उड़ा और उनसे वह बात कही जो तुमने सुनी। (बहजतुल असरार पेज 218)

हुज़ूर ग़ौसे पाक और अमीर लोग : बहजतुल असरार शरीफ़ में है कि अबू अ़ब्दुल्लाह मुहम्मद इब्ने ख़िज़्र मौसली ने कहा ख़बर दी हमको मेरे बाप ने कि मैंने सय्यिदी मुहीउद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर की तेरह साल तक ख़िदमत की है। मैंने इस मुद्दत में न आपको नाक साफ़ करते देखा न थूकते देखा और न कभी आप पर मक्खी बैठी और न कभी किसी बड़े अमीर के लिए आप खड़े हुए और न किसी बादशाह के दरवाज़े पर गए और न उसके फ़र्श पर बैठे न उसका कभी खाना खाया मगर आप बादशाहों और अमीरों के फ़र्श पर एक दफ़ा बैठने को उन अज़ाबों में से समझते थे जो जल्द आने वाला हो बल्कि जब आपकी ख़िदमत में ख़लीफ़ा या वज़ीर या और कोई बड़ा आदमी आने वाला होता और आप बैठे हुए होते तो उठ कर अपने घर के अन्दर चले जाते फिर जब वह

मालदार आपके दरावाज़े पर आता तो आप घर से निकलते ताकि उन दुनियादारों और मालदारों के लिए खड़ा न होना पड़े और उनसे सख़्त कलामी से पेश आते और उनको बहुत सी नसीहतें करते। वो लोग आपके हाथ चूमते आपके सामने निहायत तवाज़ो व इन्किसारी से बैठते और जब आप ख़लीफ़ा के नाम कुछ लिखते तो यह लिखते तुमको अब्दुल क़ादिर यह लिखता है और यह हुक्म देता है। उसका हुक्म तुम पर जारी है उसकी इताअत तुम पर वाजिब है तुम्हारे लिए वह पेशवा है और तुम पर वह हुज्जत है। जब ख़लीफ़ा को आपकी तहरीर मिलती तो उसको चूमता और कहता कि शैख़ अब्दुल क़ादिर ने सही फ़रमाया। (बहजतुल असरार पेज 254)

सरकारे ग़ौसे आज़म की करामात

हाथों का कमाल : शैख़ अली इब्ने इदरीस याक़ूबी बयान करतें हैं कि मेरे शैख़ मुझे एक दफ़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में ले गए। आप थोड़ी देर ख़ामोश रहे, उसके बाद मैंने देखा कि आप के जिस्मे अतहर सें नूर की शुआयें निकल कर मेरे जिस्म में मिल गईं हैं। उस वक़्त मैंने क़ब्र वालों को देखा और उनके हालात और मरतबों को देखा और फ़िरश्तों को भी देखा और मैंने मुख़्तलिफ़ आवाज़ों में उनकी तस्बीह सुनी और हर एक आदमी की पेशानी पर जो कुछ लिखा था उसको मैंने पढ़ा और बहुत से अजीब व ग़रीब वाक़ियात मैंने देखे। फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने मुझसे फ़रमाया डरो मत। तो मेरे शैख़े तरीक़त हज़रते अली इब्ने हीती ने हज़रत की ख़िदमत में अर्ज़ की हुज़ूरे वाला मुझे इसकी अक़्ल चले जाने का डर हैं। तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने अपना मुबारक हाथ मेरे सीने पर रखा फिर जो कुछ मैंने देखा मैं उससे बिल्कुल न घबराया और फ़िरिश्तों की तस्बीह को मैंने फिर सुना और अब तक मैं फ़रिश्तों की दुनिया में उस रोशनी से फ़ैज़ हासिल करता हूँ। (कलाएदुल जवाहिर)

उंगली की करामत : शैख़ अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद इब्ने कामिल नैसानी का बयान है कि मैंने शैख़ अबू मुह़म्मद शावर महल्ली से सुना कि मैं हज़रते शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी की ज़ियारत के लिए बग़दाद में दाख़िल हुआ और एक मुद्दत तक आपकी ख़िदमत में रहा। फिर जब मैंने मिस्र के लिए रवानगी का इरादा किया तो ख़याल आया कि यह सफ़र मख़लूक़ और बिला सामान और बग़ैर खाने पीने के सिर्फ़ पैदल तय करूँ। मैंने हुज़ूर ग़ौसे आज़म से इजाज़त तलब की तो आपने मुझे वसीयत फ़रमाई कि मैं किसी से कुछ न मांगूँ। यह फ़रमा कर अपनी दोनों उंगलियाँ मेरे मुँह में रख दीं और फ़रमाया कि इन्हें चूस लो। मैंने उन्हें चूस लिया। फिर फ़रमाया हिदायत पाए हुए और रहनुमा होकर जाओ। मैं बग़दाद से मिस्र की तरफ़ चल पड़ा न कुछ खाता था न पीता था मगर जिस्मानी .कुव्वत दिन-ब-दिन बढ़ रही थी।

इसी तरह एक मरतबा का वाक़िया है कि रात के वक़्त सरकारे ग़ौसे आज़म के साथ शैख़ कबीर सय्यिद अह़मद रिफ़ाई और अदी इब्ने मुसाफ़िर हज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद इब्ने ह़म्बल रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मज़ारे पुर अनवार की ज़ियारत के लिए तशरीफ़ ले गए मगर उस वक़्त अंधेरा बहुत ज़्यादा था। हज़रते ग़ौसे आज़म उनके आगे आगे थे। हुज़ूर ग़ौसे आज़म जब किसी पत्थर या किसी दीवार या क़ब्र के पास से गुज़रते तो अपनी उंगली से इशारा फ़रमाते उस वक़्त आपकी उंगली मुबारक चाँद की तरह रौशन हो जाती थी। इसी तरह वह सब हज़रात आपकी उंगली मुबारक की रोशनी से हज़रत सय्यिदुना इमाम अह़मद इब्ने ह़म्बल रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मज़ारे मुबारक तक पहुँच गए। (क़लाएदुल जवाहिर)

खड़ाऊँ का कमाल : शैख़ अबू अम्र उसमान सरीफ़ीनी और शैख़ अ़ब्दुल ख़ालिक़ ह़रीमी बयान फ़रमाते हैं कि एक मरतबा हम तीसरी सफ़र हिजरी 555 को आपके मदरसे में हाज़िर थे। अचानक आप उठे और खड़ाऊँ पहन कर वुज़ू

फ़रमाया फिर दो रकअत नमाज़ पढ़ी। जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो एक चीख़ मारी और एक पैर की खड़ाऊँ को हवा में फेंक दिया जो हमारी निगाहों से ग़ायब हो गई। फिर दूसरे पैर की खड़ाऊँ भी हवा में फेंक दी। जलाल की वजह से हम लोगों को पूछने की हिम्मत न हुई। अलबत्ता हम लोगों ने दिन तारीख़ नोट कर ली। तीन दिन के बाद एक क़ाफ़िला ताजिरों का आया सरकारे ग़ौसे आज़म की ख़िदमत में कुछ कपड़े और नक़द रुपये नज़्र किए और साथ ही उस दिन वाली खड़ाऊँ को भी ख़िदमत में हाज़िर किया। हम लोगों को बड़ी हैरत हुई। उन क़ाफ़िले वालों से हमने हालात मालूम किए तो उन्होंने बताया कि हमारा क़ाफ़िला जंगल से गुज़र रहा था। डाकूओं ने हमें घेर कर लूट लिया और मेरे बाज़ आदमियों को क़त्ल किया। फिर डाकू जंगल में उतर कर माल आपस में बांटने लगे और हम लोग जंगल के एक किनारे उतरे और हमने कहा कि काश हम लोग शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी को इस वक़्त याद करते और उनके लिए अपने माल में से कुछ नज़्र मानते कि अगर हम बच रहे तो नज़्र देंगे। फिर हम लोगों ने सरकारे ग़ौसे आज़म को पुकारा तो फ़ौरन ही हमने दो चीख़ें ऐसी सुनीं कि पूरा जंगल दहल गया। हमने उनको देखा कि वो डाकू ख़ौफ़ज़दा हैं। हमने समझा कि उन पर दूसरे डाकू आ गए। फिर उनमें से बाज़ डाकू हमारे पास आए और कहने लगे कि आओ अपना माल ले लो और देखो कि हम पर क्या मुसीबत आई है। फिर वो डाकू हमको अपने सरदारों के पास लाए और हमने उनको मुर्दा पाया और हर एक के पास एक खड़ाऊँ पड़ी है जो कि पानी से तर है। फिर उन्होंने हमारा माल लौटा दिया और डाकू कहने लगे कि यह कोई बड़ा हादसा है।

बच्चा तंदरुस्त हो गया : शैख़ अबुल हसन हीती रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मदरसे में हाज़िर था कि एक मालदार ताजिर अबू ग़ालिब फ़ज़्लुल्लाह इब्ने

इस्माईल बग़दादी अज़जी आया और अर्ज़ किया कि हुज़ूर आपके जद्दे करीम अलैहिस्सलातो वस्सलाम का फ़रमान है कि जब कोई शख़्स दावत पेश करे तो क़बूल कर लेनी चाहिए लिहाज़ा ख़ादिम आपकी बारगाह में इसी ग़र्ज़ से हाज़िर हुआ है कि आप मेरी दावत क़बूल फ़रमा लीजिए। सरकारे ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया अगर मुझको इजाज़त मिल गई तो ज़रूर शरीक हूंगा। इसके बाद थोड़ी देर के लिए आपने मुराक़बे में सरे अनवर झुका लिया। फिर सरे मुबारक उठा कर फ़रमाया मुझे इजाज़त मिल गई अब मैं ज़रूर आऊँगा। जब दावत का वक़्त आया तो आप अपनी सवारी पर रवाना हुए। शैख़ अली इब्ने हीती ने आपकी दाईं रिकाब थामी और अबुल हसन ने बाईं रिकाब पकड़ी और ताजिर के मकान पर पहुँच गए। वहाँ उलमा और बुज़ुर्गाने दीन की एक बड़ी जमाअत पहले ही से मौजूद थी। दसतरख़्वान बिछाया गया और तरह तरह के खाने चुने गए। फिर एक बड़ा सा बन्द टोकरा दो शख़्स उठाए हुए लाए और दसतरख़्वान के एक किनारे पर रख दिया। उसके बाद मेज़बान ने कहा बिस्मिल्लाह कीजिए। लेकिन सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मुराक़बे में सरे अनवर झुकाए बैठे रहे। आपने खाना शुरू नहीं फ़रमाया इसलिए किसी को भी हिम्मत न हुई कि खाना शुरू करे।

थोड़ी देर के बाद सरकारे ग़ौसे आज़म ने इरशाद फ़रमाया कि टोकरा मेरे सामने लाकर खोलो। तो शैख़ अली हीती और शैख़ अबुल ह़सन ने टोकरा सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास लाकर खोला तो उसमें अबू ग़ालिब का अपहिज लुंजा और सफ़ेद दाग़ वाला मरीज़ बच्चा था। सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने यह देख कर समझ लिया कि इस दावत का मक़सद यही है कि इस बच्चे को उलमाए किराम और औलियाए किराम के सामने दुआ के लिए पेश किया जाए। चुनांचे सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बच्चे को देख कर फ़रमाया ऐ बच्चे तू अल्लाह पाक

के हुक्म से शिफ़ायाब होकर खड़ा हो जा। सरकारे ग़ौसे आज़म का यह फ़रमाना था कि बच्चा फ़ौरन शिफ़ायाब होकर मजलिस में दौड़ने लगा। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की यह बेमिसाल करामत देख कर मजलिसे दावत में एक शोर बरपा हो गया और सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बग़ैर कुछ खाए पिए अपनी ख़ानक़ाह शरीफ़ में वापस आ गए।

शैख़ अबू सईद क़ैलवी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने यह वाक़िया सुना तो फ़रमाया सरकारे ग़ौसे आज़म मादरज़ाद अन्धों और कोढ़ियों को ही नहीं अच्छा करते हैं बल्कि अल्लाह तआ़ला के हुक्म से मुर्दों को भी ज़िन्दा फ़रमा देते हैं।

लुंजा अच्छा हो गया : .क़ुदवतुल आरिफ़ीन हज़रत अबुल हसन अली रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह बयान करते हैं कि राफ़ज़ियों की एक जमाअत सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर आई और दो बन्द टोकरे आपके सामने रख दिए और दरयाफ़्त किया बताईये इसमें क्या है। आपने उन दोनों में से एक के ऊपर अपना मुबारक हाथ रख कर फ़रमाया इसमें एक आफ़तरसीदा बच्चा है। फिर वह खोला गया तो एक लुंजा बच्चा गोश्त के लोथड़े की तरह निकला। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया ".क़ुमबिइज़्निल्लाह" यानी अल्लाह के हुक्म से ठीक हो जा। वह बच्चा उसी वक़्त तंदरुस्त व तवाना हो गया और चलने लगा।

फिर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने दूसरे टोकरे के ऊपर अपना हाथ मुबारक रख कर फ़रमाया इसमें एक सही सलामत बच्चा है। खोला गया तो वाक़ई एक तंदरुस्त बच्चा निकला हज़रत ने उसके पेशानी के बाल पकड़ कर फ़रमाया 'अपाहिज हो जा' इतना कहना था कि उसी वक़्त वह बच्चा लुंजा हो गया।

यह करामत देख कर राफ़ज़ियों ने अपने बातिल और नापाक मज़हब को छोड़ कर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु के हाथ मुबारक पर बैअत की। इस वाक़िया को देख कर तीन हज़रात इन्तेक़ाल कर गए। रावी का बयान हैं कि वो दोनों बच्चे आख़िर उम्र तक उसी हालत पर रहे।

शराब का सिरका बन जाना : शहज़ादए ग़ौसे आज़म हज़रते ताजुल अस्फ़िया सय्यिदुना अ़ब्दुल रज़्ज़ाक़ रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बयान फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे गिरामी शैख़ मुहीउद्दीन अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु एक दिन नमाज़े जुमा के लिए निकले। मैं और मेरे दो भाई सय्यिद अ़ब्दुल वह्हाब और सय्यिद ईसा हुज़ूर ग़ौसे आज़म के साथ थे। रास्ते में हमको बादशाह के तीन मटके शराब के मिले जिनकी बदबू बहुत तेज़ थी। अल्लाह की पनाह। उनके साथ कोतवाल और दूसरे सिपाही थे। उन लोगों से मेरे वालिदे गिरामी हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया कि ठहर जाओ। मगर वो लोग न ठहरे और जानवरों के चलाने में जल्दी की। फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने जानवरों से कहा ठहर जाओ। जानवर अपनी जगह ऐसे ठहर गए गोया कि वो पत्थर हैं। कोतवाल वग़ैरह बहुत मारते थे मगर जानवर अपनी जगह से नहीं हिले और कोतवाल और दूसरे सिपाहियों के पेट में दर्द शुरू हो गया और वो शदीद दर्द की वजह से ज़मीन पर दायें बायें लोटने लगे। फिर तसबीह के साथ चिल्लाने लगे और खुल्लम खुल्ला तौबा और इस्तिग़फ़ार करने लगे। फिर उन लोगों ने हुज़ूर ग़ौसे आज़म से माफ़ी मांगी तो उन लोगों का दर्द ख़त्म हो गया और सरकारे ग़ौसे आज़म की तवज्जोह से शराब के मटके से सिरके की महक आने लगी। उन लोगों ने बर्तनों को खोला तो हक़ीक़त में उन बर्तनों में सिरका था। हज़ूर ग़ौसे आज़म तो जामे मस्जिद को चले गए मगर यह ख़बर बादशाह तक पहुँच गई तो वह मारे डर के रोने लगा और बहुत सी दूसरी हरामकारियों से भी डर गया। फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म की ज़ियारत के लिए हाज़िर हुआ और आपसे निहायत आजिज़ी के साथ माफ़ी मांगी।

(बहजतुल असरार शरीफ़)

बारिश का बन्द हो जाना : शैख़ अदी इब्ने मुसफ़िर से रिवायत है कि एक मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु वाज़ फ़रमा रहे थे कि अचानक बारिश होनी लगी। लोगों में बेचैनी पैदा हो गई तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने चेहरए मुबारक आसमान की जानिब उठा कर फ़रमाया मैं तो लोगों को जमा करता हूँ और तू लोगों को बिखेरता है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का इतना फ़रमाना था कि बारिश मजलिसे मुबारक में बन्द हो गई और मजलिस के बाहर बारिश बराबर होती रही।

सैलाब का रुक जाना : इसी तरह दरियाए दजला में एक मरतबा बहुत ख़तरनाक सैलाब आया और पानी इतना बढ़ गया कि बग़दादे मुक़द्दस के डूब जाने का ख़तरा पैदा हो गया। लोग परेशानी के आलम में सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में फ़रियाद करते हुए हाज़िर हुए और अर्ज़ किया हुज़ूर तवज्जो फ़रमाइये तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रियादियों की फ़रयाद सुनकर अपनी लाठी शरीफ़ लेकर उठे और दरियाए दजला के किनारे पहुँच कर उसकी पुरानी हद पर अपनी लाठी गाड़ दी और फ़रमाया ख़बरदार ऐ दरियाए दजला इससे आगे न बढ़ना। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इस फ़रमान के बाद दजला का पानी घटने लगा और अपनी पुरानी हद पर आकर बहने लगा।

खजूर का दरख़्त हरा हो जाना : अबू मुहम्मद अ़ब्दुल वाहिद इब्ने सालेह इब्ने यहया क़र्शी बग़दादी ने बयान फ़रमाया है कि शैख़ अली हीती रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जब बीमार हो जाते थे तो शैख़ अबुल मुज़फ़्फ़र इस्माईल इब्ने सिनान हमीरी के बाग़ीचे में चले जाते थे और कई कई रोज़ तशरीफ़ रखते थे। उस बाग़ में दो दरख़्त खजूर के बिल्कुल

सूख गए थे और चार साल से उसमें फल फूल कुछ नहीं आते थे। अब उनके कटवाने का इरादा कर लिया था। हज़रते शैख़ अली हीती एक मरतबा बीमार हुए तो उसी बाग़ में तशरीफ़ ले गए तो एक दिन सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उनकी इयादत के लिए उस बाग़ में तशरीफ़ ले गए। इयादत से फ़ारिग़ होकर सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उन दरख़्तों में से एक के नीचे बैठ कर वुज़ू किया और दूसरे के नीचे दो रकअत नमाज़ पढ़ी। अल्लाह अल्लाह आपके क़दम मुबारक की बरकत मुलाहज़ा कीजिए कि दोनों दरख़्त हरे भरे हो गए जब कि उस वक़्त फलों के आने का मौसम भी नहीं था मगर एक हफ़्ते के अन्दर उन दरख़्तों में खजूरें भी लग गईं।

हज़रते शैख़ सा़लेह उन दरख़्तों से खजूरें लेकर सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बारगाह में हाज़िर हुए। सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उन खजूरों में से कुछ खजूरें तनावुल फ़रमाईं और दुआ दी कि परवरदगारे आलम तुम्हारी ज़मीन तुम्हारे दिरहमों तुम्हारे साओं (एक क़िस्म की नाप का नाम) और तुम्हारे मवेशियों में बरकत अता फ़रमाए।

शैख़ सा़लेह का ख़ुद बयान है कि इस दुआ की ऐसी बरकत हुई और सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का इतना करम हुआ कि अब मैं एक दिरहम ख़र्च करता हूँ तो उसके दो गुने फ़ौरन कहीं से आ जाते हैं। घर के अन्दर अगर सौ बोरी गेहूँ की रखता हूँ और पचास ख़र्च कर डालता हूँ और फिर देखता हूँ तो सौ की सौ मौजूद पाता हूँ। मवेशी इस क़द्र बच्चे देने लगे हैं कि उनकी शुमार मुश्किल से याद रहती है। दूध इतना ज़्यादा है कि ख़त्म करने के बावुजूद ख़त्म नहीं कर पाता। ग़र्ज़ यह कि सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की इस दुआ की बरकत से बराबर मालदार होता चला जा रहा हूँ।

सुस्त ऊँटनी तेज़ हो जाना : हज़रते अबू हफ़्स उमर इब्ने सालेह रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी कमज़ोर व लाग़र ऊँटनी लिए हुए हाज़िर हुए हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाह तआला अन्हु की बारगाह में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हज्जे बैतुल्लाह शरीफ़ का इरादा रखता हूँ मगर मेरी यह ऊँटनी बहुत कमज़ोर है जिससे सफ़र तय करना मुश्किल है और इसके इलावा न तो दूसरी ऊँटनी है और न ही पैसे हैं कि ख़रीद सकूँ हुज़ूर कोई तदबीर फ़रमा दें। तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने उस कमज़ोर ऊँटनी की पेशानी पर अपना मुबारक हाथ रख दिया। बस फिर क्या था उसी वक़्त वह ऊँटनी तदरुस्त व तेज़ रफ़्तार हो गई और सारी ऊँटनियों से आगे चलने लगी।

कबूतरी ने अंडे देना और .कुमरी ने बोलना शुरू किया : एक मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु शैख़ अबुल हसन अली इब्ने अहमद कनानी की इयादत के लिए तशरीफ़ ले गए। गुफ़्तगू के दौरान उन्होंने कहा कि हुज़ूर मेरे यहाँ कबूतरी और एक .कुमरी है लेकिन पता नहीं क्यूँ नौ महीने से .कुमरी बोलती ही नहीं और कबूतरी भी अंडे नहीं देती।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु उठे और कबूतरी के पास जाकर फ़रमाया तू अपने मालिक को फ़ाएदा पहुँचा कर ख़ुश किया कर। फिर .कुमरी के पास जाकर फ़रमाया अब तू भी अपने रब की तस्बीह शुरू कर दे। अल्लाहु अकबर, उसी दिन से कबूतरी अंडे भी देने लगी और बच्चे भी निकालने लगी और बोलना भी शुरू कर दिया। इधर .कुमरी ने भी मस्त हो कर बोलना शुरू कर दिया और ऐसी मीठी और रसीली आवाज़ से बोलने लगी कि लोग चलते चलते खड़े हो कर सुनने लगते थे। यह सिलसिला एक ज़माने तक चलता रहा।

तुम्हारे मुँह से जो निकली वह बात हो के रही : शैख़ मुज़फ़्फ़र मन्सूर रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह बयान फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने आकर एक बुज़ुर्ग का ज़िक्र किया जो बाकमाल शख़्स थे। वह यह कहा करते थे कि मैं हज़रते यूनुस अ़लैहिस्सलाम के मक़ाम से भी गुज़र चुका हूँ। अल्लाह की पनाह। यह सुनते ही सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का चेहरए मुबारक ग़ुस्से से सुर्ख़ हो गया। आप तकिया लगाए बैठे थे मगर ग़ुस्से के आलम में उस तकिए को लेकर अपने सामने रख लिया। अभी यह हालत हुई थी कि वह दावा करने वाला शख़्स मरा पड़ा था। किसी ने उसके मरने के बाद उसे ख़्वाब में देखा और उससे पूछा अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे साथ क्या सुलूक किया तो उस शख़्स ने बताया मुझे अल्लाह तआ़ला ने बख़्श दिया है और हज़रते यूनुस अला नबीइयेना व अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के मुताल्लिक़ मेरे दावा को भी माफ़ कर दिया गया और यह सारा काम सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के रह़म करने और सिफ़ारिश करने से हुआ, अल्लाह तआ़ला भी राज़ी हो गया और हज़रते यूनुस अ़लैहिस्सलाम ने भी माफ़ फ़रमा दिया।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की एक आदत यह भी थी कि फ़क़ीर के ग़ुरूर पर सख़्त ग़ज़बनाक होते थे।

चोर को अबदाल बना दिया : शाह अबुल मआली अ़लैहिर्रह़मा ने बयान फ़रमाया है कि हज़रते शैख़ दाऊद रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाया करते थे कि चूंकि हमारे पीर हुज़ूर ग़ौसे आज़म की बारगाह में हर तरह के लोग आते थे और तमाम दौलतमन्द और मालदार सरकारे ग़ौसे आज़म की बारगाह के ख़ादिम थे। इस लिए एक चोर ने ख़याल किया कि ऐसे जाह व जलाल वाले यक़ीनन बहुत मालदार होंगे तो उस चोर ने इरादा किया कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म के घर में घुस जाऊँ

और माल व दौलत उठा लाऊँ। चोर जब घर में घुसा तो कुछ भी न पाया और बजाए माल पाने के अंधा भी गया। हुज़ूर ग़ौसे आज़म पर उस चोर का हाल ज़ाहिर था। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने ख़याल फ़रमाया कि यह बात मेहरबानी से दूर है कि हमारे घर में कोई कामयाबी की ख़्वाहिश लेकर आए और नाकाम चला जाए। हुज़ूर ग़ौसे आज़म अभी इस ख़्याल में थे कि हज़रते ख़िज़्र अला नबीय्येना अलैहिस्सलातु वस्सलाम आए और बताया किया कि ऐ शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर एक अबदाल का इन्तेक़ाल हो गया है उसकी जगह पर किसी दूसरे अबदाल को मुक़र्रर कर दें। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया कि घर के अन्दर एक शख़्स मौजूद हो उसको ले आओ ताकि उसको बलन्द मरतबा अता फ़रमा दें। हज़रते ख़िज़्र गए और उस चोर को हुज़ूर ग़ौसे आज़म की बारगाह में लाए जिसे हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने लुत्फ़ो करम की एक ही निगाह से अबदाल बना दिया और इन्तेक़ाल फ़रमाने वाले अबदाल की जगह मुतअइयन फ़रमा दिया।

कुंजियों का गुच्छा : एक मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु वाज़ फ़रमा रहे थे। अबुल मआली नाम के एक साहब वहाँ मौजूद थे। इत्तेफ़ाक से अबुल मआली को हाजते बशरिया का एहसास हुआ यानी पाख़ाना करने की ज़रूरत हुई लेकिन मजलिस के अदब की वजह से हरकत न कर सके। जब बेइख़्तियार हुए तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की जानिब देखने लगे। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु मिम्बर से एक ज़ीना नीचे उतरे तो ऊपर वाले ज़ीने पर एक सर मिस्ल आदमी के सर के ज़ाहिर हुआ। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु दूसरे ज़ीने पर उतरे तो उस सर का मोंढा और सीना ज़ाहिर हुआ जैसे जैसे सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु नीचे उतरते जाते वह शक्ल बढ़ती जा रही थी हत्ताकि वह सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ही की तरह शक्ल बन गई।

बात करने और चलने फिरने का अन्दाज़ बिल्कुल सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तरह हो गया। इस नई शबीह को अबुल मआली और जिसको अल्लाह तआ़ला ने चाहा उनके सिवा कोई न देख सका। सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने नीचे तशरीफ़ लाकर अपना रुमाल या आस्तीन मुबारक अबुल मआली के सर पर डाल दिया। उसके बाद अबुल मआली अपने को एक बहुत बड़े जंगल में पाते हैं जिसमें एक नहर जारी है और एक दरख़्त बहुत ही बड़ा है। उन्होंने अपनी कुंजी का गुच्छा उस दरख़्त की एक टहनी में लटका दिया और हाजत से फ़ारिग़ होने के बाद उस नहर से वुज़ू किया। फिर दो रकअत नमाज़ पढ़ी। इधर सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने सर से रुमाल हटा लिया और उधर अबुल मआली अपने को वैसे ही मजलिस में मौजूद पाते हैं। उनके आज़ाए वुज़ू पर पानी की तरी भी बाक़ी थी और सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उसी तरह मिम्बर पर वाज़ फ़रमाते रहे। किसी को एहसास भी न हुआ कि आप नीचे भी उतरे थे या नहीं। अबुल मआली बहुत हैरत में हुए कि अभी तो मैं जंगल में था वहाँ नमाज़ भी पढ़ी और यहाँ पर वाज़ भी सुन रहा हूँ और वाज़ का कोई जुमला भी मुझसे नहीं छूटा। इन्हीं ख़यालात में खोए हुए थे कि अचानक कुंजियों का ख़्याल आया तो मौजूद नहीं पाया। फिर ज़हन में बात आई कि कुंजियों का गुच्छा तो दरख़्त में लटका दिया था।

एक ज़माने के बाद अबुल मआली को अजम (अरब के इलावा दूसरे मुल्कों को अजम कहते हैं) के शहरों का सफ़र करने का इत्तेफ़ाक़ हुआ। बग़दाद शरीफ़ से चौदह दिन का सफ़र करने के बाद उसी जंगल में पहुँचे। ग़ौर से देखा वही जंगल है जिसमें उस वक़्त पाख़ाना किया था और वही नहर है जिसमें वुज़ू किया था और आगे बढ़े तो वही दरख़्त था जिसमें कुंजियों का गुच्छा लटका दिया था और कुंजियाँ भी

लटक रही थीं। अबुल मआली फ़रमाते हैं कि मैं वापस लौटा तो बारगाहे ग़ौसियत मआब में हाज़िर होकर वाक़िया बयान किया। तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु ने अबुल मआली का कान पकड़ कर हिदायत फ़रमाई कि ऐ अबुल मआली मेरी ज़िन्दगी में यह वाक़िया किसी के सामने मत बयान करना।

दर्सगाह ही से डूबते हुए जहाज़ को बचाया : एक मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु तलबा को पढ़ा रहे थे। अचानक सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का चेहरए मुबारक सुर्ख़ हो गया और फिर हाथ मुबारक को चादर के अन्दर ले गए। चन्द मिनट के बाद हाथ मुबारक बाहर निकाला तो आस्तीन से पानी के क़तरे टपक रहे थे। तलबा कहते हैं कि हैबत की वजह से हमें पूछने की हिम्मत न हुई लेकिन तारीख़ और दिन लिख कर रख लिया गया। दो महीने के बाद कुछ सौदागर तोहफ़े के साथ ख़िदमत में हाज़िर हुए। ताजिरों से जब पूछा गया तो उन्होंने अपना सारा वाक़िया बयान किया कि यहाँ से बहुत दूरी पर हमारा जहाज़ चला आ रहा था कि अचानक समुन्द्र में भंवर उठने लगी और जहाज़ डूबने वाला था कि हमने उस आलम में शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी का नारा बलन्द किया। उसी वक़्त दरिया से एक नूरानी हाथ नुमूदार हुआ जिसने हमारे जहाज़ को कनारे लगा दिया। तारीख़ व दिन मिलाया गया तो वही निकला जो नोट किया गया था।

हाथ मिल गया : कीमियाई व बज़्ज़ाज़ व अबुल हसन अली रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम की रिवायत है कि एक मरतबा हमारे शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु शूनीज़िया के क़ब्रस्तान में फ़ातिहा पढ़ने की ग़र्ज़ से तशरीफ़ ले गए। जब शैख़ ह़म्माद रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के मज़ार पर पहुँचे। उस वक़्त बहुत से लोग आपके साथ थे जिन में मशाइख़ीन की एक बड़ी जमाअत शामिल थी। शैख़

ह़म्माद .कुद्दिसा सिर्रुहू के मज़ार पर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु काफ़ी देर तक खड़े रहे यहाँ तक कि आफ़ताब बलन्द हो गया और गर्मी बढ़ गई तब आप वहाँ से आगे बढ़े। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के रुख़े अनवर पर ख़ुशी के आसार थे। हाज़िरीन ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर दूसरी क़ब्रों पर तो आप थोड़ी देर ठहरे मगर हज़रते शैख़ ह़म्माद के मज़ार पर इतनी देर क्यूँ ठहरे रहे कि आफ़ताब में तेज़ी पैदा हो गई इसका क्या सबब है। तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया बाइस साल का ज़माना गुज़र चुका मैं और मेरे साथ कुछ लोग इन्हीं शैख़ ह़म्माद के साथ नमाज़े जुमा पढ़ने के लिए जा रहे थे। जब हम लोग पुल पर पहुँचे तो हज़रते शैख़ ह़म्माद ने मुझे पानी में ढकेल दिया। इन्तिहाई सर्दी का ज़माना था। मेरे हाथ में चन्द किताबें भी थीं। मैंने अपना हाथ पानी से ऊँचा कर लिया ताकि किताबें भीगने न पायें और मैंने गिरते गिरते जुमे के दिन की ग़ुस्ल की नियत भी कर ली फिर मैंने पानी से निकल कर जुब्बे को निचोड़ कर पहन लिया लेकिन सर्दी से मुझे बहुत तकलीफ़ हुई। हमारे साथी आगे बढ़ गए थे। चुनांचे तेज़ी से चल कर मैं फिर शैख़ ह़म्माद के साथ हो गया उनके साथ के बाज़ लोगों ने फिर मुझको पानी में गिराने की कोशिश की तो आपने झिड़का और फ़रमाया मैंने तो अ़ब्दुल क़ादिर का इम्तिहान लेने के लिए गिराया था मुझे मालूम है वह पहाड़ से ज़्यादा सख़्त हैं और यह उनके सब्र का इम्तिहान था। आज जब मैं उनकी क़ब्र पर आया तो देखा कि शैख़ ह़म्माद नूरानी हुल्ला पहने हुए हैं। याक़ूती ताज उनके सरे मुबारक पर रखा है। सोने की नालैन पहले हुए हैं गर्ज़ यह कि हर तरह ऐशो आराम में हैं लेकिन एक हाथ बेकार कर दिया गया है। मैंने वजह दरयाफ़्त की तो उन्होंने जवाब दिया बाईस साल पहले .फ़ुलाँ तारीख़ को जुमे के दिन पुल पर जाते हुए इसी हाथ से मैंने तुम्हे धक्का दिया था उसके सबब इस हाथ को बेकार कर

दिया गया है, क्या तुम मुझे माफ़ कर सकते हो। मैंने कहा हाँ मैंने माफ़ कर दिया। उसके बाद उन्होंने कहा तुम महबूबे सुब्हानी हो परवरदगार आलम से मुझे हाथ भी दिलवा दो तो मैंने दुआ के लिए हाथ उठाए। पाँच सौ औलिया अल्लाह ने मेरी दुआ पर आमीन कही और उनको हाथ मिल गया। फिर उसी हाथ से उन्होंने मुझसे मुसाफ़ा किया, इसी वजह से इतनी देर ठहराना पड़ा। जब कामयाबी हो गई तो वहाँ से वापस हुए और मुझे बड़ी ख़ुशी हुई।

मुर्ग़ी ज़िन्दा हो गई : एक बुढ़िया सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया कि ऐ मेरे आक़ा मेरे इस लड़के का दिल आपकी तरफ़ बहुत माइल है। हुज़ूर इसको अपनी गुलामी में क़बूल फ़रमा लें। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उसे अपने पास रख लिया और उसे मुजाहदे और रियाज़त की तालीम देनी शुरू कर दी। कुछ दिनों के बाद वह बुढ़िया अपने बच्चे को देखने की ग़र्ज़ से आई तो देखा कि उसका बच्चा जौ की ख़ुश्क रोटी बिना सालन के खा रहा है और बहुत ही कमज़ोर हो गया है। वह बुढ़िया वहाँ से सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो देखा कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पकी हुई मुर्ग़ी खा रहे हैं और हड्डियों को एक बरतन में जमा फ़रमाते जा रहे हैं। बुढ़िया ने अर्ज़ किया कि हुज़ूर आपने मेरे बच्चे पर कोई मेहरबानी नहीं फ़रमाई। हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया वह कैसे। तो बुढ़िया झल्ला कर बोली वाह हुज़ूर वाह आप तो मुर्ग़ी का गोश्त खायें और मेरा बेटा बग़ैर सालन के जौ की रोटी खाए यह कहाँ की शफ़क़त और मेहरबानी है तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपना मुबारक हाथ उन हड्डियों पर रखा और फ़रमाया

قُوْمِیْ بِاِذْنِ اللّٰهِ الَّذِیْ یُحْیِ الْعِظَامَ وَهِیَ رَمِیْمٌ

तर्जमा : ऐ मुर्ग़ी उस अल्लाह के हुक्म से ज़िन्दा होकर खड़ी हो जा गली सड़ी हड्डियों को दोबारा ज़िन्दा फ़रमाएगा।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के यह फ़रमाते ही वह मुर्ग़ी फ़ौरन ज़िन्दा होकर खड़ी हो गई और बहुत साफ़ लफ़्ज़ों में उस मुर्ग़ी ने कहा

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللهِ اَلشَّيْخُ عَبْدُالْقَادِرِ وَلِيُّ اللهِ

तर्जमा : नहीं हैं कोई माबूद मगर अल्लाह मुह़म्मद (स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं। शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर अल्लाह के वली हैं।

फिर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया ऐ बुढ़िया जब तेरा बेटा भी इस मरतबे को पहुँच जाएगा तो जो चाहेगा खाएगा और जो चाहेगा करेगा। इसी करामत की तरफ़ इशारा करते हुए हज़रत मौलाना जमीलुर्रह़मान अलैहिर्रह़मा ने फ़रमाया है :-

जिलाया उस्तुख़ाने मुर्ग़ को दस्ते करम रख कर
बयाँ क्या हो सके इहयाए मौता ग़ौसे आज़म का

मुह़ीउद्दीन : किसी ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से दरयाफ़्त किया हुज़ूर का लक़ब 'मुहीउद्दीन कब से हुआ तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया एक दिन मैं एक सफ़र से बग़दाद की तरफ़ लौट रहा था और मरे पांव नंगे थे, मुझे एक बीमार शख़्स मिला जिसका रंग उड़ा हुआ था और बड़ा ही कमज़ोर नज़र आता था। उस कमज़ोर आदमी ने मुझे सलाम किया। मैंने वअलैकुम अस्सलाम कहा तो वह कमज़ोर आदमी मुझसे कहने लगा कि मेरे क़रीब हो जाओ। मैं जब नज़दीक हुआ तो उसने कहा मुझे सहारा देकर उठाओ। तो मैंने उस कमज़ोर आदमी को अपने हाथ से सहारा देकर उठा दिया। उसी वक़्त वह तन्दरुस्त हो गया और उसका चेहरा ख़ूबसूरत नज़र आने लगा। फिर उस आदमी ने मुझसे पूछा क्या तुम मुझे पहचानते हो। मैंने कहा नहीं। तो उस

आदमी ने कहा मैं तुम्हारे जद्दे करीम अलैहिस्सलातु वत्तस्लीम का दीन हूँ। मैं बहुत कमज़ोर हो गया था, आपने मुझे ज़िन्दा कर दिया, और आपकी वजह से मुझे अल्लाह तआ़ला ने नई ज़िन्दगी बख़्शी। आज से आपका नाम मुही़उद्दीन होगा यानी दीन को ज़िन्दा करने वाला। जब मैं जामे मस्जिद की तरफ़ वापस आया तो मुझे एक शख़्स मिला और कहने लगा या सय्यिदी मुही़उद्दीन। मैंने नमाज़ अदा की तो लोग मेरे सामने अदब के साथ खड़े हो गए ओर मेरे हाथों को बोसा देने लगे और ज़बान से या सय्यिदी मुही़उद्दीन कहते जाते थे हांलाकि इससे पहले कोई भी मुझे इस लक़ब से नहीं पुकारता था।

मज़ारे मुबारक से बाहर : हज़रते बक़ा इब्ने बतू रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हज़रते इमाम अह़मद इब्ने हम्बल रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के मज़ार पर तशरीफ़ ले गए। मैंने देखा कि हज़रते इमाम अह़मद इब्ने हम्बल रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह क़ब्र से बाहर तशरीफ़ लाए और सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को अपने सीने से लगा कर इरशाद फ़रमाया ऐ शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर इल्मे शरीअत व तरीक़त में मैं भी तुम्हारा मुहताज हूँ।

इतना कह कर नज़रों से ग़ायब : शैख़ मुहम्मद इब्ने ख़िज़्र हुसैनी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाते हैं कि एक मरतबा मैं सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमते पाक में हाज़िर था। अचानक हज़रते अह़मद कबीर रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह की मुलाक़ात का ख़याल पैदा हुआ फ़ौरन सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया अह़मद कबीर बैठे हैं उनसे मुलाक़ात कर लो। मैंने देखा कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म के बग़ल में एक नूरानी बुज़ुर्ग बैठे हैं। मैने सलाम कर के मुसाफ़ा किया तो हज़रते अह़मद कबीर रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने फ़रमाया ऐ ख़िज़्र जो शख़्स शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी जैसे बुज़ुर्ग की ज़ियारत कर ले फिर उसे मुझ जैसे शख़्स से मिलने की तमन्ना

न करनी चाहिए, मैं तो ख़ुद आपका ताबे हूँ। इतना फ़रमाने के बाद वह मेरी नज़रों से ग़ाएब हो गए।

लाइलाज मरीज़ शिफ़ायाब : हिजरी 670 की बात है हज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह इब्ने ख़िज़्र हुसैनी मौसली रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह बयान फ़रमाते हैं कि मेरे वालिदे मुहतरम तेरह साल तक सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमते पाक में रहे। वह फ़रमाते थे कि मैने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बहुत सी करामतें देखीं जिनमें से एक तो यह है कि जिस मरीज़ के इलाज से बड़े बड़े हकीम जवाब दे देते थे वह सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमते बाबरकत में लाया जाता। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उसके लिए दुआ फ़रमा देते थे और उसके जिस्म पर अपना मुबारक हाथ फेर देते थे तो वह फ़ौरन आपके सामने ही उठ खड़ा होता था और फ़ज़्ले इलाही से बिल्कुल ठीक हो जाता था।

एक मरतबा ख़लीफ़ा मुस्तन्जिद बिल्लाह का एक अज़ीज़े ख़ास आपकी ख़िदमत मे लाया गया जिस पर मर्ज़े इस्तिसक़ा (उस मर्ज़ को कहते हैं जिसमें आदमी को बहुत प्यास लगती है मगर जब पानी पीता है तो प्यास बुझती नहीं) शदीद तौर पर असर कर चुका था। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उसके फूले हुए पेट पर अपना मुबारक हाथ फेर दिया। तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बरकत और करामत से हाथ फेरते ही उसका पेट बराबर हो गया और फ़ौरन ही सेहत हो गई।

मर्दाने ग़ैब के ग़ुरूर की सज़ा : बहुत सी किताबों में शैख़ अबू ग़नाइम से मन्क़ूल है कि एक मरतबा मैं और शैख़ अली इब्ने हीती सुलतानुल औलिया सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो देखा कि आस्तानए आलिया के दरवाज़े के सामने एक नौजवान उलटा लटका हुआ है। नौजवान ने हज़रते शैख़ अली इब्ने

हीती से गुज़ारिश किया कि आप सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अ़न्हु की बारगाह में मेरी सिफ़ारिश करें। हज़रते शैख़ अली हीती ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की बारगाह में उस नौजवान की सिफ़ारिश की तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया ऐ अली हीती मैं तुम्हारी सिफ़ारिश पर उस नौजवान को माफ़ करता हूँ। हज़रते शैख़ अली हीती ने जब उस नौजवान को माफ़ी का पैग़ाम सुनाया तो वह दरवाज़े के सामने से उठ कर बाहर निकल गया और हवा में उड़ने लगा। लोगों ने हज़रते शैख़ अली हीती से पूछा कि वह कौन था तो आपने बताया कि वह एक नौजवान वली था और बग़दाद से उड़ते हुए गुज़र रहा था। उसके दिल में आया कि बग़दाद शहर में कोई भी वली नहीं। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उसके इरादे को भांप कर नीचे गिरा लिया और विलायत छीन कर उसे उलटा लटका दिया। अगर मैं उसकी सिफ़ारिश न करता तो ज़िन्दगी भर वह नौजवान उलटा ही लटका रहता।

नूर का टुकड़ा : हज़रते सय्यिद उमर बज़्ज़ाज़ रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पास बैठा था। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपना मुबारक हाथ मेरे ऊपर मारा। फ़ौरन ही एक नूर का टुकड़ा आफ़ताब की तरह मेरे दिल में चमक उठा। उस वक़्त मेरे दिल में ह़क़ाएक़ के दरवाज़े खुल गए। आज तक वह नूर बराबर बढ़ कर रहा है।

ग़ल्ले में बेपनाह बरकत : एक दफ़ा बग़दाद में ख़ौफ़नाक सूखा पड़ा। सरकारे ग़ौसे आज़म के रिकाबदार (सवारी का सामान उठाने वाले) शैख़ अबुल अब्बास अह़मद आपकी ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि मेरे घर में खाने पीने वाले ज़्यादा हैं लेकिन घर में कुछ नहीं और कई रोज़ से फ़ाक़ा हो रहा है। आपने उनको तक़रीबन आधा मन गेहूँ दिए और फरमाया कि इन्हें मिट्टी के एक

मटके (या कोठे) में बन्द कर देना और उसमें एक सूराख़ कर के रोज़ाना ज़रूरत के मुताबिक़ ग़ल्ला निकाल लिया करना। शैख़ अबुल अब्बास• अहमद का बयान है कि हम पाँच साल तक गेहूँ खाते रहे लेकिन ख़त्म नहीं हुए। फिर एक दिन मेरी बीवी ने यह मटका खोल दिया तो जितने गेहूँ डाले थे उतने ही मौजूद थे। अब यह गेहूँ सात दिन में ख़त्म हो गए। मैंने इस वाक़िया का ज़िक्र आपसे किया तो फ़रमाया कि अगर उस मटके को न खोला जाता तो तुम्हारा कुन्बा सारी उम्र यह गेहूँ ख़त्म न कर सकता था। (क़लाएदुल जवाहिर)

हुज़ूर ग़ौसे आज़म का क़दम शरीफ़

वाह क्या मरतबा ऐ ग़ौस है बाला तेरा
ऊंचे ऊचों के सरों से क़दम आला तेरा
सर भला क्या कोई जाने के है कैसा तेरा
औलिया मलते है आंखें वह है तलवा तेरा

हज़राते गिरामी! हाफ़िज़ अबुल इज़्ज़ अब्दुल मुग़ीस इब्ने हर्ब बग़दादी से रिवायत है कि एक दिन हम सरकारे ग़ौसे आज़म की मजलिसे मुबारक में हाज़िर थे जो आपके मेहमानख़ाना महल्ला हलबा में हो रही थी। उस मजलिस में इराक़ के बहुत से बड़े बड़े बुज़ुर्गाने दीन मौजूद थे जिनमें बाज़ के नाम यह हैं :-

शैख़ अली इब्ने हीती, शैख़ बक़ा इब्ने बतू, शैख़ अबू सईद क़ैलवी, शैख़ अबू नजीब सुहरवर्दी, शैख़ शिहाबुद्दीन सुहरवर्दी, शैख़ उसमान क़र्शी, शैख़ मकारिम अकबर, शैख़ मत्र जागीर, शैख़ सदक़ा बग़दादी, शैख़ यहया मुरअशी, शैख़ ज़ियाउद्दीन, शैख़ क़ज़ीबुल बान मौसिली, शैख़ अबुल अब्बास यमनी, शैख़ अबूबक्र शैबानी, शैख़ अबुल बरकात इराक़ी, शैख़ अबुल क़ासिम उमर बज़्ज़ाज़, शैख़ अबू उमर सुलतान बताएही, शैख़ अबुल मसऊद अत्तार, अबुल अब्बास अहमद इब्ने अली जौसक़ी सरसरी, शैख़ माजिद कुर्दी, शैख़ अबू याला वग़ैरहुम।

हज़रत ग़ौसुस्सक़ालैन शाह मुहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लहु तआ़ला अ़न्हु मिम्बर पर जलवा अफ़रोज़ थे और एक बेहतरीन तक़रीर के दौरान आपने अल्लाह तआ़ला के हुक्म से यह इर्शाद फ़रमाया :-

اَلَآاِنَّ قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ کُلِّ وَلِیِّ اللّٰهِ

तर्जमा : सुनो! बेशक मेरा यह क़दम अल्लाह के हर वली की गर्दन पर है।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ज़बाने मुबारक से यह एलान सुनकर उस वक़्त तीन सौ तेरह साहिबाने हाल औलिया किराम जो वाज़ की मजलिस में हाज़िर थे सबने अपना अपना सर अदब के साथ झुका दिया और अर्ज़ किया कि ऐ ग़ौसे आज़म आपका क़दमे मुबारक सिर्फ़ हमारी गर्दनों पर ही नहीं बल्कि आपका क़दम शरीफ़ तो हमारे सरों और हमारी आंखों पर है और उन औलियाए किराम ने अपने कश्फ़ से यह भी देखा कि तमाम रू-ए-ज़मीन के औलिया किराम सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के फ़रमाने आली पर अपनी अपनी गर्दनें झुकाए खड़े हैं। यह वह वक़्त था कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाह तआ़ला अ़न्हु के क़ल्बे मुबारक पर अल्लाह तआ़ला की तजल्लीयाँ उतर रहीं थीं और सरकारे दो आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने मुक़र्रबीन फ़िरिश्तों की जमाअत के साथ हुज़ूर ग़ौसे आज़म के लिए ख़िलअते करामत भेजी। तमाम अगले और पिछले औलिया किराम का मजमा हुआ जो ज़िन्दा थे वो बदन के साथ हाज़िर हुए और जो इन्तेक़ाल फ़रमा गए थे उनकी पाक रूहें आईं। उन सभी हज़रात के सामने वह भेजा हुआ ख़िलअते मुबारका हुज़ूर ग़ौसे आज़म को पहनाया गया। फ़िरिश्ते और रिजालुल ग़ैब का उस वक़्त मजमा था, हवा में सफ़ बांधे खड़े थे आसमान के तमाम कनारे उनसे भर गए थे और पूरी ज़मीन पर कोई वली ऐसा न था जिसने अपनी गर्दन न झुका दी हो सिवाए बाज़ के।

ताजे फ़रक़े उरफ़ा किसके क़दम को कहिए
सरं जिसे बाज दें वह पांव है किसका? तेरा
गर्दनें झुक गईं सर बिछ गए दिल टूट गए
कश्फ़े साक़ आज कहाँ यह तो क़दम था तेरा

हज़रात! हज़रते शैख़ मकारिम ने इरशाद फ़रमाया है कि उस वक़्त औलियाए किराम ने अपनी आंखों से यह देखा कि .क़ुतबियत का झंडा हुज़ूर ग़ौसे आज़म के सामने गाड़ा गया और ग़ौसियत का ताज सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुक़द्दस सर पर रखा गया जिसको सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपने क़सीदए ग़ौसिया में ख़ुद इस तरह इरशाद फ़रमाया जिसका मतलब यह है :-

"मेरे रब ने मुझे उलुल अज़्मी और बलन्द हिम्मती की ख़िलअत पहनाई और फ़ज़्ल व कमाल का ताज मेरे सर पर रख दिया है" --- "और ज़मीनो आसमान में मेरी शान के डंके बजते हैं और नेकबख़्ती के निगहबान मेरे सामने हाज़िर रहते हैं" --- "मैं जीलान का रहने वाला हूँ मुहीउद्दीन मेरा नाम है और मेरे इक़बाल (नसीबे) के झंडे पहाड़ों की चोटियों पर लहरा रहे हैं"

हज़रात! रिवायत है कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का यह एलान ख़ुदाए तआ़ला के हुक्म से था। चुनांचे हज़रते अदी इब्ने मुसाफ़िर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जिनके हाथ लगा देने से अंधे और कोढ़ी ठीक हो जाते थे वह फ़रमाया करते थे कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इस एलान से मक़ामे फ़रदियत की तरफ़ इशारा है अगरचे बाज़ दूसरे औलियाए किराम को भी फ़रदियत के मरतबे हासिल हुए मगर क़दमि हाज़िही अ़ला रक़ाबति कुल्लि वलीयिल्लाह के एलान का सरकारे ग़ौसे आज़म के सिवा किसी दूसरे वली को ख़ुदाए तआ़ला ने हुक्म नहीं दिया। चुनांचे इस फ़रदियत के मरतबे की तरफ़ इशारा करते हुए सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपने क़सीदए मुबारका में इरशाद फ़रमाया जिसका मतलब यह है कि :-

"क़ुर्बे इलाही की मंज़िल में मुझे वह दर्जा हासिल है जिसमें तन्हा और अकेला मैं ही हूँ और मेरा रब मुझे एक दर्जे से दूसरे दर्जे तक पहुँचाता रहता है और वह अज़मतो जलाल वाला मौला मेरे लिए काफ़ी है"

ब्रादाने मिल्लत! एक तरफ़ सिर्फ़ हज़रते अदी इब्ने मुसाफ़िर रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ही की गवाही नहीं है बल्कि दूसरे बड़े बड़े औलियाए किराम ने भी सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु के कमालाते विलायत की गवाही और ख़ुशख़बरी दी है।

हज़रते शैख़ अली हीती : हज़राते गिरामी! हज़रते शैख़ अली इब्ने अबी नस्र हीती रद़ियल्लाहु तआला अन्हु बग़दाद शरीफ़ के उन चार बुज़ुर्गों में से एक हैं जो ख़ुदाए तआला के हुक्म से मुर्दा को ज़िन्दा फ़रमा देते थे। यह हज़रते शैख़ अली हीती एक दिन सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु के वाज़ में हाज़िर थे अचानक इन पर नींद का ग़ल्बा हो गया तो एक दम सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु अपने मिम्बर से उतर कर हज़रते अली हीती के पास अदब के साथ खड़े हो गए। जब हज़रते शैख़ अली हीती रहमतुल्लाहि तआला अलैह बेदार हुए तो अर्ज़ किया कि ऐ ग़ौसे आज़म मुझे अभी अभी ख़्वाब में हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का दीदार हासिल हुआ है तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि हाँ इसीलिए तो मैं मिम्बर से उतर कर तुम्हारे पास अदब के साथ खड़ा हो गया था क्यूँकि तुम्हें ख़्वाब में सय्यिदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का दीदार नसीब हुआ और मैं बेदारी में सय्यिदे आलम के दीदारे पुर अनवार से सरफ़राज़ हुआ। हज़रात! यही वजह है कि जब सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह फ़रमाया था कि मेरा यह क़दम तमाम औलियाए किराम की गर्दन पर है तो सबसे पहले यही हज़रते शैख़ अली हीती रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने आगे बढ़कर

सरकारे ग़ौसे आज़म का क़दमे मुबारक उठाकर अपनी गर्दन पर रख लिया था अल्लाहु अकबर कबीरा। क्या ख़ूब फ़रमाया सरकारे आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने

सर भला क्या कोई जाने कि है कैसा तेरा
औलिया मलते हैं आँखें वह है तलवा तेरा

<u>*सुलतानुल हिन्द हज़रते ख़्वाजा ग़रीब नवाज़*</u> : ब्राद्राने मिल्लते इस्लामिया! जब सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया कि मेरा यह क़दम तमाम औलिया अल्लाह की गर्दन पर है तो सुलतानुल हिन्द सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु उस वक़्त जवान थे और ख़ुरासान के किसी पहाड़ के ग़ार में इबादत और रियाज़त में मशग़ूल थे जैसे ही आप सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मुबारक फ़रमान पर आगाह हुए तो तमाम औलिया अल्लाह से पहले सर झुकाने में पहल करते हुए आपने अपना सरे मुबारक ज़मीन पर रख दिया और अर्ज़ किया कि ऐ ग़ौसे आज़म आपका क़दमे मुबारक सिर्फ़ मेरी गर्दन ही पर नहीं बल्कि मेरे सर और मेरी आँखों पर है। उधर अल्लाह तआ़ला ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु पर सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का यह क़ौल ज़ाहिर फ़रमा दिया तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने सरकारे ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के हक़ में औलियाए किराम के भरे मजमे में ऐलान फ़रमाया कि ग़ेयासुद्दीन के नूरे नज़र मुईनुद्दीन ने अल्लाह तआ़ला के महबूबों पर अपनी गर्दन झुकाने में पहल किया लिहाज़ा मुईनुद्दीन के इस हुस्ने अदब की बदौलत उसे महबूबे ख़ास बनाया और वह अल्लाह व रसूल के महबूब हैं और क़रीब है कि हिन्दुस्तान का मुल्क उसके क़ब्ज़े में दे दिया जाएगा। चुनांचे सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जैसा फ़रमाया था वहीं हुआ यानी हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को हिन्दुस्तान का बादशाह हमेशा के लिए बना दिया गया।

<u>हज़रते बाबा ख़्वाज फ़रीदुल हक़ वद्दीन गंजे शकर</u> : शैख़ सय्यिद आदम नक़्शबन्दी ने निकातुल असरार किताब में लिखा है कि हज़रते शैख़ फ़रीदुल हक़ वद्दीन मसऊद गंजे शकर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की एक मजलिसे मुबारक में सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इस क़ौले मुबारक का ज़िक्र छिड़ा यानी 'क़दमी हाज़िही अला रक़ाबति कुल्लि वलीयिल्लाह' का ज़िक्र। तो हज़रते फ़रीदुल हक़ गंजे शकर ने इरशाद फ़रमाया कि अगर मैं सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़माने में होता तो उनका क़दमे मुबारक फ़ख़्रिया तौर पर अपनी गर्दन पर लेता और आज भी मैं फ़ख़्रो नाज़ के साथ कहता हूँ कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का क़दमे पाक मेरी आंखों की पुतलियों पर है इसलिए कि सख़ी मुईनुद्दीन ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ उन लोगों में से हैं जिन्होंने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का क़दम शरीफ़ का अपनी गर्दन पर लिया तो मेरा फ़र्ज़ यह है कि मैं हुज़ूर ग़ौसे आज़म का क़दमे मुबारक अपनी आंखों की पुतलियों पर लूँ।

<u>हज़रते ख़्वाजा सुलैमान तोंसवी</u> : मख़ज़नुल असरार किताब में लिखा है कि हज़रते ख़्वाजा सुलैमान तोंसवी रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह जो चिश्तिया सिलसिले के बड़े क़ामिल बुज़ुर्ग और वली हुए हैं। इन हज़रते ख़्वाजा सुलैमान तोंसवी की ज़ियारत के लिए आपके चन्द मुरीद तोंसा शरीफ़ जा रहे थे। उन मुरीदों के साथ एक शख़्स था जो क़ादिरी सिलसलिे से तअल्लुक़ रखता था। गुफ़्तगू के दरमियान सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के क़दमे मुबारक का ज़िक्र आया। क़ादिरी मुरीद ने कहा कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का क़दमे मुबारक तमाम अगले और पिछले औलियाए किराम की गर्दनों पर है। हज़रते ख़्वाजा सुलैमान तोंसवी के मुरीदों ने कहा लेकिन हमारे पीरं व मुर्शिद हज़रते ख़्वाजा सुलैमान तोंसवी की गर्दन पर नहीं है (अल्लाह की

पनाह) क्यूँकि हमारे पीर इस ज़माने के ग़ौस हैं। जब यह सब मुरीदीन तोंसा शरीफ़ पहुँचे तो क़ादिरी मुरीद ने पूरा वाक़िया हज़रते ख़्वाजा सुलैमान तोंसवी को बता दिया। हज़रते ख़्वाजा सुलैमान तोंसवी ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का क़दम शरीफ़ सिर्फ़ औलियाए किराम की गर्दनों पर है या आम लोगों की गर्दनों पर भी है। क़ादिरी मुरीद ने अर्ज़ किया कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का क़दम शरीफ़ सिर्फ़ औलियाए किराम की गर्दनों पर है आम लोग इससे अलग हैं। तब हज़रत ख़्वाजा शैख़ सुलैमान तोंसवी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जलाल में आ गए और ग़ुस्से के आलम में फ़रमाया कि यह कमबख़्त मुरीद मुझे वलीयुल्लाह ही नहीं मानते वर्ना सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का क़दमे मुबारक का मेरी गर्दन पर होना ज़रूर मानते।

शैख़ ख़लीफ़ए अकबर का क़ौल : शैख़ अबुल क़ासिम इब्ने अबू बक्र इब्ने मुह़म्मद बयान फ़रमाते हैं कि मैंने शैख़ ख़लीफ़ए अकबर म-लकी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से सुना और ख़लीफ़ए अकबर वह हैं कि जो हुज़ूर अक़्दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के दीदारे मुबारक से बहुत ज़्यादा मुशर्रफ़ हुआ करते थे। उन्होंने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम बेशक मैंने रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को देखा अर्ज़ की या रसूलल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ने फ़रमाया है कि मेरा यह पांव हर वलीयुल्लाह की गर्दन पर है तो रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर ने सच कहा और क्यूँ न हो कि वही .कुतुब हैं और मैं उनका निगहबान हूँ।

इस फ़रमाने आली के मअना का घिराव : हुज़ूर अबुल हुसैन अह़मद नूरी मारहरवी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपनी किताब सिराजुल अवारिफ़ शरीफ़ में लिखते हैं कि "क़दमि हाज़िही

अ़ला रक़ाबति कुल्लि वलीयिल्लाह" के क़ौल में लफ़्ज़े वलीयुल्लाह ही तमाम औलिया अल्लाह को शामिल करने के लिए काफ़ी है। इसलिए कि तमाम अम्बियाए किराम अलैहिमुस्सलातु वस्सलाम पर जिनमें हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम भी दाख़िल हैं, अम्बिया और मुरसलीन का लफ़्ज़ बोला जाता है। सहाबए किराम रिद्वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अज़मईन को सहाबा के नाम से याद किया जाता है। अहले बैते इज़ाम अहले बैत के नाम से मशहूर हैं और अइम्मए अहले बैत अला जद्दिहिम वअ़लैहिमुस्सलाम पर इमाम का लफ़्ज़ बोला जाता है लिहाज़ा वलीयुल्लाह का लफ़्ज़ इन तमाम हज़रात के इलावा अल्लाह तआ़ला के दूसरे बर्गुज़ीदा बन्दों पर बोला जाता है। हज़रते इमाम ज़ामी अलैहिर्रहमा अपनी किताब नफ़्हातुल इन्स में लिखते हैं कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के विसाल शरीफ़ के बाद तमाम मुसलमानों ने रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के सहाबी को सहाबा के इलावा कोई और नाम न दिया। लिहाज़ा यह एक मख़सूस तबक़ा हुआ। इसके बाद वह तबक़ा है जो सहाबए किराम की सोहबत से मुशर्रफ़ हुआ और ताबेईन के नाम से मशहूर हुआ। इस तबक़े के बाद जो तबक़ा अहले इस्लाम में पैदा हुआ उसका तबा ताबेईन नाम पड़ा। इन सबके बाद उम्मत की बर्गुज़ीदा हस्तियाँ ज़ाहिदों इबादतगुज़ारों के नाम से मशहूर हुईं। इनमें भी जो ख़ुसूसियत रखते थे उन्हें सूफ़ियाए किराम का नाम दिया गया और ये इसी में बेमिसाल हुए। इसलिए लफ़्ज़े वलीयुल्लाह से ये तमाम तबक़े ख़ुद-ब-ख़ुद अलग हो गए। और किसी रद्दो बदल के बग़ैर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इस क़ौल से अपने से बड़ों पर बड़ाई लाज़िम नहीं आती। लिहाज़ा जो लोग सिर्फ़ वलीयुल्लाह या औलियाए किराम के नाम से जाने पहचाने जाते हैं वह सभी हज़रात सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के इस फ़रमान के तहत दाख़िल हैं जैसा कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु

तआ़ला अ़न्हु से पहले के बाज़ औलियाए किराम और सरकारे ग़ौसे आज़म रद्दियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़माने के बाज़ औलियाए किराम और सरकारे ग़ौसे आज़म रद्दियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के बाद में आने वाले बाज़ औलियाए किराम का वाक़िया इस किताब में दिया गया है। चुनांचे हुज़र पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म रद्दियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के फ़रमाने आली की इसी वुसअत को हज़रते ख़्वाजा बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी रद्दियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अपने एक मनक़बत में यूँ बयान फ़रमाया है :

औलियाए अव्वलीनो अख़िरीं सरहाए ख़ुद
ज़ेरे पायत मी निहन्द अज़ हुक्मे रब्बुल आलमीं

यानी तमाम अगले और पिछले वलीयों ने अपने सरों को (ऐ ग़ौसे आज़म) आपके क़दमे मुबारक के नीचे रब्बुल आलमीन के हुक्म से रख दिया।

<u>क़दम के मअना</u> : क़दम के मजाज़ी मअना लिए जायें तो इससे मुराद हुज़ूर ग़ौसे आज़म का तरीक़ए विलायत है। इस मअना के मुताबिक़ हुज़ूर ग़ौसे आज़म रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के फ़रमाने आली का यह मतलब होगा कि आपका तरीक़ए विलायत तमाम दूसरे अगले पिछले वलियों से बरतर है।

क़दम के हक़ीक़ी मअना लिए जायें तो इससे मुराद आपका पाए मुबारक है शैख़ अली इब्ने हीती ने जब हुज़ूर ग़ौसे आज़म रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह का फ़रमाने आली सुना तो फ़ौरन मिम्बर पर गए और आपका पाए मुबारक पकड़ कर अपनी गर्दन पर रखा और सरकारे ग़ौसे आज़म रद्दियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के दामन के नीचे छुप गए।

एक और मअना के मुताबिक़ क़दम से मुराद क़ुर्ब व वस्ले इलाही (अल्लाह तआ़ला की नज़दीकी और अल्लाह तआ़ला से रूहानी तौर पर क़रीब होने) के लिहाज़ से आपका आली मरतबा होना है। इसके मअना के मुताबिक़ हुज़ूर ग़ौसे आज़म रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के फ़रमाने आली का यह

मफ़हूम होगा कि तमाम अगले और पिछले औलियाए किराम के मरतबे का जो आख़िर (अन्त) है वह आपके मरतबे की शुरूआत है क्यूँकि ज़ाहिरी बलन्दी के लिहाज़ से इन्सान की गर्दन और सर उसके जिस्म का इन्तिहाई मक़ाम यानी जिस्म का सबसे ऊपरी हिस्सा है और क़दम सबसे निचला हिस्सा है।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म के इस फ़रमान से जो कि अल्लाह तआला के हुक्म से आपने फ़रमाया यह साफ़ साफ़ ज़ाहिर है कि वलियों में आपका मरतबा सबसे आला है और आप तमाम गुज़रे हुए और आने वाले वलियों के सरदार हैं। हर वली और हर सिलसिला आप ही से फ़ैज़ लेने का मुहताज हैं। लिहाज़ा बदमज़हब की विलायत का दावा एक इस वजह से झूटा है कि ईमान ही नहीं तो विलायत कहाँ से पाएगा दूसरे हुज़ूर ग़ौसे आज़म रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के मरतबे को नहीं पहचानता बल्कि औलिया अल्लाह से कुदूरत रखता है और जो किसी भी वलीय्युल्लाह से दुश्मनी रखे वह वली नहीं हो सकता क्यूँ कि अल्लाह तआ़ला अपने वलियों की शान में फ़रमाता है जिसने मेरे किसी वली से भी दुश्मनी की तो मैं उस शख़्स से जंग का एलान करता हूँ। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि जिससे अल्लाह तआ़ला जंग का एलान करे वह हरगिज़ वली नहीं होगा।

<u>हज़रते शैख़ सनआनी</u> : इस्फ़हान के एक वलीयुल्लाह शैख़ सनआनी जो हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ज़माना में थे, वह बहुत बड़े आरिफ़े बिल्लाह थे और करामात उनसे बहुत ज़्यादा ज़ाहिर होती थीं। मगर जब हज़रते महबूबे सुब्ह़ानी हुज़ूर सरकारे ग़ौसे आज़म जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपने वाज़ की मजलिस में यह एलान फ़रमाया कि सुनो बेशक मेरा यह क़दम तमाम औलिया अल्लाह की गर्दन पर है तो तमाम औलियाए किराम ने अपना अपना सर अदब के साथ झुका कर अर्ज़ किया कि ऐ ग़ौसे आज़म आपका मुबारक क़दम सिर्फ़ हमारी गर्दनों पर ही नहीं बल्कि आपका

मुबारक क़दम हमारे सरों और हमारी आंखों पर भी है मगर हज़रते शैख़ सनआनी अलैहिर्रहमा जो सैकड़ों मील दूर थे उन्हें ग़ैरत आ गई और उन्होंने अकड़ कर कहा कि ऐ अब्दुल क़ादिर जीलानी तुम्हारा क़दम मेरी गर्दन पर नहीं है। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने सैकड़ों मील की दूरी से शैख़ सनआनी की आवाज़ को सुन लिया और उनको देख कर पहचान भी लिया। फिर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु पर ग़ौसियत का जलाल तारी हुआ और उसी जलाल के आलम में फ़रमाया कि अगर मेरा क़दम तुम्हारी गर्दन पर नहीं है तो तुम्हारी गर्दन पर ख़िन्ज़ीर का क़दम होगा अल्लाह की पनाह।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म के फ़रमान का यह असर हुआ कि शैख़ सनआनी अपने चार सौ मुरीदों को साथ लेकर हज के लिए जा रहे थे मगर रास्ते में एक ईसाई की लड़की पर आशिक़ हो गए और निकाह का पैग़ाम दे दिया। ईसाईयों ने कहा कि हमारी क़ौम की रस्म है कि होने वाला दूल्हा कुछ दिनों तक अपनी सुसराल की ख़िन्ज़ीरें चराया करता है। मुसलमानों ख़ुदा की पनाह शैख़ सनआनी ख़िन्ज़ीर चराने लगे और ख़िन्ज़ीर का छोटा बच्चा जो चल नहीं सकता था शैख़ सनआनी ने उस ख़िन्ज़ीर के बच्चे को अपने कंधे पर उठाया। तमाम मुरीदीन नाराज़ होकर चले गए मगर दो मुख़्लिस मुरीदों ने साथ नहीं छोड़ा और कहा कि हमारा पीर इस वक़्त अल्लाह तआला की नाराज़गी में पड़ गया है। जब अच्छी हालत में हमने अपने पीर का साथ नहीं छोड़ा तो इस बुरी हालत में भी हम अपने पीर को नहीं छोड़ सकते। शैख़ सनआनी को निकाह के लिए गिरजाघर में बुलाया और शैख़ सनआनी एक हाथ में शराब का प्याला और दूसरे हाथ में ख़िन्ज़ीर के गोश्त का बर्तन लेकर चले। इस हालत में दोनों मुरीदों ने बग़दाद शरीफ़ की तरफ़ मुँह करके बलाओं को दूर करने वाले सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाहे अक़दस में फ़रयाद

किया कि हुज़ूर हम लोगों की ख़बर लीजिए वर्ना पीर के साथ हम लोग भी चले जायेंगे। उन दोनों मुरीदों की फ़रयाद सुन कर बेकसों पर करम फ़रमाने वाले और परेशानियों को दूर करने वाले सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु को उन पर रहम आ गया और शैख़ सनआनी के दिल पर ऐसा क़ब्ज़ा फ़रमाया कि अचानक शैख़ सनआनी का दिल शराब कबाब और लड़की से फिर गया और उन्होंने ख़िन्ज़ीर का गोश्त और शराब का प्याला फेंक दिया और तौबा व इस्तिग़फ़ार करके कलिमए शहादत पढ़ते हुए लौट आए और अपने दोनों मुरीदों को हुक्म दिया कि मुझे फ़ौरन बग़दाद शरीफ़ ले चलो। चुनांचे शैख़ सनआनी और दोनों मुरीद पैदल ही बग़दाद शरीफ़ रवाना हुए और शैख़ सनआनी ने मुरीदों को हुक्म दिया कि मैं सरकारे ग़ौसे आज़म की बारगाह का मुजरिम हूँ लिहाज़ा तुम लोग मेरा चेहरा काला करके और मेरे हाथ पांव में रस्सी बांध कर हज़रते ग़ौसे आज़म की बारगाह में ले चलो ताकि वह मेरे हाल पर रहम फ़रमा कर माफ़ फ़रमा दें। चुनांचे मुरीदों ने अपने पीर शैख़ सनआनी का चेहरा काला किया और हाथ पांव में रस्सी बांधी और बग़दाद शरीफ़ की तरफ़ रवाना हो गए मगर शैख़ सनआनी जब इस हाल में बग़दाद शरीफ़ पहुँचे तो सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रते शैख़ सनआनी पर यह करम फ़रमाया कि ख़ुद आगे बढ़ कर शैख़ सनआनी को अपने मुबारक सीने से लगा लिया और शैख़ सनआनी की छीनी हुई विलायत दोबारा वापस कर दी। फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि ऐ शैख़ सनआनी मैने जो यह एलान किया कि मेरा यह क़दम तमाम औलिया अल्लाह की गर्दन पर है तो मैंने अपनी तरफ़ से एलान नहीं किया था बल्कि ख़ुदाए तआला की तरफ़ से मुझे यह एलान करने का हुक्म दिया गया था तुमने इसका इन्कार किया इसलिए तुम अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐसे ख़तरनाक मुसीबत में मुबतला किए गए। इसके बाद सरकारे ग़ौसे आज़म

रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने हज़रते शैख़ सनआनी को हम्माम में भेज कर ग़ुस्ल का हुक्म दिया और फिर अपना ख़ास लिबास अता फ़रमा कर और अपनी मुबारक मसनद पर बैठा कर शैख़ सनआनी पर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपनी तरफ़ से मेहरबानी फ़रमाई।(तफ़रीहुल ख़ातिर)

ग़ौसे आज़म की बेमिस्लियत

*** हज़रते मुहम्मद इब्ने ख़िज़्र हुसैनी मौसली ने बयान किया कि हमको हमारे वालिद मुहतरम ने ख़बर दी कि मैंने सय्यिदी मुहीउद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की तेरह साल तक ख़िदमत की है। मैंने उस ज़माने में न तो हुज़ूर ग़ौसे पाक को नाक साफ़ करते देखा, न थूकते देखा और न कभी आपके जिस्मे मुबारक पर मक्खी बैठती देखी और न किसी बड़े अमीर के लिए हुज़ूर कभी खड़े हुए।

*** हुज़ूर ग़ौसे आज़म के मुबारक पसीने में ख़ुशबू आया करती थी।

*** हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जब वाज़ फ़रमाते तो दूर और नज़दीक वाले हर शख़्स को आवाज़ बिल्कुल साफ़ सुनाई देती थी।

*** इमामे अजल शैख़ुल हरमैन हज़रते अ़ब्दुल्लाह याफ़िई रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़ूबियाँ इतनी रौशन और ज़ाहिर हैं कि अगर फूलों की पत्तियाँ काग़ज़ात बन जायें और बाग़ों की टहनियाँ क़लमें बना ली जायें तो भी हुज़ूर ग़ौसे आज़म की ख़ूबियों को नहीं लिखा जा सकता। आपके कमालात व करामात को जमा करने में बड़े बड़े औलियाए किराम मजबूर हैं और कोई भी तरीक़ा हुज़ूर ग़ौसे आज़म के पूरे कमालात को मुकम्मल बयान नहीं कर सकता अगर हम लिखना शुरू करें तो ज़माने भर की क़लमें नाकाम हो जायेंगी। हज़रते इमाम याफ़िई का यह क़ौले मुबारक इन दोनों आयते करीमा

की तलमीह है لَوْكَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ और وَلَوْ اَنَّ مَا فِى الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ

मुहक़्क़िक़ीने किराम के नज़दीक औलियाए किराम जो अल्लाह तआला के ख़ास बन्दे हैं उनके कमालात बयान करने के लिए ऐसी तलमीहात को मिसाल के तौर पर बयान करने में कोई ख़राबी नहीं वर्ना हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात और उसके कमालात बेइन्तिहा हैं और हर क़िस्म की ताबीर और मिसाल से पाक हैं और उनके साथ मिसाल और नज़ीर क़ाइम नहीं की जा सकती। हज़रते शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि इमाम याफ़िई का यह क़ौल बड़ा उम्दा और सही है और इस पर किसी क़िस्म का शुबहा नहीं किया जा सकता। उसकी दलील यह है कि जनाबे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की विलादत, रज़ाअत और तरबियत के वक़्त ही से विलायत के आसार ज़हिर होने लगे थे। चुनांचे हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु पैदा होने के बाद दूध पीने के ज़माने में रमज़ान शरीफ़ के महीने में दिन के वक़्त दूध नहीं पीते थे। यह बात इतनी मशहूर हो गई कि जीलान के चारों तरफ़ लोगों की ज़बान पर यह चर्चा था कि सादाते किराम के ख़ानदान में एक ऐसा मुबारक लड़का पैदा हुआ है जो रमज़ान में दिन के वक़्त दूध नहीं पीता।

*** हज़रते शैख़ अबुस्सुऊद अहमद इब्ने अबू बक्र हरीमी और हज़रते शैख़ अबू अम्र उसमान सरीफ़ीनी ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम अल्लाह अज़्ज़ावजल्ल ने औलिया में हज़रते शैख़ मुहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर रदियल्लाहु तआला अन्हु का मिस्ल न पैदा किया न कभी पैदा करे

बक़सम कहते हैं शाहाने सरीफ़ीनो हरीम
कि हुआ है न वली हो कोई हमता तेरा

*** हज़रते शैख़ अली इब्ने इदरीस याक़ूबी रदियल्लाहु तआला अन्हु बयान फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रते सरकार ग़ौसियत मआब रदियल्लाहु तआला अन्हु को सुना कि फ़रमाते हैं

आदमियों के लिए पीर हैं, जिन्नों के लिए पीर हैं, फ़िरश्तिों के लिए भी पीर हैं और मैं उन सब का पीर हूँ और मैंने हुज़ूर ग़ौसे आज़म को उस मर्ज़े मुबारक में जिस्में विसाले अक़्दस हुआ सुना कि आप अपने शहज़ादों से फ़रमाते थे मुझमें और तुममें और तमाम मख़लूक़ाते ज़माना में वह फ़र्क़ है जो आसमान और ज़मीन के दरमियान फ़र्क़ है। मुझसे किसी को निसबत न दो और मुझे किसी पर क़ियास न करो।

मलक के कुछ बशर कुछ जिनके हैं पीर
तू शैख़े आलियो साफ़िल है या ग़ौस
मलाइक के बशर के जिन्न के हलक़े
तेरी ज़ू माह हर मंज़िल है या ग़ौस

★★★ इस दुनिया में बहुत बड़े बड़े औलियाए किराम आए और उनमें से बाज़ औलियाए किराम ऐसे भी गुज़रे जिनकी ज़ियारत के लिए काबा शरीफ़ ख़ुद चल कर बाज़ मरतबा आया मगर हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु अल्लाह तआला के ऐसे बेमिसाल वली हैं जिनके ख़ेमे के तवाफ़ के लिए काबा शरीफ़ बार बार आता रहता था और हुज़ूर ग़ौसे आज़म चाहे अपने घर होते या कहीं और अपना ख़ेमा लगा कर वहाँ तशरीफ़ फ़रमा होते तो काबा शरीफ़ हुज़ूर ग़ौसे आज़म के घर या ख़ेमे का तवाफ़ करने आता। यह बात सिर्फ़ हमारे दिमाग़ की पैदावार नहीं है बल्कि ख़ुद हुज़ूर पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाह तआला अन्हु अपने क़सीदा में फ़रमाते हैं :-

كُلُّ قُطْبٍ يَطُوْفُ بِالْبَيْتِ سَبْعاً
وَاَنَا الْبَيْتُ طَائِفٌ بِخِيَامِيْ

तर्जमा : हर .क़ुतुब बैतुल्लाह यानी काबा शरीफ़ का सात बार तवाफ़ करता है और मैं वह हूँ कि बैतुल्लाह शरीफ़ मेरे ख़ेमों का तवाफ़ करता है।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म के इसी फ़रमान की तरफ़ इशारा करते हुए सरकारे आलाहज़रत अज़ीमुल बरकत हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी रद़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं :-

सारे अक़ताब जहाँ करते हैं काबे का तवाफ़
काबा करता है तवाफ़े दरे वाला तेरा

*** हुज़ूर पुर नूर सय्येदुना ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु हुज़ूर अनवर सय्यदे आलम नूरे मुजस्सम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के वारिसे कामिल, मुकम्मल नाइब और हुज़ूर की ज़ात का आइना हैं यानी हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपनी ज़ात के साथ सरकारे ग़ौसे आज़म की ज़ात में तजल्ली फ़रमा हैं जिस तरह अल्लाह तआला की ज़ाते पाक हज़रत मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ज़ाते पाक में तजल्ली फ़रमा है। सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं जिसने मुझे देखा तो बेशक उसने अल्लाह तआला को देखा --- तो ग़ौसे आज़म की ताज़ीम हुज़ूर रसूले आज़म ही की ताज़ीम है और सरकारे रिसालत की ताज़ीम अल्लाह तआला ही की ताज़ीम है। इसी तरफ़ इशारा करते हुए इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत सरकारे आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया है :-

मुस्तफ़ा के तने बेसाया का साया देखा
जिसने देखा मेरी जाँ जलवए ज़ेबा तेरा

*** सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु औलियाए किराम की जमाअत में बेमिस्ल बेमिसाल हैं। चुनांचे सरकारे आला हज़रत अज़ीमुल बरकत फ़ाज़िले बरेलवी रद़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु तन्हा ग़ौसियते कुबरा के मरतबे पर हैं। हुज़ूर पुर नूर शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ग़ौसे आज़म भी हैं और तमाम वलियों के सरदार भी। हुज़ूर ग़ौसे आज़म के बाद जितने भी औलियाए किराम हुए और जितने भी हज़रते इमाम मेहदी रद़ियल्लाहु तआला अन्हु तक औलिया किराम होंगे सब के सब सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु

तआला अन्हु के नाइब होंगे। एक बहुत बड़े अल्लाह के वली से किसी ने पूछा कि हज़रत क्या हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ज़िन्दा हैं। अल्लाह के उस वली ने फ़रमाया कि अभी अभी मुझसे हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की मुलाक़ात हुई थी तो हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम फ़रमाते थे कि मैंने जंगल में टीले पर एक नूर देखा। जब मैं नज़दीक गया तो मालूम हुआ कि वह कम्बल का नूर है जिसे एक साहब ओढ़े सो रहे हैं। हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैंने सोने वाले का पांव पकड़ कर हिलाया और जगा कर कहा उठ कर ख़ुदा की इबादत करो। तो उस सोने वाले ने जवाब दिया ऐ ख़िज़्र आप अपने काम में लगे रहें और मुझे मेरी हालत पर रहने दीजिए। हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि मैं माशहूर कर देता हूँ कि यह अल्लाह का वली है। तो उस सोने वाले ने कहा कि मैं भी मशहूर कर दूंगा कि यह हज़रते ख़िज़्र हैं। हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मेरे लिए दुआ करो। तो सोने वाले ने कहा कि दुआ तो आप ही का हक़ है। हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम्हें दुआ करनी होगी। तो सोने वाले ने इस तरह दुआ की "अल्लाह तआला अपनी ज़ात में आपका नसीबा ज़्यादा करे" ---- और सोने वाले ने कहा कि मैं अगर ग़ाइब हो जाऊँ तो मलामत न फ़रमाइयेगा और फ़ौरन नज़र से ग़ाइब हो गए। हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि किसी वली की ताक़त न थी कि मेरी निगाह से ग़ाइब हो जाए। हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम वहां से आगे बढ़े तो उसी तरह का एक और नूर देखा जो निगाह को चका चौंध करता है। हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम करीब गए तो देखा कि टील पर एक औरत कम्बल ओढ़े सो रही है और वह उसके कम्बल का नूर है। हज़रते ख़िज़्र अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि मैंने चाहा कि पांव हिला कर होशयार करूँ तो ग़ैब से निदा आई ऐ ख़िज़्र एहतियात कीजिए। उस बीबी ने आँख खोली और कहा कि हज़रते ख़िज़्र न रुके यहाँ तक कि रोके गए। फिर हज़रते ख़िज़्र

अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया उठ अल्लाह की इबादत कर। तो उस बीबी ने कहा हज़रत अपने काम में लगे रहें और मुझे अपनी हालत पर रहने दें। तो हज़रते ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि मैं मशहूर कर देता हूँ कि यह अल्लाह की वलिया है। तो उस बीबी ने कहा मैं भी मशहूर कर दूंगी कि यह हज़रते ख़िज़्र हूँ। हज़रते ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया मेरे लिए दुआ करो। तो उस वलिया ने कहा कि दुआ तो अपका हक़ है। हज़रते ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया तुम्हें दुआ करनी होगी। तो उस मुक़द्दस बीबी ने इस तरह दुआ की "अल्लाह अपनी ज़ात में आपका नसीबा ज़्यादा करे" ---- फिर उस मुक़द्दस बीबी ने कहा कि अगर मैं ग़ाइब हो जाऊँ तो मलामत न कीजिएगा। हज़रते ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने कहा कि मैंने देखा यह भी जा रही है तो मैंने कहा कि यह तो बताए जा क्या तू उसी मर्द की बीवी है जिसको इससे पहले मैंने देखा है। तो उस मुक़द्दस बीबी ने जवाब दिया हाँ, और यहाँ एक वलीया का इन्तेक़ाल हो गया था उस कफ़न दफ़न का हमें हुक्म था। वह मुक़द्दस बीबी यह कह कर मेरी निगाह से ग़ाइब हो गई। हज़रते ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम से पूछा गया कि यह कौन लोग हैं। फ़रमाया यह लोग अफ़राद हैं। फिर हज़रते ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम से कहा गया वह भी कोई है जिसकी बारगाह में ये अफ़राद हज़रात हाज़िर होते हैं। हज़रते ख़िज़्र अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया हाँ वह शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी हैं। इसी लिए सरकारे आलाहज़रत अज़ीमुल बरकत हज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ाँ फ़ाज़िले बरेलवी रद़ियल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु फ़रमाते हैं :-

बदल या फ़र्द जो कामिल है या ग़ौस
तेरे ही दर से मुस्तकमिल है या ग़ौस

साहाबियत हुई फिर ताबेईयत
बस आगे क़ादिरी मन्ज़िल है या ग़ौस

हज़ारों ताबेई से तू फ़ुज़ूँ हाँ
वह तबक़ा मुजमलन फ़ाज़िल है या ग़ौस

यह चिश्ती सुहरवर्दी नक्शबन्दी
हर एक तेरी तरफ़ माइल है या ग़ौस
रज़ा के सामने की ताब किसमें
फ़लक वार इस पे तेरा ज़िल है या ग़ौस

कोई सालिक है या वासिल है या ग़ौस
वह कुछ भी हो तेरा साइल है या ग़ौस
तेरी जागीर में है शर्क़ ता ग़र्ब
क़लम रू में हरम ताहिल है या ग़ौस
जिसे अर्शे दोउम कहते हैं अफ़लाक
वह तेरी कुर्सीए मन्ज़िल है या ग़ौस है
तू अपने वक़्त का सिद्दीक़े अकबर
ग़नीयो हैदर ो आदिल है या ग़ौस
न क्यूँ हो तेरी मन्ज़िल अर्शे सानी
कि अर्शे हक़ तेरी मन्ज़िल है या ग़ौस
वहीं से उबले हैं सातों समन्दर
जो तेरी नहर का साहिल है या ग़ौस
तेरी .क़ुदरत तो फ़ितरीयात से है
कि क़ादिर नाम में दाख़िल है या ग़ौस
तसर्रुफ़ वाले सब मज़हर हैं तेरे
तू ही इस पर्दे में फ़ाइल है या ग़ौस

(ख़ुलासा अलमलफ़ूज़ शरीफ़ हिस्सा-1 मुरत्तेबा सरकारे मुफ़्ती आज़मे हिन्द रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)

मुरीदीन और मुतवस्सिलीन के लिए ख़ास बशारतें

शैख़ अबुल हसन अली क़र्शी अलैहिर्रह़मा ने बयान फ़रमाया कि सरकारे ग़ौसे आज़म शैख़ मुहीउद्दीन जीलानी बग़दादी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझे एक कागज अता फ़रमाया जो इतना बड़ा था कि जहाँ तक निगाह पहुँचे। उस

काग़ज़ में मेरे ख़ुलफ़ा और उन मुरीदों के नाम थे जो क़ियामत तक मेरे सिलसिले में होने वाले हैं और मुझसे फ़रमाया कि मैंने ये सब तुम्हें बख़्श दिए और सरकारे ग़ौसे आज़म रद्दियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मैंने दोज़ख़ के दरोग़ा हज़रते मालिक अलैहिस्सलाम से पूछा कि क्या आपके पास मेरा कोई मुरीद है तो हज़रते मालिक अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि नहीं।

और सरकारे ग़ौसे आज़म रद्दियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे अल्लाह तआला की इज़्ज़तो जलाल की क़सम है कि मेरा हाथ मेरे मुरीद पर ऐसा है जिस तरह आसमान ज़मीन को हर तरफ़ से घेरे हुए है अगर मेरा मुरीद बुज़ुर्ग नहीं तो कोई बात नहीं मैं तो उसका आक़ा बुज़ुर्ग हूँ। मुझे अपने रब के इज़्ज़त व जलाल की क़सम है कि मैं अपने रब के सामने खड़ा रहूंगा यहाँ तक मुझको और मेरे मुरीदीन को जन्नत की तरफ़ ले जायेंगे।

हज़रते बज़्ज़ाज़ बयान फ़रमाते हैं कि शैख़ अब्दुल क़ादिर से सवाल किया गया कि कोई शख़्स आपका नाम लेता हो लेकिन न तो उसने आपका दामन थामा और न आपका ख़िरक़ा पहना है तो क्या वह आपका मुरीद कहला सकता है तो सरकारे ग़ौसे आज़म ने जवाब दिया कि जो शख़्स अपने को मेरी तरफ़ निसबत करे और मेरा नाम ले तो अल्लाह तआला उसको क़बूल करेगा और उस पर मेहरबानी फ़रमायेगा अगरचे वह अपने नफ़्स की शामत से बुरे अमल पर हो मगर वह मुझसे निसबत करने वाला शख़्स मेरे मुरीदों में से है। बेशक मेरे रब अज़्ज़ावजल्ल ने मुझसे वादा फ़रमाया है कि मेरे मुरीदों और मेरे दोस्तों को जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा।

सरकारे ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया है कि कोई मुसलमान अगर मेरे मदरसा के दरवाज़े पर से गुज़र जाए तो क़ियामत का अज़ाब उस शख़्स से हल्का कर दिया जाएगा।

सरकारे ग़ौसे आज़म की पाक ख़िदमत में एक जवान आया और अर्ज़ करने लगा कि हुज़ूर मेरे बाप दुनिया से चले

गये। मैंने अपने बाप को आज रात ख़्वाब में देखा है कि उसको क़ब्र में अज़ाब हो रहा है तो मेरे बाप ने मुझसे फ़रमाया है कि शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी की ख़िदमते पाक में जाओ और मेरे लिए दुआ करवाओ तो सरकारे ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया कि क्या तुम्हारा बाप मेरे मदरसा पर से गुज़रा था। उस जवान ने कहा जी हाँ। तब आप ख़ामोश हो गए फिर वह जवान चला गया। फिर अगले दिन वह नौजवान आया और अर्ज़ करने लगा कि हुज़ूर मैंने अपने बाप को आज रात ख़्वाब में बहुत ख़ुश देखा है और बाप ने हरे रंग का कपड़ा पहन रखा है। उन्होंने मुझसे कहा है कि मुझसे अज़ाब हटा लिया गया है और जो तू लिबास देख रहा है वह सरकारे ग़ौसे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर के सदक़े में मुझे पहनाया गया है तो ऐ मेरे बेटे तुमको लाज़िम है कि उनकी बारगाह की हाज़री इख़्तियार कर फिर हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया कि मेरे रब ने मुझसे वादा किया है कि मैं उस शख़्स से अज़ाब हलका करूंगा जो मुसलमान मेरे मदरसे के पास से गुज़रेगा।

शैख़ अबुल अब्बास बयान फ़रमाते हैं कि मैं एक दिन हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमते पाक में हाज़िर हुआ फिर एक शख़्स ने आपसे कहा कि उसने एक क़ब्र से मय्यत की अज़ाब की वजह से आवाज़ सुनी है जो कुछ दिन पहले क़ब्रस्तान में दफ़्न की गई थी तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि क्या उस मरने वाले शख़्स ने मेरा ख़िरक़ा पहना था। लोगों ने अर्ज़ किया कि हमको नहीं मालूम फिर आपने फ़रमाया कि ज़ुल्म करने वाला अज़ाब के ज़्यादा लायक़ है। फिर कुछ देर तक सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने अपना सरे अनवर झुका लिया कि आपको हैबत ने ढाक लिया और आप पर वक़ार ज़ाहिर हुआ। फिर आपने फ़रमाया कि फ़रिश्तों ने मुझसे कहा है कि इस मरने वाले शख़्स ने आपका नूरानी चेहरा देखा है और आपसे उसको अच्छी अक़ीदत थी तो अल्लाह तआला ने

आपके वसीले से उस पर रहमत फ़रमाई है। हज़रते शैख़ अबुल अब्बास बयान फ़रमाते हैं कि लोग उस मरने वाले की क़ब्र की तरफ़ फिर कई बार गए मगर उसके बाद उस मरने वाले की कभी आवाज़ नहीं आई।

निकाह और हुज़ूर ग़ौसे आज़म की मुक़द्दस बीवियाँ

किताबों में बयान किया जाता है कि किसी शख़्स ने सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु से दरयाफ़्त किया कि आपने निकाह क्यूँ कर लिया? आपने फ़रमाया कि मैं निकाह नहीं करता था लेकिन जद्दे करीम हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुझसे इरशाद फ़रमाया कि तुम निकाह करो। चुनांचे इस इरशाद के मुताबिक़ मैंने निकाह किया है। मैं इस ख़याल से ख़ुद ही निकाह करने की हिम्मत नहीं करता था कि कहीं मेरे औक़ात (वक़्त का बहुवचन) में रुकावट न पैदा हो जाए मगर जब वक़्त आया तो ख़ुदाए क़दीर ने मुझे अपने फ़ज़्ल व करम से चार बीवियाँ अता कीं जिनमें से हर एक मुझसे बेपनाह महब्बत करती हैं। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु की चार बीवियाँ थीं इसके बावुजूद पहले से जो आपके इबादात व रियाज़ात के औक़ात मुक़र्रर थे उसमें कोई कमी व रुकावट पैदा न हुई यानी जिस तरह आप निकाह से पहले इबादात किया करते थे उसी तरह निकाह के बाद भी इबादात किया करते थे और यही राहे सुलूक का सबसे बड़ा कमाल है कि दुनयवी तअल्लुक़ात पूरी तरह से वाबस्ता रहने के बावुजूद दुनिया से बेतअल्लुक़ रहे।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु की तमाम पाक बीवियाँ तक़वा व तहारत में बेमिसाल थीं। चुनांचे हुज़ूर ग़ौसे आज़म के शहज़ादे हज़रते शैख़ अब्दुल जब्बार रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी वालिदा माजिदा के बारे में बयान फ़रमाते हैं कि मेरी वालिदा जब किसी अंधेरी जगह में जाती थीं तो वह जगह

ख़ुद-ब-ख़ुद रौशन हो जाया करती थी। एक मरतबा मेरे वालिदे मुहतरम हुज़ूर ग़ौसे आज़म मेरी वालिदा माजिदा के पास तशरीफ़ ले गए तो मेरे वालिदे मुहतरम ने भी उस रौशनी को देखा। फ़ौरन ही मेरे वालिदे मुहतरम ने उस रौशनी पर एक जलाली निगाह डाली तो वह रौशनी हमेशा के लिए ख़त्म हो गई। उसके बाद मेरे वालिदे मुहतरम हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने वालिदा मुहतरमा से फ़रमाया कि यह रौशनी इबलीसे लईन की तरफ़ से थी जो अच्छी नहीं थी इसलिए मैंने उसको ख़त्म कर दिया और अब उसकी जगह अच्छी रौशनी मैं तुम्हारे लिए किए देता हूँ। उसके बाद जब कभी मेरी वालिदा माजिदा किसी अंधेरे मकान में तशरीफ़ ले जाती थीं तो वह अंधेरी जगह ख़ुद-ब-ख़ुद रौशन हो जाती थी और रौशनी चाँद की तरह मालूम होती थी।

फ़ायदा : सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की पाक बीवियों के नाम यह हैं :- 1. हज़रते बीबी मदीना 2. हज़तरे बीबी सादिक़ा 3. हज़रते बीबी मोमिना 4. हज़रते बीबी महबूबा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुन्न।

सरकारे ग़ौसे आज़म की औलादे पाक

हज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के शहज़ादे सय्यिदुना अब्दुल रज़्ज़ाक़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हमारे वालिदे माजिद की कुल औलाद उनन्चास थीं जिनमें से सत्ताईस लड़के थे और बाइस लड़कियाँ थीं।

हज़रते अ़ब्दुल्लाह जुबाई रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह बयान फ़रमाते हैं कि हमारे शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने बयान फ़रमाया कि जब मेरे घर कोई बच्चा पैदा होता तो मैं उसे अपने हाथों में लेता हूँ और यह कह कर कि ये मुर्दा है उससे महब्बत अपने दिल से निकाल देता हूँ फिर अगर वह मर भी जाता है तो उसकी मौत से मुझे कोई रंज नहीं होता।

चुनांचे एक मरतबा का वाक़िया है कि ऐन मजलिसे

वाज़ के वक़्त आपके एक बच्चे का इन्तेक़ाल हो गया मगर उस वक़्त भी आपके मामूल में क़तई कोई फ़र्क़ नहीं आने पाया और आप बदस्तूर मजलिस में वाज़ फ़रमाते रहे और जब बच्चे को ग़ुस्ल व कफ़न देकर आपके पास लाया गया तो ख़ुद आपने बच्चे की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। ये है दुनिया को तर्क कर देने का सही मतलब। आपको अल्लाह तआ़ला ने बहुत औलाद अता कीं मगर औलाद की महब्बत किसी हाल में अल्लाह तआ़ला की महब्बत पर ग़ालिब न आ सकी और आपके सफ़रे राहे सुलूक में चार बीवियों और उनन्चास औलादों ने कोई ख़लल और रुकावट पैदा न किया।

सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह :

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के सबसे बड़े शहज़ादे सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह माहे शाबाने मुअज़्ज़म हिजरी 523 में बग़दादे मुक़द्दस की सरज़मीन पर पैदा हुए और पच्चीस शाबाने मुअज़्ज़म हिजरी 593 में आपकी वफ़ात हुई और बग़दाद ही में दफ़न हुए। आपने इल्मे फ़िक़्ह व इल्मे हदीस अपने वालिदे माजिद ही से हासिल किया इल्मे तिब के लिए आपने सफ़र भी किया है। हिजरी 543 में जबकि उमर शरीफ़ 20 साल से ज़्यादा हुई अपने वालिदे मुहतरम के सामने ही दर्स व तदरीस (पढ़ाने) का काम निहायत ख़ूबी से अन्जाम देने लगे। अपने वालिदे माजिद की वफ़ात के बाद वाज़ फ़रमाते रहे, फ़तावा देते रहे, बहुत से लोगों ने आप से इल्म व फ़ज़्ल भी हासिल किया। आपके तमाम भाईयों में उलूमे ज़ाहिरी व बातिनी और फ़ज़्ल व कमाल में आप जैसा कोई भी नहीं हुआ गोया सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के आप ही हक़ीक़ी जाँनशीन थे। आप ऐसे बामुरव्वत करीमुन्नफ़्स (करम करने वाले), बाअख़लाक़ और इतने बड़े सख़ी थे कि ख़लीफ़ा नासिर उद्दीन ने आपको मज़लूम (जिस पर ज़ुल्म हो) लोगों की मदद करने और उनकी

फ़रयाद सुनने का काम सौंपा था। आपने इस काम को इस ख़ूबी के साथ अन्जाम दिया कि आप बहुत मशहूर हो गए। आप आला दर्जे के फ़क़ीह बड़े ज़बरदस्त फ़ाज़िल व मतीन, अदीब और शीरीं कलाम वाज़ कहने वालों में से थे। तसव्वुफ़ में आपने दो किताबें जवाहिरुल असरार और लताइफ़ुल अनवार तसनीफ़ फ़रमाई हैं। इसके इलावा आपकी और भी तसानीफ़ पाई जाती हैं।

सय्यिदुना शैख़ ईसा रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह :

आपने भी अपने वालिदे बुज़ुर्गवार सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से ही उलूम हासिल किए। आपने दर्स भी दिया है और हदीसें भी बयान फ़रमाई हैं। फ़तावा भी देते रहे और वाज़ व नसीहत का काम भी अन्जाम दिया है। इल्मे तसव्वुफ़ में कई किताबें आपने लिखी हैं, आप मिस्र भी तशरीफ़ ले गए और वहाँ के लोगों को फ़ैज़ पहुँचाया। आपको शेर व सुख़न से भी दिलचस्पी थी।

सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल जब्बार रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह :

आपने भी अपने वालिदे बुज़ुर्गवार सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से ही उलूम हासिल किया और आप ही से हदीसें भी सुनीं। आप बड़े ज़बरदस्त दुरवेश थे, हमेशा फ़क़ीरों की सुहबत में रहते थे। आप आला दर्जे के कातिब भी थे। जवानी ही में 9 ज़िलहिज्जा हिजरी 505 में आपका विसाल हुआ और मक़ामे हलबा में अपने वालिदे मुहतरम के मुसाफ़िरख़ाने में दफ़्न हुए।

सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल रज़्ज़ाक़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह :

अट्ठारह ज़ीक़ादा हिजरी 528 में रात के वक़्त आपकी विलादत हुई और सात शव्वालुल मुकर्रम हिजरी 613 को हफ़्ते के दिन बग़दादे मुक़द्दस में वफ़ात हुई और बाबे हर्ब में दफ़्न किए गए। जब आपकी नमाज़े जनाज़ा का ऐलान हुआ तो इतनी भीड़ हो गई कि शहर के बाहर ले जाकर नमाज़ पढ़ी गई। इसके बाद आपका जनाज़ा जामेआ रुसाफ़ा में ले जाया

गया और यहाँ पर भी आपकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी गई। इस तरह कई जगह पर आपकी नमाज़े जनाज़ा अदा की गई। आपने भी अपने वालिदे बुज़ुर्गवार सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से ही उलूम हासिल किया और आप ही से हदीसें भी समाअ़त फ़रमाईं। उलूम व .फुनून के दर्स के इलावा आप मुनाज़रा भी किया करते थे।

आप हाफ़िज़े हदीस और जय्यिद फ़क़ीह थे। आपकी सदाक़त व सिक़ाहत (इन्तेहाई परहेज़गारी) तवाज़ो व इन्किसारी सब्र व शुक्र और अख़लाक़े हसना की जगह जगह शोहरत थी। ज़्यादातर आप अवाम से किनाराकश रहा करते थे मगर दीन के उलूम सीखने का बेहद शौक़ रखते थे।

सय्यिदुना शैख़ अबूबक्र रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह :

आप 28 शव्वालुल मुकर्रम हिजरी 536 में पैदा हुए और 28 रबीउल अव्वल शरीफ़ हिजरी 602 में मक़ामे जबाल में आपकी वफ़ात हुई। आप बहुत बड़े आबिद व ज़ाहिद, मुहद्दिस व फ़क़ीह, बेहतरीन वाज़ कहने वाले और साहिबे फ़ज़्ल व कमाल थे। बहुत से आलिमों ने आपसें फ़ैज़ हासिल किया। आप हिजरी 580 में जबाल चले गए थे और वहीं आपकी वफ़ात हुई। अब तक वहाँ पर आपकी नसले पाक मौजूद है।

सय्यिदुना शैख़ इब्राहीम रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह :

आपने भी अपने वालिदे बुज़ुर्गवार सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से ही उलूम हासिल किए और हदीसें सुनीं। आप वासित चले गए और वहीं हिजरी 590 में आपकी वफ़ात हुई।

सय्यिदुना शैख़ यह्या रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह :

आप हिजरी 550 में अपने वालिदे माजिद की वफ़ात से 11 साल पहले पैदा हुए और हिजरी 600 में वफ़ात पा कर अपने वालिदे माजिद के मुसाफ़िरख़ाने में अपने छोटे भाई शैख़ अ़ब्दुल वह्हाब रह़मतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह के पहलू में दफ़्न हुए।

शरीअते मुतह्हरा की पैरवी

हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदि्यल्लाहु तआला अन्हु ज़िन्दगी भर शरीअते मुतह्हरा पर बड़ी सख़्ती के साथ पाबन्दी करते रहे और कभी भी शरीअत के ख़िलाफ़ हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदि्यल्लाहु तआला अन्हु ने क़दम नहीं उठाया बल्कि अल्लाह तआला के बन्दों को भी इल्मे दीन हासिल करने का हुक्म फ़रमाते थे और शरीअते मुतह्हरा की पैरवी करने का भी हुक्म फ़रमाते थे। हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदि्यल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी ज़बान और क़लम दीने इस्लाम को फैलाने के लिए वक़्फ़ फ़रमा दिया था और सिर्फ़ ग़रीबों और फ़क़ीरों ही को नसीहत नहीं फ़रमाई बल्कि मालदारों और बादशाहों को भी अद्ल व इन्साफ़ और शरीअत की इत्तेबा का हुक्म फ़रमाते रहे और पीरों, सज्जादानशीनों को भी हमेशा उस मसनद का अहल बनने की ताकीद फ़रमाते रहे।

पीरों की गद्दी पर बैठने के शर्तें

हुज़ूर ग़ौसे आज़म का यह मशहूर इरशादे पाक है कि जब तक किसी शख़्स में यह बारह ख़सलतें न पैदा हो जायें उसको पीर बन कर पीरों की गद्दी पर बैठना जाएज़ नहीं और वह बारह ख़सलतें ये हैं :-

1. किसी के ऐबों को छुपाना
2. रहमदिली करना
3. शफ़क़त करना
4. मेहरबानी करना
5. हमेशा सच बोलना
6. हक़ बोलना
7. नेक बातों का हुक्म देना
8. बुरी बातों से मना करना
9. ग़रीबों को खाना खिलाना
10. इबादत के लिए रातों को जागना

11 ज़रूरियाते दीन का इल्म हासिल करना
12. सख़ावत और बहादुरी इख़्तेयार करना

(क़लाएदुल जवाहिर सफ़ा 13)

पीर की तारीफ़

आज के दौर में पीर के अन्दर ऊपर लिखी हुई शर्तें पाई जाना बहुत मुश्किल हो गया है, इसके बावजूद हर तरफ़ पीरी मुरीदी का ज़ोर शोर है। बड़ी बड़ी ख़ानक़ाहों में भी झूटे पीर नज़र आते हैं सच्चे पीरों का मिलना मुश्किल हो गया है। झूटे पीर दुनिया के लालच में अपने मुरीदों की गिनती बढ़ाते चले जा रहे हैं तो दूसरी तरफ़ मुरीद भी बिना सोचे समझे झूटे पीरों के हाथ में हाथ दे रहे हैं और समझते हैं कि हम सरकारे दो आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के सिलसिले से मिल गए और अपना हाथ ग़ौसे पाक के हाथ में दे दिया मगर ख़ूब याद रखो किसी के हाथ में हाथ देने यानी मुरीद होने से पहले पीर के अन्दर चार चीज़ों का देखना बहुत बहुत ज़रूरी है।

चुनांचे सरकारे आला हज़रत अज़ीमुल बरकत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत हज़रत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ाँ रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते हैं कि जिसके हाथ पर मुरीद होने से इन्सान का सिलसिला हुज़ूर पुर नूर सय्यिदुल मुरसलीन स़ल्लल्लाहु अ़लैहि तआ़ला वसल्लम से मिल जाए उस पीर के लिए चार शर्तें हैं।

पहली शर्त पीर का सिलसिला हुज़ूर अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से मिला हुआ हो बीच में कहीं सिलसिला टूट न गया हो क्यूँकि टूटे हुए सिलसिले से हुज़ूर सय्यिदे आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से मिलना बिल्कुल मुहाल है। बाज़ लोग बग़ैर बैअत के सिर्फ़ अपने बाप दादा के वारिस होने के गुमान पर गद्दी पर बैठ जाते हैं या मुरीद तो हुए थे मगर ख़िलाफ़त न मिली थी और बग़ैर इजाज़त के मुरीद करना शुरू कर देते हैं या वह सिलसिला ही ख़त्म कर दिया गया और उसमें फ़ैज़ न रखा गया, लोग लालच की

वजह से उस सिलसिले में इजाज़त और ख़िलाफ़त देते चले आते हैं। यहाँ सिलसिला बज़ाते ख़ुद सही था मगर बीच में कोई ऐसा शख़्स आ गया जिसमें बाज़ शर्तें न पाई जाने की वजह से वह बीच में आया हुआ शख़्स मुरीद करने के क़ाबिल न था। उससे जो सिलसिला चला वह बीच से ख़त्म हो गया। इन सूरतों में ऐसे शख़्स से मुरीद होने से हरगिज़ हरगिज़ सरकरे दो आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से सिलसिला नहीं मिलेगा। ऐसे शख़्स से मुरीद होना ऐसा ही है जैसे कोई बेवक़ूफ़ बैल से दूध हासिल करना चाहे और बांझ औरत से बच्चा मांगे।

दूसरी शर्त पीर के लिए यह है कि पीर सुन्नी सहीहुल अक़ीदा हो क्यूँकि बदमज़हब गुमराह या वहाबियों देवबन्दियों तमाम कुफ़्फ़ार व मुरतद्दीन का सिलसिला इब्लीसे लईन तक पहुँचेगा सरकारे दो आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम तक हरगिज़ नहीं पहुँचेगा। आजकल बहुत से बद्दीनों बल्कि लम्बी लम्बी दाढ़ियाँ रखने वाले जुब्बा और दस्तार पहनने वाले कुफ़्फ़ार व मुरतद्दीन जो सिरे से औलियाए किराम रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम के दुश्मन और मुन्किर हैं, बदकारी और शैतानी के लिए पीरी मुरीदी का जाल फैला रखा है। लिहाज़ा मुसलमानों को बहुत बहुत होशयार और ख़बरदार रहना चाहिए और ऐसे जुब्बा और दस्तार वालों से हमेशा हमेशा दूर रहें।

तीसरी शर्त पीर के लिए यह है कि इतना इल्म रखता हो कि अपनी ज़रूरियात के मसाइल ख़ुद किताबों से निकाल ले और यह भी लाज़िम है कि अहले सुन्नत व जमाअत के अक़ीदों से पूरा पूरा वाक़िफ़ हो। कुफ़्र व इस्लाम गुमराही और हिदायत के फ़र्क़ का ख़ूब जानने वाला हो वर्ना आज बदमज़हब नही कल हो जाएगा। अल्लाह तआ़ला की पनाह। सैकड़ों अलफ़ाज़ हैं जिनसे कुफ़्र लाज़िम आता है और जाहिल जहालत की वजह से उसमें पड़ जाते हैं। पहली बात तो ख़बर ही नहीं होती कि उन जाहिलों को कि कब उनसे कुफ़्र सादिर हुआ और बग़ैर इल्म के तौबा करेगा ही नहीं तो कुफ़्र में फ़ंसे ही रहे

और अगर कोई बता दे तो एक जाहिल बेचारा डर भी जाए तौबा भी करे मगर वह जो पीरों की गद्दी पर हादी और पीर बने बैठे हैं उनकी बड़ाई जो ख़ुद उनके दिलों में है कब क़बूल करने देगी और तौबा करने देगी --- और अगर ऐसे ही हक़ पर चलने वाले हुए और अपनी ग़लती को मान भी लिया तो कितना? इतना कि ख़ुद तौबा कर लेंगे मगर कुफ़्र के बोलने और करने से जो बैअत टूट गई अब किसके हाथ पर बैअत करें और शजरा उस नए पीर के नाम से दें अगरचे वह नया पीर पहले वाले पीर का ख़लीफ़ा ही हो, यह उन पीरों का नफ़्स क्यूँ कर गवारा करेगा और वह पीर न इसी बात पर राज़ी होंगे कि आज से सिलसिला बन्द कर दें और मुरीद करना छोड़ दें। यक़ीनन वही सिलसिला जो टूट चुका है उसी को जारी रखेंगे। लिहाज़ा पीर का अहले सुन्नत व जमाअत के अक़ीदों का आलिम होना लाज़िम है।

चौथी शर्त पीर फ़सिक़े मोलिन न हो यानी अलल एलान पीर गुनाह के काम न करता हो जैसे नमाज़ वग़ैरह किसी फ़राइज़ और वाजिबात को न छोड़ता हो, दाढ़ी एक मुश्त से कम न करवाता हो, अपने घर में पर्दे की पाबन्दी करवाता हो, ग़ैर शरई क़व्वाली न सुनता हो, ताज़ियादारी, तख़्त, अलम, मातम और तमाम ग़लत कामों से दूर रहता हो। इसलिए मुरीद होते वक़्त यह जान लेना ज़रूरी है कि जिसके हाथ में हाथ दे रहा है वह नमाज़ वग़ैरह सही तरीक़े से अदा करता है या नहीं और अपने घर में पर्दा करवाता है या नहीं इसलिए कि पीर की ताज़ीम लाज़िम है और अलल एलान गुनाह करने वालों की ताज़ीम करना हरगिज़ जाएज़ नहीं है।

अन्धों की तरह किसी ऐरे ग़ैरे के हाथ में हाथ न दे बल्कि मुरीद होने से चाहिए कि पहले पीर को शरीअत के मुताबिक़ ख़ूब परख ले और अगर किसी को सही पीर न मिले तो उसको चाहिए कि अपने आपको हुज़ूर ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु के मुरीदों में दिल की सच्ची नियत के साथ शामिल कर ले तो ऐसा आदमी हुज़ूर ग़ौसे आज़म के फ़रमाने मुताबिक़ हुज़ूर ही का मुरीद होगा।

ग़ौसे आज़म के विसाल का ज़िक्र और वसीयत

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अपनी वफ़ात शरीफ़ से कुछ दिनों पहले ही अपने घर वालों को बता दिया था कि अब मेरी वफ़ात का ज़माना क़रीब आ गया है। उसके बाद ही सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु बीमार हो गए और दो महीने तक बीमारी का सिलसिला चलता रहा।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के मर्ज़ुल मौत (यानी मौत वाली बीमारी) में हज़रत के बड़े शहज़ादे शैख़ सैफुद्दीन अ़ब्दुल वह्हाब रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने अर्ज़ किया हुज़ूर हमारे लिए वसीयत फ़रमायें ताकि आपके बाद हम उस पर अमल करें। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआ़ला से डरो उसके सिवा किसी का ख़ौफ़ न करो, अपनी उम्मीदें उसी से लगाए रखो, तमाम हाजतें अल्लाह तआ़ला के सिपुर्द कर दो, उसके सिवा किसी पर भरोसा न रखो, अपनी ज़रूरतें उसी से तलब करो, उसके सिवा कोई एतिमाद के लाएक़ नहीं, तौहीद पर क़ाएम रहो इसलिए कि यह तमाम लोगों की मानी हुई बात है कि बग़ैर तौहीद के नजात नामुमकिन है --- और फ़रमाया दिल का तअल्लुक़ जब अल्लाह तआ़ला से हो जाता है तो इन्सान उस मन्ज़िल पर पहुँच जाता है जहाँ कोई शय उससे जुदा नज़र नहीं आती। मैं इश्क़े ह़क़ीक़ी की उस मन्ज़िल पर गामज़न हूँ जहाँ इश्क़े मजाज़ी का नाम व निशान नहीं।

इसी मर्ज़ुल मौत में हज़रते अ़ब्दुल जब्बार रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने जो आपके फ़र्ज़न्द हैं दरयाफ़्त फ़रमाया हुज़ूर के जिस्म के किस हिस्से में तकलीफ़ है। फ़रमाया पूरे बदन में तकलीफ़ है हाँ दिल महफ़ूज़ है इसलिए कि वह यादे इलाही का ख़ज़ाना और जलवए मुहम्मदी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का मदीना है।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के पिसरे अज़ीज़ अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने दरयाफ़्त फ़रमाया आपको कौन सी बीमारी है। तो सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इरशाद फ़रमाया मेरे मर्ज़ को इन्सान जिन्न और फ़िरिश्ते भी नहीं जान सकते न समझ सकते हैं। फ़रमाया हुक्मे इलाही से इल्मे इलाही ख़त्म नहीं होता हुक्म बदला जा सकता है इल्म नहीं बदलता है। फिर .कुर्आने पाक की आयत तिलावत फ़रमाई जिसका मफ़हूम यह है कि अल्लाह जिसको चाहता है मिटा देता है और जिसको चाहता है बाक़ी रखता है और उसी के पास अस्ल किताब (यानी लौहे महफ़ूज़) है। वह मुख़तार है जो कुछ चहता है करता है कोई उसे रोकने वाला नहीं और मख़लूक़ जो कुछ करती है उसके बारे में अल्लाह तआ़ला जवाब तलब फ़रमाएगा।

जब आपके बड़े शाहज़ादे हज़रते सय्यिद अ़ब्दुल वह्हाब रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने आपकी हालत दरयाफ़्त की और तकलीफ़ के बारे में पूछा तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने फ़रमाया मुझसे कोई शख़्स किसी चीज़ के बारे में सवाल न करे सुनो मेरी हालत इल्मे इलाही में बदलती रहती है यानी मेरे मरातिब हर लम्हा हर घड़ी बलन्द किए जाते हैं।

जब मौत का वक़्त क़रीब हो गया तो हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने अपने शाहज़ादों से फ़रमाया तुम लोग मेरे पास से हट जाओ। ज़ाहिर में मैं तुम्हारे दरमियान हूँ लेकिन हक़ीक़त यह है कि मैं कहीं और हूँ। फ़रमाया मेरे पास तुम्हारे इलावा दूसरी मख़लूक़ हाज़िर है उनके लिए जगह कुशादा रखो और उनका अदब और एहतेराम का ख़्याल रखो। इस जगह बख़्शिश और रह़मते अ़ज़ीम है इसलिए उन पर जगह तंग न करो। बार बार फ़रमाते

وَ عَلَيْكُمُ السَّلَامُ وَ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَ بَرَكَاتُهٗ
غَفَرَاللّٰهُ لِيْ وَ لَكُمْ وَ تَابَ اللّٰهُ عَلَيَّ وَ عَلَيْكُمْ

तर्जमा : तुम पर अल्लाह की सलामती हो और रहमतें हों और बरकतें हों अल्लाह हम सब को बख़्श दे और अल्लाह मेरी और तुम लोगों की तौबा क़बूल फ़रमाए। ये सब उन फ़िरिश्तों के सलाम के जवाब में था जो आपको सलाम करते।

जिस रात में आपका विसाल हुआ उस दिन आपने फ़रमाया तुम पर अफ़सोस है मेरे मुताल्लिक़ तुम्हारा क्या ख़्याल है मैं न किसी इन्सान से डरता हूँ न जिन्न से न मलकुल मौत से न किसी और चीज़ से ऐ मलकुल मौत मुझे उस ज़ात की बारगाह में पहुँचा दो जो मुझको दोस्त रखता है और मेरे तमाम कामों का वाली है यानी रब्बे करीम की बारगाह में -----

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के फ़र्ज़न्दाने सईद हज़रते अ़ब्दुल रज़्ज़ाक़ व हज़रते मूसा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा कहते हैं कि हज़रते ग़ौसे आज़म अपने दोनों हाथों को बलन्द करते और फैलाते और साथ ही साथ फ़रमाते जाते तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रहमतें हों और बरकतें नाज़िल हों। सच्चे दिल से तौबा करो और सवादे आज़म (यह वही बड़ी जमाअत है जो सहाबए किराम और औलियाए इज़ाम के ताबे हैं) में दाख़िल हो जाओ, इसी मक़सद के लिए मैं आया हूँ ताकि तुम को नबीए करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के इत्तेबा का हुक्म दूँ और फ़रमाया नर्मी करो।

सरकारे ग़ौसे आज़म ने यह भी फ़रमाया मेरे और तुम्हारे और तमाम मख़लूक़ के दरमियान इतनी ही दूरी है जैसे ज़मीन व आसमान में इसलिए मेरे मिस्ल किसी को न समझो और न किसी दूसरे के मिस्ल मुझको जानो।

वफ़ात से पहले हुज़ूर ग़ौसे आज़म ने कुछ दुआओं को पढ़ना शुरू किया। जब नज़ा की हालत तारी हुई सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु फ़रमाते थे मैं अल्लाह से मदद तलब करता हूँ उसके सिवा कोई मअ़बूद नहीं उसकी ज़ाते पाक बहुत बलन्द व बाला है जो ज़िन्दा है मौत से पाक है। वह

ज़ात जो अपनी .कुदरत से मख़लूक़ पर ग़ालिब है और बन्दे को मौत के ज़रिए मग़लूब कर दिया है, अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) अल्लाह के रसूल हैं।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के साहबज़ादे हज़रते मूसा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि हज़रत ने लफ़्ज़े 'तअ़ज़्ज़ुज़' कहा लेकिन हर्फ़ ز अपने मख़रज से अदा न हो सका तो आप बार बार कहते रहे यहाँ तक कि हर्फ़े ز को उसके मख़रज से अदा कर दिया। इसके बाद तीन मरतबा अल्लाह अल्लाह अल्लाह कहा फिर "लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह" पढ़ा और ज़बाने मुबारक तालू से चिपक गई, आवाज़ कमज़ोर हो गई और रूहे अक़दस जिस्मे पाक से परवाज़ हो गई। इन्ना लिल्लाहहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म के बड़े शाहज़ादे हज़रते शाह सय्यिद शाह अ़ब्दुल वह्हाब क़ादिरी ने आपके जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और आप अपने मदरसा जामेआ क़ादिरिया के एक साएबान के नीचे दफ़न किए गए। बग़दाद शरीफ़ में आज भी हुज़ूर ग़ौसे आज़म का मज़ारे पुर अनवार अवाम व ख़वास के लिए फ़ैज़ देने वाला है और क्यूँ न हो कि हुज़ूर ग़ौसियत मआब रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का सारी दुनिया के लिए यह एलान मौजूद है

اَفَلَتْ شُمُوْسُ الْاَوَّلِيْنَ وَشَمْسُنَا

اَبَدًا عَلٰى اُفُقِ الْعُلٰى لَا تَغْرُبُ

तर्जमा : पहलों के सूरज डूब गए लेकिन हमारा सूरज हमेशा बलन्दी के उफ़ुक़ पर रौशन रहेगा और कभी नहीं डूबेगा।

इसी को आलाहज़रत सरकार अलैहि रह़मतु ग़फ़्फ़ार ने अपने शेर में इस तरह फ़रमाया है

सूरज अगलों के चमकते थे चमक कर डूबे
उफ़ुके नूर पे है मेरह हमेशा तेरा

विसाल शरीफ़ का महीना व साल

इमाम हाफ़िज़ इब्ने कसीर ने अलबिदाया वन्निहाया में और हज़रते इमाम याफ़िई रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने मिरआतुल जिनान में आपके विसाल के सिलसिले में सिर्फ़ साले विसाल का तज़किरा किया है जो हिजरी 561 है दिन या तारीख़ या महीने का कोई ज़िक्र नहीं है। हज़रत मौलाना अब्दुल रहमान जामी रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने भी नफ़हातुल इन्स में आपके विसाल के बयान में हिजरी 561 का ज़िक्र किया है अलबत्ता आगे चल कर करामात के बयान में सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु के शहज़ादे हज़रत शैख़ अब्दुल वह्हाब रहमतुल्लाहि तआला अलैह का क़ौल नक़्ल फ़रमाया है जिससे वाज़ेह होता है कि माह रबीउल आख़िर में हुज़ूर ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु का विसाल शरीफ़ हुआ।

सय्यिद अबुल मआली ख़ैरुद्दीन सन् 1024 अपनी किताब तोहफ़ए क़ादिरिया में लिखते हैं कि 17 रबीउल आख़िर हिजरी 561 में सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने विसाल शरीफ़ फ़रमाया है। बाज़ दूसरी किताबों में 11 और 13 रबीउल आख़िर भी लिखी है लेकिन पहला क़ौल ज़्यादा सही मालूम होता है। बग़दाद शरीफ़ से आने वालों के बयानात भी पाए जाते हैं कि वहाँ पर हुज़ूर गौसे आज़म का उर्स शरीफ़ 17 रबीउल आख़िर को होता है।

सरकारे ग़ौसे आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु की तारीख़े विसाल की तहक़ीक़ के सिलसिले में कई दूसरी किताबें भी देखीं मसलन जनाब अब्दुल रहमान चिश्ती की किताब मिरआतुल असरार और शाह अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि तआला अलैह की अख़बारुल अख़यार वग़ैरह लेकिन इन सब में भी सही तारीख़ की निशानदेही नहीं मिलती।

विसाल के बाद साइल को जवाब देना : बयान किया जाता है कि हज़रते ख़्वाजा बहाउद्दीन अहमद नक़्शबन्द

रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने रूहानियत के ताजदार सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु के मज़ारे पुर अनवार पर जब हाज़िरी का शरफ़ हासिल किया तो अक़ीदत की पूरी वाबस्तगी और लगाव के साथ सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में यह शेर पढ़ा

ऐ दस्तगीरे आलम दसतम चुनाँ बेगीर
दस्तम चुनाँ बेगीर कि गोयन्द दस्तगीर

तर्जमा : ऐ दुनिया के मददगार मेरी मदद इस तरह कीजिए कि हक़ीक़त में लोग आपको दस्तगीर कहें।

हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन अहमद नक़्शबन्द रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने अपने इस शेर में जो कुछ आप से कहा है उसके जवाब में मज़ारे मुबारक से हयात की पूरी तवानाई के साथ सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआला अन्हु ने यह शेर पढ़ा :-

ऐ नक़्शबन्दे आलम नक़्शे चुनाँ बेबन्द
नक़्शे चुनाँ बेबन्द कि गोयन्द नक़्शबन्द

तर्जमा : ऐ दुनिया के सजाने वाले दुनिया को इस तरह सजाओ कि लोग तुम को हक़ीक़त में नक़्शबन्द कहें।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म की न्याज़

हर क़िस्म की न्याज़ मसलन तीजा, दसवाँ, चालीसवाँ, बरसी या उर्स या किसी भी बुज़ुर्ग की फ़ातिहा की अस्ल इसाले सवाब यानी बुज़ुर्गाने दीन या दूसरे मरे हुए मुसलमानों की रूह को सवाब पहुँचाना है। हर क़िस्म की फ़ातिहा या न्याज़ में कुछ .क़ुर्आन शरीफ़ और दुरूद शरीफ़ वग़ैरह पढ़ कर तमाम मुसलमानों को बख़्शा जाता है। फिर अगर वह न्याज़ का खाना वग़ैरह किसी अल्लाह के वली के लिए है तो उस न्याज़ का खाना अमीर ग़रीबों आलिम जाहिल औरत मर्द सभी को जाएज़ है और अगर किसी आम मुसलमान का है तो बेहरत यह है कि मालदार आदमी उसको न खाए बल्कि सिर्फ़ ग़रीब

मुसलमान औरत मर्द खायें। और अगर नज़्रे शरई की मिन्नत मानी तो उसको भी सिर्फ़ ग़रीब ही खा सकाते हैं किसी अमीर को इस नज़्रे शरई को खाना हरगिज़ जाएज़ नहीं अगर खायेंगे तो हरामख़ोर होंगे।

इसाले सवाब करने में किसी को इख़्तिलाफ़ भी नहीं। बदमज़हबों को इख़्तिलाफ़ यह है कि खाना सामने रख कर फ़ातिहा न दो और उसे सिर्फ़ ग़रीब खायें। उनका यह एतराज़ बेकार है। और इसका जवाब यह है कि फ़ातिहा आगे रख न दी जाए तो क्या पीछे या दायें बायें रख कर दी जाए या सर पर रख कर दी जाए। तीजा चालीसवाँ वग़ैरह के खाने से अमीर को बचना चाहिए हाँ चखना जाएज़ है और अगर फ़ातिहा करने वाले ने इस नियत से सबके लिए पकाया है कि ग़रीब अमीर सब खायें तो सबको खाना बिला कराहत जाएज़ है। हाँ वह लोग जो तीजे चालीसवें या फ़ातिहा के ख़ानों की तलाश में रहते हैं, उनके इस खाने से उनके दिल स्याह होने का अन्देशा है।

फ़ातिहा के सुबूत के लिए हम यहाँ पर हुज़ूर ग़ौसे आज़म का एक अमल ज़िक्र करते हैं जिससे इन्साफ़ पसन्द आदमी यह कहने पर मजबूर हो जाएगा कि फ़ातिहा बिल्कुल जाएज़ है और फ़ातिहा को नाजाएज़ बताने वाले या तो वहाबी देवबन्दी कुफ़्फ़ार व मुरतद्दीन हैं या कम से कम गुमराह हैं।

हज़रते इमाम याफ़िई रहमतुल्लाहि तआला अलैह अपनी किताब .कुर्रतुल नाज़िर में लिखते हैं कि एक मरतबा सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआला अन्हु ने जनाबे रसूले करीम रऊफ़ व रहीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ।। तारीख़ को फ़ातिहा दिलाया। हुज़ूर ग़ौसे आज़म की यह न्याज़ सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम बहुत पसन्द आई इसलिए सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु को तआला अन्हु ने हर ।। तारीख़ को यह फ़ातिहा मुक़र्रर कर दी यानी सरकारे ग़ौसे आज़म रदि़यल्लाहु तआला अन्हु हर

11 तारीख़ को अपने जद्दे करीम नबीए अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की फ़ातिहा करने लगे। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का यह अमल मुसलमानों में आहिस्ता आहिस्ता आपकी तरफ़ मन्सूब हो गया जिसको मुसलमानाने अहले सुन्नत ग्यारहवीं शरीफ़ कहने लगे जिसका मतलब यह है कि वह ग्यारहवीं जो हुज़ूर ग़ौसे पाक किया करते थे। आज भी यह न्याज़ सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की नियाज़ के नाम से मशहूर व मारूफ़ है और मुसलमान इसे बड़ी धूम धाम से करते हैं। सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से ऐसे ही .कुरबत और नज़दीकी है जैसे ग्यारहवीं को बारहवीं के साथ है और बारहवीं शरीफ़ भी दुनिया के तमाम मुसलमानाने अहले सुन्नत में उसी तरह मनाई जाती है जैसे ग्यारहवीं शरीफ़ मनाई जाती है।

सरकारे ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ग़रीबों, मेहमानों और सब ही को ख़ूब खिलाया करते और रोज़ ही आपके यहाँ कितने ही भूकों को खाना खिलाया जाता और लंगर जारी रहता। ग़ौसे आज़म रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का फ़रमान भी है कि मैंने इतने मुजाहदात और रियाज़ात किए मगर जितना अज्र भूकों को खिलाने में पाया उतना किसी और अमल से न पाया अगर मुझे पहले मालूम होता तो मैं सारी ज़िन्दगी भूकों को खाना खिलाता रहता।

आजकल यह भी देखा जाता है कि न्याज़ फ़ातिहा के वक़्त बहुत सी शरीअत के ख़िलाफ़ बातें की जाती हैं। मिसाल के तौर पर .कुर्आन ख़्वानी या फ़ातिहा में .कुर्आन शरीफ़ ग़लत पढ़ा जाता है। उस पर ज़ुल्म यह कि उस ग़लत पढ़े हुए को अच्छा समझा जाता है और उसको बख़्शा जाता है। अल्लाह की पनाह। हालांकि जब .कुर्आन शरीफ़ ग़लत पढ़ा गया तो सवाब कैसा बल्कि ग़लत पढ़ने वाला सख़्त गुनहगार हुआ और जब .कुर्आन शरीफ़ ग़लत पढ़ने की वजह से सवाब न मिला

तो जिसके लिए फ़ातिहा किया गया तो उसको सवाब क्या मिलेगा। इसकी मिसाल बिल्कुल ऐसे ही है कि हज़रत मौलाना मुहम्मद जलाल उद्दीन रूमी रहमतुल्लाहि तआला अलैह फ़रमाते हैं कि एक बहरे के पड़ोस में एक आदमी बीमार हो गया। बहरे ने सोचा कि पड़ोसी बीमार है लिहाज़ा उसको देखने के लिए जाना चाहिए लेकिन क्या करूँ मैं बहरा हूँ। मैं उससे कुछ पूछुंगा तो मालूम नहीं बीमार क्या जवाब देगा। फिर बहरे ने ख़ुद ही अपने ज़हन से यह सवाल व जवाब गढ़ लिए कि जब मैं बीमार से पूछुंगा कि आपकी कैसी तबीयत है तो बीमार यही कहेगा कि मैं ठीक हूँ तो उस पर मैं ख़ुदा का शुक्र करूंगा। फिर मैं पूछुंगा कि आप किस हकीम से दवा करवा रहे हैं तो बीमार किसी अच्छे हकीम का नाम लेगा तो मैं कह दूंगा कि बहुत अच्छा हकीम है उसका इलाज न छोड़ना। फिर मैं पूछुंगा कि खाने में क्या ले रहे हैं तो बीमार कोई हल्का फुल्का खाना बताएगा तो मैं कह दूंगा कि बहुत अच्छा खाना है इसी को खाते रहिएगा। फिर वह बहरा इन सवाल व जवाब की पोटली लेकर बीमार के पास जा पहुँचा और पूछा कहिए क्या हाल है। तो बीमार ने कहा मर रहा हूँ। बहरे ने कहा ख़ुदा का शुक्र है। बीमार को बहरे पर बड़ा ग़ुस्सा आया कि यह कौन मेरा दुश्मन आ गया जो मेरी बीमारी पर शुक्र कर रहा है। बहरे ने फिर पूछा कि आप किसका इलाज कर रहे हैं। तो बीमार ने जवाब दिया हज़रते इज़्राईल का। तो बहरा कहने लगा सुबहानल्लाह मुबारक हो वह बहुत अच्छे हकीम हैं उनका इलाज मत छोड़िएगा। बीमार यह सुनकर और ज़्यादा ग़ुस्सा हो गया लेकिन बहरे ने फिर तीसरा सवाल दाग़ दिया कि आप क्या खा रहे हैं। बीमार ने जवाब दिया ज़हर खा रहा हूँ। बहरा बोला माशाअल्लाह बहुत अच्छा खाना है इसको हरगिज़ न छोड़िएगा। बहरा अपने पड़ोसी का हाल पूछ कर लौटा तो बड़ा ख़ुश था और उसको बिल्कुल ख़बर ही नहीं कि वह बीमार को नाराज़ कर के लौटा है। बस यही हाल हमारे उन मुसलमान

भाईयों और बहनों का है जो .कुर्आन ख़्वानी में जाकर .कुर्आन शरीफ़ को ग़लत पढ़ कर और फ़ातिहा कर के लौट आते हैं और ख़ुश होते हैं कि हमने .कुर्आन शरीफ़ पढ़ कर अच्छा काम किया है हालांकि उन हज़रात को यह पता ही नहीं कि गए थे अच्छा काम करने और .कुर्आन शरीफ़ ग़लत पढ़ कर उल्टा गुनहगार होकर लौटे और अल्लाह व रसूल को नाराज़ भी किया। इसलिए हम अपने उन मुसलमान भाईयों से यह अर्ज़ करते हैं कि किसी अच्छे पढ़ने वाले से सही सही पढ़ने का तरीक़ा सीख लीजिए ताकि नमाज़ वग़ैरह भी आपका दुरुस्त हो और फ़ातिहा करें तो सवाब भी पहुँचे।

आजकल यह भी देखा जाता है कि न्याज़ से पहले लोग गाना बजाना या ग़ैर-शरई क़व्वाली वग़ैरह कराते हैं और बाज़ जगह तो नाच या टेलीवीज़न भी देखे जाते हैं। यह सब यूँ भी हराम है और ऐसे मुबारक वक़्त तो और ज़्यादा। अल्लाह की पनाह। यह भी देखा गया है कि न्याज़ के वक़्त ग़रीब का ख़्याल नहीं रखा जाता और उसे झिड़का जाता है जबकि ऐसे मौक़े पर ग़रीब का हक़ ज़्यादा है और यहाँ वह मक़सद फ़ौत हो रहा यानी न्याज़ का अस्ल मक़सद तो ग़रीब को अच्छा खाना खिला कर उन्हें ख़ुश करना है क्यूँकि वह ग़रीब बेचारे अच्छा खाना कम पाते हैं और रहे अमीर व मालदार तो उनको तो अच्छे अच्छे खाने मिलते ही रहते हैं। इस मौक़े पर वह हज़रात भी अगर दिल की ख़ुशी के साथ ग़रीबों के खिलाने में लग जायें और ख़ुद अपना थोड़े खाने पर क़नाअत कर लें तो उन हज़रात को भी सवाब मिलेगा।
तम्बीह : हमारे मुसलमान भाइयों को चाहिए कि न्याज़ व फ़ातिहा जब भी करें तो हराम पैसे से न करें। चाहे थोड़ा ही करें मगर जाएज़ पैसे से करें।

हुज़ूर ग़ौसे आज़म का तोशा

अब हम उन मुसलमान भाईयों के लिए जो न्याज़ नज़्र और फ़ातिहा को सही मानते हैं एक बहुत अच्छा तोहफ़ा पेश कर रहे

हैं जिस पर अमल करने से इन्शाअल्लाह तआला मुसीबतें टल जायेंगी और जिसे हुज़ूर ग़ौसे आज़म का तोशा शरीफ़ कहा जाता है और वह यह है कि गेहूँ का मैदा पांच सेर, शकर पांच सेर, ख़ालिस देसी घी पांच सेर, मग़ज़े बादाम एक सेर, पिस्ता एक सेर, किशमिश एक सेर, नारियल एक सेर, लौंग सवा छटाक, दारचीनी सवा छटाक और छोटी इलायची सवा छटाक। इन सबका इस तरह हलवा बनाइये कि हलवा बनाने वाला पहले सुन्नत तरीक़े से नहाए फिर इन सब चीज़ों का पूरी सफ़ाई के साथ हलवा बनाए। फिर ऐसे लोगों को इकट्ठा करे जो नेक भी हों और सही .कुर्आन शरीफ़ वग़ैरह पढ़ना जानते हों। उनसे इस तरह फ़ातिहा करवायें कि पहले सात मरतबा दुरूदे ग़ौसिया पढ़ें फिर एक मरतबा सूरए फ़ातिहा शरीफ़ फिर एक मरतबा आयतल कुर्सी शरीफ़ फिर सात मरतबा सूरए इख़लास शरीफ़ फिर तीन मरतबा दूरूदे ग़ौसिया शरीफ़ पढ़ें। फिर इन सबका सवाब हुज़ूर ग़ौसे पाक रद़ियल्लाहु तआला अन्हु की बारगाह में पेश करें। फिर नेक लोगों को दिल की ख़ुशी के साथ हलवे को खिलायें और उन हज़रात से अपने जाएज़ मक़सद के लिए आज़िज़ी के साथ दुआ करवायें। हलवे का वज़न जो बताया गया वही अस्ल वज़न है वैसे गुन्जाइश के मुताबिक़ कमी बेशी का इख़्तेयार है जैसे आधा या चौथाई या आठवाँ या जितना गुन्जाइश हो करे वही असर रखता है। कमी करने का तरीक़ा यह है कि मसलन किसी को आधा तोशा शरीफ़ करना है तो ढाई सेर मैदा, ढाई सेर शकर, ढाई सेर ख़ासिल घी, आधा सेर मग़ज़े बादाम, आधा सेर पिस्ता, आधा सेर किशमिश, आधा सेर नारियल, और लौंग दारचीनी छोटी इलायची हर एक को सवा छटाक का आधा कर ले और इसी तरह जितने कम का तोशा शरीफ़ करना हो तो उसी अनुपात में सब चीज़े ले ले।

<u>फ़ायदा</u> : दुरूदे ग़ौसिया यह है :-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِ نَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ

وَعَلٰى اٰلِهِ الْكِرَامِ وَابْنِهِ الْكَرِيْمِ وَاُمَّتِهِ الْكَرِيْمِ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

सलाम

हज़रते महबूबे सुब्हानी .क़ुतुबे रब्बानी ग़ौसे समदानी शहबाज़े लामकानी हुज़ूर पुर नूर सरकारे ग़ौसे आज़म शैख़ मुहीउद्दीन अब्दुल क़ादिर जीलानी हसनी हुसैनी रदियल्लाहु तआला अन्हु व अर्दाहो अन्ना की बारगाहे मुबारक में सलाम का नज़रानए अक़ीदत

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शमए बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम
ग़ौसे आज़म इमामुत्तुक़ा वन्नुक़ा
जलवए शाने .क़ुदरत पे लाखों सलाम
.क़ुतुबे अब्दालो इरशादो रुश्दुर्रशाद
मुहीए दीनो मिल्लत पे लाखों सलाम
मर्दे ख़ौले तरीक़त पे बेहद दुरूद
फ़र्दे अहले हक़ीक़त पे लाखों सलाम
जिसकी मिम्बर हुई गर्दने औलिया
उस क़दम की करामत पे लाखों सलाम

सरकारे आलाहज़रत रदियल्लाहु तआला अन्हु

सलाम ऐ शहरे यारे अस्फ़िया ऐ पीरे लासानी
सलाम ऐ ताजदारे औलिया महबूबे सुब्हानी
सलाम ऐ पैकरे बख़्शिश सलाम ऐ फ़ज़्ले रब्बानी
सलाम ऐ हुस्ने रूहानी सलाम ऐ शमए ईमानी
सलाम ऐ मुहसिने आफ़ाक़ सद्रे बज़्मे इरफ़ानी
दवाए हर परेशानी इलाजे हर पशेमानी
तुझी से दीन ज़िन्दा है तुझी से दीन ज़िन्दा है
मुहीउद्दीन जीलानी मुहीउद्दीन जीलानी
करम तेरा हो तो फिर नाम लेवा डर नहीं सकते
जले आग और चले आंधी घिरे बादल गिरे पानी

अज़ मौलाना शफ़ी अशरफ़ी